भाग १२]

[संख्या

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

NAGARI PRACHĀRINI PATRIKĀ

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०
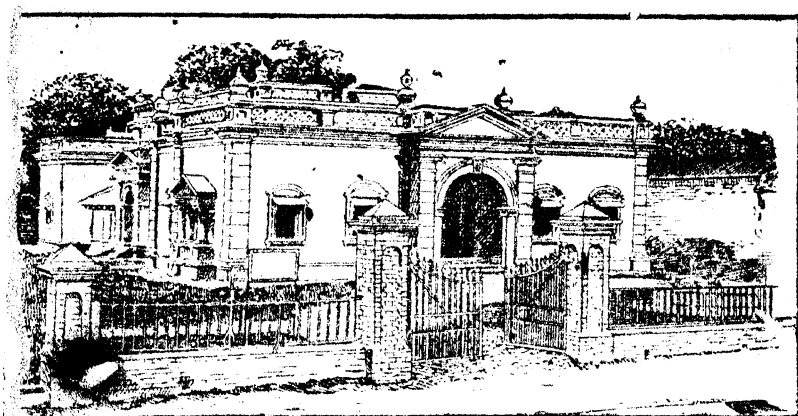
VOL. XII.

प्रतिमास की १५ ता० को

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

जुलाई १९०७ ।

Printed at the Bharat Press, Benares.

प्रति संख्या का मूल्य =)

वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

पृष्ठ

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] जुलाई १९०७। [संख्या १

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥ १।
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटाहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल॥ २॥
बिविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार॥ ३॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ ४॥
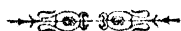
विविध विषय।

आज इस पत्रिका को प्रकाशित होते ग्यारह वर्ष हो चुके। इस संख्या के साथ इसके बारहवें वर्ष का प्रारम्भ होता है। अब तक यह पत्रिका त्रैमासिक प्रकाशित होती रही और प्रति संख्या में ४८ पृष्ठ रहते थे। कई वर्षों से सभा का विचार इसके आकार को बढ़ाने तथा दूसरे प्रकार से इसकी उन्नति करने का रहा परन्तु धनाभाव के कारण सभा अब तक इस कार्य को न कर सकी। इस वर्ष भी

धन का अभाव बना हुआ है परन्तु अब पत्रिका की उन्नति करना नितान्त आवश्यक समझ कर और अनेक अनुग्राहक प्रेमियों की सहायता का भरोसा करके उसने इस कार्य में विलम्ब करना उचित नहीं समझा। अतएव अब यह पत्रिका मासिक रूप में प्रकाशित की जाती है। यह हर अंग्रेजी महीने के मध्य में प्रकाशित की जायगी और प्रति संख्या में ३२ पृष्ठ रहेंगे। इससे वर्ष में ४०० पृष्ठ होंगे जब कि त्रैमासिक रूप में लगभग २०० पृष्ठ प्रकाशित होते थे परन्तु इसका वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित केवल १) ही होगा। सभा का विश्वास है कि इससे सस्ती पत्रिका का प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। जितनी पत्रिकाएं इस समय हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं उनमें से कोई भी इतनी सस्ती नहीं है। परन्तु सभा का विचार यहीं पर सन्तुष्ट बैठ रहने का नहीं है। यदि हिन्दी के प्रेमियों की कृपा इस पत्रिका पर बनी रही और इसके ग्राहकों की संख्या बढ़ी तो इससे जो कुछ आय होगी वह इसी पत्रिका की उन्नति में लगाई जायगी, इसका आकार बढ़ाया जायगा और इसमें चित्र देने का उद्योग किया जायगा। ये भविष्यत की बातें हैं और इनका होना न होना हिन्दी प्रेमियों और सभा के सहायकों पर निर्भर है। इसी उद्देश्य से इस संख्या के साथ सभा की संक्षिप्त नियमावली और सभासद होने का फार्म सब महाशयों के पास भेजा जाता है। यदि प्रत्येक सभासद एक एक नवीन सभासद और करने का उद्योग करेंगे तो सहजही में इस पत्रिका के मासिक करने में जो अधिक व्यय पड़ेगा उसकी पूर्ति हो जायगी और

साथही यह सभा कदाचित इसकी उन्नति करने में शीघ्र ही समर्थ हो।

इसके अतिरिक्त कदाचित इस बात के यहां लिखने की आवश्यकता नहीं है कि इस पत्रिका में सुन्दर लेखों का प्रकाशित होना हिन्दी के लेखकों पर निर्भर है। यदि वे नए नए लेखों के भेजने की कृपा करेंगे तो निस्संदेह यह पत्रिका सर्वांगसुन्दर होकर हिन्दी के गौरव का कारण होगी। अतएव हिन्दी लेखकों से सविनय प्रार्थना है कि वे इस ओर ध्यान दें और इसे सुन्दर लेखों से भूषित करने का उद्योग करें।

इस पत्रिका की प्रत्येक संख्या में सभा के कार्यों का पूर्ण समाचार रहा करेगा जिससे अब सभासदों और हिन्दी प्रेमियों को सभा के कार्यों की निरन्तर सूचना मिलती रहेगी। अब तक सभा के अधिवेशनों का कार्यविवरण भारतजीवन पत्र में प्रकाशित किया जाता था परन्तु अब आगे से वह सब इसी पत्रिका में प्रकाशित किया जायगा।

* *

जितने ग्रह सौरमंडल में वर्तमान है उनमें मंगल ही पृथ्वी के बहुत निकट है। इसलिये समय समय पर वैज्ञानिकों ने इसकी जांच करने का उद्योग किया और इसकी स्थिति का पूरा पता लगाना चाहा। वेधालयों में इस ग्रह की जांच निरन्तर होती रहती है और जब जब यह पृथ्वी के बहुत निकट आजाता है और वायुमंडल साफ़ रहता है तो ज्योतिषीगण दूरदर्शक यन्त्र से इसका वेध करते हैं। इन जांचों का अब तक जो फल हुआ है उसका वर्णन करें

पुस्तकों में किया गया है। यह पता लगा है कि इस ग्रह में नहरें बनी हुई हैं और उनके दोनों तरफ खेती होती है। इससे यह अनुमान किया जाता है कि इस ग्रह में मनुष्य बुद्धिवाले जीव बसते हैं। अभी दक्षिण अमेरिका में वैज्ञानिकों का एक समुदाय इस ग्रह की छानबीन में लगा हुआ था। उसने प्रगट किया है कि ये नहरें अब की बहुत स्पष्ट देखी गई हैं और उसमें जो शाद्वल-स्थान हैं उनका फोटो भी लिया गया है। देखा चाहिए पृथ्वी पर के वैज्ञानिक इस ग्रह के लोगों से बिजली के द्वारा बातचीत करने में कब समर्थ होते हैं।

* *
*

इस पत्रिका की गत संख्या में "रेडियम धातु" पर एक लेख बाबू दुर्गाप्रसाद बी० ए० का प्रकाशित हुआ था। उससे हमारे पाठकों को उस धातु का पूरा विवरण विदित हो गया होगा। अभी थोड़े दिन हुए कि राकफोर्ट के लोमियन नाम के एक विद्यार्थी ने एक ऐसी धातु का पता लगाया है जिसमें वे सब गुण पाए जाते हैं जिनके लिये रेडियम प्रसिद्ध है। इस धातु के एक तोला निकालने में १८००) रु० खर्च पड़ता है जब कि रेडियम के एक तोले में २८०००) रु० व्यय होता है। यदि यह धातु भी उतनी ही गुणकारी सिद्ध हुई जितनी कि रेडियम है तो अब उसके प्राप्त करने में उतनी कठिनता न रह जायगी जितनी की अब तक थी। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस धातु से संसार का बड़ा उपकार होगा और कदाचित बहुत से वैज्ञानिक सिद्धान्त जो अब तक निश्चित माने जाते थे उलट जांये। वैज्ञानिकों

को भय है कि एक समय वह आवेगा जब सूर्य में प्रकाश और उष्णता न रह जायगी और तब इस सृष्टि का वर्तमान रहना असम्भव हो जायगा। परन्तु इस नवीन धातु के आविष्कार से वे अनुमान करने लगे हैं कि सूर्य में यही धातु वर्तमान है। अतएव इसके उतने शीघ्र क्षय हो जाने की सम्भावना नहीं है। देखा चाहिए लोमियन के आविष्कार का क्या फल होता है।

ज्योतिष प्रबन्ध।

:o:o:

जिस विद्या में गगनचारी नक्षत्र, तारादिक के वर्णन, सूर्य्य, शुक्र, वृहस्पति इत्यादि ग्रहों की गति, अवस्था, उनके उदय और अस्त के नियम, ग्रहण के कारण और उनके जानने की विधि और गगनचर सम्बन्धीय अनुसन्धान हों उस विद्या को ज्योतिष विद्या कहते हैं।

सबसे प्राचीन विद्याओं में से यह भी एक अति पुरातन काल की विद्या है जिस पर पूर्व काल के मनुष्यों ने बहुत कुछ ध्यान दिया होगा और इसके जानने में बड़े बड़े प्रयत्न किए होंगे। इस विद्या का पता चिर काल के ग्रंथ और शिलालेखों से पाया जाता है। उनसे प्रतीत होता है कि प्राचीन काल ही से इस विद्या की वृद्धि होने लगी थी। इस जगत में जब से मनुष्य की उत्पत्ति हुई होगी उसी समय से उन लोगों का ध्यान इस आश्चर्यमय सूर्य्योदय और सूर्य्यास्त की ओर आकर्षित हुआ होगा। नित्य प्रातःकाल, सूर्य का पूर्व दिशा से उदय होकर रात्रि के

अन्धकार को दूर करना, मध्यान्ह बेला सिर के ऊपर आजाना और साँझ को पश्चिम दिशा में जाकर अस्त हो जाना, फिर रात्रि में चन्द्र का नियमानुसार क्रम से त्रिविधाकार से प्रकाशित होना, पूर्णिमा को पूर्णकला से दीप्तमान होना और अपनी शीतल चांदनी फैलाकर अपनी निराली छटा देखाना और क्रमशः घटते घटते अमावास्या को देखाई भी न देना, उस अँधेरी रात्रि में तारादिक का प्रकाश से चमचमाना, कालान्तर में नए नए नक्षत्रों का आकाश में शोभा देना इत्यादि ये सब ऐसी बातें हैं कि आदिम काल के मनुष्यों की वृत्ति इस देदीप्यमान नभचर की ओर बिना गए न रही होगी। फिर क्या आश्चर्य है कि उनमें से विचारवान, बुद्धिमान, और अनुसन्धानिक वृत्ति के लोग इन प्रकाशमान पदार्थों के अन्वेषण और गवेषणा में लग पड़े हों और इसके नियम कुछ न कुछ जान गए हों। साधारण बुद्धि के मनुष्य भी रात्रि और दिवस के नियम जानते हैं। तात्पर्य यह कि मनुष्योत्पत्ति के उपरान्त ही इस विद्या की नीव पड़ गई होगी।

अब रही यह बात कि इस विद्या की नीव किस जाति, तथा किस देश में सबसे पहिले पड़ी और उस को कितना काल हुआ ?

इन प्रश्नों का यथार्थ उत्तर यदि असम्भव नहीं तो दुःसाध्य अवश्य है। विशेष कर इस विद्या के आदि प्रचार के समय का निर्णय कर देना केवल कल्पना मात्र है। तथापि इतना कहा जा सकता कि किस देश के लोगों ने इस विद्या की उन्नति से प्रथमतः परिश्रम किया था।

यूरोपियन पुरातत्ववेत्ता लोगों का कथन है कि निम्न लिखित जातियों में दीर्घकाल से इस विद्या का होना पाया जाता है जिनका संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जायगा।

(१) चाल्डियन (Chaldean)

(२) इजिप्शियन (Egyptian)

(३) चीनदेशवासी (Chinese)

(४) यूनानी (Grecian)

(५) अरबवासी (Arabian)

(६) हिन्दुस्तानी (Indian)

ज्योतिष विद्या का इतिहास।

यूरोपीय पुरातत्ववेत्ताओं में अधिकतर लोग इस बात को जानते हैं कि सबसे पहिले इस विद्या का प्रचार 'चाल्डियन' जाति में हुआ था। इन्हीं से इजीप्टवासियों ने यह विद्या सीखी थी, जिनके ग्रन्थों में उक्त जाति की सभ्यता और विद्या की बहुत कुछ प्रशंसा लिखी पाई जाती है।

ईजीप्ट वासियों की ज्योतिष।

इस जाति के कीर्तिस्तम्भ जो अब तांई शेष रह गए हैं इनकी विद्वत्ता और उन्नत दशा को बतलाते हैं। इनके निर्मित स्मरणात्मक स्तम्भों से इनके विद्याकौशल का ज्ञान भांति भांति होता है। यूनानियों ने अपने ग्रन्थों में स्वीकार किया है कि उन्होंने ज्योतिष विद्या इन्हीं से प्राप्त की और इसका गुणानुवाद गाया है। यूनानी इतिहास लेखक सिम्प्लियन (Simplian) और परफरी (Porphery) अपने ग्रन्थों में चाल्डियन की विद्याबल की चर्चा लिख गए हैं।

सिकन्दर बादशाह जब बेबिलन (Babylon) को विजय करके वहां गया तब उसके साथ कलिस्थियन (Callestheun) नामक एक विद्वान भी था, इसको वहां कई पक्की ईंटें ऐसी मिली थीं जिनमें कई प्राचीन समय के ग्रहण के दिन खुदे हुए थे। इनमें सबसे पुरातन काल के ग्रहण का वर्णन था जो सन् ईस्वी से २२३४ वर्ष पूर्व में लगा था। इन सारिणियों को जो ईंटों पर खुदी हुई प्राप्त हुई थीं, सिकन्दर ने अरस्तू (Aristotle) नामक विख्यात विद्वान के पास भेज दिया। इन में से कई सारिणियां काल पाकर नष्ट हो गई वा खोगई पर ६ सारिणियां बच रही थीं जिनका वर्णन छोटे टालमी (Ptolemy) नामक यूनानी ज्योतिषी ने लिखा है। इनमें से सबसे पुरनी ७२० वर्ष सन् ई० के पूर्व की थी। इन लोगों को ग्रहों की गति का ज्ञान कुछ कुछ था क्योंकि इन्होंने पांचों ग्रहों के एक स्थान पर उपस्थित होने का वर्णन किया है जो सन ई० से पूर्व २५१४ और २४३६ वर्ष के बीच में हुआ होगा। यद्यपि वे लोग इतना जानते थे पर सन् ४०० ई० तक उनमें अयनसम्पात (Precession of Equinox) का ज्ञान नहीं हुआ था।

चीन देशवासियों की ज्योतिष।

चीन देशवासियों ने भी प्राचीन काल ही में इस विद्या की उन्नति कर ली थी, यह मानना ही पड़ता है। इनके ग्रंथों में उस ग्रहण का वर्णन है जो सन् ई० से पूर्व २८५१ वर्ष के लगभग देखाई दिया था। वे लोग उस समय एक वर्ष ३६५$\frac{1}{4}$ दिन का मानते थे और १९ वर्ष में सूर्य और चन्द्र वर्ष का समान हो जाना तक जान गए थे।

सन् ई० से २२१ वर्ष पूर्व चीन देश का एक राजा, जिसका नाम त्सी-ची-हाङ्ग टी (Tsi-chi-Hong-Ti) था, ज्योतिष का बड़ा पण्डित हो गया है। इसने इस विद्या की उन्नति में बहुत सहायता दी थी और वेधालय इत्यादि बनवाए थे। चीन में इस विद्या को राजनीति का एक अंग गिनते थे और उन ज्योतिषियों को दण्ड दिया जाता था जिनकी गणना में भूल होती थी। ऐसी अवस्था में विश्वास किया जा सकता है कि वहां के ज्योतिषीगण बड़ी सावधानी के साथ ग्रहों की गतियों का निरीक्षण और उनकी गणना करते रहे होंगे, फिर क्यों न इस विद्या की वृद्धि होती।

यूनानियों की ज्योतिष।

यूरोप में इस विद्या को सबसे पहिले अरबियों ने प्रचारित किया था तथापि यूरोप निवासियों ने यूनानियों के ग्रन्थों की बहुत छान बीन की और उससे बहुत कुछ नई बातें उन्होंने जानीं। इसलिये इस जाति की विद्या की बहुत सी सविस्तर बातें लिखी गई हैं।

इस विद्या का प्रचार इस जाति में थेलीज़ (Thales) नामक विद्वान के समय से पाया जाता है। यह व्यक्ति सन् ई० से पूर्व ६४० वर्ष के लग भग हुआ था। पाश्चिमात्य विद्वानों का कथन है कि इसीने पहिले पहिल जाना था कि पृथ्वी गोलाकार है परन्तु इसका सिद्धान्त था कि तारादिक अग्निपिण्ड हैं।

इसके पश्चात् एनेक्सिमेन्दर (Anaximander) ने यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी अक्ष अर्थात कीली पर घूमती है और चन्द्र का प्रकाश सूर्य की ज्योति से है।

सन् ई० के ५०० वर्ष पूर्व पाइथागोरस (Pythagoras) नामक ज्योतिष विद्या का पण्डित हुआ। इसने बहुत से नए सिद्धान्त जाने। इसके पीछे सन् ई० के ३७० वर्ष पूर्व में यूदाक्स (Eudox) ने ३६५$\frac{1}{4}$ दिन का सौर वर्ष माना। सिकन्दर के समय में इस विद्या की बहुत उन्नति हुई, बहुत से ग्रहों के वेध किए गए, उनकी ठीक ठीक गतियां जानी गईं, चान्द्र और सौर वर्ष के काल जांचे गए।

सन् ई० के पूर्व १९० वर्ष में हिपारकस (Hipparchus) ने अयनसम्पात देखा।

यूनानियों में अन्तिम सुपण्डित टोलमी (Ptolemy) नामक एक पुरुष सन् ई० के १३० वर्ष पूर्व हुआ। फिर इसके पीछे कोई नामी गणितज्ञ नहीं हुआ और न कोई नई बात ज्योतिष की जानी गई।

अरबियों की ज्योतिष।

यूरोप देश में इस विद्या को फैलाने वाले अरब जाति के ही लोग हैं। इस जाति में ज्योतिष विद्या का अन्वेषण उत्तम रीति से सन् ७६२ के लगभग आरम्भ हुआ। इस समय अरब देश का खलीफा अलमनसूर था जिसने इस विद्या की उन्नति में उद्योग किया। इसके पीछे वहां के खलीफा अलमामूर और हारूंरशीद ने अपने समय में बहुत से विदेशी ज्योतिष ग्रंथों के अनुवाद कराए तथा उनकी जांच और शोधन में बहुत कुछ सहायता दी। पुरातत्त्वान्वेषक लोग कहते हैं कि वे लोग इस विद्या के शोधन और वृद्धि में ४०० वर्ष लों लगे रहे। यद्यपि इन लोगों ने किसी नई

बात का आविर्भाव नहीं किया तथापि शुद्ध गणना करने में ये लोग यूनानियों से बढ़ गए थे। वे लोग बड़ी शुद्धता के साथ अयनसम्पात (Precession of Equinox), रविपरमाक्रान्ति (Obliquity of Ecliptic) तथा रवि उत्केन्द्रता (Solar Eccentricity) की गणना करने लग गए थे।

सन् ८८० ई० अलबरूनी नामक एक विद्वान ने सूर्य सम्बन्धी भूम्युच्च (Solar apogee) की गति को जाना और कहा जाता है कि इसीने पहिले पहिल 'ज्या' (Sine), कोटिज्या (Cosine) का व्यवहार किया और सन् १००० ई० में युनुस नामक एक गणितज्ञ ने स्पर्शरेखा (Tangent) और कोटिस्पर्शरेखा (Cotangent) का प्रयोग गणित में किया। नसीरुद्दीन नामक एक बादशाह ने पारस देश में एक वेधालय बनवाया था। सन् १४३३ में उलगबेग ने बहुत से तारादि का वेध करके उनके अक्षांश इत्यादि निकाले थे। अरब जाति ने तेरहवीं शताब्दी में ज्योतिष विद्या का प्रचार यूरोप में किया।

भारतवर्ष की ज्योतिष।

यूरोपीय विद्वानों का भारतवासियों की ज्योतिष विद्या के विषय में मतभेद है। कुछ लोग तो इस देश को ही समस्त उपादेय विद्याओं का आकर और आदि आविष्कर्ता मानते हैं, विशेष करके ज्योतिष विद्या की उत्पत्ति तो यहीं से बताते हैं। पर कुछ लोग कहते हैं कि ज्योतिष विद्या को भारतवासियों ने यूनानियों से सीखा है। कुछ लोगों का तो यह सिद्धान्त है कि यह भी ठीक नहीं है किन्तु इस विद्या को उन्होंने अरब जाति से पाया है। उक्त

बात की पुष्टि में इन ग्रन्थकारों का मत पृथक पृथक न देकर केवल Encyclopaedia Britanica से कुछ वाक्य यहां उद्धृत कर देता हूं जिससे पाठकों को विदित हो जाय कि वास्तव में यूरोपीय पण्डितगण में मतभेद है।

"Some authors regard India as the cradle of all the Sciences, particularly of astronomy, which they supposed to have been cultivated from the remotest ages. Others date the origin of the Indian astronomy from the period when Pythagoras travelled into that country, and carried thither arts and sciences of the Greecians; a third opinion is that astronomy was conveyed to India by the Arabians in the nineth century of our Era, and that the Brahmins are only entitled to the humble merit of adopting the rules and practices of that people to their own peculiar methods of calculations".

अर्थात कुछ ग्रंथकर्ता भारतवर्ष को समस्त विद्याओं का आकर या जन्मस्थान मानते हैं और विशेष रूप से ज्योतिष विद्या का, जिसके विषय में उनका अनुमान है कि इस विद्या का प्रचार यहां अति प्राचीन काल से चला आता है। कुछ लोग भारतवर्ष की ज्योतिष की उत्पत्ति का समय उस निरूपित काल से ठहराते हैं जब कि पाइथा-गोरस (Pythagors) (एक यूनानी विद्वान) इस देश में आया था और यूनान की शिल्प और अन्य विद्याओं को सिखा गया था। तीसरा मत यह है कि ज्योतिष विद्या को अरब देश वालों ने नवीं शताब्दी सन् ६०० में हिन्दुस्तान में आकर फैलाया था और ब्राह्मणों की अल्प और अपकृष्ट

कीर्ति केवल इतनी है कि उन्होंने उनके नियमों और विधियों को अपने मतानुसार घटा बढ़ा लिया।

किसी ने सच कहा है कि "छूछा कोई न पुछा।" जैसी कि इस भारतवर्ष की हीन और छुच्छी अवस्था हो रही है वैसा ही विदेशियों का विचार भी इसके विषय में है। यह तो स्वाभाविक ही बात है कि निर्धन के पास का अमूल्य रत्न भी काँचवत माना जाता है। प्यारे पाठको, अब तो उक्त सिद्धान्तों के शुद्धाशुद्ध की विवेचना किए बिना नहीं रहा जाता,—यद्यपि यह दूसरा विषय है तथापि संक्षेप में कुछ लिखने का साहस करता हूं, आशा है कि आप लोग इसकी अनुमति देंगे।

पहिली सम्मति से तो हमारा कोई विरोध नहीं है। रही दूसरी और तीसरी कल्पनाएं। इनमें से पहिले तीसरी कल्पना का पोल देखाया जाता है कि इनका मत कैसा भ्रममूलक है। इन लोगों का कथन है कि सन् ई० की नवीं शताब्दी में इस विद्या का प्रचार अरबों ने भारतवर्ष में किया। इससे ज्ञात होता है कि उन लोगों ने यहां के ज्योतिष ग्रन्थों का अवलोकन नहीं किया, केवल मनोकल्पना की है। इसमें कोई सन्देह नहीं कर सकता कि सूर्य-सिद्धान्त बहुत पुराना ग्रन्थ है। यदि उसमें दिए हुए समय पर विश्वास न भी किया जाय तो भी बहुत से उन प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में उसकी विवक्षा मिलती है जो नवीं शताब्दी से कहीं पहिले रचे गए थे और ग्रन्थकर्त्ताओं ने उनके रचना समय का उल्लेख भी उन्हीं पुस्तकों में कर दिया है। आर्यभट्ट (शक ३९८=३१९ सन् ई०), लल्लाचार्य (शक ४२१ = ३४२ ई०),

वाराहमिहर (शक ४२१ = २९८ ई०), और ब्रह्मगुप्त (शक ५०५ = ४२६ सन् ई०) जैसे शिरोमणि विद्वान यहीं हो गए हैं कि जिनके ग्रंथों में कौन से उपादेय सिद्धान्त नहीं हैं। इन ग्रंथों में ज्या (Sine) इत्यादि का प्रयोग बराबर किया गया है। अब सिद्ध होगया कि नवीं शताब्दी से कमसे कम ४०० वर्ष पूर्व ही इस विद्या की बहुत बड़ी उन्नति भारतवर्ष में हो चुकी थी।

[क्रमशः]
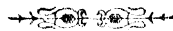
प्रणव की एक पुरानी कहानी।

सन् १८९१ ई० में मुझको बाराबंकी के शहर में एक पण्डित मिले, बचपन में ही उनकी दोनों आखें शीतला के रोग में जाती रही थीं। मैंने सुना कि उनकी धारणाशक्ति अद्भुत थी और बहुत से प्राचीन और बहुमूल्य ग्रन्थ उनको कण्ठस्थ थे। उनसे बातचीत करने पर मुझे उनमें श्रद्धा हुई। उनका कहना यह था कि जिन बातों के केवल पूछने ही से अब मनुष्य नास्तिक और भ्रष्ट समझा जाता है उन सब का उत्तर विस्तारपूर्वक इन प्राचीन ग्रंथों में लिखा है। उदाहरण यह कहा कि बाल्यावस्था में मैंने जब गुरूजी से यह पूछा कि गुरूजी पाणिनि व्याकरण में चौदही सूत्र क्यों हैं पन्द्रह अथवा तेरह क्यों नहीं हैं, अथवा अइउण पहिले क्यों हैं ऋलृक् पहिले क्यों नहीं है, अथवा पहिले सूत्र के अंत में इत् ण क्यों है, क क्यों नहीं, तो इन सब प्रश्नों के उत्तर के स्थान में मार पीट ही पाई। पीछे उनको किसी घूमते फिरते सन्यासी ने लड़के की बुद्धि अच्छी देख के

पता दिया कि यदि तुमको इन बातों का शौक है तो ऐसे ऐसे स्थान में ऐसे पण्डित के पास असल माहेश्वर सूत्र बीस हजार और नारदीय भाष्य साठ से सठ हजार ग्रन्थ है। उन पण्डित के पास जाकर पढ़ो। इस प्रथा का एक श्लोक अब तक बाजार में भी सुन पड़ता है—यान्युज्जहार माहेशात् व्यासो व्याकरणार्णवात्। तानि किं पदरत्नानि भान्ति पाणिनिगोप्यहे। नेत्रहीन लड़का एक और लड़के के साथ बाप के घर से भाग कर वहां पहुंचा और उसको अधिकारी जान कर पण्डित ने उसका आदर किया और ग्रन्थ पढ़ाया। उसने उसको कण्ठ में रख लिया, और तो कोई स्थान रखने का उसके पास था ही नहीं। एक पण्डित के घर से दूसरे पण्डित के यहां के गुप्त प्राचीन गुणों का पता लगा कर और खोज खोज कर यह अमूल्य रत्न अपने स्मृति के भंडार में संचय वह करता रहा। कई लक्ष श्लोक उसने कण्ठस्थ कर लिए। यह सब उन्हीं नेत्रहीन पण्डित ने मुझ से कहा।

ऐसा सुन के मैंने उनसे पूछा कि किसी प्राचीन ग्रन्थ में आपको ब्रह्म पदार्थ का निरूपण इन शब्दों में भी मिला है अर्थात्• अहं एतत् न मैं यह नहीं। कुछ देर वे सक्के में रहे फिर बोले हां इन्हीं अक्षरों से ब्रह्म का निरूपण प्रणववाद नाम के ग्रन्थ में किया गया है और कुछ अंश गद्यपद्यमय उन्होंने पढ़ के मुझ को सुनाया। इससे मेरी इच्छा उस ग्रन्थ को आद्योपांत सुनने की बढ़ी पर बाराबंकी से मेरी बदली शीघ्र ही हो गई और पण्डित महाराज भी अपने घर को बस्ती के जिले में चले गए।

तीन वर्ष पीछे जब मैं बनारस आया तब फिर उनसे १९०० ई० में समागम हुआ। पण्डित गङ्गानाथ झा ने जो अब प्रयाग में म्योर कालेज में संस्कृत के प्रोफेसर हैं प्रणववाद ग्रन्थ १६००० श्लोक संख्यात्मक गद्यपद्यमय उन नेत्रहीन पण्डित के कण्ठोच्चार से लिख लिया। उसी ग्रन्थ का हाल आप से कहता हूं।

इस ग्रन्थ में यह विस्तार से कहा है कि प्रणव के जो तीन अक्षर हैं अ—उ—और म्—उनका अर्थ क्रम से अहम् एतत् और न—यही है।

अब आपलोग इस फिक्र में होंगे कि अहम् एतत् न यह क्या मोअम्मा है और प्रणव के पवित्र शब्द में इस अर्थ में पहिना देने का क्या फल है। हिन्दू मात्र के कान में और मुंह में यह बात है कि सारे संसार का सार वेद है और वेद का सार गायत्री और उसका भी सार और मूल बीज प्रणव है। प्रथम ही से वेद और वेद से संसार की उत्पत्ति है पर इस प्रथा का अर्थ क्या है इस प्रश्न का उत्तर कहीं नहीं मिलता। यह सब उत्तर उस प्राचीन ग्रन्थ में मिलता है यह मैं आपको दिखाने का यत्न करता हूं।

अनन्त जीवों की अनन्त इच्छा एक मात्र यही है कि सुख हो और दुःख न हो। इन अनन्त जीवों ने सुख दुःख भी अनन्त मान रक्खे हैं और इस कारण उपाय और चेष्टा भी अनन्त करते हैं। पर अनुगम करने से सब सुखों का मूलस्वरूप एक और सब दुःखों का भी मूल स्वरूप एक ही है। मैं—अहम्—आत्मा—की वृद्धि—यही सुख का स्वरूप है। इसकी हानि—इसकी सत्ता का नाश—यही

एक दुःख का स्वरूप है। कारण भी इसका स्पष्ट है। यद्यपि जीव उपाधि के भेद से अनन्त है पर मूलस्वरूप उसका भी एक ही है। इसी कारण मनु ने कहा है।

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखं।

जहां जहां अपनापन है, अपना बस चलता है, अपनी हुकूमत है वहां सुख है। जहां जहां पराधीनता, परतन्त्रता, दूसरे की हुकूमत है वहां वहां दुःख है। जीव अपनेको जैसा मान ले उसी प्रकार के अहं की वृद्धि और ह्रास से उस काल में उसको सुख दुःख है। यदि अपनेको धनी मान लिया है तो धन की वृद्धि हानि से सुख दुःख होता है। यदि प्रतिष्ठा में उसका अहंकार है तो प्रतिष्ठा के वृद्धि ह्रास से सुख दुःख होता है। यदि कीड़ा अथवा पशु अथवा पक्षी बना है तो उसी कीटता पशुता और पक्षिता की वृद्धि हानि में वह सुख दुःख अनुभव करता है। यदि वह विषय भोगी है तो विषयिता की वृद्धि हानि है। यदि तपस्वी है वा विद्यानुरागी है तो तपस्विता वा विद्वता की वृद्धि हानि में वह सुख दुःख मानता है। यदि मनुष्य या राजा या देवता है तो मनुष्यता की या राजत्व की या देवत्व की सामग्री की वृद्धि और हानि से सुख दुःख भोगता है। अर्थात् जिस बात का अहङ्कार है उसी अहं के पोषण से सुख और शोषण से दुःख पाता है।

अब सब से बड़ी परतन्त्रता मौत की है। इससे कोई भी बचा नहीं है। राम ने वसिष्ठ से पूछा।

परमेष्ठ्यपि निष्ठावान् ह्रियते हरिरप्यजः।
भवोऽप्यभावमायाति कैवास्था मादृशे जने॥

व्यास ऐसे पिता ने शुक ऐसे पुत्र को यही सलाह दी।

किं ते धनेन किमु बन्धुरेव वा ते
किं ते दारैः पुत्रक यो मरिष्यसि ।
आत्मानमन्विच्छ गुहां प्रविष्टं
पितामहास्ते क्व गताः पिता च ॥

नचिकेता ने यम से यही वर मांगा ।

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये
अस्तीत्येके नायमस्तीति चान्ये।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं
वराणामेष वरस्तृतीयः ॥

यदि मौत के भय से छूटे तो जीव सब परतन्त्रता से छूटे और तभी इसको स्वतन्त्रता सिद्ध हो । तब यह कह सके कि मैं सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापी हूं । तभी इस को परमानन्द हो ।

इस मौत के भय के छूटने के लिये बड़े बड़े विचार मनुष्यों ने किए । एक परमेश्वर को माना । न्याय वैशेषिक दर्शन बना । उससे सन्तोष नहीं हुआ । नास्तिक दर्शन बने । सांख्य योग बने । पुरुष और प्रकृति दो अनन्त अनादि पदार्थ माने गए। इससे भी सन्तोष न हुआ । मतलब तो सदा यही रहा कि एक ही पदार्थ हो, दूसरा न हो, और वह एक पदार्थ स्वयं अहम् आत्मा मैं हो कि दूसरे का भय न हो, तब तो स्वतन्त्रता सिद्ध हो । वेदान्त दर्शन बना । एक आत्मा और माया से अनन्त उपाधि और अनन्त सुख दुःख का मिथ्या जञ्जाल, वह एक आत्मा मृत्यु से परे, यहां तक तो वेदान्त दर्शन आया, और बहुत दूर आया ।

संसार के दो विभाग कर डाले, एक मैं और एक यह सब कुछ जो मैंसे अलग है। और यह कहा कि मैं ही तो सच है और यह सब कुछ मिथ्या है। पर शङ्का फिर भी रह गई। यह कहां से आया, क्यों आया। मैं का और यह का संबन्ध मिथ्या ही सही पर क्यों हुआ और कैसे हुआ। और यदि एक बेर हुआ तो फिर फिर क्यों नहीं होगा। क्या आशा कि इससे कभी पूरा छुटकारा हो जायगा। जो वेदान्त के महावाक्य प्रचलित हैं उनसे पूरा पूरा सन्तोष नहीं होता। कोई तो आत्मा को क्रियावान् सिद्ध करते हैं। सोऽकामयत बहु स्यां प्रजायेय। तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत् इत्यादि।

कोई केवल निष्क्रिया सिद्ध करते हैं। अहं ब्रह्मास्मि-नेह नानास्ति किंचन इत्यादि।

पर इन दोनों प्रकार के महावाक्यों से हमारा संतोष नहीं होता। हमको तो ऐसा वाक्य चाहिए कि जिसमें सारा संसार हमारी मुट्ठी में बन्द हो जाय। ब्रह्म की अर्थात् मैं की निष्क्रियता में भी फर्क न आवे (क्योंकि यदि उसमें क्रिया पैदा हुई तो यह किसी न किसी कारण के परतन्त्र हो जायगा और परिवर्तनशील होकर मौत के मुंह में भी पड़ सकेगा) और साथ ही इसके संसार की सक्रियता जो प्रति क्षण प्रत्यक्ष देख पड़ती है वह भी समझ में आजाय। मिथ्या शब्द का अर्थ केवल आंख बन्द करके इंकार ही का न रह जाय पर ठीक ठीक समझ में आ जाय। तो प्रणव वाद का ग्रन्थ कहता है कि अहम् एतत् न-मैं यह नहीं। यह ऐसा महावाक्य है कि जिसमें दोनों बातें सिद्ध होती

हैं। यदि इन तीनों शब्दों को एक साथ लीजिए तो केवल एक एकाकार अखण्ड निष्क्रिय संवित् देख पड़ता है। मैं यह नहीं इसमें कोई क्रिया नहीं है, कोई परिवर्त्त नहीं है। केवल एक बात सदा के लिये स्थिर है अर्थात् केवल मैं है और मैं के सिवाय और कुछ यह नहीं है। अथवा मैं अपने सिवाय और कोई चीज़ इस शक्ल का नहीं हूं। यदि इस वाक्य के दो खण्ड कीजिए पहिले मैं यह और फिर यह नहीं होता है। तो इसी वाक्य में संसार की सब कुछ क्रिया इसके सम्पूर्ण परिवर्त्त का तत्त्व मौजूद है। मैं यह हूं यही जीवन के शरीरधारण का स्वरूप है। मैं यह नहीं हूं यही मरण के शरीरत्याग का स्वरूप है। क्रिया मात्र का यही द्वन्द्वस्वरूप है। सब जोड़ा जोड़ा चलता है—लेना और छोड़ना, बढ़ना और घटना, हँसना और रोना, जीना और मरना, उपाधि का ग्रहण करना और उसमें अहंकार करना और फिर उसको छोड़ कर उससे विमुख होना, पहिले सुख मानना और उसी वस्तु में पीछे दुःख मानना। अध्यारोप और अपवाद, प्रवृत्ति और निवृत्ति इन दो शब्दों में संसरण का तत्त्व सब कह दिया है। यदि संपूर्ण दृष्टि से देखिए तो इस वाक्य में सम्पूर्ण संसार अनादि और अनन्त सर्वकाल और सर्वदेश के लिये शिला के ऐसा बन्द है। यदि खण्ड दृष्टि से देखिए तो इसमें क्रिया और क्रम है। रामायण की पोथी समग्र यदि हाथ में उठा लीजिए तो राम का जीवनवृत्तान्त संपूर्ण इसमें प्रति क्षण मौजूद है। यदि एक एक पन्ना देखिए तो क्रम पैदा होता है। वैसी ही इस वाक्य की दशा है। यदि इसको समग्र उठा लीजिए तो सब संसार सर्व सर्वत्र सर्वदा इसमें

हैं। यदि एक एक यह लीजिए तो अनन्त क्रम पैदा हो रहा है।

इसकी बारीकियों के विचार का यह अवसर नहीं है, केवल इतना ही कह के आगे चलता हूं कि जो जो मत इस समय प्रचलित हैं उनका सबका तत्त्व इस वाक्य में मौजूद है। उन सब के विरोध का परिहार इसीमें हैं। और जो जो कमी इनमें से एक एक में है वह सब इसमें पूरी हो जाती है। ज्ञाता और ज्ञेय, विषय और विषयी, भोक्ता और भोग्य, कर्त्ता और कार्य, जीव और जड़, आत्मा और अनात्मा, मैं और यह, दोनों इसमें मौजूद हैं। इस दोनों का स्वरूप भी इसमें है अर्थात् एक का सत् और दूसरे का असत् इनका सम्बन्ध भी इसीमें हैं अर्थात् निषेध वा इंकार, और यह बात भी इसी में पैदा होती है कि जिस जिस चीज़ का इंकार किया जाता है उसको पहिले फर्ज़ कर लिया जाता है। पहिले यह माना जाता है कि उसका सम्भव है और तब उसके वाक़ए का इंकार होता है। इसी से असत चीज़ पर सत्ता का मिथ्या आरोप भी देख पड़ता है।

अब इस वाक्य से जो नतीजे पैदा होते हैं उन्हें थोड़े में मैं आपसे कहता हूं।

प्रणव के तीन अक्षरों का अर्थ तीन शब्दों से किया गया और एक मूल महावाक्य निकला जो परमात्मा अथवा ब्रह्म अथवा संसार का स्वरूप और स्वभाव और प्रकार दिखाता है। इन तीन शब्दों के जोड़ तोड़ और उलट फेर से अवान्तर महावाक्य निकलते हैं। एक एक महावाक्य संसार के एक एक विभाग और प्रकार का नियम वा कानून

है । उसीके अनुसार संसार का वह विभाग चलाया जाता है । जैसे आज कल के किसी राज्यप्रबन्ध में बीसियों अथवा पचासों सीग़े और महकमें हैं और हर एक सीग़े और महकमें के चलाने के लिये उसूल और कानून मुकर्रर हैं और उन्हीं नियमों के अनुसार सर्कारी नौकर उन विभागों का काम चलाते हैं । वैसे ही एक एक महावाक्य एक एक ईश्वरी कानून की किताब का हृदय है और देवता और ऋषि और जीवनमुक्त इत्यादि जो अधिकारी हैं वे उन कानूनों को अमल में लाते हैं और उनके अनुसार संसार का काम चलाते हैं ।

एक शब्द अदालत कहने से सैंकड़ों न्यायालय और हज़ारों कर्मचारी और लाखों वादी और प्रतिवादी और साखी और दफ़्तरों की सूचना होती है । एक शब्द माल से एक बड़ा भारी प्रबन्ध देश भर की आमदनी खर्च का आंख के सामने आ जाता है । एक एक शब्द फौज अथवा शिक्षा अथवा तिजारत अथवा खेतीबारी कहने से देश के शासन और जीवन के एक एक बड़े अङ्ग का ज्ञान होता है, वैसे ही एक एक महावाक्य से संसार मात्र के एक एक प्रकार का ज्ञान और अमल होता है ।

[क्रमशः]
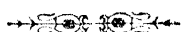
सिकन्दरशाह ।

मेसीडोन प्रदेश यूनान देश के नक्शों में एजियन (Egean sea) समुद्र के शीस पर सुशोभित है । मेसीडोन का सब से प्रथम बादशाह करैनस (Caranus) था । इसने मेसीडोन में

(ई० पू०) ७९४ में अपना राज्य स्थापित किया। करेनस से २२वीं पीढ़ी में जगद्विजेता सिकन्दरशाह मेसीडोन का बादशाह हुआ।

उस समय में जब कि यूनान देश के प्रत्येक प्रदेश वा शहर राजशासन से प्रजाप्रबन्ध सम्बन्धी शासन में परिवर्तित हो रहा था करेनस ने मेसीडोन में अपना राज्य स्थापित किया। उसकी सन्तान में दिन प्रति सभ्यता और सामाजिक सुधार सम्बन्धी नियमों का प्रचार होने लगा, यहां तक कि दूसरा सिकन्दर जो कि फ़ारिस की सेना में एक सेनानायक की भांति सेवा करने को विवश था, समय पाकर मेसीडोन का स्वतन्त्र स्वामी बन गया। सिकन्दरशाह दूसरे के १९ पुत्र थे। उस समय उसने अपने पुत्रों में से फिलिप को थीबीज में कर्ज अदा करने के लिये भेजा। फिलिप ने थीबीज में जाकर वहां की सभ्यता आचार विचार और शासन प्रणाली के नियम का मानचित्र अपने हृदय में इस प्रकार अंकित कर लिया कि अपने भाई के मरने पर मेसीडोन के तख़्त पर बैठते ही उसने उसी छाया के आधार पर शासन करके मेसीडोन को भूविख्यात कर दिया। फिलिप (ई० पू०) ३६० में राज्याधिकारी हुआ। उसने अपनी प्रजा में आध्यात्मिक और युद्ध विद्या सम्बन्धी दोनों प्रकार की शिक्षाओं का प्रचार इस योग्यता से किया कि वे मेसीडोनियन जो कि एक समय में निरे असभ्य और जंगली थे थोड़े ही समय में समस्त यूनानवासी मनुष्यों में शिरोमणि कहे जाने योग्य हो गए। फिलिप ने एप्रियस के बादशाह की बेटी ओलंपियस से ब्याह किया। ओलंपियस बनदेवी डोनियस

की बड़ी भक्त थी । एक समय जब कि वह शृंखलाबद्ध सर्प-माला से लपटी हुई सुन्दर अंगूर की लहलही लताओं के मध्य में भक्तिरस में डूबी हुई आनन्द में मग्न होकर नृत्य कर रही थी फिलिप उसे देख कर उसके अकृत्रिम सौन्दर्य्य पर ऐसा मोहित हो गया कि उसने राज्य सिंहासन पर सुशोभित होते ही ओलंपियस को अपनी पटरानी बना लिया ।

सिकन्दर का जन्म और बाल्यकाल ।

(ई० पू०) ३५६ जुलाई मास में पीला नगर में ओलंपियस के गर्भ से सिकन्दरशाह ने जन्म लिया । जिस समय सिकन्दर का जन्म हुआ उस समय राज्यवंश की आराध्य देवी अरटिमिस के मन्दिर में आग लगी थी । फिलिप के प्रसिद्ध सेनानायक पेरमेनियो ने इलेरियन्स पर विजय प्राप्त की और फिलिप के घोड़े ने ओलंपिक के खेल में जै प्राप्त की । इससे ज्योतिषियों ने ऐसे समय में जन्मे हुए बालक सिकन्दर का भविष्य में एक होनहार और प्रतापशाली बादशाह होना स्वीकार किया । कहा जाता है (१) कि विवाह रात्रि के एक दिन प्रथम ओलंपियस ने स्वप्न में देखा

---

(१) जिस पुस्तक से मैंने इस कथा को लिया है उसमें यद्यपि "कहा जाता है" ऐसे वाक्य का प्रयोग नहीं किया गया है किन्तु यह एक ऐसा विषय है कि विश्वासनीय होने पर भी ऐतिहासिक घटना से सम्बन्ध नहीं रखता-अतएव जब कि मैं किसी विशेष लेख का अनुवाद न कर के केवल उसके आधार पर ही लिख रहा हूं तो मुझे अपने विचार से इस अवसर पर "कहा जाता है" का प्रयोग करना उचित जान पड़ा ।

कि एक अग्नि-प्रभा-समूह अकस्मात उसके पेट पर गिरा उससे पुनः एक उज्वल जाज्वल्यमान प्रकाश की शिखा प्रगट होकर प्रचण्ड प्रदीप्ति से चारों ओर फैल कर सहसा शान्त हो गई । इधर कुछ दिन पश्चात् फिलिप ने स्वप्न में देखा कि उसने अपने हाथ से ओलंपियस के गर्भ स्थान पर सिंह की छापवाली मुहर छापी है । उनमें से बहुतों ने तो इस स्वप्न को ओलंपियस के दुश्चरित्रा होने की दैविक सूचना बतलाई परन्तु अरिस्टेडर नामक एक वृद्ध विद्वान ने कहा कि आपका स्वप्न ओलंपियस के गर्भ धारण करने की सूचना है क्योंकि एक खाली चीज पर व्यर्थ मोहर नहीं लगाई जाती और ऐसे गर्भ से जो पुत्र जन्मेगा वह सिंह के समान बलवान और भूविख्यात प्रचण्ड प्रतापशाली बादशाह होगा ।

[क्रमशः]

सभा का कार्यविवरण ।

(१)

प्रबन्धकारिणी सभा ।

बृहस्पतिवार ता० ४ जूलाई १९०१-सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

(१) बाबू श्यामसुन्दर दास—सभापति ।

(२) रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स ।

(३) पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० ।

(४) बाबू वेणीप्रसाद।
(५) बाबू कालिदास।
(६) बाबू माधवप्रसाद।
(७) बाबू गोपालदास।

१ गत अधिवेशन (ता० १८ जून १९०७) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

२ बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि कुँवर कन्हैयाजू का वेतन ता० १ जूलाई १९०७ से २०) रु० मासिक कर दिया जाय।

३ मंत्री ने सूचना दी कि गत वर्ष के बजेट में व्यय के लिये जितनी स्वीकृति हुई थी उससे अधिक व्यय नीचे लिखे अनुसार हुआ है अर्थात् डाकव्यय में ११)॥। अधिक व्यय, पुस्तकों के लिये पुरस्कार में २०) रु० अधिक, फुटकर व्यय में ९८॥–)१०½ अधिक और व्याज में ४॥)।

निश्चय हुआ कि यह अधिक व्यय स्वीकार किया जाय।

४ बाबू माधव प्रसाद का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका त्रैमासिक के बदले मासिक कर दी जाय और प्रति मास उसके चार फ़ार्म प्रकाशित हुआ करें। इसमें जो अधिक व्यय पड़े उसके लिये ३) रु० और १॥) रु० चन्दा देने वाले सभासदों के चन्दे में ॥) वार्षिक बढ़ा दिया जाय।

बाबू श्यामसुन्दर दास ने कहा कि पत्रिका का मासिक होना आवश्यक है परन्तु इसके लिये सभासदों का चन्दा

॥) वार्षिक बढ़ाना उचित नहीं होगा। इसके व्यय के लिये जो महाशय १॥) रु० वार्षिक देते हैं उनसे प्रार्थना की जाय कि वे ३) रु० वार्षिक देकर पत्रिका और ग्रन्थमाला दोनों लें और १॥) रु० वार्षिक चन्दा तोड़ दिया जाय।

वोट लेने पर सम्मति का समविभाग हुआ जिस पर सभापति ने निश्चय किया कि इस विषय का निर्णय सभापति की निर्णायक सम्मति द्वारा होना उचित नहीं है अतएव इस पर अगले अधिवेशन में पुनः विचार किया जाय।

५ आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित बजेट स्वीकृत हुआ।

आय		व्यय	
गत वर्ष की बचत	४०३)८	कार्यकर्त्ताओं का वेतन	८६०)
सभासदों का चन्दा	१९००)	छपाई ...	२१००)
पुस्तकों की बिक्री	१६००)	पारितोषिक ...	२२०)
गवर्न्मेंट की सहायता	८००)	पुस्तकालय ...	५१०)
पृथ्वीराजरासो की बिक्री	१०००)	पृथ्वीराजरासो	१२५०)
स्थायी कोश ...	५००)	स्थायी कोश ...	५००)
नागरी प्रचार ...	५०)	पुस्तकों की खोज	६००)
फुटकर ...	११०)	नागरी प्रचार ...	२००)
ब्याज ...	५)	डाकव्यय ...	३००)
राजा साहब भिनगा की सहायता ...	३००)	पुस्तकों के लिये पुरस्कार	४५)
		फुटकर ...	२००)
पारितोषिक ...	४०)	उधार ...	६०००)
पुस्तकालय का चन्दा	३५०)	मरम्मत ...	१००)
राधाकृष्णदास स्मारक	४०१॥)	असबाब ...	२०)
		राधाकृष्णदास स्मारक	५००)
	११६१॥)८		१३५६५)

व्यय का ब्योरा।

१ कार्यकर्ताओं का वेतन।

सहायक मंत्री ...	३६०)
क्लर्क	१४४)
लेखक	१०८)
चपरासी	७२)
दफ़्तरी	८४)
चौकीदार	६०)
मेहतर	१२)
पंखाकुली	२०)
	८६०)

२ छपाई कागज सहित।

मेडिकलहाल प्रेस का देना	४०)
भारत प्रेस का देना	३००)
ग्रन्थमाला ...	४००)
पत्रिका ...	५५०)
रिपोर्ट ...	१५०)
प्रबोधचन्द्रिका ...	२५०)
विशेष पुस्तकें ...	३००)
फुटकर ...	११०)
	२१००)

३ पारितोषिक।

ग्रन्थोत्तेजक पारितोषिक	५०)
युक्तप्रदेश का पारितोषिक हस्तलिपि के लिये	३०)
ग्वालियर हस्तलिपि पारितोषिक ...	१०)
ललिता पारितोषिक	५)
सभा के नियमित मेडल	२५)
नागरीप्रचारपारितोषिक	२५)
डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल ...	३५)
कालिदास रजत पदक	२०)

४ पुस्तकालय।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका	१२०)
नवीन पुस्तकें और नकशे	३००)
पुस्तकाध्यक्ष का वेतन	१२०)
जिल्दबन्दी	१०)
पंखाकुली	२०)
	१५०)

५ पृथ्वीराजरासो।

पुराने बिलों का देना ...	४०)
वेतन	२५०)
नई छपाई	६००)
	१५०)

६ स्थायी कोश ।

राधाकृष्णदास की जीवनी के लिये मेडल	२०)	व्याज	३६०)
		फुटकर	१४०)
	२२०)		५००)

१ निश्चय हुआ कि यूरोपीय दर्शन सभासदों को आधे मूल्य पर दिया जाय ।

२ हल्दीघाट के युद्ध पर आई हुई ४ कविताएं उपस्थित की गईं ।

निश्चय हुआ कि इनकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब कमेटी बना दी जाय —

पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०, पण्डित श्रीधर पाठक, महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, पण्डित किशोरीलाल गोस्वामी, उपाध्याय पण्डित बद्रीनारायण चौधरी ।

८ निश्चय हुआ कि शेष कार्यों के लिये प्रबन्धकारिणी सभा का अधिवेशन सोमवार ता० ८ जुलाई को सन्ध्या के ५॥ बजे सभाभवन में हो ।

बेणीप्रसाद,
उपमन्त्री ।

(२)

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ८ जुलाई १९०७ सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

(१) बाबू गोविन्द दास—सभापति ।

(२) रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स ।

(३) बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० ।

(४) बाबू वेणी प्रसाद ।

(५) बाबू कालिदास ।

(६) बाबू माधव प्रसाद ।

(७) पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०

(८) बाबू गोपालदास ।

१ सन् १९०६–०७ की रिपोर्ट पढ़ी गई और आवश्यक परिवर्त्तनों के उपरान्त स्वीकृत हुई ।

२ नागरीप्रचारिणी पत्रिका को मासिक करने के प्रस्ताव उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि ये आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किए जांय ।

३ पण्डित रामनारायण मिश्र ने प्रार्थना की कि उन्हें सभा का ब्लैक बोर्ड मंगनी दिया जाय ।

निश्चय हुआ कि उनकी प्रार्थना स्वीकार की जाय ।

४ पण्डित रामनारायण मिश्र ने सूचना दी कि अगले वर्ष के लिये वे डाक्टर छन्नूलाल मिमोरियल मेडल का विषय "सौरीसुधार" (Treatment and care in the lying-in room) रक्खा चाहते हैं ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय ।

५ मिस्टर टहलराम गङ्गाराम का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि पुस्तकालय के अनावश्यक समाचारपत्र आदि उनके हाथ बेंच दिए जांय ।

निश्चय हुआ कि यह पत्र पुस्तकालय के निरीक्षक के

पास भेज दिया जाय और उन्हें लिखा जाय कि वे जैसा चाहें इसका प्रबन्ध करें।

५ निश्चय हुआ कि इम्पीरियल गज़ेटियर का नया संस्करण कपड़े की जिल्दवाला ८०) रु० पर खरीद लिया जाय।

७ सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

वेणीप्रसाद,
उपमन्त्री।
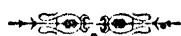
वार्षिक अधिवेशन।

मङ्गलवार ता० १६ जूलाई १९०७ सन्ध्या के ५॥ बजे।

स्थान--सभाभवन।

१ पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणी सभा के सभासदों के चुनाव के लिये उपस्थित सभासदों में निर्वाचनपत्र बांटे गए और पैंतालीसवें नियम के अन्तर्गत दूसरे उपनियम के अनुसार निर्वाचनपत्रों का परिणाम देखने के लिये सभापति ने पण्डित रामनारायण मिश्र और बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद को नियत किया।

२ उपमंत्री ने सभा का चौदहवां वार्षिक विवरण पढ़ा और वह सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

३ निर्वाचनपत्रों का निम्नलिखित परिणाम सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

सभापति।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी।

उपसभापति।

बाबू गोविन्द दास। बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०।

मन्त्री।

बाबू जुगुलकिशोर।

उपमन्त्री।

बाबू वेणीप्रसाद।

प्रबन्धकारिणी सभा के अन्य सभासद।

पञ्जाब से—लाला खुशीराम एम० ए०।

संयुक्त प्रदेश से—आनरेबल पण्डित मदनमोहन मालवीय बी० ए० एल०एल० बी०।

पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०।

मध्यप्रदेश से—पण्डित माधव राव सप्रे बी० ए०

राजपुताना और मध्यभारत से—कुंअर फतहलाल मेहता

बङ्गाल और बिहार से—पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र।

बाबू श्यामसुन्दर दास ने निवेदन किया कि सभा ने उन्हें जो उपसभापति चुना है उसको स्वीकार करने से यदि वे क्षमा किए जांय तो वे सभा का उपकार मानेंगे। उन्होंने कहा कि वे जिस प्रकार सभा की सेवा कर रहे हैं उसमें उनके उपसभापति रहने की आवश्यकता नहीं है वरन् वे उसका कार्य करते रहेंगे जैसा कि उन्होंने अब तक किया है चाहे वे उपसभापति रहें वा नहीं।

कई सभासदों ने इसका विरोध किया और अन्त में निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दर दास की प्रार्थना स्वीकार नहीं की जा सकती।

४ उपमंत्री ने आगामी वर्ष के लिये बजेट उपस्थित किया और उसे पढ़ कर समझाया।

बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

५ बाबू श्यामसुन्दर दास ने प्रस्ताव किया कि सभा को इस समय ६०००) रु० का ऋण है जिसको चुकाने के लिये सभासदों को विशेष उद्योग करना चाहिए।

इस पर बाबू भगवतीशरण सिंह ने २५) रु० और पण्डित रामशंकर व्यास ने ५) रु० सभा के स्थायी कोश में देना स्वीकार किया।

६ बाबू श्यामसुन्दर दास ने प्रस्ताव किया कि बाबू जुगुलकिशोर ने इस वर्ष सभा के उपमंत्री और मंत्री रह कर जिस उत्साह और परिश्रम से कार्य किया है उसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया जाय और उनकी रुग्नावस्था पर दुःख प्रगट किया जाय।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

७ बाबू कालिदास के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दर दास इस सभा पर जो आन्तरिक प्रेम रखते हैं और उन्होंने इस वर्ष उपसभापति रह कर उस की जितनी सेवा की है वह सब पर विदित है और इसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया गया।

८ प्रबन्धकारिणी सभा के नगरस्थ सभासदों के चुनाव का निम्नलिखित परिणाम उपस्थित किया जाय।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, मिस्टर ए० सी० मुकर्जी, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, बाबू माधव प्रसाद, बाबू गौरी-शङ्कर प्रसाद, मिस्टर गुन्नीलाल शा, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू घनश्यामदास ।

९ सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई

वेणीप्रसाद,

उपमन्त्री ।

ब्राह्मीलिपि

स्वर

अ	आ	इ	उ	ऊ
𑀅	𑀆	𑀇	𑀉	𑀊
ए	ऐ		ओ	अं
𑀏	𑀐		𑀑	𑀅𑀁

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ
𑀓	𑀔	𑀕	𑀖	𑀗
च	छ	ज	झ	ञ
𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜
ट	ठ	ड	ढ	ण
𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡
त	थ	द	ध	न
𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦
प	फ	ब	भ	म
𑀧	𑀨	𑀩	𑀪	𑀫

य	र	ल	व
𑀬	𑀭	𑀮	𑀯
श	ष	स	ह
𑀰	𑀱	𑀲	𑀳

नएअक्षर।

ई	औ	ऋ
𑀈	𑀒	𑀋

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

भाग १२]　　　　अगस्त १९०७ ।　　　　[संख्या २

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
　　बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल ।
　　निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
　　सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न ।
　　राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र ।

विविध विषय ।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में एक उजड़े हुए स्थान पर ज़मीन के नीचे दबे हुए बहुत से ऐसे चिन्ह मिले हैं जिनसे यह जान पड़ता है कि किसी समय में वहां बौद्धों की बस्ती रही होगी । पुराने मठ और स्तूप के टूटे हुए हिस्से मिले हैं ।

एक दीवार पर पुराने समय का बना हुआ बड़ा ही सुन्दर पत्थर का काम है।

भारतवर्ष के विद्वान और देशहितैषी लोगों में यह विचार फैल रहा है कि भारतवर्ष में एक भाषा का प्रचार होना बड़ा आवश्यक है। इससे बड़ा भारी लाभ यह होगा कि सारे देश के लोग परस्पर एक दूसरे पर अपने मन के भावों को सहजही में प्रगट कर सकेंगे और इससे आपस में एक प्रकार से सहानुभूति और प्रीति उत्पन्न होगी।

कुछ लोगों का अनुमान और कथन है कि यह भाषा अंग्रेजी होगी। इसमें सन्देह नहीं कि भारतवर्ष में अंग्रेजी भाषा का प्रचार दिनोदिन बढ़ता जा रहा है पर इससे यह अनुमान कर लेना कि एक समय वह आवेगा जब सब भारतवासियों की मातृभाषा अंग्रेजी हो जायगी ठीक नहीं जान पड़ता। भारतवर्ष में अंग्रेजी का प्रचार हुए १५० वर्ष के लगभग हुआ। इन डेढ़ सौ वर्षों में सन् १९०१ की मनुष्यगणना के अनुसार ११ लाख २५ हजार अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग भारतवर्ष में हुए हैं। यदि इससे हिसाब लगाया जाय तो २, ३, हजार वर्षों में ३३ करोड़ भारतवासी अंग्रेजी पढ़ जांयगे। यह कहा जा सकता है कि ज्यों ज्यों अंग्रेजी का प्रचार फैलता जायगा त्यों त्यों उसके पढ़े लिखे लोगों की संख्या बढ़ती जायगी। यह ठीक है पर इससे भी १००० वर्षों से कम लगने की सम्भावना नहीं है और फिर कौन कह सकता है कि इतने दिनों मे क्या हेर फेर न हो जाय।

इससे भारतवासी विद्वानों और अनुभवी लोगों का

अनुमान है कि सारे भारतवर्ष की मातृभाषा कोई यहाँ की भाषा होनी चाहिए और उसके योग्य केवल हिन्दी ही है जो अब भी भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक समझी जाती है। यह अवश्य नहीं कहा जा सकता कि जो हिन्दी हम आज कल लिख और बोल रहे हैं वही रहेगी अथवा इसके शब्दभंडार में कुछ हेर फेर हो जायगा।

अस्तु इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये बड़े बड़े लोगों ने यह निश्चय किया है कि पहिले भारतवर्ष की सब भाषाओं के लिये एक अक्षर होने चाहिएं। जब यह हो लेगा और भारतवासी एक दूसरे की भाषा को सहज में पढ़ लिख सकेंगे तो समय पाकर एक भाषा के होने का मार्ग सुगम हो जायगा।

इस एकाक्षर-प्रचार के पक्षपाती अंग्रेज भी हैं। अभी थोड़े दिन हुए कि मिस्टर जे० नोल्स ने एक लेख पुस्तकाकार छपवा कर प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने यह दिखाया है कि भारतवर्ष की भाषाओं का एकही प्रकार के अक्षरों में लिखा जाना कितना आवश्यक और उपयोगी है। उन्होंने इस प्रश्न के हल करने के तीन उपाय बताए हैं (१) रोमन अक्षरों का प्रचार (२) अंधलिपि का प्रचार (३) भारतवर्ष की प्राचीन ब्राह्मी लिपि का प्रचार।

रोमन अक्षरों के प्रचार में अनेक कठिनाइयां हैं। अक्षर आवाज के चिन्ह हैं। ये चिन्ह ऐसे होने चाहिएं कि उनके देखते ही यह ज्ञान हो जाय कि ये किस आवाज के चिन्ह हैं। रोमन अक्षर क्या, समस्त पृथ्वी पर देवनागरी अक्षरों को छोड़ कर दूसरे कोई अक्षर ऐसे नहीं हैं जिसमें यह गुण

पाया जाय। यदि "ए" कहते हैं तो वह चिन्ह होता है "अ" आवाज का। फिर बहुत सी आवाजों के चिन्ह नहीं हैं और एक आवाज के लिये कई चिन्ह भी हैं। जिन अक्षरों में ये मुख्य मुख्य दोष बने हुए हैं उनके प्रचार से कोई लाभ नहीं हो सकता।

प्राचीन समय में अक्षर लिखने के लिये वे सब सामान नहीं थे जो आज कल प्राप्त हैं। इसलिये जो बहुत पुराने लेख मिले हैं वे प्रायः पत्थर या ईंटों पर खुदे हैं। पत्थर और ईंटें कड़े पदार्थ हैं और इन पर अक्षर खोदने के लिये किसी कड़ी धातु (जैसे लोहे) के औजार की आवश्यकता पड़ती है। इसका फल यह होता है कि जब किसी कड़ी चीज पर एक कड़ी धातु के औजार से कुछ खोदा जाय तो प्रायः अक्षर सीधे या कोण लिए हुए होते हैं। यही बात ब्राह्मी लिपि और अंधलिपि में भी है। ब्राह्मी लिपि का नमूना इस पत्रिका के साथ में दिया जाता है। इसमें वे अक्षर भी दिए गए हैं जो ब्राह्मी लिपि में नहीं है और जिनके लिये मिस्टर नोल्स ने नए चिन्ह निकाले हैं। ये अक्षर ई औ और ऋ हैं। अक्षरों को शीघ्र लिखने के लिये उनका रूप गोल होना चाहिए। यह गुण इन अक्षरों में नहीं है। इसलिये इनके प्रचार का उद्योग व्यर्थ है। यदि आवश्यकता हो तो देव-नागरी अक्षरों को घटा बढ़ा कर ठीक कर लेना चाहिए। इन अक्षरों का इस समय सारे देश में प्रचार है। फिर धर्म्म ग्रन्थों के इन्हींमें छपने और लिखे जाने से भारतवासियों की इनमें श्रद्धा है। ऐसे अक्षरों को छोड़ कर नए और बेढंगे अक्षरों के प्रचार में सफलता की बहुत कम आशा है।

ज्योतिष प्रबन्ध।
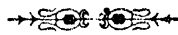
[पहिली संख्या के आगे]

अब दूसरे मत पर विचार करना है। इस विषय पर यदि लिखा जाय तो एक वृहद् ग्रन्थ ही अलग बन जाय। इसलिये बहुत ही संक्षेप में यहां दो तीन बातें लिखी दी जाती हैं (यदि अधिक देखना हो तो मेरे बनाए "हमारी प्राचीन ज्योतिष" नामक ग्रन्थ को अवलोकन कीजिए)। हम अधिक विस्तार इस विषय पर यहां नहीं किया चाहते अतएव हम पाश्चिमात्य पुरातत्ववेत्ताओं के वचन को मान कर उक्त कल्पना पर विचार करते हैं। इसमें तो सन्देह नहीं कि वैदिक काल सन् ई० से पूर्व २००० वर्ष के लगभग का माना गया है और ऋग्वेद में नक्षत्रों के नाम तक लिखे मिलते हैं (देखो मि० रमेशचन्द्रदत्त का इतिहास (Civilization in ancient India)। नक्षत्रविभाग उसी समय किया जा सकता है जब कि सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों की गति तथा मास और वर्ष की गणना ठीक ठीक जान ली गई हो। अतएव ज्योतिष विद्या का प्रचार भारतवर्ष में ५००० वर्ष से कम का कदापि नहीं हो सकता। इस युक्ति के अतिरिक्त भारतवर्ष से कई ज्योतिष सारिणियां यूरोपियन पण्डितगण ले गए हैं जिनकी जांच परताल चिसनी और बेली ऐसे विद्वानों ने बड़े विचार के साथ की है। इन सारिणियों की छान पछोड़ करने के उपरान्त बेली साहब के लेख के आधार पर एक साहब लिखते हैं।

"1. All these tables have different epochs, and differ in form, but also constructed in different ways, yet they all evidently belong to the same astronomical system......The meridians are all referred to that of Benares, the celebrated observatory......

The fundamental epoch of the Indian astronomy is a conjunction of the Sun and Moon, which took place at no less a distance of time than 3102 B. C.

Mr Bailly informs us that according to our most accurate astronomical tables a conjunction of the Sun and the Moon *actually did happen* at that time. The Indians at present calculate eclipses by the mean motion of the Sun and the Moon observed 5000 years ago; and with regard to the Solar motion their accuracy far exceeds that of the best Grecian astronomers. Their theory of the planets is much better than that of Ptolemy, as they donot suppose the Earth to be the centre of the celestial motion and they believe that the Mercury and Venus turn round the Sun.

Mr Bailly informs us that their astronomy agrees with the most modern discoveries of the decrease of the obliquity of the ecliptic, the acceleration of the motion of the Equinoctial points &c, &c."

अर्थात् ये सब उक्त सारिणियां पृथक पृथक कालावधि की हैं। इनका रचनाक्रम भी न्यारा है और इनकी गणना भी भिन्न भिन्न रीति से की गई है तथापि इनके ज्योतिषक सिद्धान्त और नियम स्पष्ट रूप से एक ही हैं।

इन सभों में काशी का याम्योत्तर वृत्त मान कर गणना की गई है जो एक मुख्य और प्रसिद्ध नक्षत्रादि दर्शनस्थान माना जाता था।

भारतवर्षीय ज्योतिष की मुख्य प्रकल्पना का कार्य सूर्य और चन्द्र की युक्ति वा संयोग.काल से है जिसको हुए सन् ई० के पूर्व ३१०२ वर्ष से कम नहीं हुआ।

मि० बेली साहब ने हमे लिखा है कि हमारी (अङ्गरेजी) शुद्ध सारिणी के अनुसार सूर्य और चन्द्र की संयुति निश्चय उस समय में हुई थी। हिन्दुस्तानी लोग अब भी ग्रहण इत्यादि की गणना सूर्य और चन्द्र की उस मध्यम गति से करते हैं जिसका निरीक्षण और निरूपण ५००० वर्ष पहिले उन्होंने किया था और सूर्य की गति तो इनकी यूनानी ज्योतिष में दी हुई गति से कहीं बढ़ चढ़कर शुद्ध है। और ग्रहों के विषय में इनके सिद्धान्त तो टालेमी के सिद्धान्तों से बहुत ही उत्तम हैं, क्योंकि वे (हिन्दु) लोग पृथ्वी को नभचर की गति का केन्द्र नहीं मानते और उनके मत में बुद्ध और शुक्र ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

मि० बेल ने हमें यह भी सूचना दी है कि इनके (हिन्दुओं के) सिद्धान्त हमारे (अङ्गरेजों के) नए आविष्कृत सिद्धान्तों अर्थात् रविपरमाक्रान्ति (Obliquity of ecliptic) और सायनसम्पात का गत्यन्तर (Acceleration of the equinoctial points) इत्यादि से सहमत हैं।"

उक्त बातों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि भारतवर्ष में ज्योतिष विद्या की वृद्धि ५००० वर्ष से कम की नहीं है और पाइथागोरस को हुए लगभग २४०० वर्ष हुए हैं। फिर वह कैसे इस विद्या को भारतवर्ष में फैलाने वाला कहा जा सकता है। विचार करने की बात है कि यूनानियों में ज्योतिष की नींव थेलीज़ (Thales) के समय से स्वयं पाश्चि-

मान्य पण्डितगण मानते हैं और थेलीज़ को हुए २५०० वर्ष हुए, फिर भला भारतवासियों को ज्योतिष सिखाने वाले यूनानी कैसे कहे जा सकते हैं—पाठक स्वयं निर्णय करें।

यूरोप देश में ज्योतिष का प्रचार।

यूरोप देश में इस विद्या का बीज तेरहवीं शताब्दी में बोया गया था पर चौदहवीं शताब्दी तक वहां इसकी चर्चा बहुत ही कम रही। उस समय तक कोई भी ऐसा ज्योतिष शास्त्रवेत्ता वहां नहीं हुआ कि जिसका वर्णन किया जाय। पर पन्द्रहवीं शताब्दी अर्थात् सन् १४२३ ई० में ज्यार्ज परबक (George Purbach) नामक एक व्यक्ति आस्ट्रिया देश का रहने वाला अपने समय में नामी हो गया है। इसके पीछे कोपरनिकस (Copernicus) नामक एक विद्वान ऐसा हुआ कि जिसने टालेमी के सिद्धान्तों का खण्डन करके सूर्य को केन्द्रस्थ माना। इसके पीछे तीसरा नामी विद्वान टाइको ब्राही (Tycho Brahi) हुआ। इसने प्राचनी सौर और चान्द्र सारिणियों का शोधन किया। टाइको ब्राही के नक्षत्रदर्शनादि वेध की बहुत सी टिप्पणियां उसके शिष्य केपलर (Kepler) के हाथ लगीं और इसने ज्योतिष विद्या की बहुत कुछ उन्नति की और नए नए आविष्कार किए। इसीके समकालीन गलिलियो (Galileo) नामक सुविख्यात पण्डित हो गया है जिसने कि एक डच (Dutch) जाति के एक व्यक्ति मार्टियस (Martius) से कांच के तालों के नियमों को सीखकर पहिले पहल एक दूरदर्शक यन्त्र की रचना की जिसके द्वारा बहुत सी नई बातें ग्रहों के विषय की प्रकाशित हुईं।

इसी प्रकार धीरे धीरे बहुत से नए नए सिद्धान्त गणित और ज्योतिष के जाने गए।

सन् १६७० में कासिनी (Cassini) नामक एक ज्योतिष पण्डित ने पेरिस (Paris) नगर के वेधालय में बहुत से वेध करने के यंत्र बनवा कर उन्हें सुसज्जित किया। इसके पीछे न्यूटन (Newton), लकेल (Lacaille), हरेशल (Herschell) प्रभृति विद्वानों ने ज्योतिष विद्या को परमोन्नत दशा को पहुंचा दिया। हर्शल ने ही शनि ग्रह के आगे यूरेनस नामक एक नूतन ग्रह की गति को निरीक्षण कर के सिद्ध किया और १७८७ में इसके उपग्रहों को देखा।

ज्योतिष विद्या।

ज्योतिष विद्या का इतिहास संक्षेप में लिखा जा चुका। अब इस विद्या का वृत्तान्त भी संक्षेप में ही वर्णन किया जाता है। जैसा कि यह शास्त्र वृहत् है वैसा ही इसका विवरण भी बड़ा है अतएव इस छोटे से लेख में उसका सविस्तर और पूर्णतया लिखा जाना असम्भव है तथापि उपादेय बातें लिख दी जाती हैं।

यही एक ऐसा शास्त्र है कि जिसके द्वारा गणित कर के ज्योतिषी लोग आकाश सम्बन्धीय भविष्यत् घटनाएं ठीक ठीक बता सकते हैं। इस शास्त्र की प्रशंसा सभी जाति के विद्वानों ने की है। इस शास्त्र के पढ़ने और समझने से परमेश्वर की अनन्त सक्ति की महिमा जानी जाती है। इसी शास्त्र को पढ़कर बड़े बड़े विद्वानों को स्वीकार करना पड़ता है कि अल्प बुद्धि का मनुष्य इस विशाल जगत के विषयों और ईश्वरीय महिमा को समझने में असमर्थ है।

रात्रि में जब हम आकाश की ओर दृष्टि लेजाकर ध्यान पूर्वक कुछ देर लों जगमगाते हुए तारों को देखते हैं जो अधर में निरलम्ब स्थित हैं तो हमारी बुद्धि चकरा जाती है। थोड़ी देर पीछे वेही तारे जो पहिले हमारी दृष्टि के सामने थे हटकर पश्चिम दिशा को चले जाते हैं और उनके स्थान पर नए तारे आजाते हैं। यदि हम दक्षिण दिशा के तारों को निरीक्षण करें तो बहुत से पूरब की दिशा से उदय होकर और कुछ ही ऊपर को चढ़कर थोड़े ही काल में अस्त हो जाते हैं। उत्तरादि की ओर यदि ध्यान दें तो बहुत से ध्रुव के ही चारों तरफ परिक्रमा करते देख पड़ते हैं, कभी भी उनका अस्त नहीं होता। इसी प्रकार यदि हम नित्य तारादिकों का निदर्शन करते रहें तो मालूम होगा कि वे २४ घंटे के उपरान्त घूमकर फिर अपने निर्दिष्ट स्थान पर आजाते हैं। इससे हम यह समझ सकते हैं कि इनकी स्फुट गति एक समान ही रहती है परन्तु यदि हम कुछ दिनों तक ऐसे ही देखते रहें तो हमको यह देखकर आश्चर्य होगा कि जो तारे पहिले अर्ध रात्रि को हमारे सिर पर रहते थे अब वे ही सांझही को हमारे सिर के ऊपर आगए। इन सब बातों के क्या कारण हैं और ये तारादि क्या हैं इत्यादि बातों का जिससे ज्ञान हो उसे ज्योतिष विद्या कहते हैं।

[क्रमशः]

प्रणव की एक पुरानी कहानी।

[पहिली संख्या के आगे]

मुख्य प्रकार कौन कौन हैं? किन किन महावाक्यों से उनकी सूचना होती है उनके अमल करने वाले अधिकारी

कौन कौन हैं ? अब इसका विचार करना चाहिए। इसके लिये उसी मूल महावाक्य पर ध्यान करना चाहिए। क्योंकि उसीसे और उसीमें सब संसार की सृष्टि, स्थिति और लय होना उचित है। अहम् अर्थात् मैं आत्मा का स्वरूप है। एतत् अर्थात् यह अनात्मा का स्वरूप है। इनका सम्बन्ध निषेधरूप है। मैं 'यह नहीं हूं' इसको यदि क्रमदृष्टि से देखिए तो इसमें तीन बातें अवश्य निकलती हैं। पहिले तो मैं के सामने यह पदार्थ आता है। इस क्षण में ज्ञान होता है। इसके पीछे मैं और यह के संयोग वियोग का संभव होता है। यही इच्छा है। तीसरे क्षण में संयोग वियोग होता है। यह क्रिया है। संयोग वियोग दोहरा शब्द इस लिये कहा जाता है कि पहिले संयोग होकर पीछे अवश्य वियोग होता है। पहिले राग पीछे द्वेष, पहिले प्रवृत्ति पीछे निवृत्ति, पहिले लेना पीछे देना, यही संसरण क्रिया है।

बस येही तीन बातें ज्ञान, इच्छा, और क्रिया जीव मात्र का मुख्य प्रकार क्या सर्वस्व हैं। प्रति क्षण में प्रति जीव ज्ञान, इच्छा, क्रिया; ज्ञान, इच्छा, क्रिया, इसीके फेटे में फिरा करता है। पहिले ज्ञान, तब इच्छा, तब क्रिया। और क्रिया के बाद फिर ज्ञान, फिर इच्छा, फिर क्रिया। यह अनन्त चक्र सर्वदा चल रहा है।

प्रणव में अकार ज्ञान का सूचक है। उकार क्रिया का और मकार सदसदात्मक विधिनिषेधात्मक इच्छा का सूचक है। अहं—आत्मा—पुरुष अथवा प्रत्यगात्मा में जो इन तीन बातों का बीज है उसको सत् चित् और आनन्द के

नाम से कहते हैं। अर्थात् ज्ञान चिदात्मक, क्रिया सदात्मक और इच्छा आनन्दात्मक, तथा अनात्मा अर्थात् मूलप्रकृति में येही तीन बातें सत्त्व ज्ञानात्मक, रजस् क्रियात्मक, और तमस् इच्छात्मक कहाती हैं। येही तीन बातें हर एक परमाणु और हर एक ब्रह्माण्ड में सदा मौजूद हैं। ब्रह्माण्ड में ज्ञान के अधिष्ठाता देवता का नाम विष्णु है। क्रिया के ब्रह्मा और इच्छा के शिव हैं। ऐसे ब्रह्माण्ड अनन्त हैं और प्रति ब्रह्माण्ड में यह त्रिमूर्ति है। और त्रिमूर्ति के ऊपर और नीचे बराबर अनन्त सिलसिला अधिकारियों का फैला है, जैसे राज्य के प्रबन्ध में चपरासी और चौकीदार से लेकर शाहनशाह तक है। ये अधिष्ठाता देवता और अन्यान्य अधिकारी भी वैसे ही अपने अपने स्थान पर वैराग्य और निवृत्ति और मुक्ति के इम्तिहान के पीछे तैनात किए जाते हैं जैसे मैं अहम् अहम् अस्मि अहं ब्रह्मास्मि ब्रह्म हूं, यह महावाक्य ज्ञान का सार है। इसका अमल विष्णु देवता के सुपुर्द है। इसकी टीका ऋग्वेद है। ऋग्वेद का मुख्य महावाक्य यही है। ऋग्वेद को इसीका विस्तार जानना चाहिए। विष्णु देवता के सीगे के क़ानून की किताब ऋग्वेद है। ज्ञानसर्वस्व इसमें मौजूद है।

एतत् स्याम् अहं बहु स्यां एकोऽहं बहु स्याम्। एक मैं बहुत हो जाऊं यह महावाक्य क्रिया का तत्त्व है और यजुर्वेद का मूलमन्त्र है। इसके अधिष्ठाता देवता ब्रह्मा है। चारों वेदों के वक्ता ब्रह्मा इसलिये कहे जाते हैं कि उनके प्रकाश करने की क्रिया उन्हींके द्वारा होती है। नहीं तो एक एक वेद के रचने वाले देवता एक एक अलग अलग हैं।

न—एतत् न—नेह नानास्ति किञ्चन—नाना पदार्थ कुछ हैं ही नहीं, केवल एक आत्मा ही है। यह महावाक्य इच्छा का तत्त्व है। इच्छा का काम यही है कि जीव को बहुत सी संसार की वस्तुओं की ओर ले जाय और फिर उनसे जीव अघा और उबिया जाय और दुखी हो और उसकी इच्छा की पूर्त्ति न हो और असंतोष और वैराग्य भोगे, पहिले अस्ति का स्वरूप दिखा कर फिर नास्ति का स्वरूप दिखावे, अपनी इच्छा ही के कारण संसार में पड़ कर और दुःख भोग कर तब जीव कहता है कि यह सब कुछ नहीं है सब झूठ है—यह इच्छा का स्वरूप है—सामवेद का यह महावाक्य मूल है और शिव इसके अधिष्ठाता हैं।

इन तीनों वाक्यों का समाहार वही मूल वाक्य है—अर्थात यह एतत् न—और अथर्ववेद इसका व्याख्यान है जिसे स्वयं महाविष्णु ने रचा है।

जैसे ही महा विष्णु ने समष्टिरूप से अथर्ववेद रच कर अपने मातहतों के सुपुर्द किया और उन्होंने अपने अपने सीगों के काम के लिये अपने मातहतों के लिये विशेष कर के ऋक् यजुः साम रचा, वैसे ही महाविष्णु के ऊपर के अधिकारियों ने महाविष्णु की शिक्षा के वास्ते महावेद महागायत्री आदि रचा है—और यह क्रम अनन्त है।

गायत्री की कथा यह है कि २४ मुख्य महावाक्यों के सूचक एक एक अक्षर लेकर गायत्री महामंत्र बना है।

यह बात जो सिद्ध हुई अर्थात् ज्ञान इच्छा क्रिया और चौथा न का समाहार, इन्हींके हिसाब से संसार के असंतानंत विभाग हो गए हैं। यह तो पहिले कह आए हैं

कि इन्हीं तीन बातों का नाम आत्मा अथवा प्रत्यगात्मा की दृष्टि से चित् आनन्द और सत् है। इन्हीं तीन गुणों के कारण प्रत्यगात्मा सगुण ब्रह्म कहाता है। मूलप्रकृति की दृष्टि से इनके नाम सत्त्व तमस् और रजस् हैं। प्रत्यगात्मा और मूलप्रकृति के संयोग से जो जीव पदार्थ पैदा होता है उसके जीवांश अर्थात् चेतनांश की दृष्टि से यह ज्ञान इच्छा क्रिया कहाता है और जड़ उपाध्यंश की दृष्टि से यही गुण द्रव्य और कर्म हो जाता है। वस्तुओं के गुणों को हम जानते हैं, वस्तु अर्थात् द्रव्य की इच्छा करते हैं और इसके कर्म को घटाने बढ़ाने आदि की क्रिया करते हैं। गुण द्रव्य और कर्म का ज्ञान इच्छा क्रिया इतना ही संसार का सर्वस्व है इन्हीं के नियम के लिये वेदादि की उपयोगिता है।

इनके हिसाब से हर एक वेद के चार चार विभाग किए हैं इसलिये कि यद्यपि हम लोग इनकी गिनती अलग कर लें पर वे वस्तुतः अलग नहीं हो सकते। हर एक में बाकी सब सदा रहते हैं ज्ञान में इच्छा और क्रिया छिपी है इच्छा में ज्ञान और क्रिया छिपी है क्रिया में इच्छा और ज्ञान छिपा है। ज्ञाननिष्ठ ऋग्वेद में भी ज्ञानांश संहिता है क्रियांश ब्राह्मण इच्छांश उपनिषत् और उनका समाहार उपवेद अथवा तंत्र है ऐसे ही और सब वेदों में भी है।

इसके ऊपर हर एक वेद की दो दो शाखाएं हैं एक कृष्ण और एक शुक्ल। इसका कारण यह है कि संसार दो पदार्थों के मिलने से बना है पुरुष और प्रकृति आत्मा और अनात्मा सत् और असत् प्रकाश और तम नेकी और बदी दक्षिणमार्ग और वाममार्ग क्रम से एक एक अंश का

आधिक्य दिखाने के लिये प्रति वेद की दो दो शाखाएं हैं।

इसके बाद इन्हीं ज्ञान इच्छा और क्रिया के उलट पलट से ६ अंग अर्थात् व्याकरण शिक्षा आदि और ६ उपांग वेदांत मीमांसा आदि बने हैं। उनके मिश्रण से बहुत से अवांतर शास्त्र पैदा होते हैं। इस सब वेद और शास्त्र समूह की समष्टि संहिता अंश में है।

ऋग्वेद में यह सब वर्णन किया है कि किस पदार्थ की किस से और कैसे उत्पत्ति और स्थिति और विनाश है, क्या उसका उचित देश और काल है क्या उसकी आवश्यकता है कितने उसके विभाग हैं? इत्यादि।

यजुर्वेद में क्रिया का स्वरूप, क्रिया का और मोक्ष का सम्बन्ध, मोक्ष के प्रकार, यज्ञ, संस्कार, श्रद्धा, इत्यादि सब का रहस्य अर्थ कहा है। जीवन मात्र के संपूर्ण व्यवहार इसमें कहे हैं।

चार वर्ण और चार आश्रम और चार पुरुषार्थ का संबंध ज्ञान इच्छा क्रिया और समाहार से है। ब्रह्मचर्य आश्रम और ब्राह्मणवर्ण का संबंध ज्ञान से है गृहस्थाश्रम और क्षत्रियवर्ण का संबंध इच्छा से और सन्यास और शूद्रवर्ण का संबंध समाहार से है।

आपलोग आश्चर्य करेंगे कि शूद्र और सन्यास का साथ कैसा—एक सबसे छोटा वर्ण दूसरा सबसे पवित्र आश्रम। इसको यों समझना चाहिए—नदी के किनारे यदि मनुष्य खड़ा हो तो जो छाया पड़ती है, उसमें उत्तमांग सिर सब से नीचे हो जाता है। शूद्र का अर्थ यही है कि जो सब की सेवा करे—यदि कोई निस्स्वार्थ सेवा करता है तो

वही सच्चा सन्यासी भी है, यदि स्वार्थ से सेवा करता है तो मामूली शूद्र है।

मैं और यह इन तीनों पदार्थों का ज्ञान ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम में होना चाहिए।

मैं यह हूं, जो मैं हूं वही यह है इसकी रक्षा मुझी से हो सकती है-यह अमल क्षत्रियवर्ण और गृहस्थाश्रम का होना चाहिए।

यह नहीं है एतत् न केवल मैं ही मैं हूं यह संसार कुछ नहीं है-आत्मा ही आत्मा है-यह इच्छा एक अर्थ से धन संचय करने की और दूसरे अर्थ से संसार छोड़ कर पुण्य संचय करने की-यही वैश्यवर्ण और वानप्रस्थाश्रम का तत्त्व है।

मैं यह नहीं हूं-किंतु मैं ही सब जगह हूं-और सब हूं-यह और यह और यह ऐसी भेदबुद्धि और उपाधि झूठी है-सबको सबकी सेवा और सहायता करनी चाहिए-ऐसा ज्ञान और अमल सन्यासी का, सच्चे शूद्र का है। देखिए बड़े का क्या अर्थ है-केवल यही कि उसके भरोसे उसकी मिहनत से उसकी गोद में दूसरे खेलें और सुख पावें और छोटे का भी अर्थ यही है कि दूसरे के सिर चैन करे तो सच्चा शूद्र वही है जो सबकी सेवा करे और उनसे कुछ बदला न चाहे, जो बदला चाहे जो मजदूरी मांगे जो केवल यह समझे कि मैं अर्थात् आत्मा सर्वव्यापी नहीं है वह मामूली शूद्र है।

षोड़श संस्कार और पंच महायज्ञ और अश्वमेध गोमेध इत्यादि का भी ऐसा ही रहस्य अर्थ अहं एतत् न-इन्हीं शब्दों के उलट पलट से इस ग्रन्थ में कहा है।

सामवेद में इच्छा का वर्णन है।

पहिले कह आए हैं कि संसार में दो ही पदार्थ देख पड़ते हैं एक अहं और एक अनहं इनका संबन्ध, इनके संयोग का कारण, यही शक्ति स्वरूप तीसरा पदार्थ है। शक्ति का भी असल स्वरूप इच्छा ही है। इच्छा के सिवाय और कोई कारण संसार में नहीं है। आत्मा की दृष्टि से जो शक्ति है जीव की दृष्टि से वही इच्छा है, जैसे आत्मा के तीन गुण सत् चित आनंद और मूल प्रकृति के तीन गुण रजस् सत्त्व और तमस् हैं तैसे ही शक्ति माया अथवा दैवी प्रकृति के तीन गुण, सृष्टि स्थिति और संहार कहना चाहिए। देवता दृष्ट्या ही तीन शक्तियां लक्ष्मी सरस्वती और सती कहाती हैं। ज्ञानशक्ति अर्थात सरस्वती का साथ ब्रह्मा से, जो क्रिया के और उत्पत्ति के अधिष्ठाता हैं, इस कारण है कि बिना ज्ञान के क्रिया नहीं हो सकती, तथा क्रियाशक्ति अर्थात लक्ष्मी का साथ ज्ञान के और स्थिति के अधिष्ठाता देवता विष्णु से इस कारण है कि बिना क्रिया के ज्ञानसफलता ही नहीं हो सकती। शिव का साथ सती का है। दोनों इच्छारूप हैं। इस कारण उनका संबंध अर्धाङ्ग का है।

[क्रमशः]
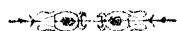
सिकन्दरशाह।

[पहिले अंक के आगे]

प्रथम संतान प्रसव के समय मनुष्य मात्र के हृदय में जिस अद्वितीय आल्हाद का स्रोत प्रवाहित होता है वही

ओलै सिकन्दर के पिता फिलिप के हृदयसमुद्र में पावस के प्रखर प्रवाहमय अगनित गंगधारा की भांति उमड़ रहा था, क्योंकि एक तो प्राणप्रियतमा से प्रथम पुत्र उत्पन्न होने वाला था, साथ ही इस बात की सूचना मिली थी कि यह पुत्र अद्वितीय बलशाली बादशाह होगा। फिलिप ने उसी समय हकीम अरस्तू को लिखा कि मुझे पुत्र के प्रसव के आनन्द से भी अधिक उत्साह इस बात का है कि यह पुत्र आप ऐसे योग्य पुरुष द्वारा शिक्षा प्राप्त करेगा।

शिशु सिकन्दर के पालन पोषण के लिये लेनिक (Laniko) नाम की एक स्त्री नियत की गई, किञ्चित वयोवृद्ध होने पर यद्यपि लियोनिडास (Leonidas) जो कि ओलंपिया का सम्बन्धी था, उसका संरक्षक नियत किया गया, किन्तु इसका संरक्षण नाम मात्र ही को था क्योंकि अरस्तु के मत और आदेश के अनुसार सिकन्दर को सात वर्ष की अवस्था तक केवल उन्हीं बातों की शिक्षा प्राप्त होने दी गई थी जिन का अनुभव मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्वयं कर सकता है। सात वर्ष की अवस्था के पश्चात् उसकी पठन पाठन सम्बन्धी शिक्षा आरम्भ हुई और इस शिक्षा के लिये लसीमेकस (Lysimachus) नामक विद्वान पुरुष नियत किया गया और इस लिये सिकन्दर का प्रथम शिक्षक या निरीक्षक यही कहा जाता है। लसीमेकस ने सिकन्दर को वर्णों की लिपि और उच्चारण का ज्ञान होने उपरान्त होमर काव्य का पढ़ना आरंभ कराया। सिकन्दर के आतंकमय, जघन्य और ओज-वर्द्धक शूरता के समस्त कार्य्य, उसकी ज्ञानेन्द्रियों में व्याव-हारिक बातों का ज्ञानसंपादन करने की शक्ति का अविर्भाव

होने के समय से ही उसे ऐसे विकट काव्य के पढ़ाए जाने के ही फल, कहे जा सकते हैं। यह काव्य सिकन्दर को ऐसा प्रिय था कि उसने उसकी एक प्रति "इलियेड" सदैव अपने पास रक्खी और अन्त में अन्तिम स्वांस के छोड़ने तक उसे न छोड़ा।

सिकन्दर के सम्बन्ध में आगे और कुछ कहने के पहिले उसकी शारीरिक बनावट के विषय में कुछ परिचय दे देना अच्छा होगा। उसकी एक पाषाण की मूर्ति में दिखाया गया है कि उसकी गर्दन कुछ बाईं तरफ को झुकी हुई थी परन्तु उससे उसके रोबीले दिखाव और सौन्दर्य्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती थी। उसका कद मामूली, चेहरा सुडौल और खूबसूरत आंखें कुछ तिरछी साधारण, परन्तु विचित्र चमकदार थीं। अपिलीज़ ने अपने लिखे हुए चित्र में उसका रंग अधिक भूरा होना दिखाया है, परन्तु वास्तव में उसके शरीर का रंग तामिया था और उसके सीने और मुंह पर बारीक बारीक सुर्ख दाग से थे। यूनानी ग्रन्थकारों ने लिखा है कि उसके स्वेद से अनोखी सुगंधि फैलती थी और यह बात माननीय भी है परन्तु, मिस्टर जान लेंगहार्न लिखते हैं कि इस सुगंधि का कारण उसके अधिकतर स्वादिष्ट शराब का पीना था।

सिकन्दर की भविष्य होनहार उसके बाल्यावस्था के आचार व्यवहार और स्वभाव में ही प्रगट होने लगी थी। जब कभी कोई परशिया का एलिची फिलिप के दरबार में आता और फिलिप के हाजिर न होने से सिकन्दर को उस के मिलने को जाना पड़ता तब वह उस एलिची से बड़ी ही

योग्यता और राज्योचित शिष्टाचार के साथ मिलता। उससे लड़कपन का सा कोई व्यवहार या बात चीत न करके बड़े चाव से पूछता कि यहां से परशिया कितनी दूर है ? बीच में मार्ग कैसा है ? उत्तरीय एशिया खण्ड का भूभाग किस प्रकार का है? वहां का जल वायु कैसा है? वहां कैसे मनुष्य रहते हैं ? परशिया के बादशाह की सैनिक और प्रजा सम्बन्धी नैतिक दशा कैसी है? वह अपने शत्रु से किस प्रकार का व्यवहार करता है ? परशिया किन किन बातों के कारण शत्रु से अजेय और दुर्दम कहा जा सकता है ? जब कभी उसे समाचार मिलता कि उसके पिता फिलिप ने अमुक अमुक प्रदेश पर विजय प्राप्त की, अमुक शत्रु सेना को परास्त किया तब वह अपने भविष्य राज्यसीमा की वृद्धि से प्रसन्न होने के बदले मलिन मन होकर कहता कि यदि मेरा पिता ही समस्त भूभाग का विजेता बन जायगा तो मैं आगे क्या करूंगा।

जिस समय सिकन्दर तेरह वर्ष का हुआ तो एक सौदागर एक ऐसे घोड़े को लेकर फिलिप के पास आया कि जिसपर कोई भी सवार नहीं हो सकता था। यद्यपि घोड़ा बड़ाही सुन्दर तेज चंचल और अच्छे खेत का था किन्तु उक्त दुर्गुण के कारण फिलिप ने उसे लेने में नाहीं की। इस पर सिकन्दर ने पिता से आज्ञा मांगी कि यदि मुझे हुकम हो तो मैं इस पर सवार होऊं। फिलिप के दरबारी सर्दार इसे सिकन्दर की एक बाल बुद्धि और अव्यय धृष्टता जान कर मुस्कराने लगे परन्तु फिलिप ने स्वयं आज्ञा प्रदान करके सिकन्दर के उत्साह को और भी बढ़ा दिया। सिकन्दर ने घोड़े के पास आकर घोड़े को इस प्रकार से खड़ा किया कि जिसमें उसकी

छाया स्वयं उसके साम्हने रहे और तब उसके सिर को पकड़ कर वह हिलाने लगा यहां तक कि घोड़ा अपनी ही छाया को देख कर एक प्रकार से डर सा गया; तब सिकन्दर ने उसपर सवार होकर उसे बिना चाबुक या मगरेज के सीधा दौड़ाना आरम्भ किया और जब दौड़ते दौड़ते घोड़ा थक कर पस्त हो गया तब उसे लाकर फिलिप के साम्हने खड़ा कर दिया। इस पर फिलिप ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा कि, हे पुत्र, तूं अपने लिये अपने बाहुबल द्वारा ही दूसरा विस्तृत राज्य खोज कर; क्योंकि यह छोटा भूभाग तेरे ऐसे भाग्यवान और पुरुषार्थी पुरुष के शासन करने के लिये बहुत थोड़ा है। यह घोड़ा सदैव के लिये सिकन्दर का साथी बना।

शिक्षा अरस्तू और सिकन्दर।

यद्यपि अरस्तू का मत था कि आध्यात्मिक शिक्षा सोलह वर्ष की अवस्था के पश्चात आरम्भ होनी चाहिए, परन्तु सिकन्दर की पूर्व कथित योग्यता और उसके साहस ने फिलिप और उसके दरबारियों पर यह भली भांति प्रगट कर दिया कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं है। वह आध्यात्मिक शिक्षा की अवधि में तीन वर्ष न्यून होने पर भी ऐसी शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण योग्यता रखता है। अतएव सिकन्दर उसी समय से अरस्तू की मानव जीवन सम्बन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने लगा।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर ने जन्म से सात साल का समय तो खेल कूद कर शारीरिक सुधार में ही बिताया, शेष ६ साल में उसने लिखना पढ़ना और वीरोचित कार्यों की शिक्षा भली भांति प्राप्त कर ली और

जिसका एक प्रमाण भी दिखाया जा चुका है। अब अरस्तू का शिष्य हो कर शिकन्दर ने न्याय और पदार्थ विज्ञान के तत्वों की शिक्षा लेनी आरम्भ की। जिस प्रकार सिकन्दर की विचारशक्ति बहुत सूक्ष्म और उत्तम श्रेणी की थी उसी प्रकार उसका हृदय भी गम्भीर और स्वच्छ था, इसलिये उसने अपने सुयोग्य शिक्षक को ऐसा प्रसन्न कर लिया कि जिससे उसने उसे न्याय के उन गहन तत्वों का भली भांति बोध करा दिया, जो कि संसार भर के मनुष्य जाति मात्र के व्यवहार करने योग्य हैं और इसी सूक्ष्म न्याय तत्वों ने ही सिकन्दर को अपने जीवन में अद्वितीय योग्यता और प्रशंसा का पात्र बना कर भूविख्यात किया, जैसा कि आगे यथावसर प्रगट किया जायगा। अरस्तू स्वयं एक बड़ा भारी तत्ववेत्ता था किन्तु उसने सिकन्दर पर केवल तत्व ज्ञान सम्बन्धी कल्पना शक्तियों का आविष्कार नहीं किया वरन उसे यथोचित राज्य शासन सम्बन्धी शिक्षा दी। वह जानता था कि एक राजा या बादशाह को सम्पूर्ण विद्या और कला कौशल का जानने वाला और गुणग्राहक होना जरूरी है, क्योंकि तब तक वह उस सम्बन्ध में वास्तविक गुण दोष का न्यान्य करने में कदापि समर्थ नहीं हो सकता। वर्क आफ़ वर्दीज़ के एडिटर ने लिखा है कि अरस्तू ने सिकन्दर को राज्य शासन सम्बन्धी एवं मनुष्य के उच्च जीवन सम्बन्धी समस्त शिक्षाएं दी थीं; परन्तु उसने अपने युवा शिष्य को संतोष वृत्ति एवं निज निग्रह की शिक्षा नहीं दी थी।

[क्रमशः]

सभा का कार्यविवरण ।

(१)

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २९ जुलाई १९११—सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

१ ता० २९ जून १९११ का तथा १६ जुलाई के वार्षिक अधिवेशन का कार्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

२ प्रबन्धकारिणी सभा का ता० १८ जून का कार्यविवरण सूचनार्थ पढ़ा गया ।

३ निम्नलिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए—

१ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य व्याघ्रचार्म्माम्बरीश सिंहासनासीन स्वामि रामकृष्णानन्द गिरि, दारागंज गद्दी बाघम्बरी, प्रयाग ५)

२ बाबू गयाप्रसाद, नायबसुदरिंस, चौबेपुर, जि० बनारस १॥)

३ राय कृष्ण चन्द्र, चौखम्बा, बनारस ६)

४ पण्डित रामचौज पाण्डेय, हेड पण्डित, मिडिल इङ्गलिश स्कूल अरवल, जि०गया १॥)

५ बाबू भगवती प्रसाद नायब, मछली गांव, पो० फरेंदा, गोरखपुर २)

६ महाराजकुमार बाबू रामदीन सिंह जू देव, कोट कालाकांकर १॥)

७ पण्डित सूर्यप्रसाद मिश्र, स्वदेशवस्तुप्रचारिणी सभा, काशी १॥)

८ बाबू रावनन्दन प्रसाद बी०ए०, एल० एल०बी०-काशी ३)

४ सभासद होने के लिये निम्नलिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

१ रायबहादुर लाला बैजनाथ बी० ए० -कायमुकाम जज, बनारस

२ बाबू भगवान सहाय–सुपरवाइजर, म्युनिसिपल स्कूल्स, बनारस

३ पं० व्रजरत्न भट्टाचार्य, एजुकेशनेल पण्डित, मुरादाबाद ।

४ पण्डित रमलक्षण पांडे, हेड मास्टर, अगरौली पो० भरसर, बलिया

५ निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं–
रायबहादुर लाला बैजनाथ बी०ए०-बनारस–धर्मसार,
धर्मविचार, भारतविनय ५ प्रति ।

'बनारस की म्युनिसिपेलिटी–वार्षिक रिपोर्ट ।

भारतमित्र, कलकत्ता–श्री भारतधर्म्म, दशकुमार चरित, शिवशाम्भु का चिट्ठा, स्फुट कविता, हरिदास, श्रीमद्भागवत ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, काशी–मानस-पत्रिका संख्या १-११

मिस्टर टहल राम गङ्गाराम, काशी–An appeal to my countrymen

पण्डित सुन्दर लाल शर्म्मा, कवि समाज, राजिम, रायपुर–दानलीला, पं० विश्वनाथ प्रसाद पाठक का जीवन चरित्र ।

पण्डित महादेव भट्ट, अहियापुर, प्रयाग–लाजपत महिमा ।

डाक्टर गोविंद प्रसाद भार्गव, जयपुर—योग समाचार संग्रह।
पण्डित गौरीशङ्कर हरीचन्द ओझा, उदयपुर—सोलंकियों
का प्राचीन इतिहास।
बाबू श्रीधर मारवाड़ी, गोलागली, काशी—पूर विक्रम नाटक।
मंदराज की गवर्नमेण्ट—A descriptive catalogue of the
Sanskrit mss in the Govt. Oriental Ms Library, Madras
बाबू हरिदास माणिक, काशी—स्वदेशी कजरी।
सेठ खेमराज श्रीकृष्ण दास, बम्बई—१ गोरस पद्धति, २ नासि
केतोपाख्यान, ३ अद्भुतरामायण,४ बाल संस्कृत प्रभाकर,
५ रामाश्वमेध, ६ रुक्मिणीपरिणय, ७ आनन्द प्रकाश, ८
प्रत्यकानुभव शतक,९ दुर्जन करि पंचानन,१० सहज प्रकाश,
११ सारुक्तावली, १२ स्वरोदय सार, १३ चतुरत्नक, १४
ब्रह्मज्ञानदर्पण,१५ तत्त्वबोध,१६ योगतत्त्व प्रकाश,१७ ग्रह
लाघव,१८ वेदान्त परिभाषा, १९ डाक्टी चिकित्सार्णव,
२० कपिल गीता, २१ स्वप्न प्रकाशिका; २२ अलफलैला।

५ निम्न लिखित सभासदों का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

बाबू प्रह्लादनरसिंह राणा, काशी।
पण्डित बद्रीनाथ वैद्य, काशी।
पण्डित महावीर प्रसाद मिश्र, नरवल।
बाबू लोकानन्द गर्ग, मेरट।
मिस्टर रघुनाथ पुरुषोत्तम परांपजे, पूना।
बाबू माता प्रसाद, काशी।

७ उपमन्त्री ने बम्बई के पण्डित अमृत लाल केशव लाल शर्म्मा की मृत्यु की सूचना दी।

इस पर सभा ने शोक प्रगट किया

८ सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

वेणीप्रसाद, उपमंत्री ।

---:o:---

(३)

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० २९ जूलाई १९०१ सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान सभाभवन ।

उपस्थित ।

१ बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए० सभापति ।

२ पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० ।

३ पण्डित माधव प्रसाद पाठक ।

४ बाबू वेणी प्रसाद ।

५ बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी०ए० एलएल० बी० ।

६ बाबू माधव प्रसाद ।

७ बाबू गोपाल दास ।

१ ता० ४ जूलाई और ८ जूलाई के अधिवेशनों के कार्य-विवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए ।

२. हिन्दी पुस्तकों की खोज के सुपरेंटेण्डेण्ट का ११ जुलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने यह लिखा था कि खोज का कार्य किन किन जगहों में क्रिम क्रम से होना चाहिए । और यह भी लिखा था कि यदि गवर्न्मेण्ट इस कार्य के लिये अपनी वार्षिक सहायता बढ़ा कर १२००) रु० कर दे

तो यह कार्य लगभग दस वर्ष में ही पूरा हो सकता है।

निश्चय हुआ कि खोज के कार्य के विषय में सुपरिगटेगडेगट का प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और उनके पत्र की नकल गवर्न्मेगट के पास भेजी जाय।

३ पगिडत छन्नूलाल वकील का १४ जूलाई १९०७ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि बनारस की दीवानी अदालत में भी नागरी में अर्जियां लिखने के लिये एक मोहरिर नियत किया जाय।

निश्चय हुआ कि पगिडत छन्नूलाल को लिखा जाय कि दीवानी अदालत में अधिकांश अर्जियां वकीलों के द्वारा दी जाती हैं अतः वहां मोहरिर नियत करने से कोई लाभ न होगा। इसलिये वे इस विषय पर पुनः विचार कर सभा को सम्मति दें।

४ बाबू श्यामसुन्दर दास का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पगिडत रामशङ्कर व्यास अपने भतीजे पगिडत कालिशङ्कर व्यास के स्मारकस्वरूप सभा के द्वारा एक चांदी का पदक दिया चाहते हैं। पदक के लिये विषय आदि सभा स्वयं निश्चित कर ले।

निश्चय हुआ कि पगिडत रामशङ्कर व्यास का यह प्रस्ताव धन्यवादपूर्वक स्वीकार किया जाय और सन् १९०७ में हिन्दी में जो सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुस्तक छपे उसके ग्रन्थकर्ता को यह पदक दिया जाय।

५ पगिडत माधव राव सप्रे का १ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा को ऋणमुक्त करने के लिये एक डेप्युटेशन भेजा जाना चाहिए

और सभा को हिन्दी प्रेमियों के सम्मेलन के विषय में पुन: विचार करना चाहिए ।

निश्चय हुआ कि डेप्युटेशन के विषय का प्रस्ताव आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय। हिन्दी प्रेमियों के सम्मेलन का करना इस समय सभा उचित नहीं समझती ।

६ पण्डित गिरिजादत्त वाजपेयी का १६ जून का पत्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि पण्डित गिरिजादत्त वाजपेयी के प्रश्नों का निम्नलिखित उत्तर दिया जाय—

१ मई में किसी सभासद ने इस्तीफ़ा नहीं दिया ।

२ भारतमित्र में जो लेख बाबू श्यामसुन्दर दास का "द्विवेदी जी की सभ्यता" शीर्षक छपा है वह सभा की आज्ञा वा सम्मति से नहीं छपा और न सभा उस पर कुछ सम्मति दे सकती है ।

३ भारतजीवन के स्वामी ने इस बात की शिकायत की थी कि सभा के कार्य विवरण में भारतजीवन का बहुत स्थान लग जाता है और उन्होंने पूरा विवरण न छाप कर संक्षेप में उसकी सूचना देनी आरम्भ कर दी थी अतएव उपस्थित सभासदों का नाम छोड़ देना निश्चय हुआ था।

४ पण्डित श्यामबिहारी मिश्र, पण्डित माधवराय सप्रे, और पण्डित रामनारायण मिश्र यदि इसमें कोई विरोध न करें तो इन पत्रों की नकल भेज दी जायगी ।

५ अधिवेशनों में उपस्थित सभासदों के नामों की सूचना दी जाय ।

६ प्रबन्धकारिणी सभा के अधिवेशनों की सूचना सब सभासदों को दी जाती है और उनमें जो जो कार्य होने वाले होते हैं उनकी सूची भी उनके पास भेज दी जाती है। "वक्तव्य" पर जिस अधिवेशन में विचार होने वाला था उसकी नोटिस में इस बात का उल्लेख था। बाहर के किसी सभासद ने वक्तव्य नहीं मांगा था इसलिये वह उनके पास नहीं भेजा गया और उस पर जो प्रबन्धकारिणी सभा ने निश्चय किया उसका भी प्रबन्धकारिणी सभा के किसी सभासद ने विरोध नहीं किया।

७ सभा की सम्मति में उसमें कोई गलती नहीं है।

८ पण्डित श्यामबिहारी मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि सभा के पास जो पत्र आते हैं उनकी नकल, यदि पत्र लिखने वाला ऐसा करने की आज्ञा दे तो सभासदों को मांगने पर भेजी जाया करे।

९ निश्चय हुआ कि लाला भगवान दीन को वीरविरदावली के सम्पादन के लिये उक्त पुस्तक की एक सौ प्रतियां छपने पर दी जांय।

१० इस वर्ष के लिये निम्नलिखित कार्यकर्ता चुने गए- नागरीप्रचार के सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर गुन्नी लाल शा, पुस्तकालय के सुपरिण्टेण्डेण्ट पण्डित रामनारायण मिश्र, सुबोध व्याख्यानों के सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर ए० सी० मुकर्जी, ग्रन्थमाला के सम्पादक पण्डित माधव प्रसाद पाठक, पत्रिका के सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास।

११ निश्चय हुआ कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका जुलाई १९०७ से मासिक निकाली जाय और यह प्रति मास के पहिले

समोह में निकल जाया करे । इसमें ३२ पृष्ठ प्रति अंक में छपें जिसमें २४ पृष्ठों में तीन वा चार लेख छापे जांय, ४ पृष्ठों में वैज्ञानिक और साहित्य विषयक टिप्पणियां रहें और शेष ४ पृष्ठों में सभा सम्बन्धी समाचार रहें । ये टिप्पणियां एक सब कमेटी की सम्मति और स्वीकृति से छपा करें, जिसके सभासद इस वर्ष के लिये सभा के सभापति तथा ग्रन्थमाला और पत्रिका के सम्पादक हों ।

१२ संयुक्त प्रदेश की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा और ललिता पारितोषिक के पत्रों की परीक्षा के लिये निम्न-लिखित महाशयों की सब कमेटी नियत की गई—

बनारस के शिक्षाविभाग के असिस्टेंट इन्स्पेक्टर, सभा के मन्त्री, पण्डित रामनारायण मिश्र, बाबू अमीर सिंह और बाबू श्यामसुन्दर दास।

१३ निश्चय हुआ कि इस वर्ष के लिये उपमंत्री सभा का द्रव्य सम्बन्धी सब कार्य करें और शेष कार्य मंत्री करें ।

१४ निश्चय हुआ कि ठाकुर छन्नू लाल मिमोरियल मेडल सम्बन्धी लेख आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किए जांय ।

१५ निश्चय हुआ कि बाबू राधाकृष्ण दास का चित्र गत वर्ष की रिपोर्ट के साथ प्रकाशित किया जाय ।

१६ निश्चय हुआ कि अंग्रेजी में सभा की रिपोर्ट प्रति वर्ष न छप कर पांचवे वर्ष छपा करे ।

१७ बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि पुस्तकालय की सूची विषयक्रम से तय्यार की जाय और

इसके सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक प्रस्ताव आगामी अधिवेशन में सुपरेण्टेडेण्ट उपस्थित करें ।

१७ अयोध्या के कोर्ट आफ़ वार्ड्स का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे महाराज अयोध्या के चन्दे का शेष १०००) रु० नहीं दे सकते ।

१८ सभा के आफ़िस के कार्यकर्ताओं का आवेदन पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि उनको जो छुट्टियां मिलती हैं उनकी सूची पर पुनः विचार किया जाय ।

निश्चय हुआ कि छुट्टियों की सूची में निम्नलिखित छुट्टियां और बढ़ा दी जांय अर्थात्—

नागपञ्चमी १ दिन, रामनवमी १ दिन, निर्जला एकादशी १ दिन, वेदव्यास अन्तिम सोमवार १ दिन, रथयात्रा १ दिन ।

साथ ही निम्नलिखित छुट्टियां सूची में से काट दी जांय अर्थात्—

जन्माष्टमी १ दिन, शिवरात्रि १ दिन, बड़ा दिन (२५ दिसम्बर), अंग्रेज़ी नया दिन और महाराज का जन्म दिन (९ नवम्बर)

१९ अन्नपूर्णा मिल्स कम्पनी की सूचना हिसाब सहित उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि यह फाइल की जाय ।

सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

वेणी प्रसाद,
उपमंत्री ।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

जूलाई १९०१।

आय	संख्या रु०	आ	पा	व्यय	संख्या रु०	आ	पा
बचत	४०३	०	८	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६९	१५	१॥
सभासदों का चन्दा	५६	४	०	पुस्तकालय	२०	२	०
पुस्तकों की बिक्री	११३	३	३	रासो	१५	०	०
रासो की बिक्री	१५	१४	०	स्थायी कोश	६०	०	०
ब्याज	०	१३	९	पुस्तकों की खोज	२५	०	०
पुस्तकालय का चन्दा				नागरी प्रचार	१८	५	६
	९	०	०	डाक व्यय	३४	१४	६
राधाकृष्णस्मारक	३१	०	०	पुस्तकों की बिक्री	२१७	१२	९
फुटकर	१	५	३	फुटकर	७	१	४॥
जोड़	६३०	८	११	पुरस्कार	४५	०	०
					५१३	३	३
				बचत	११७	५	८
				जोड़	६३०	८	११

सभा के सन्दूक में ६८॥≡)॥।

सेविङ्ग बङ्क स्थायी कोश २१=)॥

सेविङ्ग बङ्क २७।≡)५

११७।-)८

देना ६०००)

वेणीप्रसाद,

उपमन्त्री।

पहिला चित्र।
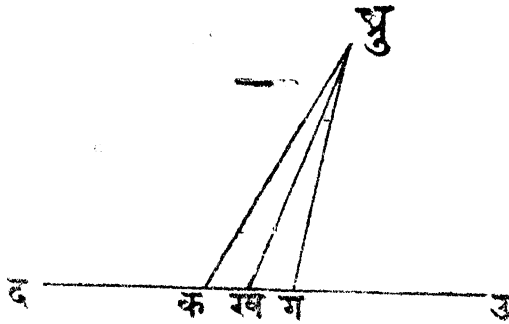
दूसरा चित्र
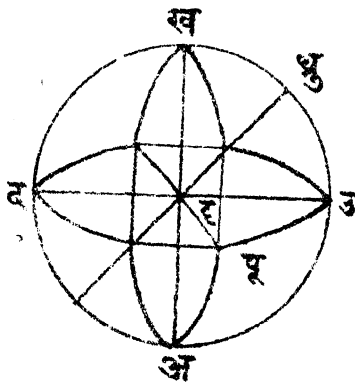
नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

भाग १२] सितम्बर १९०७ ई. [संख्या ३

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥

करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥

प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न ।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र ।
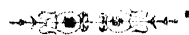
विविध विषय ।

इटली देश में सात वर्ष का एक ऐसा बालक है जिसकी आँख की पुतलियों पर घड़ी के समान घंटों के बारह चिन्ह बने हुए हैं । प्रकृति की लीला विचित्र है ।

* * *

आलोकचित्रण शास्त्र की दिनों दिन उन्नति होती जा रही है । फ़ोटो के जब चित्र लिए जाते हैं तो जिस

शीशे के टुकड़े पर चित्र उतारा जाता है उस पर काला स्थान हल्के और सफ़ेद स्थान गहिरे रंग का होता है। इसका फल यह होता है कि जब उस शीशे के नीचे कागज़ रखकर वह धूप में रक्खा जाता है तो हल्के स्थान से किरणों का प्रभाव अधिक पड़ने से कागज़ अधिक काला हो जाता है और गहिरे स्थान से किरणों के अधिक प्रवेश न कर सकने के कारण वह सफेद रह जाता है। ऐसे शीशे को अंग्रेजी में नेगेटिव कहते हैं। इसका ठीक उलटा जो होता है उसे पाज़िटिव कहते हैं। चित्र दोनों प्रकार के उतारे जाते हैं। पुरानी रीति पाज़िटिव प्लेट बनाने की और नई नेगेटिव प्लेट बनाने की है।

इधर कई वर्षों से इन्हीं प्लेटों की सहायता से जिस्ते या तांबे के टुकड़े पर चित्र उतार कर छापे की कल पर तस्वीरें छापते हैं। कुछ दिनों से रंगीन चित्रों के छापने की रीति भी निकली है। तीन चित्र एक साथ लिए जाते हैं और उनको जिस्ते या ताम्बे के तीन टुकड़ों पर उतार कर फिर तीन प्रकार के रङ्गों से एक दूसरे के बाद छापते हैं। इसी रीति से "सरस्वती" पत्रिका के टाइटिल पेज वाला चित्र छपता है।

अब एक फ़रासीसी विद्वान ने एक ऐसा आविष्कार किया है जिससे एक ही शीशे के प्लेट पर रंगीन चित्र उतर जाता है। चित्र ठीक उसी प्रकार से उतरता है जैसे साधारण फोटो का चित्र उतरता है। उस प्लेट को नियम पूर्वक मसालों से धोने पर रंगीन पाज़िटिव चित्र बन जाता है। अभी इस रंगीन प्लेट से कागज पर चित्र नहीं छप सकता।

केवल एक प्लेट का एक ही चित्र होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि थोड़े ही दिनों में यह भी सुनने में आवेगा कि कागज़ पर चित्र छापने की रीति भी निकल आई है। यूरोप के विज्ञानविशारद विद्वान जो न करें सो थोड़ा है।

यूरोप से कई दल विद्वानों के उत्तरी ध्रुव का अधिक हाल जानने के लिये बड़े साज सामान के साथ उस ओर गए हैं। उत्तरी ध्रुव बरफ से ढँका हुआ है, इसलिये ठीक ध्रुव स्थान तक पहुंचने में अनेक कठिनाइयां हैं। एक दल अपने साथ ऐसे मोटर यन्त्र ले गया है जो बरफ पर गाड़ी और पानी पर नांव का काम देते हैं। इस दल का अनुमान है कि उन यन्त्रों के द्वारा ध्रुव स्थान पर पहुंचने में अब अधिक कठिनाई न रह जायगी। उत्तरी ध्रुव की जांच में अनेक वर्षों से यूरोपीय विद्वान लगे हुए हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जब तक वे उसका पूरा पता न लगा लेंगे उसका पीछा न छोड़ेंगे। जर्मनी के कुछ विद्वान दक्षिणी ध्रुव की जांच में लगे हुए हैं।

* * *

ता १६ अगस्त १९०७ को काशी नागरीप्रचारिणी सभा के भवन में एक सभा गोस्वामी तुलसीदास जी के २८४ वें मरणोत्सव के उपलक्षण में हुई थी। महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी सभापति के आसन पर शोभित थे। हिन्दी के प्राचीन प्रसिद्ध कवियों का सम्मान होना सब प्रकार से उचित ही है और वास्तव में हिन्दी के सौभाग्य

का यह एक शुभ लक्षण है। कोई देश उन्नत अवस्था को प्राप्त नहीं हो सकता जब तक उसके वासियों में परस्पर गुणग्राहकता न हो। जिन जिन देशों ने उन्नति की है उनमें यह बात पूरी तरह पर पाई जाती है। भारतवर्ष में भी प्राचीन समय में यह बात दिखाई देती थी और इसके चिन्ह अब तक वर्तमान हैं। प्रति वर्ष समस्त देश में रामलीला का होना इसका बड़ा भारी प्रमाण है। आज कल इसका बहुत कुछ अभाव है और भारतवासियों की अपने पूर्वजों में सन्मान दृष्टि का होना नितान्त आवश्यक है।

* *
*

न्यूयार्क (अमेरिका) निवासी मिस्टर टाइनर ने थोड़े दिन हुए एक बहुत ही उपयोगी यंत्र का आविष्कार किया है। इसमें यह गुण है कि इससे १५ फुट के घेरे में जो शब्द होगा उसे वह टेलीफ़ोन द्वारा दूसरे स्थान पर चाहे वह कितनी दूर क्यों न हो, पहुंचा देगा। यह यंत्र ११ इञ्च लम्बा और ५ इञ्च चौड़ा है, देखने में एक छोटी सी संदुकड़ी सा है। मिस्टर टाइनर ने इसकी परीक्षा भी की है। पहिले उन्होंने इसे एक नली द्वारा उस टेलीफोन से जोड़ दिया जिसका दूसरा सिरा एक दूसरे कमरे में था, जहां कुछ लोग काम कर रहे थे और तब उससे कुछ दूरी पर खड़े होकर साधारण स्वर से उन्होंने कुछ कहना आरम्भ किया। यह दूसरे कमरे में साफ़ साफ़ सुनाई दिया और दूसरे कमरे का उत्तर इन्हें सुनाई पड़ा। इस यन्त्र से यह लाभ होगा कि किसी कारखाने के मालिक को अपने कमरे में से बैठे ही बैठे सारे कारखाने में काम करते हुए लोगों से बात चीत करने

में टेलीफ़ोन को मुँह या कान में नहीं लगाना पड़ेगा। केवल इस यन्त्र को टेलीफ़ोन से जोड़ देने में सब काम हो जायगा। अँपेज केवल इतना ही है कि बात करने वाला यन्त्र से १५ फुट से अधिक दूर न हो।

ज्योतिष प्रबन्ध।

[दूसरे अंक के आगे]

बहुत से तारे ऐसे हैं जो अपने आस पास के तारों से कभी नहीं हटे बढ़े देखाई देते। तात्पर्य यह कि उनके सापेक्षिक स्थान सदा समान ही रहते हैं। इनको 'स्थिर तारे' (Fixed stars) कहते हैं और कुछ तारे ऐसे भी देखने में आते हैं जिनके स्थान बदला करते है। कभी वे किसी स्थिर तारों के साथ रहते हैं और कभी दूसरों के साथ देखाई देने लगते हैं। इनको ग्रह (Planets) कहते हैं।

सूर्य, शुक्र, बृहस्पति, मंगल इत्यादि अपने स्थान नियमानुसार स्पष्ट बदलते रहते हैं अतएव वे सब ग्रह ही कहलाते हैं। इन सभों का सम्बन्ध हमारी पृथ्वी से अधिक है अतएव ये सब सौर जगत (Solar System) कहलाते हैं क्योंकि ये सब सूर्य की परिक्रमा करते हैं। हमारी पृथ्वी भी जिसपर हम बसते हैं एक ग्रह ही है। यह सौर जगत का विवरण हमारे लिये अधिकतर उपादेय है। इसीका वर्णन करना हमारा मुख्य उद्देश्य है।

इस सौर जगत में सब से बड़ा और प्रचण्ड तेजमान सूर्य ही है। उसीके कारण से हमारा जीवन हमारी स्थिति है। अतएव उचित तो यही था कि पहिले सूर्य का ही वर्णन किया

जाय। परन्तु हम लोग पृथ्वी पर से ही सबका निरीक्षण करते हैं और यही मानो हमारा वेधालय है। इसी पर से अन्य ग्रहों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने के नियम बाँधे गए हैं जिनका जान लेना और समझ लेना सब से पहिले उचित है। ऐसी अवस्था में पृथ्वी के विवरण का पहिले करना लाभदायक और युक्तिसिद्ध जान पड़ता है।

पृथ्वी।

ज्योतिष विद्या के जितने उत्तम उत्तम ग्रन्थ हैं सभों में पृथ्वी को गोलाकार ही माना है। पृथ्वी का आकार गोल नारङ्गी के समान उत्तर और दक्षिण ध्रुव के नीचे कुछ चिपटा है। पृथ्वी का घेरा इतना बड़ा है कि छोटी काया वाले मनुष्यों को उसके पृष्ठपटल का झुकाव भली भांति नहीं देखाई दे सकता। फिर भी अन्य अन्य बातों से सिद्ध हो जाता है कि पृथ्वी गोल ही है।

इस बात में तो किसी को भी सन्देह न होगा कि जल सदा समानपृष्ठ ही रहता है कहीं नीचा कहीं ऊंचा नहीं रह सकता जैसे कि ठोस पदार्थ रह सकते हैं। अतएव समुद्र के किनारे पर खड़े होने पर कोई चीज दृष्टि को रोकने वाली नहीं रहती जब तक कि कोई कृत्रिम चीज बीच में न आजाय।

अब यदि किसी जाते जहाज को देखें तो पहिले उसके समस्त भाग देखाई देते रहेंगे परन्तु दूर जाने पर क्रमशः जहाज के नीचे का भाग अदृश्य होता जायगा, यहां तक कि केवल मस्तूल मात्र देखाई देगा और वह भी कुछ देर में लुप्त हो जायगा। यदि पृथ्वी गोल न होती, सपाट ही होती

तो दूर चले जाने पर भी जहाज का समस्त भाग देखाई देता। पृथ्वी के गोलाकार होने के कारण जहाज का अधोभाग पृथ्वी के झुकाव के साथ हमारी दृष्टिरेखा की सीध से नीचा होकर ढप जाता है।

इसके अतिरिक्त दूर देश की यात्रा करने पर उत्तर वा दक्षिण ध्रुव का एक समान ऊपर उठना वा नीचे झुकना कदापि देख न पड़ता यदि पृथ्वी समपृष्ठ होती। [पहिला चित्र देखो] मान लो कि कोई व्यक्ति क स्थान से उत्तर की ओर चले तो पहिले क स्थान पर उसको ध्रुव = ध्र "उ क ध्र" झुकाव पर देखाई देगा और इन स्थान पर ध्रुव कुछ ऊपर उठा प्रतीत होगा अर्थात् "उ ख ध्र" बड़ा होगा "उ क ध्र" से। फिर उसी समान दूरी ग पर ध्रुव का उठाव उतना ही न होगा जितना कि क और ख के अन्तर पर देखने में आया था। अब यदि पृथ्वी को गोलाकार मानकर इसका विचार करते हैं तो रेखागणित से सिद्ध हो सकता कि समदूरियों पर ध्रुव का उच्च वा नीच होना एक समान होता रहेगा।

सूर्य और नक्षत्र इत्यादिकों की स्फुट गति।

हम जब आकाश की ओर कुछ देर लों देखते हैं तो हमे यही प्रतीत होता है कि सूर्य वा तारे इत्यादि पूरब से उदय होकर पश्चिम में जाकर अस्त हो जाते हैं। चाहे पृथ्वी की गति से ऐसा होता हो वा सूर्यादि की गति से, पर सूर्यादि की गति देखने में आती है। इसको ज्योतिष में स्फुट गति (Apparent motion) कहते हैं। वास्तव में किस की गति है इसका वर्णन आगे किया जायगा पर देखने में तो यही भासता है कि नक्षत्रादि ही चलते हैं। अभी जो

नक्षत्र पूरब से उदय होकर देखाई देने लगा था दो तीन घण्टे के उपरान्त वह बहुत ऊपर चढ़ आया। अब यह नक्षत्र कितना ऊपर चढ़ा, इसकी स्फुट गति कितनी है, इसका ठीक स्थान कहां पर है जिससे एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को जो दूर रहता हो लिख कर बता सके, ऐसे ही बहुत सी उपादेय बातें जानने के अर्थ हमे इस आकाश के ऐसे विभाग कर देने आवश्यक हैं कि जिनके द्वारा हमारा उद्देश्य भी पूरा हो जाय। इसलिये किसी स्थिर विन्दु वा वृत्त का इस पोले गोलाकार आकाश में मान लेना वा निश्चित कर लेना अत्यावश्यक हैं। इस विभाग का सबसे पहिले वर्णन कर देना उचित है।

जब हम ऐसे मैदान में खड़े होकर चारों ओर दृष्टि फैलाते हैं जहां पर से दृष्टि को कोई रोक न हो तो मालूम होता है कि आकाश चारों ओर से झुक कर पृथ्वी से जा मिला है। जहां आकाश और पृथ्वी का मिलना देखाई देता है उसे क्षितिज (Horizon) कहते हैं।

यह स्थान स्थिर न होने पर भी सदा एक समान स्थित रहता है,अर्थात् हमारा क्षितिज वृत्त सदा स्थिर ही रहता है। [दूसरा चित्र देखो] मान लो कि द्र एक द्रष्टा का स्थान है जिसमें पू पूर्व दिशा, उ = उत्तर, प = पश्चिम और द = दक्षिण दिशाएं हैं। मान लो द्र स्थान पर यदि एक पतली डोर में लट्टू बाँध कर जिसे साधारण में साहुल (Plumb) कहते है, लटकावें और उस डोर का ऊपरी सिरा आकाश में ख विन्दु पर जा मिलता है तो ख विन्दु को जो ठीक द्र के सिर पर है खस्वस्तिक (Zenith) कहते हैं। और ठीक नीचे वाले

तीसरा चित्र।
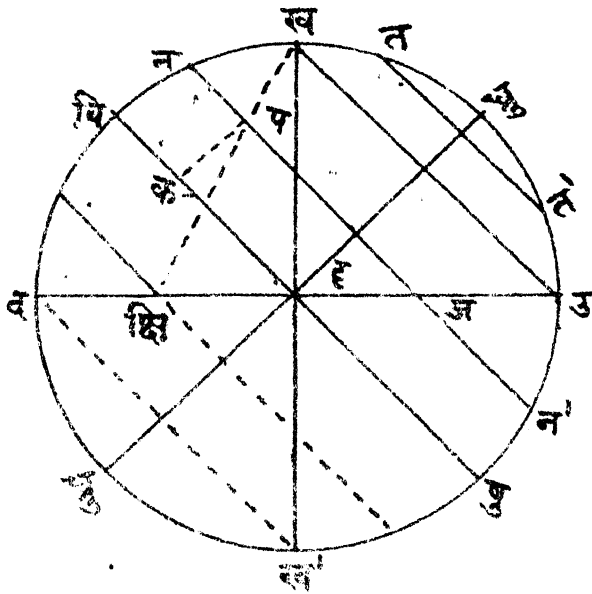
चौथा चित्र।
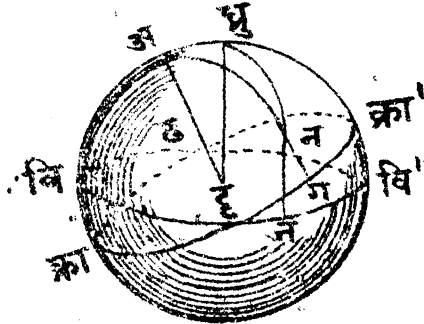
सिरे को जो 'अ' है अधःस्वस्तिक (Nadir) कहते हैं। अब यदि उसे ५१॥ अंश पर एक विन्दु ध्रु मानें और मान लो कि यह विन्दु ध्रुव है तो ध्रु द्रू ध्रु' रेखा एक ऐसी कल्पित रेखा होगी जिसके चारों ओर गगनचारी नक्षत्र घूमते दिखाई देते हैं, तो ये दोनों ध्रु और ध्रु' विन्दुओं का नाम ज्योतिष शास्त्र में खगोल गर्भ ध्रुव (Poles of the heavens) रक्खा है। और ध्रु ध्रु' रेखा को ध्रुवाक्ष (Polar axis) कहते हैं। द्रू ख रेखा दिगंश रेखा (Vertical line) कहलाती है।

जितने वृत्त ख अ विन्दुओं पर से ऐसे बनाए जांय जिनके धरातल दिगंश रेखा पर से होकर बनें, जैसा कि ख पू अ प वृत्त बना है, तो ऐसे प्रत्येक वृत्त का नाम दृगमण्डलदिगंश (Vertical circles) है। और जब यही दृगमण्डलदिगंश ध्रुवों पर से होता हुआ बने अर्थात् वह वृत्त जो ध्रुवों, खस्वस्तिक और उत्तर और दक्षिण दिशा के विन्दुओं पर से होकर बनता है तब उसका नाम 'याम्योत्तर वृत्त (Meridian circle) होता है और इसके धरातल (Plane) को याम्योत्तर (Meridian) कहते हैं। याम्योत्तर वृत्त पर जो वृत्त समकोणगत बने जैसा कि ख पु अ प वृत्त है तो इसका नाम 'पूर्वापरवृत्त' (Prime Vertical Circle) रक्खा गया है। यह वृत्त खस्वस्तिक से होता हुआ पूर्व और पश्चिम दिक के विन्दुओं को काटता हुआ बनता है।

उक्त याम्योतर वृत्त जहां पर क्षितिज से होकर जाय वहीं ठीक उत्तर और दक्षिण विन्दु हैं। जैसे उ = उत्तर और द = दक्षिण विन्दु। इसी प्रकार जिन विन्दुओं पर पूर्वापर वृत्त क्षितिज को काटता है वेही हमारे शुद्ध पूर्व और

पश्चिम विन्दु होंगे। जैसे पू = पूर्व और प = पश्चिम।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि ध्रुव वा ध्रुवाक्ष के ही चारों ओर समस्त नभचारी तारों की स्फुट गति प्रायः देखी जाती है। और जब ये सब घूमते हुए हमारे क्षितिज पर आने लगते है तब देखाई पड़ते हैं और उसके नीचे चले जाने पर ओट में हो जाते हैं, इसीको अस्त होना कहते हैं। कुछ तारे ऐसे हैं जो हमारी दृष्टि से कभी भी अस्त नहीं होते, यद्यपि उनका स्थानव्यतिक्रम किसी निर्दिष्ट समय पर होता रहता है, तात्पर्य यह कि मान लो आज ध्रुव के पास एक विशेष तारा १० बजे रात्रि को याम्योत्तर वृत्त के लगभग देखाई देता है, वही तारा अब २ महीने उपरान्त १० बजे रात्रि के समय पश्चिम दिक में झुका हुआ दिखाई देने लगता है और इसके भी ४ मास पीछे वह तारा अब ध्रुव की दूसरी ओर देखाई देने लगता है परन्तु अस्त कभी नहीं होता क्योंकि वह क्षितिज के नीचे नहीं जाता।

चित्र न० ३ में वृत्त के स्थानों पर उनके धरातल देखाए गए हैं। ध्रुवाक्ष को समकोण से काटती हुई जो धरातल रेखा वि घु है उसे विषुवद् रेखा कहते हैं वा नाड़ीमण्डल (Equator) कहते हैं। हम ऊपर लिख आए हैं कि ध्रुव वा ध्रुवाक्ष के ही चारों ओर नभचारी तारे घुमते देखाई पड़ते हैं। अब मान लो कि ध्रुव के पास के एक तारे का पथ त त' है तो प्रगट ही है कि वह सदा हमारी दृष्टि में रहेगा, न वह क्षि ज अर्थात् क्षितिज धरातल के नीचे जाता है न वह अस्त होता है। अब एक दूसरा तारा लो जिसका पथ न न' है तो जब वह ज पर आता है तो वह देखाई देने लगता है

और कुछ देर पीछे वह ऊपर आ जाता है, तो जितना वह ऊपर को चढ़ा है उस समय की उसकी उच्च स्थिति को अर्थात् खस्वस्तिक और उक्त तारे से होता हुआ जो वृत्त क्षितिज को काटता है (इसे दिगंश कहते हैं) उसका वह चाप जो क्षितिज और तारे के बीच में हो, उसको उन्नतांश (Altitude) कहते हैं। मान लो कि कोई एक तारा किसी निर्दिष्ट समय पर प स्थान पर है तो प क्षि रेखा वा उस वृत्त का कोणमान जिसकी वह धरातल रेखा है उसका उन्नतांश कहावेगा और जब यही तारा न स्थान पर आजायगा तो इसके अधिकतम उच्च स्थान की पराकाष्ठा हो जायगी। इसको उस तारे का 'याम्योत्तर स्थान' (Culmination) कहते हैं। और यम्योत्तर का वह चाप वा भाग जो किसी तारे के याम्योत्तर स्थान और दक्षिण विन्दु के बीच में है उसे याम्योत्तर उन्नतांश (Meridian altitude of the star) कहते हैं। नाड़ीमण्डल के समानान्तर जितने वृत्त आकाश में बनते हैं उन्हें 'उन्नतांश मामानन्तर' कहते हैं।

स्मरण रहे कि किसी चीज का शुद्ध स्थान जानने के लिये दो स्थिर विन्दुओं को लेना पड़ता है, इस लिये किसी विशेष स्थान से विशेष समय पर किसी विशेष नक्षत्र का ठीक स्थान बताने के लिये एक तो उन्नतांश और दिगांश कोटि (Star's azimath) निकाले जाते हैं। उक्त नक्षत्र की 'दिगांश कोटि' (Star's azimath) क्षितिज का वह चाप वा भाग है जो दक्षिण विन्दु और दिगांश वृत्त के बीच में हो जैसे द क्षि।

विदित रहे कि ग्रहादिकों के ठीक ठीक स्थान निर्दिष्ट करने के अर्थ दो रीतियां और भी है (१) विषुवद् रेखा के सम्बन्ध से और (२) सूर्य पथ से जिसे क्रांति वृत्त (Ecliptic) कहते हैं।

[चौथा चित्र देखो]

(१) विषुवद् रेखा के सम्बन्ध से ग्रहों के स्थान निकाल लेने की रीति यह है कि जिस नक्षत्र वा ग्रह का स्थान जानना होता है उस पर से एक महत वृत्त ऐसा बनाते हैं जो ध्रुवों पर से होकर बने जैसे ध्रु ज एक वृत्तखण्ड है जो न ग्रह पर से होकर बना है जिसका कि स्थान नियत करना है। अब एक विन्दु और भी ऐसा मानना चाहिए जहां से उक्त ग्रह का स्थान निश्चित रूप से एकही विन्दु पर स्थिर हो जाय इसके लिये विद्वानों ने वह विन्दु माना है जहां पर क्रान्ति वृत्त क्रा क्रा' जो कि सूर्य की स्फुट गति का पथ है, विषुवद् रेखा को काटता है।

इन दो विन्दुओं को, जहां पर नाड़ीमण्डल और क्रान्तिवृत्त एक दूसरे पर से हो कर जाते हैं, सायनमेष (First point of Aries) और सायनतुला (First point Libra) कहते हैं। ये वेही स्थान हैं जिन पर जब सूर्य आता है तब दिन और रात सब जगह बराबर होते हैं।

चित्र न० ४ में वि वि' विषुवद् रेखा है जिसका उत्तरीय ध्रुव ध्रु है और मानलो कि क्रा क्रा' क्रांतिवृत्त है। ये दोनों वृत्त मे और त विन्दुओं पर मिले हैं, इनमें से मे सायन मेषविन्दु और तु सायन तुलाविन्दु है। यद्यपि ये विन्दु प्रति वर्ष ५०" के लगभग अपने स्थान से हट जाते हैं तथापि इनके सूक्ष्म स्थानच्युति के कारण वे एक नियत विन्दु मान लिए गए हैं।

अब विषुवद्रेखा के सम्बन्ध से जो ग्रह के स्थान नियत किए जाते हैं उनकी रीति यह है कि ध्रुवों और किसी विशेष ग्रह पर से जिसका कि स्थान निकाला जाता है एक महत्वृत्त

बनाते हैं, जैसे ध्रु ज जो इस महत् वृत्त का एक भाग मात्र है। मान लो कि न एक ग्रह का स्थान है जिसका कि स्थान निकालना है जिस पर से उक्त चाप बनता है तो अब स्पष्ट है कि विषुवत् रेखा से इसकी ऊंचाई न ज है, इसका नाम क्रांत्यंश (Right ascension) है और मे. बिन्दु से इसकी दूरी मे ज है, इसे विषुवांश (Declination) कहते है।

इसी रीती से क्रान्तिवृत्त के सम्बन्ध से जो महत् वृत्त बनाया जाता है वह क्रान्तिवृत्त के ध्रुव पर से होकर बनाया जाता है जैसे अ न ग। इस रीति से न ग उक्त ग्रह की ऊंचाई को अक्षांश (Latitude) और मे ग दूरी को भुजांश Longitude) कहते हैं।

सूर्य इत्यादि ग्रह नित्य हटते रहते हैं इसलिये इनके प्रति दिन के स्थान उक्त रीतियों से निकाल कर पंचाङ्गों में लिख दिए जाते हैं जिसको देख कर मालूम हो सकता है कि आज अमुक ग्रह की स्थिति कहां पर है।

[क्रमश:]

---:0:---

प्रणव की एक पुरानी कहानी।

[दूसरे अंक के आगे]

इन तीन शक्तियों में से प्रत्येक के तीन विभाग और दिए हैं-ज्ञान इच्छा और क्रिया के हिसाब से। लक्ष्मी क्रिया शक्ति के भी तीन आकार हो जाते हैं रमा लक्ष्मी और शारदा। रमा में ज्ञानांश का मेल है-लक्ष्मी शुद्ध क्रिया रूप है-और शारदा में क्रिया के साथ इच्छा मिली है।

इसी प्रकार से सरस्वती के तीन भेद-ऐंद्री ब्राह्मी और सरस्वती हैं।

और सती के तीन भेद सती, गौरी और पार्वती हैं। इन नवों के समाहार का नाम भैरवी है।

यही दश महाविद्या ज्ञान इच्छा क्रिया के भेद से होती है।

देवताओं के वाहन हंस गरुड़ और वृषभ का भी अर्थ देश काल और गति से है। येही तीन देश काल और गति, मकार अर्थात् निषेध के तीन गुण समझने चाहिएं, और साक्षात् निषेधस्वरूप शून्यरूप है, देश भी पोल ही है—काल भी असत्स्वरूप है और गति जो केवल देश और काल के मिलने से ही पैदा होती है वह भी परम शून्यरूप है, क्रम एक के बाद एक, इसी का नाम गति क्या क्रियामात्र है, तो केवल क्रम पदार्थ में कौन अस्तिता है-पर यद्यपि ये तीनों परम असत् स्वरूप हैं तो भी बिना इनके संसार असंभव है। इन्हीं में संसार है।

जो पुराणों में देवताओं के आभूषण और शस्त्र अस्त्र कहे हैं उनका भी रहस्य अर्थ इसी प्रकार का है।

इन शक्तियों के अनंत प्रकार का वर्णन सामवेद में किया है।

तीनों वेदों के विषयों का समाहार-उनका सामनाधिकरण्य और योग के प्रकार-ज्ञान इच्छा क्रिया का शरीर की नाड़ी इड़ा पिंगला सुषुम्ना आदि से संबन्ध और संसार के प्रबन्ध करने वाले अधिकारियों के कर्म और उनके परस्पर संबंध का वर्णन इसमें कहा है।

ब्राह्मण, उपनिषत्, उपवेद, और शुक्ल, कृष्ण शाखा के ग्रंथों में भी क्रमशः ब्रह्मा विष्णु शिव के मातहत अधिकारियों ने अपने अपने महकमें की और ज्यादा तफसील कही है। (केवल एक दो उदाहरण यहां दिए जाते हैं)

क्रम से अहं का अर्थात चेतना का धीरे धीरे सात तत्वों अर्थात महत्, बुद्धि, आकाश, वायु, तेजस् आपस्, और पृथ्वी को ओढ़ना तथा इनके अणु और परमाणुओं की बनावट कही है। किस प्रकार से इनमें धीरे धीरे चेतना का विकास होता है—किस प्रकार से जीव क्रमशः धातु, वृक्ष, पशु, चंद्रात्म, सौरात्म, मनुष्य, देवता आदि योनियों में वृद्धि पाता है—इस ब्रह्मांड में जिसके परमेश्वर महाविष्णु हैं जिनका प्रत्यक्ष शरीर सूर्यबिंब है कितनी पृथ्वियां अर्थात ग्रह हैं जिन पर जीव की वृद्धि होती है वे सब बात इनमें सविस्तर वर्णन की हैं।

हर जगह अ, उ और म का संबन्ध और अनुकरण हर बात में दिखाया है यथा पृथ्वी तत्त्व में तीन भेद हैं-ज्ञानप्रधान परमाणु जो पृथ्वी परमाणु है, क्रियाप्रधान का नाम मेदिनी—और इच्छाप्रधान का नाम मही है तथा जल के भेद में ज्ञानप्रधान का नाम सलिल, इच्छाप्रधान का नाम अपस्, और क्रिया प्रधान का नाम तोय है। एवम् अग्नि-तेजस-वह्नि। एवं मारुत-पवन-वात। एवं आकाश-चिदाकाश-महाकाश, इत्यादि।

इस ग्रंथ में अंतःकरण की वृत्तियों में विशेष कर के अ उ म के अनुसार त्रिकों को दिखाया है।

इस थोड़े समय में केवल एक सूची मात्र आपके सामने पढ़ जाता हूं और कहने का अवसर नहीं है।

अंत:करण में तीन प्रकार मन, बुद्धि और चित्त और उनका समाहार अहंकार है। ज्ञान में संकल्प, विकल्प और अनुकल्प; इच्छा में आशा, आकांक्षा, कामना; क्रिया में– क्रिया, प्रतिक्रिया, अनुक्रिया इत्यादि त्रिक हैं।

छ अंग और छ उपांग भी इसी प्रकार बर्णन किए हैं, जैसा आज कल इन सब में परस्पर विरोध प्रचलित है उस सब का इस ग्रंथ में परिहार देख पड़ता है और यह स्पष्ट होता है कि ये सब शास्त्र सचमुच एक ही ज्ञान शरीर के अंग और उपांग अन्वर्थ हैं।

सब शास्त्रों में तीन बातें प्रधान हैं आत्मा अनात्मा और निषेध; अथवा ज्ञान क्रिया और इच्छा के अनुसार।

नीति शास्त्र में धर्म ज्ञान के स्थान है, अर्थ क्रिया के, काम इच्छा के और मोक्ष उनका समाहार है।

न्याय में प्रमाण (अनात्मा), प्रमेय (आत्मा) और संबय (इच्छा) का समाहार प्रयोजन (मोक्ष) में होता है। न्याय शास्त्र का दूसरा त्रिक भी क्रिया, कारण, कर्त्ता है, उसका भी समाहार प्रयोजन ही है।

वैशेषिक के मुख्य त्रिक दो हैं–द्रव्य गुण कर्म और सामान्य विशेष समवाय। सामान्य आत्मा स्थानीय है। विशेष अनात्मा और समवाय इच्छा स्थानीय है।

योग में चित्त ज्ञानरूप आत्मा स्थानीय, वृत्ति क्रियारूप अनात्मा स्थानीय और विरोध इच्छारूप संबन्ध स्थानीय हैं। परम ज्ञान, मोक्ष यहाँ समाहार है।

सांख्य में प्रकृति, पुरुष और असंख्येय ब्रह्म यह त्रिक है।

मीमांसा में स्वार्थ परार्थ, और परमार्थ इन तीन प्रकार

के कर्मों का वर्णन है–एक जो अपने हित के लिये किया जाय–एक जो पराये के भले के लिये किया जाय–एक जो केवल उचित है, इस कारण से फलाफल का विचार छोड़ कर जो किया जाय।

वेदांत में जीव आत्मास्थानीय है, माया संसारस्थानीय और ब्रह्म सम्बन्धस्थानीय है। इन सब का समाहार प्रणव स्वयम् है।

व्याकरण में त्रिवर्ग बहुत देख पड़ता है। स्वर-व्यंजन और विसर्ग और अननासिक; उदात्त, अनुदात्त और स्वरित; प्रतिपदिक वा संज्ञा, धातु और कारक, समास (समाहार); कर्त्ता, कर्म, करण इत्यादि। इनमें संज्ञापद आत्मास्थानीय है धातु क्रियास्थानीय और कारक इच्छास्थानीय है।

इस सभा का भाषा से अधिक सम्बन्ध है इस कारण व्याकरण ही के विषय में कुछ विशेष कह कर यह कहानी समाप्त करता हूं।

भाषा का प्रयोजन अपने अर्थ का दूसरों को जना देने से है, तो क्या यह केवल शब्द द्वारा हो सकता है, दृश्य, इंगित और चेष्टा तथा इशारों से भी होता है। गूंगे बहिरे लोग ऐसा करते भी हैं। फिर अधिकतर शब्द अर्थात् श्रव्य भाषा का प्रयोग क्यों कर है? इसका उत्तर यही है कि संसार की इस अवस्था में श्रोत्रेन्द्रिय की अधिक वृद्धि है। सब चीजें तत्वों की बनी हैं। उन सब में आकाश है जिसका गुण शब्द है। इस कारण प्रत्येक वस्तु से शब्द निकल रहा है, भिन्न भिन्न कानों में पड़ कर उस शब्द का रूप परिवर्तन हो जाता है। उसी परिवर्तितरूप का जो मनुष्य फिर अनुकरण कर

के उस उस वस्तु का स्मरण दूसरे को कराते हैं वही उसका नाम हो जाता है । श्रोत्रेंद्रिय की बनावट के भेद से भाषा भेद होता है यही कारण है कि इतने भेद भाषाओं के हैं—बल्कि यहां तक कहा है कि प्रति गव्यूति भाषा बदल जाती है सच तो यों है कि प्रति व्यक्ति भेद है । साथ ही इसके मनुष्य मात्र में यदि एक अंश भेद का है तो एक अंश सामान्य का भी है । इसी कारण से कहां है कि ऐसी भी भाषा है जिसको यदि उसका जानने वाला और कहनेवाला हो तो भिन्न भिन्न देश के लोग समझ सकते हैं ।

इस ब्रह्मांड में सप्त लोक हैं—प्रति लोक में एक प्रधान भाषा है, 'परा पश्यंती मध्यमा वैखरी' तो प्रसिद्ध ही है इसके सिवाय तीन और हैं सांप्रतिका चात्तिकी और सांवत्सिका । वैखरी जो इस भूलोक और जाग्रदवस्था की भाषा है, उसके अनंत भेद देश और काल के अनुसार हैं और होते हैं और होंगे । आकाश और श्रोत्रेंद्रिय और वागिंद्रिय प्रबल होने से श्रव्य भाषा है । यदि और तत्त्व और उसके सम्बन्धी ज्ञान और कर्म इंद्रिय कोई प्रबल होते तो उन्हीं के गुण की भाषा होती-यथा दृश्यभाषा, स्पृश्यभाषा, घ्रेयभाषा, स्वाद्य भाषा इत्यादि पर सब भाषाओं की बनावट में संज्ञापद क्रियापद और कारक अथवा हुरूफ़रावित (Preposition) किसी न किसी शकल से आवश्यक हैं और इसके बाद अनंत फैलाव है प्रथम मध्यम उत्तम पुरुष; भूत भविष्य वर्तमान; एकवचन, द्विवचन, बहुवचन; पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, इत्यादि इत्यादि जैसा जैसा जिस जाति का स्वभाव और उसकी आवश्यकता और व्यवहार होता है वैसी वैसी

उसकी भाषा और महावरे होते हैं और ज्यों ज्यों मनुष्य मात्र का परस्पर व्यापार व्यवहार मेल जोल बढ़ता जायगा उतनी भाषा की एकता होतने जायगीं ।

यह सब अनंत विस्तार और अनन्त एकता प्रणव में अंतर्गत है और उससे सिद्ध होती है ।

न भाषापरं नैव वा शब्दसिद्धं ।
न वाणीपरं ज्ञानगोऽतीतगम्यम् ॥
समाहारसंसारसारप्रसारम् ।
अकारं उकारं मकारं प्रकारम् ॥

[समाप्त]

सिकन्दरशाह ।

[दूसरे अंक के आगे]

सिकन्दर के ऐसे होने में अरस्तू का दोष नहीं था वरन तेज मिज़ाजी स्वेच्छाचार और असीम साहस ये बातें सिकन्दर ने अपने माता पिता से स्वाभाविक ही सीखी थीं । अरस्तू ने सिकन्दर को राजनैतिक तत्वों को ऐसी अच्छी तरह समझाया था कि उसने उन्हीं के सहारे यथासमय योग्यता से काम लेकर समस्त एशियाखण्ड पर विजय पताका उड़ाई। अरस्तू की शिक्षा से सिकन्दर को पुस्तक पठन पाठन का ऐसा प्रेम और अभ्यास हो गया था कि वह अपने अन्तरंग वा राज्य सम्बन्धी कार्य्यों से अवकाश पाते ही सदैव भांति भांति की पुस्तकें पढ़ा करता था, यहां तक कि जब वह

एशिया में रात दिन लड़ाई झगड़ों में लगा रहता था उस समय भी अवकाश पाकर पठन पाठन में प्रवृत्त हो जाता था।

शिक्षा प्राप्त कर चुकने के पीछे भी सिकन्दर अपने योग्य गुरू अरस्तू का अपने पिता की भांति आदर करता था, केवल आदर ही नहीं वह पिता की भांति उससे श्रद्धा भी करता था और साफ़ साफ़ कहा करता था कि जन्मदाता हो कर पिता पूजनीय है तो जन्मसुधारक होने के कारण शिक्षक का महत्व पिता से कम नहीं है। अरस्तू ने सिकन्दर को नीति, न्याय, तत्त्व, ज्ञान, इत्यादि के सिवाय कुछ विशेष विशेष बातें ऐसी बतलाई थीं कि जो सिवाय उन दोनों गुरू चेले के और किसी को मालूम नहीं थीं। एक समय जब कि सिकन्दर परशिया में था उसने सुना कि अरस्तू ने एक पुस्तक छपवाई है, और उसमें इन गुप्त विषयों का लेख है जो कि अब तक उसके सिवाय और किसी को नहीं मालूम हैं—इस पर उसने अरस्तू को लिखा कि यदि आप "एक्रोमेटिक और इपोप्टिक (Acromatic and epoptic) विद्या का सर्वसाधारण में प्रचार करेंगे तो इसका परिमाण अच्छा नहीं होगा। इसका उत्तर अरस्तू ने इस प्रकार से दिया कि मैं उस विद्या का सर्वथा प्रचार नहीं कर रहा हूं परन्तु हां मेरे लेखों में उस भाग से कुछ सम्बन्ध अवश्य है और क्या जाने इसी कारण से हो कि सिकन्दर का मन अरस्तू की तरफ से कुछ खटक सा गया। यद्यपि सिकन्दर ने अरस्तू को किसी प्रकार हानि नहीं पहुंचाई और न उसने उसका कभी अनादर किया परन्तु उसकी अचल भक्ति में अवश्य बट्टा लग गया।

फिलिप ने अरस्तू को इस शिक्षा सम्बन्धी कार्य्य के

बदले में जो पारितोषिक दिया वह यह था कि अरस्तू का जन्मस्थान शहर स्तनजिरा जिसको फिलिप ने पहिले किसी कारण वश बरबाद और उजाड़ कर दिया था, फिर से आबाद करवा कर उसे हाट, बाट, चौहटे, बाजार बाग बगीचे आदि सब भांति से एक सुन्दर राजधानी की भांति सज कर कुछ जागीर के साथ अरस्तु को दिया गया। स्तनजिरा में कुछ टूटे फूटे मकान और पत्थर पड़े हुए हैं जो कि अब भी अरस्तू के सम्बन्ध में उपरोक्त स्थानों के चिन्ह कहे जाते हैं।

सिकन्दर का यौवन काल।

जिस समय सिकन्दर की उम्र केवल सोलह वर्ष की थी उसके पिता फिलिप को एथिनियन लोगों पर चढ़ाई करना पड़ा जो कि डिमास्थानिज़ नामक गायक के उभाड़ने से मेसोडोन के विरुद्ध सन्नद्ध हो कर अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे। फिलिप सिकन्दर को राजधानी की रक्षा पर छोड़ कर जिस समय आप शत्रुओं के सम्मुख गया। इधर मेदी नामक एक पुराने बागी ने उपद्रव मचाना शुरू किया। सिकन्दर ने स्वयं उस पर आक्रमण कर के उसे सपरिवार दमन कर डाला और उसके निवासस्थान पर आस पास के मनुष्यों को बटोर कर एलेकजेण्ड्रोपोलीज़ नामक शहर आबाद किया। तब तक थीबीयन लोगों ने सर उठाया अतएव सिकन्दर ने पिता की आज्ञानुसार उन्हें सदैव के लिये मेसोडोन के अधीन बना लिया। उसने थीबियन लोगों को इस बात का भी विश्वास दिला दिया कि वे सिकन्दर के रहते अब स्वतंत्रता की इच्छा

न करें। फिलिप सिकन्दर की इस वीरता और पराक्रम से ऐसा प्रसन्न और सन्तुष्ट हुआ कि वह जब कभी प्रेम में आकर सिकन्दर को मेसोडोन का बादशाह और अपने को उसका सेनापति कहा करता थ।

परन्तु पिता पुत्र का यह वात्सल्य प्रेम बहुत दिनों तक न निभ सका। पिता पुत्र दोनों के हृदय में शीघ्रही ऐसा वैमनस्य उत्पन्न हो गया कि आगे लिखा हुआ जिसका परिणाम सिकन्दर ऐसे बुद्धिमान पुरुष के सम्बन्ध में किसी प्रकार कलंक का कारण भी कहा जा सकता है, परन्तु वह उसका हेतु नहीं था। इस वैमनस्य का हेतु विलक्षण है। इस लिये इसका सम्पूर्ण दोष होनहार ही रक्खा जाना उचित है।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर की माता ओलंपियस को अपनी इष्ट आराध्या देवी डोनियस की बड़ी भक्ति थी। इसी कारण उसे सर्पों से इतना अधिक प्रेम था कि पांच कालस्वरूप काले काले कालिया भुजङ्ग सदैव उसके पास रहा करते थे और क्या जाने उसके इसी व्यवसाय से फिलिप को उससे एक प्रकार से ऐसी घृणा और असमंजसता उत्पन्न हो गई कि वह उससे दूरही रहने लगा। यद्यपि दंपति में उक्त व्यवहार इसी रीति पर बहुत दिन से चला आता था परन्तु वे बालक सिकन्दर को समान रूप से प्यार करते थे किन्तु सिकन्दर पिता से अधिक अपनी माता को ही चाहता था। कुछ दिनों पीछे फिलिप का चित्त ओलंपियस से ऐसा खट्टा हो गया कि उक्त विरोध का अङ्कुर दोनों के दिलों से फुट निकला और

वे एक दूसरे के पूरे विरोधी बन गए, फिलिप ने चिढ़ कर अतलस की पुत्री क्लियोपात्रा से अपना दूसरा विवाह कर लिया । ओलंपियस का स्वभाव अत्यन्त क्रूर और डाही था इसलिये उसने पति के इस व्यवसाय से कुढ़ कर सिकन्दर को पिता के विरुद्ध उभाड़ना चाहा, किन्तु बुद्धिमान सिकन्दर इस बात को टालता ही गया अन्त में एक दिन का ज़िक्र है कि फिलिप की नवीन भार्य्या के सम्बन्धियों में से किसी की शादी थी । उसमें फिलिप, सिकन्दर तथा राज्य के अन्य कर्मचारी गण प्रस्तुत हुए । जिस समय आमोद प्रमोद में मग्न होकर लबालब मद के प्याले ढलने लगे उसी समय नव बधू महारानी के पिता ने यह कह कर शराब का प्याला खाली करना चाहा "कि नव बधू के गर्भ से जन्मा हुआ बालक मेसीडोन का उत्तम शासक हो" । इस पर सिकन्दर से न रहा गया उसने साम्हने रक्खा हुआ प्याला उक्त दरबारी के सिर में ऐसे जोर से फेंक कर मारा कि वह बेहोश हो गया । इस पर फिलिप मदान्ध अवस्था में अत्यन्त आवेग और क्रोध के वशीभूत होकर म्यान से तलवार खींच कर सिकन्दर पर ऐसा झपटा कि जो अधिक मदोन्मत्तता के कारण लड़खड़ा कर गिर न पड़ता तो उसने सिकन्दर को काटकर दो टुकड़े कर ही दिया होता । फिलिप के लड़खड़ा कर गिरने पर सिकन्दर ने एक गम्भीर स्वर से केवल यही कहा जो शख्स समस्त एशिया देश पर विजय प्राप्त करना चाहता है उसकी यह दशा है कि एक कदम भी अच्छी तरह आगे नहीं बढ़ा सकता ।

इतना कह कर सिकन्दर वहां से चल दिया । उसने

उसी समय अपनी माता को तो एपिरस भेज दिया और आप इलेरिया (Illyria) को चला गया। परन्तु थोड़े ही दिनों बाद फिलिप ने सुना कि सिकन्दर वहां पर किसी हीन कुलकामिनी से सम्बन्ध करना चाहता है इसलिये उसनें उसे किसी प्रकार अपने पास बुला भेजा "यह बुलाना किस कारण से था सो तो ईश्वर ही जाने"—परन्तु फिलिप स्वयं उसी नवीन स्त्री के भाई भतीजों के बीच में रहता जिससे राज्य के प्राचीन सम्बन्धियों की मान मर्य्यादा में भी किसी प्रकार बट्टा लगने से वे सब के सब गुप्त रीति से सिकन्दर के सच्चे मित्र और सहकारी बन गए।

कुछ दिनों के बाद सिकन्दर की छोटी बहिन के विवाह होने का समय आया। इस विवाह के उत्सव में जब फिलिप श्वेत वस्त्र धारण किए राजसी ठाट से उत्सव भवन को जा रहा था ओसिया नामक एक पुरुष ने जिसको फिलिप ने किसी समय भरे दरबार अनुचित बातें कह कर बेइज्जत किया था सहसा आकर फिलिप के पेट में तलवार घुसेड़ दी और आप भाग कर निकल गया होता परन्तु अङ्गूर की बेल में पैर लपट जाने से गिर पड़ा और फिलिप के शरीर रक्षकों ने उसे काट कर टुकड़े टुकड़े कर डाला।

सिकन्दर शाह का शासन।

उपरोक्त रीति से फिलिप के मारे जाने पर बीस वर्ष की अवस्था में सिकन्दर शाह मेसीडोन के राज्यसिंहासन पर बैठा। उक्त घटना के दो महीने पीछे तक राज्य कार्य्य सब ज्यों का त्यों चलता रहा। इस अवसर पर

सिकन्दर ने पिता के मृत कर्म से निश्चिन्त होकर एवं अपने दरबारियों और राज्य सम्बन्धी सब मनुष्यों को अपने भविष्य में होने वाली राज्य शासन प्रणाली की सूचना देकर उन्हें युक्ति पूर्व्वक यह समझा दिया कि मैं अपने से विरोध करने वाले को दण्ड देने में जितना उद्दण्ड हूं अपने अधीन होने वाले पर मैं उतनाही कृपा करने वाला हूं। सिकन्दर ने सब से पहि राजधानी मेसीडोनिया के प्रबन्ध का पूरा पूरा इन्तजाम करके मेसीडोन की पहाड़ी सीमा पर रहने वाले लोगों पर अपना आतङ्क जमा कर उन्हें मेसीडोन राज्य की अधीनस्थ प्रजा बनाना चाहा और तब यूनान की अन्यान्य जातियों पर अधिकार जमा कर उसने अपने को यूनान देश का प्रधान नेता बनाना चाहा। अपनी इच्छा के विषय में अपना मन्तव्य स्पष्ट करके उसने अपने राज्य मन्त्रियों की सलाह पूछी तब उन्होंने उत्तर दिया कि यदि आप अपनी ऐसी इच्छा प्रगट करते हुए अन्यान्य जाति के नेताओं से पत्र व्यवहार करके सन्धि द्वारा ही उनके नेता बन सकें तो अच्छा हो। इस पर सिकन्दर ने उत्तर दिया कि वे जो सदैव से स्वतन्त्र रह कर नितान्त स्वेच्छाचारी हो गए हैं मेरे ऐसी इच्छा प्रगट करने पर मेरा तिरस्कार करेंगे और क्या संशय है कि वे सब लोग इकट्ठे मिल कर एक साथ ही इस राज्य के विरुद्ध बगावत ठान दें तो फिर उस अवस्था में उनका सम्हालना भी कठिन पड़ जायगा अतएव मेरे विचार से यही सिद्ध होता है कि मेरी उक्त इच्छा यूनान की समस्त भिन्न भिन्न जातियों पर आतङ्क जमाने से

ही पूर्ण हो सकती है । सिकन्दर का यह विचार सबने निर्विवाद स्वीकार कर लिया ।

यद्यपि फिलिप ने करीब करीब यूनान देश की सब जातियों पर आक्रमण करके उन पर मेसोडोन का प्रभुत्व प्रगट कर दिया था, परन्तु फिलिप की ये चढ़ाइयां ऐसी न थीं कि जिनका आतङ्क बहुत समय तक रहे । इसलिये सिकन्दर ने एक बड़ी भारी सेना लेकर मेसोडोम के उत्तर भाग की तरफ कूच किया और बराबर मार काट करता हुआ वह डेनूब तक चला गया । डेनूब पर उसको त्रिबली के बादशाह सरमस का साम्हना करना पड़ा, इस पथरीले और पहाड़ी मैदान में सिकन्दर की शिक्षित फौज ने बराबर चार महीने तक बड़ी बड़ी कठिनाइयां सहन कर सरमस को परास्त किया । जिस समय सिकन्दर इन पहाड़ी कन्दराओं में लड़ भिड़ रहा था उस समय ग्रीस के और देशों में यह खबर फैल गई कि सिकन्दर मारा गया है, इसलिये थीबियन लोग जो अब तक उसीके डर से मेसोडोन का अधिकार मानते थे, बिगड़ खड़े हुए और मेसोडोन के विरुद्ध बड़े बड़े यन्त्र रचने लगे । सिकन्दर ने जब यह खबर सुनी तो वह डेनूब से थीबीज़ पर इस वेग से आया कि जब वह सर पर ही आ पहुंचा तब थीबियन लोगों को मालूम हुआ कि सिकन्दर अभी जीता जागता है । सिकन्दर ने पहिले तो थीबियन के सरदार (Phanix) फानिक्स से कहला भेजा कि यदि वे उसे अपना अधिपत्ति स्वीकार कर लें तो वह उन्हें क्षमा कर देगा । अन्यथा वे पूरी तौर से बरबाद किए जांयगे । सिकन्दर के इस संदेसे को उन्होंने

.यों ही उड़ा दिया। इस लिये शिकन्दर ने इस वेग से आक्रमण किया कि उनसे सम्हालते न बन पड़ा। उसने थीबियन लोगों के गांव गांव शहर शहर को बरबाद कर दिया। पहिले तो बहुत से मनुष्य योंही कत्ल में मारे गए, शेष जो पकड़े गए उनमें से बहुत से मनुष्य तो गुलाम, की भांति बेच दिए गए शेष एक दम सैनिकों की चमकती हुई तलवारों के शिकार बने।

इसी समय कुछ सैनिक एक स्त्री को पकड़ कर एक अफ़सर के पास लाए और बोले कि इसने बहुत कुछ धन माल छिपा रक्खा है परन्तु बतलाती नहीं है, इससे जब अफ़सर ने पूछा तो स्त्री ने उत्तर दिया कि हां "मैंने लूट खसोट के समय अपना सब माल एक कुंए में डाल दिया है? अफ़सर यह कहता हुआ कि अच्छा बतलाओ स्त्री के साथ हो लिया। स्त्री ने एक कुंए के पास पहुंच कर कहा कि यह है। अफ़सर ने ज्योंही उस में झुककर देखना चाहा कि स्त्री ने उसे उसी कूंए में ढकेल दिया और ऊपर से पत्थर डाल दिया। तब सिपाही लोग उसे पकड़ कर सिकन्दर के पास ले गए, सिकन्दर ने उससे पूछा कि तू कौन है, उसने उत्तर दिया कि मैं उस थेजिन्स की बहन हूं जो, कि अपनी मात्रिभूमि की रक्षा के लिये तुम्हारे पिता फिलिप के सम्मुख क्रोनिया युद्ध में मारा गया है, सिकन्दर उसका यह उत्तर सुन कर उससे बहुत प्रसन्न हुआ और उसने स्त्री के उक्त कार्य्य की प्रशंसा करके उसे छोड़ दिया। डेमा-स्थानीज़ के बहकाने से एथिनीयन लोगों ने भी सर, उठाया था किन्तु थीबियन लोगों की ऐसी दुर्दशा देख कर

वे स्वयं चुप हो गए और उन्होंने अपने मुखियाओं को सिकन्दर के पास आप ही उसकी अधीनता स्वीकार करने के लिये भेज दिया ।

[क्रमशः]

सभा का कार्यविवरण ।

[४]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० १९ अगस्त १९०७—सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान—सभा भवन ।

उपस्थित ।

[१] बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०-सभापति । [२] रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स । [३] मिस्टर ए० सी० मुकर्जी बी० ए० । [४] पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० । [५] बाबू माधव प्रसाद । [६] बाबू गोपाल दास ।

[१] गत अधिवेशन [ता० २८ जूलाई १९०७] का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] पण्डित शिव प्रसाद दलपतराम का ३१ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बनिताबिनोद का अनुवाद गुजराती भाषा में प्रकाशित करने की आज्ञा मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि पण्डित शिव प्रसाद दलपत राम को बनिता विनोद का गुजराती अनुवाद प्रकाशित करने की आज्ञा इस शर्त पर दी जाय कि वे उसमें इस पुस्तक के विषय में इस सभा का उल्लेख कर दें ।

[३] पण्डित छन्नूलाल वकील का २ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यदि दीवानी

अदालत में एक मोहर्रिर नियत कर दिया जाय तो कई वकील लोग उसके द्वारा नागरी में अर्जियां लिखवावेंगे।

निश्चय हुआ कि छ मास के लिये पांच रुपए मासिक वेतन पर एक आरायज़ नवीस दीवानी अदालत में नियत किया जाय और वह जो अर्जियां नागरी में लिख कर दाखिल करे उनका ब्योरा एक रजिस्टर में रक्खा जाय।

[४] डाक्टर छन्नूलाल मिमोरियल मेडल सम्बन्धी लेख डाक्टर मुन्नालाल, डाक्टर बसन्त कुमार मुकर्जी और डाक्टर ईशानचन्द्र राय की सम्मति के सहित उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि मेडल पण्डित प्रसादी लाल झा को दिया जाय और उनके लेख के विषय में जो सम्मतियां आई हैं उनकी नकल उनके पास भेज कर उनसे प्रार्थना की जाय कि वे कृपा कर अपने लेख में विषैली वस्तुओं पर भी एक अध्याय लिख दें।

इस पुस्तक के छापने के विषय में पण्डित रामनारायण मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे कृपा कर इस पुस्तक को देख कर सभा को सम्मति दें कि इसको किस रूप में छपवाना उचित होगा।

[५] संयुक्त प्रदेश की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा और ललिता पारितोषिक के पर्चों के सम्बन्ध में सब-कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि निम्नलिखित बालकों और बालिका को पारितोषिक और प्रशंसापत्र दिए जांय।

मिडिल विभाग।

१ बेणी सिंह कक्षा ५ तहसीली स्कूल गाज़ीपुर ५), २ बाबू लाल कक्षा ६ टाउन स्कूल मिढ़ाखुर जि० आगरा ४), ३ अदैयवर तहसीली स्कूल बांसगांव जि० गोरखपुर ३), ४ कामता प्रसाद कक्षा ६ तहसीली स्कूल कानपुर, ५ मक्खनलाल कक्षा ६ तहसीली स्कूल कोल जि० अलीगढ़, ६ बद्री प्रसाद कक्षा ६, तहसीली स्कूल अकबरपुर जि० गोरखपुर, ७ सुन्दर लाल कक्षा ६ तहसीली स्कूल कायमगंज, ८ छेदी

सिंह कक्षा ६ तहसीली स्कूल बांसगांव जि० गोरखपुर, ८ हीरा सिंह कक्षा ६ तहसीली स्कूल हाथरस जि० अलीगढ़ ।

अपर-प्राइमरी विभाग ।

गौणानन्द कक्षा ४ अपरप्राइमरी कोट पट्टी सितोनस्यूं पौड़ी गढ़वाल ५), २ जसराम पातल पाठशाला चौन्दकोट जि० गढ़वाल ३), ३ बुद्धिमान कक्षा ४ तितौली स्कूल देवरिया जि० गोरखपुर २), ४ सूरजनारायण कक्षा ४ तितौली स्कूल देवरिया जि० गोरखपुर, ५ सरदार कक्षा ४ ओरई पाठशाला जि० फतहपुर हस्वा, ६ ब्रह्मानन्द राय कक्षा ४ सोमना पाठशाला लट्टूडीह मोहम्मदाबाद जि० गाजीपुर, ७ शिवप्रसन्न कक्षा ३ ओरई पाठशाला जि० फतहपुर हस्वा, ८ धूरेसिंह कक्षा ४ सोमना पाठशाला खैरा जि० अलीगढ़ ।

लोअर प्राईमरी विभाग ।

१ माहेसिंह कक्षा २ पाठशाला भैंसा मुवाना जि० मेरट४),२ रामदास कक्षा २ पाठशाला भैंसा मुवाना जि०मेरट २), ३रामजिआवन कक्षा २ ओरई पाठशाला जि० फतहपुर हस्वा२), ४ मुतसद्दीलाल कक्षा २ पाठशाला जि०. मेरट, ५ जगन्नाथ कक्षा २ पाठशाला घसारह बिधूना जि० इटावा, ६ शिवपाल कक्षा १ कर्वी स्कूल जि० बांदा, ७ लक्ष्मीनारायण कक्षा १ ब्रांच स्कूल अकबरपुर जि० कानपुर ।

ललिता पारतोषिक ।

मालदेई कक्षा १ मातागली मथुरा ।

[६] पण्डित हरनाम दास का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने कबीर साहब की बखतावली के छपवाने के लिये सभा से १००) रु० की आर्थिक सहायता मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि सभा "बखतावली" देखे बिना इस विषय में कुछ निश्चय नहीं कर सकती । ग्रन्थ देखने पर यदि वह सभा की सम्मति में उत्तम हुआ तो सभा उसके प्रकाशित करने का उद्योग करेगी ।

[७] शाहाबाद के पण्डित रामशरण शर्मा त्रिवेदी, गया के पण्डित रामचीज़ पांडे और गुजरात के पण्डित सीताराम बी० ए० के पत्र उपस्थित किए गए जिसमें उन्होंने सभासद चुने जाने की प्रार्थना की थी और साथ ही चन्दा क्षमा किए जाने के लिये लिखा था।

निश्चय हुआ कि इधर सभा को नागरीप्रचारिणी पत्रिका के मासिक करने में बहुत व्यय उठाना पड़ा है अतः इस समय सभा सभासदों का चन्दा क्षमा करने में असमर्थ है।

[८] "बालिकाओं के लिये कसरत" और "सुघर दर्जिन" ये दोनों पुस्तकें उपस्थित की गईं।

निश्चय हुआ कि "बालिकाओं के लिये कसरत" सभा द्वारा छपवाई जाय और "सुघर दर्जिन" के विषय में यदि पण्डित रामनारायण मिश्र सभा को सम्मति दें तो वह भी छपवाई जाय और इन दोनों पुस्तकों के ग्रन्थकारों को इनके मूल्य पर १५) रु० सैकड़े के हिसाब से ज्यों ज्यों पुस्तकें बिकती जांय पुरस्कार दिया जाय।

[९] पुस्तकालय की सूची बनाने के विषय में यह निश्चय हुआ कि नीचे लिखी बातें चार अलग अलग कागज़ों पर छपवा ली जांय और तब प्रत्येक पुस्तक के विषय में वे सब बातें लिखवाई जांय–१ नम्बर, २ नाम ग्रन्थ, ३ नाम ग्रन्थकर्ता, ४ नाम सम्पादक या टीकाकार, ५ नाम प्रकाशक, ६ विषय, ७ संस्करण और सन्।

[१०] बाबू माधव प्रसाद का १३ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि जो मनुष्य उनके यहां से ५) रु० की पुस्तकें एक साथ मंगावेगा उसे वे सभा की पत्रिका बिना मूल्य दिया चाहते हैं यदि सभा उन्हें पत्रिका लागत के मूल्य पर देना स्वीकार करे।

निश्चय हुआ कि प्रथम वर्ष में बाबू माधव प्रसाद के द्वारा पत्रिका की जो मांग आवे उसमें पत्रिका का डाकव्यय छोड़ कर जितना मूल्य हो उस पर २५) सैकड़ा कमिशन उनको दिया जाय।

[११] वृन्दावन के वैष्णव पुस्तकालय का ३ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने नागरीप्रचारिणी पत्रिका के अतिरिक्त सभा द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें भी अपने पुस्तकालय के लिये बिना मूल्य मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि सभा को दुःख है कि वह उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकती।

[१२] पण्डित रामावतार पांडेय का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने यूरोपीय दर्शन की २५ प्रतियां बिना मूल्य दिए जाने की प्रार्थना की थी।

निश्चय हुआ कि पण्डित रामावतार पांडेय को सब मिलाकर इस पुस्तक की १५ प्रतियां बिना मूल्य दी जांय।

[१३] पत्रिका के सम्पादक के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि (१) पत्रिका प्रति अंग्रेजी मास के पहिले सप्ताह में प्रकाशित न होकर १५ वीं तारीख को प्रकाशित हुआ करे। (२) इसमें राजनैतिक या धर्म्मसम्बन्धी विषयों को छोड़ कर अन्य सब विषयों पर लेख रहें (३) इसका वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित एक रुपया रक्खा जाय और प्रति संख्या का मूल दो आना हो (४) इसके साथ विज्ञापन की बटाई ५) रु० ली जाय। यदि विज्ञापन इतना भारी हो कि उसके कारण डाकव्यय अधिक पड़े तो विज्ञापन बटवानेवाले को डाकव्यय अधिक देना पड़ेगा। (५) जो लोग अब तक पत्रिका के लिये लेख भेजते थे उन्हें उसकी ५० प्रतियां दी जाती थीं, यह नियम अब उठा दिया जाय। (६) पत्रिका में विज्ञापन की छपाई क्या ली जाय यह विषय आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय। (७) पत्रिका के जिन ग्राहकों को उसकी कोई संख्या न पहुंचे तो जिस मास की पत्रिका हो उसके अगले महीने की पहिली तारीख तक उनका पत्र यदि आजाय तो पत्रिका की वह संख्या उन्हें बिना मूल्य दी जाय। इसके अनन्तर पूरा मूल्य लिया जाय।

[१४] मिस्टर ए० सी० मुकर्जी ने सूचना दी कि उन्होंने निम्न लिखित चार सुबोध व्याख्यानों के लिये प्रबन्ध कर लिया है—३१ अगस्त०७—आँख या देखने की इन्द्रिय, ६ सितम्बर०७—पाचन (हाज़मा) १३ सितम्बर०७—रक्त (खून), २० सितम्बर०७—मनुष्य का मस्तिष्क (दिमाग़)

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

[१५] मंत्री की सूचना उपस्थित की गई कि सभा का चौकीदार बिना किसी से कुछ कहे सुने सभा से चला गया और एक सप्ताह के उपरान्त लौट कर उसने अपना वेतन मांगा और नौकरी से इस्तीफ़ा दिया।

निश्चय हुआ कि उसको कदापि बिना पूछे सभाभवन छोड़ कर नहीं चला जाना था। उसका जो वेतन बाकी है वह दण्ड की भांति काट लिया जाय।

[१६] निश्चय हुआ कि प्रबोधचन्द्रिका सभासदों को अर्ध मूल्य पर दी जाय।

[१७] रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि (१) सभा का एक वार्षिकोत्सव हुआ करे और इस वर्ष वह अक्तूबर मास में किया जाय (२) सभा के कार्यों के सम्बन्ध में जिन कठिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उनपर निशान करके निम्नलिखित महाशय भेजदें और तब उनपर विचार किया जाय— मिस्टर ई० ग्रीव्स, पण्डित रामनारायण मिश्र, मिस्टर ए० सी० मुकर्जी और बाबू गोविन्द दास।

[१८] निश्चय हुआ कि हिन्दी का कोश और व्याकरण बनाने का विषय आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय और इसकी पूरी सूचना प्रबन्धकारिणी सभा के सभासदों के पास भेजी जाय।

[१९] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गोपालदास, सहायक मंत्री।

[२]

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० ३१ अगस्त १९०७ सन्ध्या के साढ़ेपांच बजे।

स्थान-सभाभवन।

[१] गत अधिवेशन (ता० २७ जूलाई १९०७) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

[२] प्रबन्धकारिणी सभा के ता० ४, ८ और २८ जूलाई के कार्य विवरण सूचनार्थ पढ़े गए।

[३] निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए—

१ रायबहादुर लाला बैजनाथ बी० ए० जज खफ़ीफ़ा—प्रयाग ३) २ बाबू भगवान सहाय-सुपरवाइजर-म्युनिसिपल स्कूल्स काशी ३) ३ पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य-एजुकेशनल पण्डित-मुरादाबाद ३) ४ पण्डित रामलक्षण पांडे-हेड मास्टर-अगरौली-पो० भरसर बलिया १॥)।

[४] सभासद होने के लिये निम्नलिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

१ बाबू बटुक प्रसाद गुप्त-बुलानाला-काशी। २ पं० महाराज नारायण शिवपुरी-अर्दलीबाजार-बनारस। ३ लाला छोटेलाल-डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर-बनारस। ४ पं० शालिग्राम शर्म्मा-जहानाबाद गया। ५ बा० छेदी सिंह-बड़ी पियरी-काशी।

[५] निम्नलिखित सभासदों के इस्तीफ़े उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए—

१ पण्डित हरिगोविन्द लिमड़े-फर्ग्युसन कालेज-पूना। मिस्टर चिन्तामणि गंगाधर भानू-सदाशिव पेठ पूना। ३ बाबू खड्गनारायण-बेगूसराय जि० मुंगेर। ४ पण्डित राम अधीन पांडे-सदर बाजार-जबलपुर। ५ पण्डित श्यामसुन्दर शुक्ल-पुलीस ट्रेनिङ्ग स्कूल मुरादाबाद। ६ भट्ट मथुरानाथ शर्म्मा - चौड़ा रास्ता - जैपुर।

७ बाबू कानजी मल–कलोली–बुलन्दशहर । ८ बाबू गोपाल लाल–असिस्टेण्ट गवन्मेंण्ट सेक्रेटरियट–नैनीताल । ९ पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री – टिमुर्नी हेशंगाबाद । १० सैयद छेदाशाह – फूलपुर – इलहाबाद । ११ पण्डित भोजराज शर्म्मा – उटरावली सरांय छबीला – बुलन्दशहर । १२ बाबू लक्ष्मण दास सारस्वत – इन्सपेक्टर जनरल आफ़ प्रिज़न्स का दफ़्तर लखनऊ । १३ पण्डित गुरुसेवक उपाध्याय – डिप्टी कलेक्टर – अल्मोड़ा । १४ बाबू कामताप्रसाद कानूनगो – मऊ – जि० झांसी । १५ पण्डित रामस्वरूप शर्म्मा – मुरादाबाद । १६ पण्डित शिवनारायण सकसेना – सेकेण्ड मास्टर – बिलग्राम–जि० हरदोई । १७ बाबू राज बिहारी लाल माथुर – बिजनौर । १८ बाबू काशीप्रसाद सिंह–रामनगर सिरसा, इलाहाबाद । १९ बाबू मेधराज – कन्यापाठशाला – संघोई जि० झेलम । २० बाबू गोपाल लाल खत्री – लालबाग – लखनऊ । २१ बाबू कल्यान सिंह – कलोली – पे० सरांय छबीली बुलन्दशहर ।

[६] मंत्री ने निम्नलिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी–

१ बाबू ब्रजपाल दास सराफ – मुजफ्फ़रपुर । २ बाबू गोपाल लाल बी० ए०, बी० एल० वकील – फ़ैजाबाद । इस पर सभा ने शोक प्रगट किया ।

[७] निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं–सेठ खेमराज श्रीकृष्ण दास बम्बई,–१ पतिभक्ति प्रकाश २ हास्यरस विलास ३ नटनागर विनोद ४ सान्तध्याय ५ गोलतत्त्वप्रकाशिका ६ पदावली ७ रामचन्द्र भूषण ८ स्त्रीपुरुष राग मनोहर ९ सीताकण्ठाभरण १० काव्यमंजरी ११ प्रेमवाटिका भाग पहिला १२ अनुरागरस १३ पावस मंजरी १४ श्रीमन्नामायन १५ तुलसी सतसई, १६ श्रीरामजन्म १७ गंजीफ़ा इकतीसा १८ कृषि विद्या भाग २ और ३, १९ अंग्रेजी हिन्दी शब्द कोश २० दोरंड संहिता २१ भोज प्रबन्ध २२ प्रभाती संग्रह २३ भजन पुष्पावली २४ भजन मनोरंजनी २५ गंगा लहरी २६ रमल मार्तण्ड २७ केरलीय जातक २८ तत्त्व प्रदीपाख्यं जातकम् २९ संगीत

सुधानिधि ३० स्वरदर्पण ३१ पाण्डव गीता ३२ कररेखा संख्यावली ३३ सखी शिक्षा शिरोमणि ३४ श्री प्रेमपुष्पमाला ३५ चित्रबोध ३६ सतीचरित चमत्कार ३७ दिलबहलाव ३८ स्त्रीप्रबोध ३९ रासपंचाध्यायी ४० आल्हा महाभारत सभापर्व भीष्मपर्व और वनपर्व ४१ धर्मसिंधु ४२ मदनपाल निघण्टु ४३ आदित्य हृदय ४४ कान्यकुब्ज चिन्तामणि ४५ षट्चक्र ४६ आदित्यव्रतकथा ४७ प्रश्नोत्तरी ४८ श्री शनैश्चर जी की कथा ४९ न्यायप्रकाश ५० गर्ग संहिता ५१ कामरत्न ।

पण्डित सिद्धिप्रसाद उपाध्याय भेलूपुर काशी—सुन्दर सरोजनी।

बाबू चन्द्रसिंह कृष्णगढ़ राजपुताना—ताज महल या फ़तहपुरी बेगम ।

बाबू शिवनन्दन सहाय- अखितयारपुर-जि० आरा—कृष्ण सुदामा, बाबू साहिब प्रसाद सिंह की जीवनी ।

Indian Antiquary for May 1907

[८] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर, मंत्री ।

नोट—इसी दिन "आंख--देखने की इन्द्रिय" के विषय पर बाबू बद्रीनाथ वर्म्मा बी० ए०, बी० एससी० का एक सुबोध व्याख्यान हुआ जिसमें मैजिक लालटैन के चित्र भी दिखलाए गए। सुनने वालों से सभा का हाल भरा हुआ था । व्याख्यान रोचक हुआ ।

जुगुलकिशोर ।

[५]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ९ सितम्बर ०७ सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी-सभापति, बाबू गोविन्द दास, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, रेवरेंड ई० ग्रीव्स,

बाबू जुगलकिशोर' पण्डित रामनारायण मिश्र, बी०ए०, बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी०ए० एल०एल०बी०, पण्डित माधव प्रसाद पाठक बाबू घनश्याम दास बी०ए०, बाबू माधव प्रसाद, बाबू बेणीप्रसाद, बाबू गोपाल दास।

(१) गत अधिवेशन (ता० १८ अगस्त १९०७) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) निश्चय हुआ कि महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी से प्रार्थना की जाय कि श्रीमान् महाराज साहब अयोध्या के चन्दे मद्धे जो एक हजार रुपया बाकी है उसके लिये वे कृपा कर अगले नवरात्र में अयोध्या जाकर रानी साहब से निवेदन करें।

(३) हिन्दी भाषा का कोश बनाए जाने के विषय में रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स के प्रस्ताव उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि इन प्रस्तावों पर विचार कर सम्मति देने के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बनाई जाय-

रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू श्यामसुन्दर दास, पण्डित रामनारायण मिश्र, बाबू गोविन्द दास, बाबू इन्द्रनारायण सिंह और मुंशी संकटा प्रसाद।

इस सब-कमेटी का पहिला अधिवेशन शनिवार ता० १४ सितम्बर को सन्ध्या के पांच बजे किया जाय।

(४) हिन्दी व्याकरण बनवाने के सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दर दास और पण्डित माधव राव सप्रे के प्रस्ताव उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि यह व्याकरण हिन्दी साहित्य के आधार पर बनवाया जाय और वह ऐसा न हो कि जो संस्कृत या किसी दूसरी भाषा के व्याकरण की केवल नकल हो या उनको जोड़ तोड़ कर बनाया गया हो। (२) इस व्याकरण का स्कूली पुस्तकों के उपयोगी बनाना आवश्यक नहीं है। (३) इस व्याकरण के लिये सभा की ओर से एक अनुक्रमणिका बना दी जाय और उसीके अनुसार व्याकरण लिखा

जाय । (४) इसके लिये पांच सौ रुपए का पुरस्कार नियत किया जाय और यह उस व्यक्ति को दिया जाय जिसका व्याकरण सबसे उत्तम और पूर्ण हो तथा जिसे सभा पुरस्कार पाने के योग्य समझे । यदि सभा की सम्मति में कोई एक व्याकरण इस योग्य न ठहरे अथवा कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश अच्छे हों तो सभा को अधिकार होगा कि इस पुरस्कार में से जैसा उचित समझे कई ग्रन्थकर्ताओं में बांट दे । इस अवस्था में जिन जिन ग्रन्थों पर पुरस्कार दिया जायगा उनको घटाने बढ़ाने वा दूसरे प्रकार से अपने काम में लाने का सभा को पूरा अधिकार होगा, ग्रन्थकर्त्ता का उस पर कोई स्वत्व न होगा । ५ इसके बनने के लिये दो वर्ष का समय दिया जाय । ६ निम्नलिखित महाशयों से प्रार्थना की जाय कि वे इस व्याकरण के लिये एक अनुक्रमणिका बना कर सभा में उपस्थित करें, उन्हें अधिकार होगा कि अन्य लोगों से भी इस काम में सहायता और सम्मति लें ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू श्यामसुन्दर दास, बाबू गोविन्द दास और रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स ।

(५) राजा कमलानन्द सिंह और पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उन्होंने पण्डित महवीर प्रसाद द्विवेदी का "वक्तव्य" देखने के लिये मांगा था ।

निश्चय हुआ कि ये पत्र आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किए जांय ।

(६) बाबू राधाकृष्णदास के वसीयतनामे की नकल उपस्थित की गई जिसके द्वारा उन्होंने अपने ग्रन्थों का स्वत्व इस सभा को दिया है और अपने पुस्तकालय की वे पुस्तकें भी सभा को दी हैं जो सभा में न हों ।

• निश्चय हुआ कि बाबू पुरुषोत्तम दास से, कि जिन्हें बाबू राधाकृष्ण दास ने अपना वसी नियत किया है पूछा जाय कि उन्होंने

इस वसीयतनामे का प्रोबेट ले लिया है अथवा नहीं और इस वसीयतनामे की रजिस्टरी हुई है अथवा नहीं'

(७) निश्चय हुआ कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका में विज्ञापन की छपाई का विषय अगले अधिवेशन में विचार के लिये उपस्थित किया जाय।

(८) निश्चय हुआ कि नियम ३८ (१) में "बंक बंगाल" के उपरांत "तथा बनारस बंक" ये शब्द बढ़ा दिए जांय।

(९) सन् १९०५-०६ के हिसाब जांचने वालों का पत्र मंत्री की रिपोर्ट के सहित उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि मंत्री हिसाब जांचने वालों की सम्मति के अनुसार कार्य करें।

(१०) निश्चय हुआ कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका की सितम्बर की संख्या में एक फार्म अधिक निकाला जाय जिसमें सभा के अधिवेशनों के कार्यविवरण आज तक के सब छप जांय।

(११) मंत्री ने सूचना दी कि बाबू राधाकृष्ण दास के चित्र का ब्लाक अभी तक नहीं प्राप्त हुआ और इस कारण यह सभा के चौदहवें वार्षिक विवरण के साथ नहीं छापा जा सका।

निश्चय हुआ कि ब्लाक प्राप्त होने पर वह नागरीप्रचारिणी पत्रिका के साथ छाप कर प्रकाशित किया जाय।

(१२) निश्चय हुआ कि बाबू राधाकृष्ण दास के "प्रताप नाटक" की एक हजार प्रतियां छपवा ली जांय।

(१३) निश्चय हुआ कि सितम्बर के माडर्न रिव्यू में रेवरेन्ड ई० ग्रीव्स का सभा के विषय में जो लेख छपा है उसकी तीन सौ प्रतियां राजा महाराजाओं में वितरण करने के लिये छपवा ली जांय और उसके साथ में महाराज रीवां का चित्र तथा सभा सम्बन्धी आवश्यक सूचनाएं भी दी जांय।

(१४) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगलकिशोर, मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणीसभा के आय व्यय का हिसाब।

अगस्त १९०७।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	११७	५	८	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७१	१	६
सभासदों का चन्दा	१४८	७	०	छपाई	३४६	१५	३
पुस्तकों की बिक्री	१८४	१३	३	पारितोषिक	३५	१	०
रासो की बिक्री	१५५	१२	०	पुस्तकालय	८८	२	६
फुटकर	४	१३	०	रासो	२०	३	०
राजा साहब भिनगा की सहायता	३००	०	०	पुस्तकों की खोज	१७४	७	६
पुस्तकालय का चन्दा	१२	०	०	नागरी प्रचार	१३	५	०
राधाकृष्ण दास स्मारक	७	०	०	पुरस्कार	८	३	
डाकव्यय का फिरता	६	६	८	फुटकर	९	१३	०
					७७७	३	८
जोड़	८४७	८	८	बचत	१७०	५	११
				जोड़	८४७	८	८

देना ६०००)

जुगुलकिशोर,

मंत्री।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

भाग १२] अक्तूबर १९०७ । [संख्या ४

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न ।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र ।
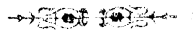
विविध विषय ।

नेपाल दर्बार की ओर से डाक के नए टिकट निकलने वाले हैं । ये अभी छपे नहीं हैं पर इनके शीघ्रही छप कर तय्यार हो जाने की आशा है । इनमें विशेषता यह होगी कि इन पर का मजमून सब देवनागरी अक्षरों में छपा रहेगा ।

यद्यपि कई रजवाड़ों में अब भी बृटिश गवर्नमेंट के टिकटों पर कुछ मजमून देवनागरी अक्षरों में छपा रहता है परन्तु जहां तक हमें ज्ञात है यह पहिला टिकट होगा जिसका मजमून केवल देवनागरी अक्षरों में रहेगा और जिसमें राजा के चित्र के स्थान पर महादेव की चतुर्भुजी मूर्ति होगी। हिन्दी के लिये यह आनन्द की बात है।

* * *

इङ्गलैण्ड में एक महाशय ने ऐसी कल निकाली है जिसके द्वारा जाड़े में भी वे पेड़ फले फूलेंगे जो अब तक केवल गर्मी में ही फलते फूलते थे। एक शीशे के घर में ये पेड़ रक्खे जांयगे और बिजली के यंत्र द्वारा उस घर की वायु उतनी उष्ण कर दी जायगी जितनी की गर्मी के दिनों में होती है तथा बिजली के प्रकाश से वे गुण उत्पन्न किए जांयगे जो सूर्य की किरणों द्वारा उत्पन्न होते हैं। सर्कारी तौर पर इस यंत्र की परीक्षा होने वाली है।

* * *

एक महाशय ने एक ऐसे प्रकार का जूता बनाया है जिसे पहिन कर लोग पानी पर उस सुगमता से चल सकेंगे जैसे कि वे भूमि पर चलते हैं। यह एक अद्भुत आविष्कार है।

* * *

न जाने हिन्दी के लिये यह कैसा वर्ष प्रारम्भ हुआ है कि एक के पीछे दूसरे हिन्दी के सेवक इस संसार से उठते जाते हैं। भारतमित्र के सम्पादक लाला बालमुकुन्द गुप्त भी अब इस संसार में नहीं हैं। गत मास में कई महीने की बिमारी के पीछे अपने जन्मस्थान दिल्ली में उन्होंने

इस संसार को छोड़ परलोक की यात्रा की। लाला बालमुकुन्द गुप्त ने अनेक समाचार पत्रों में सम्पादक का काम किया था और इस सम्बन्ध में उनकी प्रौढ़ लेखनी का बहुत कुछ आदर था। सरल हिन्दी में लेख लिख कर सब श्रेणी के लोगों को लाभ पहुंचाने में उनकी विशेष ख्याति थी। इन्हों ने हिन्दी में अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं जिनमें से रत्नावली नाटक सब से प्रसिद्ध है। लाला बालमुकुन्द गुप्त की असामयिक मृत्यु से जो स्थान खाली हुआ है उसकी पूर्ति बहुत कठिन है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

इस सभा का बहुत दिनों से यह विचार है कि हिन्दी के लेखकों, सेवकों और प्रेमियों का चित्र और संक्षिप्त वृतान्त इस सभा में संग्रहीत रहे कि जिससे यथासमय उसके खोजने की आवश्यकता न पड़े और उसके न मिलने पर नैराश्य का दुःख न उठाना पड़े। इसलिये सब हिन्दी लेखकों, सेवकों तथा प्रेमियों और विशेष कर इस सभा के सभासदों से प्रार्थना है कि वे कृपाकर नीचे लिखी बातों की सूचना देकर तथा अपना एक चित्र भेजकर सभा को अनुगृहीत करें। (१) जन्म की तिथि (२) वंश का संक्षिप्त वृतान्त (३) ग्रन्थों के नाम (४) हिन्दी की सेवा। यह भी प्रार्थना है कि वे अपने चित्र पर अपने हस्ताक्षर कृपा कर करदें। आशा है कि सभा की इस प्रार्थना पर ध्यान दिया जाय।

ज्योतिष प्रबन्ध।

[तीसरे अङ्क के आगे।]

भूपरिभ्रमण।

ग्रहचालन इत्यादि निकालने में भूमि को स्थिर और नक्षत्रादि की गति मान कर भी हम गणित कर सकते हैं, इसमें कोई दोष नहीं आसकता है, किन्तु सुगमता के साथ गणित हो सकती है। परन्तु जब हम यह विचार करते हैं कि क्या वास्तव में नक्षत्रादि घूमते हैं तब यह कहना ही पड़ता है कि नहीं नक्षत्रादि स्थिर हैं और सूर्य भी अपने सौर जगत में केन्द्रस्थ और स्थिर है, पर पृथ्वी ही अपने अक्ष [कीली] पर घूमती है जिससे दिन रात होते हैं।

पृथ्वी का परिभ्रमण (Rotation) मानने में सन्देह यह किया जाता है कि यदि यह घूमती है तो हम भूवासियों को इसकी गति का ज्ञान क्यों नहीं होता और इसके परिभ्रमण का क्या प्रमाण है ?

पृथ्वी के घूमने का ज्ञान हमें इस कारण से नहीं होता कि पृथ्वी सदा बिना किसी पदार्थ से रगड़ खाए हुए समान गति से घूमती है, यदि किसी पदार्थ के रगड़ से झटका इत्यादि होता तो उसकी गति हमें प्रतीत होती। जैसे कि किसी नाव में यदि हम बैठें जो स्थिर जल में चल रही हो, तो प्रायः हमें नहीं मालूम होता है कि नाव चल रही है वा स्थिर है। जब हम नदी तट की ओर देखते

पांचवाँ चित्र।
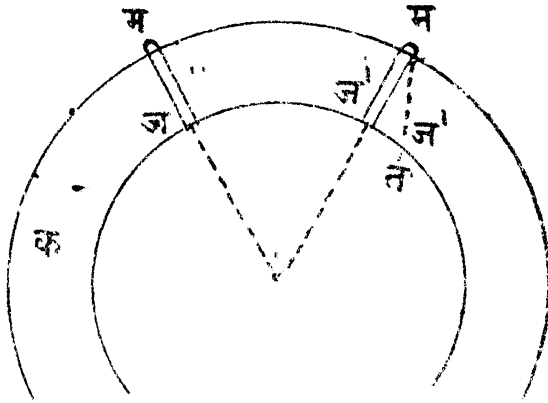
छठां चित्र।
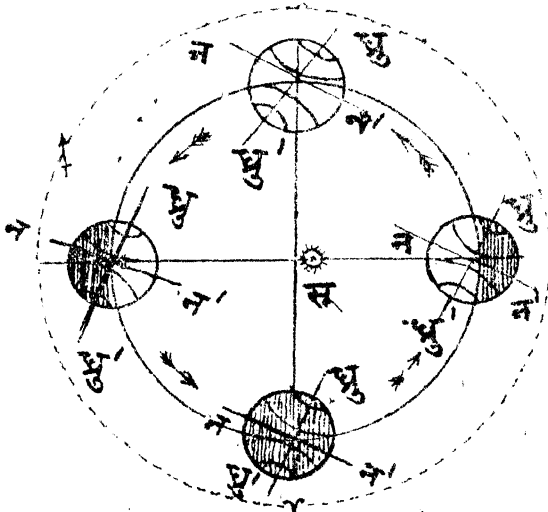
हैं तो किनारे पर की चीजों को पीछे हटते देखकर हम समझ लेते हैं कि हमारी नाव चल रही है।

पृथ्वी के परिभ्रमण के कई प्रमाण हैं उनमें से एक प्रमाण का वर्णन यहां संक्षेप में कर दिया जाता है।

एक ऐसे स्थान पर, जहां पास किसी गाड़ी चलने वा किसी प्रकार के धमक की सम्भावना न हो, एक पतले रेशमी तार में एक लट्टू अधर में लटका दिया जाय; जिसके नीचे का सिरा सूई के समान सूक्ष्म हो और इस सूई के ठीक नीचे अर्थात् सूई की नोक से स्पर्श मात्र करता हुआ बालू बिछा दें, तो जब हम इस लंगर को पेंग देंगे तो इसके नोकीले सिरे द्वारा बालू में रेखा पड़ जायगी। यदि पेंग सीधी दी गई है तो रेखा भी सीधी ही खिंचेगी और जब तक कोई दूसरा कारण न होगा लंगर के पेंग वा गति की दिशा समान रहेगी।

अब इसी लंगर में यदि घड़ी द्वारा बराबर पेंग जारी रक्खी जाय तो देखने में आवेगा कि दिन भर में रेखाओं की दिशा बदलती बदलती कई वक्र वृत बनाकर फिर अपनी सीध में आजाती है। इसका कारण क्या है? सोचने पर विदित होगा कि पृथ्वी के परिभ्रमण में अपनी कीली पर घूमने के कारण उक्त रेशम की तक में बल वा ऐंठन पड़े जिसने उसकी पेंग की दिशा को बदल दिया। यदि भूमि स्थिर होती तो कोई कारण न था कि पेंग में विषमता होती।

दूसरा उदाहरण और भी दे दिया जाता है जिसमें

उक्त प्रमाण की पुष्टि हो जाय और आप लोगों को भूभ्रमण पर दृढ़ विश्वास हो जाय।

[पांचवां चित्र देखो।]

मान लो कि क ज ज′ पृथ्वी है जिसपर म ज एक ऊंचा मीनार बना है। यह भी मान लो कि जिस दिन हम यह परीक्षा कर रहे हैं उस दिन वायु नहीं चलती है। अब यदि हम म पर से एक ढेला भूमि पर गिरावें तो इसे ठीक मीनार की जड़ पर गिरना चाहिए, परन्तु जब हम ऐसा करके देखते हैं तो उक्त ढेला मीनार की जड़ से हट कर ज स्थान पर गिरता है। अब प्रश्न यह होता है कि वायु तो बहती नहीं जो ढेले के सीधा गिरने में रोक करे और उसे कुछ हटा दे, तो क्या कारण है जो ढेला सदा पूरब की ओर ही हट कर गिरता है?

जब हम इस चित्र को देखकर विचार करते हैं तो सिद्ध होता है कि पृथ्वी परिभ्रमण के कारण जब म ज मीनार घूम कर मान लो कि एक मिनिट में अर्थात् जितनी देर में ढेला गिर कर भूमि पर पहुंचा म ज′ स्थान पर आ गया (क्योंकि पृथ्वी १ मिनिट में लगभग १७ मील से कुछ अधिक घूम जाती है) तो म सिरे ने उक्त काल में म म′ की दूरी ते की और ज ने केवल ज ज′, यह स्पष्ट ही है कि म म′ चाप ज ज′ चाप से बड़ा है, अतएव म की गति ज से अधिक है, क्योंकि एक ही मिनिट में उसने अधिक दूरी ते कर दी। गिरते समय उक्त ढेले में घूमने की वही गति थी जो म में है, अतएव यह ढेला कुछ आगे बढ़कर गिरा। पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है,

इसलिये ढेला जिसमें पूर्व की ओर जाने की गति थी, मीनार की जड़ से पूर्व की ओर बढ़कर गिरा। यदि भूमि घूमती न होती तो ढेला मीनार के सिरे पर से गिर कर उसकी जड़ पर ही गिरता।

अब यह तो सिद्ध हो गया कि पृथ्वी अपनी कीली पर घूमा करती है, इसीका नाम 'भूपरिभ्रमण' (Rotation) है। भूमि के परिभ्रमण के कारण उसके जो जो भाग सूर्य्य के सामने आते जाते हैं वहां वहां सूर्य्य के प्रकाश से उजेला रहता है इसीको 'दिन' (Day) और भूमि का जो भाग दूसरी ओर रहने से सूर्य्य के साम्हने नहीं रहता वहां रवि का प्रकाश न रहने से अँधेरा रहता है, इसे रात्रि (Night) कहते हैं। दिन रात वा २४ घण्टों में पृथ्वी एक बेर अपने अक्ष पर घूम जाती है।

भूपरिक्रमण।

यह स्थिर हो चुका है कि पृथ्वी घूमती हुई सूर्य्य की परिक्रमा भी किया करती है। जैसे और ग्रह रवि परिक्रमा करते हैं वैसे ही यह भी सौर्य जगत में एक ग्रह है अतएव यह भी रवि परिक्रमा करती है। यह परिक्रमा एक वर्ष अर्थात ३६५ दिन २५ घ० ३१ प० ३१ वि० २४ वि० प० में पूरी करके पृथ्वी फिर अपने नियत स्थान पर आ जाती है। इसीसे हमारे ऋतु बदला करते हैं। जिस पथ से पृथ्वी परिक्रमा करती है वह ठीक ठीक गोलाकार नहीं है किन्तु उसका आकार कुछ दीर्घ वृत्त के समान है, इसको 'कक्षा' (Orbit) कहते हैं।

विदित रहे कि सूर्य भूकक्षा के केन्द्र में स्थित नहीं है

किन्तु एक ओर कुछ हटा हुआ है । और पृथ्वी का अक्ष भूकक्षा पर लम्ब स्वरूप नहीं है किन्तु लगभग २३॥ अंश का कोण बनाता है ॥

[छठां चित्र देखो ।]

इस चित्र द्वारा समझ में आ जायगा कि हमारे ऋतु क्योंकर बदला करते हैं । मान लो कि सू, सूर्य, और उसके चौगिर्द पृथ्वी है जो कक्षा के भिन्न स्थान पर दिखाई गई है । मान लो कि ध्रु=उत्तरीय ध्रुव है और ध्रु′=दक्षिण ध्रुव और भूमि का अक्ष ध्रु ध्रु′ अपनी कक्षा पर इतना झुका हुआ है कि दोनों के मिलने से २३॥° का कोण बनता है । अब मान लो कि पृथ्वी इस समय नीचे की तरफ है । इस समय सूर्य न न′ अर्थात् पृथ्वी के नाड़ी मण्डल पर है इसलिये भूमि पर दिन बराबर है और नाड़ी मण्डल के उत्तर और दक्षिण भाग में सूर्य का तेज समान है अतएव वह हमारा वसन्त ऋतु है । अब फिर तीन महीने के बाद जब भूमि परिक्रमण करती हुई बांएं स्थान पर आ गई । तब ध्रु का अधिक भाग सूर्य के सामने आगया और ऐसे भाग पर सूर्य किरणें सीधी गिरने लगीं अतएव दिन भी बड़ा हो गया और उष्णता भी अधिक हो गई । इसी प्रकार पृथ्वी घूमती घूमती जब दहिने तरफ आगई तब ध्रु′ की ओर का अधिक भाग सूर्य की सीध में आगया और ध्रु भाग कुछ तिरछा सामने रहा, जिससे ध्रु भाग पर तिरछी किरणें आने लगीं अतएव रवि-ताप कम हो जाने से शीत ऋतु वहां होगी । ध्रु भाग में सूर्य उदय होकर जल्द अस्त हो जायगा अतएव दिन छोटा होने लगेगा ।

सातवां चित्र।
ख
ख'
न'
र
न
ल
ज
ए
आठवां चित्र।
भु'
भु
ख
क्षि
द
नो
त
ए
उ
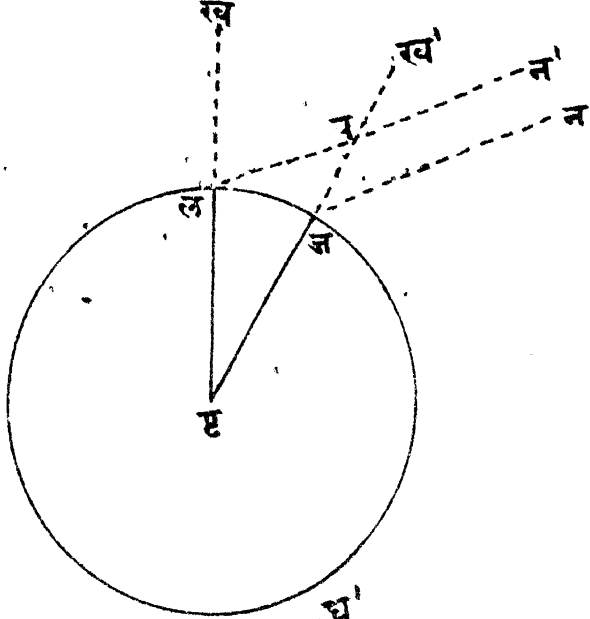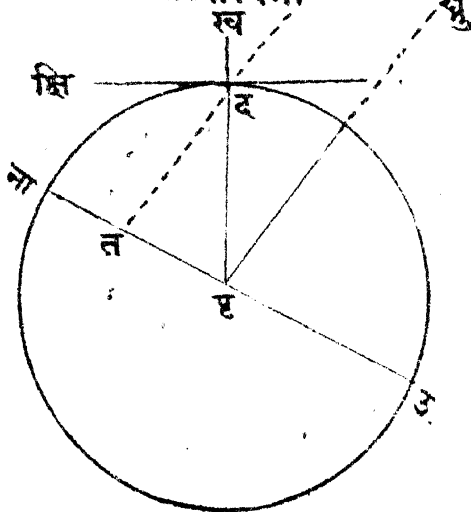
भूमि की दो मुख्य गतियों का वर्णन हो चुका, इनके अतिरिक्त दो गौण गतियां और भी हैं। इन दोनों में एक के कारण से सायन–सम्पात होता रहता है अर्थात् वे स्थान वा विन्दु, जिन पर सूर्य के आने पर दिन रात बराबर होते हैं, उल्टे क्रम से हटते रहते हैं। इसका वर्णन यहां नहीं किया जाता।

काल किसे कहते हैं? काल की परिभाषा करना कठिन है। काल का आदि अन्त नहीं जाना जाता परन्तु उसके भाग जानने में आते हैं, जैसे युग वर्ष महीना दिन इत्यादि। हम ऊपर लिख आए हैं कि सूर्य के उदय से लेकर अस्त होने के समय तक को दिन कहते हैं पर काल वाचक दिन वह समय है जो एक सूर्योदय से पुनः दूसरे दिन में सूर्योदय तक के बीच का काल है। ज्योतिष में दिन भी कई प्रकार के होते हैं जैसे सौर दिन, चान्द्र दिन, नाक्षत्र दिन और सावन दिन। जितने काल में सूर्य हमारे ख-स्वस्तिक से होकर दूसरे दिन फिर खस्वस्तिक पर आजाय, इसे 'सौर दिन' (Solar Day) कहते हैं। जितनी देर में एक निर्दिष्ट नक्षत्र दूसरे खस्वस्तिक से लेकर पुनः हमारे ख-स्वस्तिक पर आजाय, इसका नाम 'नाक्षत्र दिन' (Sidereal Day) है। इसी प्रकार जितने अन्तर में चन्द्र हमारे खस्व-स्तिक पर पुनः पुनः आता रहे, इन्हें 'चान्द्र दिन' (Lunar Day) बोलते हैं। और एक सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय के बीच में जो अन्तर है वह 'सावन दिन' वा 'दिन' (Celendar or Terrestrial Day) कहलाता है। घड़ी में समय अर्थात घण्टे इत्यादि हैं वे समान अन्तर पर बजा करते हैं, एक सावन

दिन को २४ घण्टों में विभक्त करके घण्टे नियत किए गए हैं। इन्हीं घण्टों के अनुसार उक्त दिनों के परिमाण नीचे लिखे जाते हैं।

सौर दिन=२४ घ०

नाक्षत्र दिन=२३ घ० ५६ मि० ४.०९ सै०

चान्द्र दिन=२४ घ० ५४ मि०

इन कालों में जो अन्तर देखने में आता है उसका कारण यह है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती हुई अपनी कक्षा पर पूर्व की ओर जाती है, इसलिये जो नक्षत्र आज ८ बजे खस्वस्तिक पर है दूसरे दिन वह लग भग ४ मिनिट पहिले ही वहां आजायगा, क्योंकि पृथ्वी कुछ पूर्व को हट गई यदि वह स्थिर रहती तो नक्षत्र सदा अपने नियत समय पर खस्वस्तिक पर आजाया करते।

इसी प्रकार महीनों और वर्षों में भी कई भेद ज्योतिष शास्त्र में माने गए हैं। नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य इत्यादि के चालन के अनुसार इनमें काल भेद होता है। वर्षों का वर्णन सूर्य के विवरण में और महीनों का विषय चन्द्र के अन्तर्गत लिखा जायगा।

पृथ्वी का स्थान आकार परिमाण इत्यादि।

हम ऊपर लिख आए हैं कि पृथ्वी गोलाकार और सौरजगत में एक ग्रह है। इसकी गोलाई नाड़ीमण्डल पर अधिक है और ध्रुवों पर कम है क्योंकि ध्रुवों पर पृथ्वी कुछ चिपटी होने के कारण संकुचित हो गई है और नाड़ी मण्डल पर गोलाई बढ़ गई है।

कदाचित कोई यह शंका करे कि पृथ्वी के वृहदाकार

को कैसे मापा होगा ? श्रेष्ठ पाठक गण ! विद्या के प्रभाव से बहुत सी बातें, जो साधारण में असम्भव सी प्रतीत होती हैं, सहज रीति से जानी जा सकती हैं, इसी लिये विद्या को सर्वोत्तम कहा है । पृथ्वी का आकार माप लेना तो बहुत ही सहज है, विद्या बल से मनुष्य क्या कुछ नहीं कर सकता, देखिए पृथ्वी से सूर्य, चन्द्र इत्यादि तक की दूरी तक निकाल ली गई, कला कौशल के बहुत से उदाहरण तो पाठकों ने देखे सुने होंगे ।

इस लेख में मेरा मुख्य उद्देश्य यही है कि गणित की कोई ऐसी कठिन बात न आजाय जो पाठकों को रुचिकर न हो । ज्योतिष विद्या की नीव गणित शास्त्र पर ही पड़ी है भला फिर उससे क्यों कर बच सकते हैं । अतएव हम केवल उन्हीं विषयों को लिखेंगे जो सर्व साधारण भी सुगमता से समझ लें । अब हम यहां उदाहरण देकर लिखते हैं कि पृथ्वी के आकार की माप विद्वानों ने कैसे निकाली थी ।

[सातवां चित्र देखो ।]

मान लो पृ = पृथ्वी है और उसपर ल और ज दो नगर हैं जिनके बीच का चांप (Arc) वा दूरी ल ज नाप ली गई । यह भी मान लो कि यह दूरी = ६९.५ मील है ।

अब एक ही समय में ल और ज पर दो ज्योतिषी एक विशेष नक्षत्र न का वेध लगा कर देखते हैं । मान लो कि दोनों स्थानों के खस्वस्तिक ख और ख′ हैं । ऊपर के चित्र से स्पष्ट ही है कि ज स्थान पर का मनुष्य एक नक्षत्र को म स्थान पर देखता है और ल स्थान पर का मनुष्य उसी नक्षत्र को म′ स्थान पर देखता है ।

अब दोनों ज्योतिषियों ने ख ल न′ और ख′ ज न कोण निकाल लिया। रेखागणित से यह सिद्ध होता है कि कोण ल प ज = < प ज न है इसी प्रकार ल प पृ त्रिकोण का बाहरी कोण ख ल प = < ल प पृ + < ल पृ प।

∴ < ख ल प − < ल प पृ = < ल पृ ज; (और ल प ज = < प ज न) ∴ < ल पृ ज अथवा उक्त दोनों नगरों का चापमान = < ख ल न′ − ख′ ज न। यहां यह भी मान लो कि इन दोनों का अन्तर १° है। यह आप लोग जानते ही हैं कि प्रत्येक वृत्त में चार समकोण अर्थात् ३६०° होती हैं।

∴ १° : ३६०° :: ६९.५ : भूपरिधि

$$\therefore \text{भूपरिधि} = \frac{३६०^\circ \times ६९.५}{१^\circ} = २५००० \text{ मील लगभग}$$

इसी रीति से भूपरिधि अर्थात् पृथ्वी की गोलाई निकाली जाती है।

अक्षांश निकालने की विधि।

एक बात और भी वर्णन कर देना यहां उचित है कि पृथ्वी पर के किसी देश का ठीक स्थान जानने के लिये अक्षांश और देशान्तर से काम लिया जाता है। भूगोल के नकशों में आपलोगों ने देखा होगा कि कई वृत्त पन्द्रह पन्द्रह अंश की दूरी पर दोनों ध्रुवों के बीच में बने रहते हैं। इसे देशा- तर वृत्त (Longitude) कहते हैं। इसी प्रकार नाड़ीमण्डल के समानान्तर दस दस अंश पर भी कई वृत्त रहते हैं इन्हें अक्षांश (Latitude) कहते हैं।

[आठवां चित्र देखो।]

मानलो ना द उ = पृथ्वी है जिसका नाड़ीमण्डल =

ना उ और ध्रुवात = पृ ध्रु और द एक देश है जिसका अक्षांश निकालना है।

मानलो कि ख उस देश का खस्वस्तिक है और त रेखा उसकी क्षितिज है। द स्थान पर से ध्रुव को देखने पर वह ख द ध्रु' कोण के बराबर उत्तर को झुकता देखाई देगा। मानलो कि <ख द ध्रु = ६०°।

रेखागणित से सिद्ध है कि कोण ख द ध्रु' =< त द पृ। और त द पृ त्रिकोण में < द त पृ=१ समकोण के, इसलिये उसके बाकी दोनों कोण भी अर्थात < त द पृ + < त पृ द=१ सम कोण के। इनमेंसे < त द पृ का मान ऊपर जान लिया गया है, अतएव १ समकोण < त द पृ, निस्संदेह ना द चाप का चापपरिमाण है और वही उसका उत्तरीय अक्षांश हुआ।

अक्षांश नाडीमण्डल से उत्तर वा दखिन नापा जाता है।

अब रहा देशान्तर इस को विद्वान लोग ने किसी विशेष नगर के वेधालय से आरम्भ कर मान लगाते हैं। जैसे आज कल ग्रीनिच देश से देशान्तर मान निकाला जाता है। प्राचीन काल में काशी वा उज्जैन से निकाला जाता था।

पृथ्वी के ३६० अंश वा भाग कर दिए और प्रत्येक अंश के ६० मिनिट और प्रत्येक मिनिट बराबर है ६० सेकेण्ड के। इस प्रकार पूरब पश्चिम भूभाग किए गए। अब जो स्थान जिस भाग में है वही उसका देशान्तर है। इसी तरह नाडीमण्डल से प्रारम्भ करके ९० अंश उत्तर और ९०° दक्खिन के भाग किए गए। इन भागों में जिस स्थान पर जो देश है वही उसका उत्तर वा दक्खिन (जैसा हो) अक्षांश हुआ।

विदित रहे कि पृथ्वी यदि शुद्ध गोलाकार होती तो

इस का व्यास सर्वदा एक समान होता पर पृथ्वी ध्रुव की ओर कुछ चपटी हो गई है और नाड़ीमण्डल पर फैल गई है इसलिये दोनों के व्यासों में कुछ अन्तर है ।

[क्रमशः]

सिकन्दरशाह ।

[तीसरे अङ्क के आगे ।]

सिकन्दर की असली इच्छा यूनान भर का मालिक कहलाने की नहीं थी वरन, वह यूनान देश को निज राज्य शासन सम्बन्धी एक्य में बाँध कर उन देशों विशेष कर परशिया पर यूनान देश का आतङ्क जमाना चाहता जो हजारों वर्ष से यूनान पर अपना आधिपत्य जमाए हुए उसे अपना गुलाम ख्याल करते थे । इसलिये उसने थीबीज़ पर अपना प्रचण्ड प्रताप दिखला कर समस्त ग्रीस पर अपना ऐसा आतङ्क जमा लिया कि वे सब लोग जो अब तक अपने को स्वतन्त्र मानते थे उसे अपना अधिपति वा नेता मानने लगे । इसी समय कारिन्थ में एक दरबार रचा गया जिसमें यूनान देश की सब भिन्न भिन्न जातियों के नेता और स्वतन्त्र राजधानियों के प्रतिनिधि सिकन्दर की सेवा में आए, और उन सब ने प्रसन्नता पूर्वक सिकन्दर को यूनान देश का सिरताज महाराज मान कर इस बात का पण किया कि वह यूनान देश को परशिया राज्य की गुलामी से छुटाने एवं परशिया को विजय करने के लिये जो कार्य्य करेगा उसमें वे सदैव सहमत हैं और धन जन सब प्रकार से उसके साथ देशसेवा के लिये प्रस्तुत रहेंगे । और इसके उत्तर में

सिकन्दर ने भी उन सब पर अपना यह मत प्रगट कर दिया कि यदि वे ऐसा करेंगे तो वह उनको इस थोड़ी सी परतन्त्रता के बदले में सदैव के लिये स्वतन्त्र कर देगा। इस दरबार में राज्यप्रतिनिधियों के सिवाय यूनान देश के बड़े बड़े बुद्धिमान तत्त्ववेत्ता लोग भी आए और उन्होंने सिकन्दर को उक्त इच्छित उद्देश्य के साधन के लिये अपनी यथोचित राय भी दी। इस दर्बार में केवल एक देवजिन्स नामक साधू न आया क्योंकि वह सदैव अपनी कुटी के उपस्थ स्थानों को छोड़ कर अन्यत्र जाता भी न था, सिकन्दर उस का नाम सुनते ही स्वयं उसकी कुटी पर दौड़ गया उसने देखा कि साधू ग्रीष्म की चटकती धूप में कुटी के बाहर लेटा हुआ है, न तो उसने सिकन्दर को प्रणाम किया और न उसकी तरफ देखा भी। तब सिकन्दर ने स्वयं प्रणाम करते हुए पुकार कर कहा कि "मैं सिकन्दर आपकी सेवा में कुछ शिक्षा प्राप्त करने आया हूं" इसका उत्तर साधू ने इस प्रकार से दिया कि यदि वह भी इसी भांति तपस्या करे तो कुछ सीख सकता है; उसकी इस बात पर अन्य दर्बार लोग तो हँसने लगे परन्तु सिकन्दर ने बड़े ही गम्भीर भाव से उत्तर दिया कि "यदि मैं आपकी भांति निष्पृह वैरागी पुरुष होता तो ऐसा कर सकता था, किन्तु मैं इस समय एक राजा हूं अतएव मुझे राज्योचित कर्म ही शोभा देते हैं।"

यूनान देश में डैल्फी नामक एक बुद्धिविशारद पुरुष था, सिकन्दर से युद्ध विषयक बातों में डैल्फी का परामर्श लेना विचार कर स्वयं उसके पास गया; किन्तु जिस दिन सिकन्दर वहां पहुंचा वह दिन डैल्फी के नियमानुसार

उसके उन स्वतंत्र दिनों में से था जब कि वह किसी से वार्तालाप न किया करता था; सिकन्दर ने पहिले तो उसकी स्त्री से मिलकर उस के द्वारा ही डैल्फी से अपने प्रश्न का उत्तर चाहा किन्तु जब उसने पति के नियम में बाधा देना स्वीकार न करके सिकन्दर की आज्ञा मानने से इंकार किया तब सिकन्दर स्वयं उसके पास चला गया और उसे पकड़ कर देवी मन्दिर में ले गया। वहां जाकर डैल्फी ने हँसते हँसते सिकन्दर से कहा "हे पुत्र! तू वास्तव में अजेय है", इस पर सिकन्दर ने कहा बस मैं इतना तो चाहता ही हूं एवं इसी देव वाणी के सुनने का लालची था।

आक्रमण की तय्यारियां।

(३३४ ई० पू०) इसके पश्चात सिकन्दर ने पीला से कूच करके (Aegae) एजी में पड़ाव डाला और परशिया पर चढ़ाई करने की तय्यारी करने में चार महीने जाड़े के उसने वहीं पर बिताए। इसी अवसर में उसने अपने गुप्त चरों द्वारा इस बात का भी भेद ले लिया कि शत्रु की राजधानी के कौन कौन स्थान कैसे मज़बूत और कमज़ोर हैं एवं उसे किस ओर से आक्रमण करने में सुविधा पड़ना सम्भव है। तीस हजार पैदल और पांच हजार सवार सेना के साथ वह घर से चला। यूनान में उस समय यह नियम था कि युद्ध विद्या को कुछ लोग अपनी जातीय जीविका की भांति सीखते थे और उनके खान पान का भार उन लोगों पर रहता था जो कि इनसे रक्षा किए जाते थे। शेष और सर्वसाधारण लोग भी देश की रक्षा के लिये युद्ध विद्या सीखते थे परन्तु वे उपरोक्त लोग अच्छे रण कुशल समझे जाते थे। यूनान

के परस्पर के बैर विरोध और लड़ाई झगड़े का अन्त हो जाने से वे सब यूनान वासी सिकन्दर की आज्ञा शिरोधार्य्य करके देश सेवा के लिये सिर देने को तय्यार थे अतएव उसने ५००० पहिले और सात हजार दूसरे किस्म के यूनानी सिपाही अपने साथ लिए किन्तु उसका विशेष बल और भरोसा अपने पिता के द्वारा शिक्षित युद्धविद्याविशारद मैसीडोनिया के सैनिकों ही पर था, इसलिये उसने १२००० पैदल और ५००० सवार मैसीडोनियन अपने साथ लिए। उसकी सेना में जितने घुड़सवार थे वे प्रायः सब मैसीडोनियन ही थे। इसके सिवाय सिकन्दर के साथ में एक बड़ा भारी दल उसके उन निज शरीररक्षकों का था जो कि बहुधा उसके मुँह लगे और लँगोटिया यार थे। वे लोग बालपन में उसीके पिता द्वारा पालित होकर उसी प्रकार से शिक्षित किए गए थे जैसे कि वह स्वयं था। वे सब लोग धनुर्विद्याविशारद होने के सिवाय शक्ति और सांग की लड़ाई का काम भी अच्छा जानते थे। अस्तु सिकन्दर कुल सब ३४५०० मनुष्यों का लश्कर लेकर परम प्रसिद्ध उन्नत शाली और प्रशस्त परशिया की राजधानी पर आक्रमण करने को सन्नद्ध हुआ। यद्यपि इस समय तक उसके पास जो धन था वह केवल उतनाही कि जो उसके लावलश्कर के लिये केवल एक महीने के लिये काफ़ी था परन्तु उसे इस की कुछ भी परवाह न थी। उसका अपने अग्रसरों के लिये बराबर हाथ ऊंचा था। वह अपने साथियों से यही कहा करता था कि मेरी बलवती इच्छा और दृढ़ अभिलाषा ही

मेरे लिये आवश्यक सामग्री प्रस्तुत करती रहेगी। मेरी ऊँची उम्मेद ही मेरे जीवन का सहारा है।

जिस समय सिकन्दर ये तय्यारियां कर रहा था यूनान में बहुत सी ऐसी दैविक घटनाएं संघटित होने लगी थीं जिनका फल यूनान वासी विद्वानों ने सिकन्दर के आक्रमण के लिये शुभसूचक बतलाया। उन्हीं घटनाओं में से (Orpheus) आरफ़ियस देवी की पाषाण मूर्ति को स्वेद और प्रकंप होना था जिससे और लोगों ने तो यूनान देश के लिये महान अशुभ परिणाम निर्वाचित किया लेकिन ओरष्टाडर ने कहा कि यह इस बात की सूचना है कि सिकन्दर आक्रमण करके केवल एक बड़े भारी भूभाग पर विजय ही नहीं प्राप्त करेगा बल्कि उसके इस कार्य्य की छाया भविष्य में कवियों के कण्ठ का भूषण होकर धीरता वीरता और कार्य्यकौशल का नमूना बन अनन्त काल पर्य्यन्त संसार में स्थिर रहेगी।

कूच के मुकाम ।

जिस समय महाराज ऋतुराज वसंत के राज्य का आरंभ काल होने से दिग दिगन्तव्यापी वायुमण्डल की स्वच्छता के कारण सम्पूर्ण संसारसुखमा की खान बन कर स्वर्ग का सादृश्य कर रहा था, उसी समय समस्त एशिया महाद्वीप पर विजय प्राप्त करके भूमंडल पर अपना नाम चिरस्थायी रखने एवं अपनी जन्म भूमि पहिले से पराधीन देश यूनान को उन्नति शाली बनाकर उसका ही उन्नत जातियों पर आतंक जमाने की इच्छा से वीर शिरोमणि सिकन्दरशाह निज जन्म दाता जननी ओलेपियस और जीवनाधार जन्मभूमि से विदा मांग कर उपरोक्त सैनसंख्या सहित यूनान और परशिया के

बीच का समुद्र पार करने को किश्ती पर सवार हुआ। सिकन्दरशाह अप्रैल के महीने भर जल यात्रा करने के बाद एशिया द्वीप के किनारे पर जा उतरा और वहां से इलियम तक वे रो टोक आगे बढ़ता गया। इलियम में पहुंच कर उसने अपने डेरे डाल दिए और सब सैना को बीरोचित आमोद प्रमोद एवं उत्तमोत्तम व्यायामादि करने की आज्ञा देकर आप अपने पूर्वभूत बीरबर पुरुषाओं को बलि प्रदान करने लगा। उसने एकीलीज़* के समाधि स्थान पर स्तूप बना कर उसको तेल से स्नान करवाया और अपने साथियों सहित उसके चारों तरफ नंगे पैर परिक्रमा लगाई। उसने उक्त स्तूप शिखर पर एक राज्य मुकट भी चढ़ाया। उस समय उसने कहा कि बीर पुरुषों की सच्ची प्रसन्नता इसीमें है कि उनके जीवन काल में उन्हें एक ईमानदार आज्ञाकारी बहादुर और सच्चा मित्र मिले और मरने पश्चात उसकी संतान में कोई उसीके समान बीर हो। इसके सिवाय उस ने शहर में जा कर परीस के तँबूरे को देखा और कहा कि मैं यहां इस तँबूरे की बहुमूल्यता देखने नहीं आया हूं पर यह देखने आया हूं कि यह वह तँबूरा है जिस पर से एकीलीज़ के बीरोचित गुणानुवाद गाए जाते थे। इसी अवसर में वे यूनानी लोग जो परशिया की गुलामी प्रजा बनकर रहते थे सिकन्दर के साथी बन गए।

* सिकन्दरशाह का प्रथम शिक्षक सालिमक्स उसे एकीलीज़ का अवतार कहा करता था इस लिये उसको भी इसका विश्वास हो गया था और वह अपने को एकीलीज़ का ही अवतार मानता था।

जिस समय सिकन्दर इलियम में पड़ा हुआ यह कौतुक कर रहा था परशिया की राजधानी का सेनापति मीमन एक उत्तम शिक्षित सेना लेकर मैसीडोन की तरफ इस बिचार से चल पड़ा कि जिसमें सिकन्दर को अपनी राजधानी की रक्षा के लिये आपही परशिया छोड़ देना पड़े। परन्तु मीमर के रास्ते में मर जाने से यह सब बिचार ही विचार रह गया। अतएव परशिया के बादशाह दारा ने बीस हजार सेना गरनिकस नदी के किनारे तक इस अभिप्राय से भेजी की कि जिससे परशिया राज्याधीन एशिया माइनर पर के ज़िले सिकन्दर के प्रबल आक्रमण से बचाए जा सकें। सिकन्दरशाह इस मैदान की ऐसी लड़ाई से बहुत प्रसन्न था, वह जानता था कि ऐसी लड़ाई में मेरी सेना अवश्य विजयी होगी, परन्तु जून के महीने की धूप और गरमी की प्रखरता के कारण उसके सैनिक कुछ मनहार थे, साथ ही इसके उसके पिता फिलिप का साथी विकट रण विद्या विशारद सेनापति परमिनो का भी यह कथन था कि बर्फ पिघलने से नदी की बाढ़ बेढब हो रही है इसीसे मेरा भी चित शंका करता है, परन्तु सिकन्दर ने यह कह कर सबका उत्तर दिया कि जिस हिम्मत के सहारे हेलिसपांट की खाड़ी पार की उसके लिये यह गरनिकस नदी क्या चीज़ है। यह कह कर वह अपनी सेना को व्यूह बद्ध खड़ा करके दो समभागों में बांट कर गरनिकस के किनारे पर आडटा। सेना के बाम पक्ष का अधिपति परमिनो था और दाहिने का स्वयं सिकन्दर था। नदी के किनारे पर खड़े हुए सन्नद्ध योधा गण अपने स्वच्छ शस्त्रों को चमचमाते हुए सिकन्दर की आज्ञा पाने के उत्सुक

थे कि इतने में सिकन्दर ने यह कहते हुए कि प्यारे भाइयो आओ मेरा साथ दो और अपनी वीरता से शत्रु सेना को परास्त करके संसार में अमर यश लो" अपना घोड़ा गरनिकस की जल धरा में डाल दिया।

[क्रमशः]

हिन्दोस्तान का इतिहास।
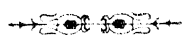
मुसल्मानों की तवारीख में हिन्दू।

हिन्दुओं का देश हिन्दुस्तान है मगर यहां मुसल्मान भी १२०० वर्ष से रहते हैं। हिन्दुओं के पास जैसे १२०० वर्ष पहिले की शृंखला बद्ध तवारीख नहीं है वैसे ही पीछे की भी नहीं है परन्तु मुसल्मानों के पास है। उसमें जो कुछ बुरा भला हाल हिन्दुओं का लिखा है उसको मानना पड़ता है। न मानें तो दूसरा हाल कहां से लावें। हमने मुसल्मानों की सैंकड़ों तवारीखें देखी हैं जिनकी बराबरी में हम हिन्दुओं की एक तवारीख भी नहीं ला सकते हैं जो तवारीख कही जा सके, हां किस्से कहानियों की तो बहुत किताबें हैं जिनको बहुत से हिन्दू तवारीख समझे बैठे हैं पर वे तवारीख नहीं हैं, न उनमें तवारीख की सी बातें हैं। बहुधा कवियों की कल्पित कहानियां है, ऐसी कहानियां मुसल्मानों में भी बहुत हैं पर मुसल्मान उनको तवारीख करके नहीं मानते हैं, तवारीख तो वही गिनी जाती है कि जिसमें सिलसिलेवार (शृंखलाबद्ध) इतिहास दिन मिती

और साल संवत की साक्षी से लिखा हो और जिसमें कोई अमानुषी बात न हो अर्थात् जो हाल लिखे होवे वैसे ही हों जो मनुष्यों से हो सकते हों, ऐसे न हों जो उनके हाथ पैर की शक्ति से बाहर के हों। मुसल्मानों के इतिहासों में कहीं कहीं ऐसे हाल भी मिलते हैं पर वे बहुत कम हैं और धर्मसम्बन्धी हैं। धर्म की खैंच तान से सुने सुनाए लिखे गए हैं, जो उनको नहीं मानें तो इतिहास की शृंखला उससे नहीं टूट सकती। इस पर हिन्दू यह शंका करें तो कर सकते हैं कि मुसल्मानों ने मत विरोध या अपने धर्म के पक्षपात से हिन्दुओं का सही हाल न लिखा होगा क्योंकि मुसल्मानों में अपने धर्म का अभिमान हिन्दुओं से बढ़ कर है और वे अपने मत के ऐसे पक्के हैं कि दूसरे मत मतान्तरों की बात काटते ही रहते हैं, सो यह सच है तो भी पिछले १२०० वर्षों का इतिहास हिन्दुओं का जो उनकी तवारीखों में मिलता है वह हिन्दुओं के पास नहीं हैं और हिन्दू यदि उसको जानना चाहें तो उन्हींकी तवारीख से जान सकते हैं और जानने के पीछे यह भी विचार सकते हैं कि उसका कितना अंश सही है और कितना सही नहीं है। पहिले से ही उस की अवज्ञा करना सर्वथा वृथा है और अब हिंदुओं में इतिहास की रुचि पहिले से दिन दिन बढ़ती जाती है और कई लोग अपनी सज्जनता से मुझ तुच्छ बुद्धि को बूझ बुझक्कड़ समझ कर हिन्दू और मुसल्मानों की इतिहास सम्बन्धी बातें पूछा करते हैं इसलिये मैंने बहुत बरसों तक उत्तर देते देते उकताकर अब यही उचित समझा है कि हिन्दुओं का जो कुछ हाल मुसल्मानों के इतिहासों में देखा

गया है उस सबका संक्षिप्त सारांश एक स्वतन्त्र ग्रन्थ में लिख कर छाप दूं जिससे सब हिन्दुओं को अपनी १२०० वर्ष की पिछली तवारीख का एक मूर्तिमान चित्र आंखो के सामने मौजूद हो जावे । यह काम छोटा नहीं है इसमें उतनाही कष्ट उठाना पड़ेगा कि जितनो अगाध समुद्र में गोता लगा कर मोती निकालने वाले को उठाना पड़ता है ।

बस इससे ज़्यादा हम बातें नहीं बनाना जानते, कुछ काम करके दिखाना चाहते हैं ।

मुसल्मानी मत की उत्पत्ति और उसका पृथ्वी पर फैलना ।

मुसल्मानी मत के नेता मोहम्मद पैगम्बर संवत ६२० के लग भग अरब देश के प्रधान नगर मक्के में जन्मे थे। उन्होंने ४० वर्ष की अवस्था होने पर संवत ६६० के आस पास अपने को पैग़म्बर कह कर मुसल्मानी धर्म चलाया । पैग़म्बर के माने दूत हैं अर्थात् जो परमेश्वर के पास से प्रजा के वास्ते सँदेसा लावे वह पैग़म्बर है । पहिला पैग़म्बर आदम था जिससे आदमियों का वंश चला है । आदम के पीछे इब्राहीम मूसा और ईसा आदि और भी कई पैग़म्बर मोहम्मद तक हुए हैं । मोहम्मद के पीछे कोई न हुआ और न होगा ऐसा मुसल्मानों का निश्चय है ।

मोहम्मद के बाप दादा मूर्तिपूजक थे परन्तु मोहम्मद ने जो मत चलाया है वह मूर्तिपूजा का द्वेषी है । इस मत के मुख्य मुख्य नियम ये हैं ।

१ खुदा के सिवाय किसी को मत पूजो । खुदा एकही है । जो

अनेक खुदा मानते हैं या उसकी मूर्ति बना कर पुजते हैं वे काफ़िर और मुशरिक अर्थात् खुदा का शरीक (साझी) कल्पाना करनेवाले हैं । वे सब मरे पीछे दोज़ख़ (घोर नर्क) में पड़ेंगे और खुदा उनको तरह तरह के दंड देगा ।

२ कुरान को मोहम्मद की मारफत भेजी हुई खुदा की किताब मानो जो उसमें लिखा है उसका पालन करो । मोहम्मद को खुदा का पैग़म्बर समझो और उसके कहने पर चलो क्योंकि तुम्हारी गति उसके बिना नहीं होगी ।

४ दिन में ५ वक्त नमाज (ईश्वर स्तुति) मसजिद में या अपने घर पर पढ़ो ।

५ वर्ष भर में १ महीने तक रोजा (व्रत) रक्खो ।

६ मालदार हो जाओ तो अपने माल पर २॥) सैकड़ा के लेखे से जकात (दान) दीन और दुर्बल लोगों को दो ।

८ रुपया जुड़ जावे तो हज्ज अर्थात् मक्के की यात्रा करो ।

८ जो लोग काफ़िर हैं उन पर जिहाद (चढाई) करो । पहिले उनसे कहो कि मुसल्मान हो जाओ, मुसल्मान नहीं हो तो जज़िया (कर) दो और तुम मुसल्मानों के अधीन हो जाओ नहीं तो लड़ो, लड़ाई में जो मुसल्मान काफ़िरों के हाथ से मारे जावेंगे वे स्वर्ग में जाकर सुख भोगेंगे और यदि जीत जावेंगे तो इस लोक में राज करेंगे । जो मुसल्मान जिस काफ़िर को मारेगा वही उसके धन माल घरबार और जोरू बच्चों का मालिक हो जावेगा और जो काफ़िर मुसल्मान हो जावे तो उसे अपना भाई समझो और फिर उससे कुछ भिन्न भाव न रक्खो ।

जहाद का हुकम मानों मुसलमानी धर्म बढ़ाने का उपाय था जिसके वास्ते महात्मा मोहम्मद ने भी अरब देश के काफिरों को मुसलमान के वास्ते तलवार पकड़ी और जब कुछ मुसल्मानी मत चल निकला तो संवत ६७९ में मक्के से जाकर मदीने को अपना राजस्थान बनाया। उसी दिन से मुसल्मानों का हिजरी सन चला है जिसकी पहिली तारीख सावन सुदि ३ शुक्रवार संवत ६८९ को थी।

[क्रमशः]

सभा का कार्य विवरण।

[३]

साधारण अधिवेशन।

सोमवार ता० ३० सितम्बर १९०७ सन्ध्या के ७ बजे।

स्थान---सभाभवन ।

[१] तारीख ३१ अगस्त १९०७ के अधिवेशन का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

[२] प्रबन्धकारिणी सभा का तारीख १९ अगस्त १९०७ का कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

[३] निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए-

१ बाबू बटुकप्रसाद गुप्त, बुलानाला, काशी १॥); २ पं० महाराज नारायण शिवपुरी राय बहादुर, अर्दली बाज़ार बनारस ३); ३ बाबू छोटेलाल डिस्ट्रिक्ट इंजीनीयर बनारस ३); ४ पं० शालिग्राम शर्म्मा जहानाबाद गया, १॥); ५ बाबू छेदी सिंह, बड़ी पियरी, काशी १॥)।

[४] सभासद होने के लिये निम्न लिखित महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए-

१ बा० रामनारायण एजेण्ट, राजा उदित नारायणसिंह बाराबंकी; २ पं० नन्दलाल शर्मा एजेण्ट, मि० फोर्डमेकडोनेल्ड कानपुर; ३ बा० ऋषिलाल साहु गौराबादशाहपुर ज़ि० जौनपुर; ४ कु० बाबू अवधेन्द्र प्रताप दियरा जि० सुलतांपुर; ५ म० कु० बाबू देवनारायण सिंहजूदेव संटवा बादशाहपुर मोगरा जि० जौनपुर; ६ बा० शिवमंगल प्रसाद सब-ओवरसीयर बलिया; ७ कुँ० रौशनसिंह जमींदार सीही पो० रूंटारा, जि० कानपुर; ८ बा० भैयालाल हेड मास्टर मिडिल स्कूल सकती, ९ बा० छेदालाल असिस्टेण्ट रेकर्ड कीपर महकमा कागिजात देही मोतीमहल ग्वालियर; १० बा० नरेन्द्रनारायण सिंह ५२ शम्भूनाथ पंडित स्ट्रीट भवानीपुर कलकत्ता; ११ पं० हरेकृष्ण मिश्र सब पोस्टमास्टर अरवल ज़ि० गया; १२ पं० शिवनन्दन मिश्र वैद्य सेकेण्ड पण्डित मि० इ० स्कूल अरवल ज़ि० गया; १३ पं० रजनीकान्त थर्ड पण्डित मि० इ० स्कूल अरवल जि० गया; १४ पं० राममगीना पाण्डेय पोस्ट अरवल जि० गया; १५ म० कु० बाबू जंगसेर बहादुर सिंह बेलघाट जि० गोरखपुर; १६ पं० समहुन तिवारी पाथर कोला चा बागिचा पो० आदमपुर जि० सिलहट।

[५] निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए—

१ बा० हरदास पटियाला, २ बा० रामप्रसाद हमीरपुर, ३ बा० बालकृष्णदास काशी, ४ बाबू हेमचन्द्र सेन गोंडा, ५ पं० केदारनाथ पाठक काशी, ६ श्रीमती सरस्वती बाला पाठक मिर्ज़ापुर।

[६] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं—

पं० वैद्यनाथ शुक्ल बिहपुर भागलपुर—हितोपदेश दूसरा भाग, श्रीयुक्त सप्तम् एडवर्ड की संक्षिप्त जीवनी, गजल संग्रह, प्रणवविचार, क्या हिन्दू जड़ोपासक हैं ?, श्री कृष्णतत्व, दिल्ली दर्बार चरितावली, इन्दुमती, विचित्र संग्रह।

पं० सोमनाथ मिश्र हिन्दू कालेज काशी—रूपवती नाटक।

खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर—टाड राजस्थान सं० ७ और ८।

पं० देवनाथ पाठक, हिन्दू कालेज काशी–महामारी व्यवस्था, रोशन आरा।

पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठी, काशी,–नूरजहां, स्त्रीशिक्षा, सास बहू का बर्ताव, कामधेनु, सूक्ष्म जीवन चरित्र, बालिकाओं के खेल, स्फुट कविता, बाम मार्ग।

पं० माधव प्रसाद पाठक, काशी–मानवपत्रिका सं० १३।

कारमाईकल लाइब्रेरी, काशी,–Annual Report for the year ending 31st December 1906.

लाला भृगुनाथ लाल वर्म्मा, कलकत्ता,–वंशी मंजरी प्रथम खण्ड Indian Antiquary for June 1907.

एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, कलकत्ता–Memoirs of the Asiatic Society of Bengal Vol II Nos 2, 3 & 4, Journal & Proceedings of the Asiatic Society of Bengal Vol III Nos 4, 5 and 6.

पंजाब की गवर्न्मेण्ट–Annal Progress Report of the Archeological Surveyor, Northern Circle for the year ending 31st March 1907.

संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेण्ट–Annual Progress Report of the Superintendent of the Archeological Survey, Northern Circle for the year ending 31st March 1907.

[७] सहायक मंत्री ने निम्न लिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी जिसपर सभा ने शोक प्रगट किया।

पण्डित वामनाचार्य गिरि, मिर्जापुर; पण्डित अनन्तराम पांडे, रायपुर।

[८] बाबू श्यामसुन्दर दास ने भारतमित्र के सम्पादक बाबू बालमुकुन्द गुप्त की मृत्यु की सूचना दी।

निश्चय हुआ कि इस सभा को बाबू बालमुकुन्द गुप्त की असामयिक मृत्यु का अत्यन्त दुःख है और वह उनके वंशधरों से अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रगट करती है।

[९] सहायक मंत्री ने सूचना दी कि बाबू सेभागचन्द बसतचन्द

यशोविजय जी सन्यासी हो गए हैं और वे अब सभा से सम्बन्ध नहीं रक्खा चाहते ।

निश्चय हुआ कि उनका नाम सभासदों का नामावली से अलग कर दिया जाय ।

[१०] प्रबंधकारिणी सभा के निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए—

(क) नियम ३८ (७) में "बंक बंगाल" के उपरांत "तथा बनारस बंक" ये शब्द बढ़ा दिए जांय ।

(ख) जो लोग नागरीप्रचारिणी पत्रिका में छपने के लिये लेख भेजते थे उन्हें उसकी पचास प्रतियां दी जाती थीं, यह नियम अब उठा दिया जाय ।

[११] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

गोपालदास,
सहायक मंत्री ।

[६]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ७ अक्तूबर १९०७ सन्ध्या के साढ़े पांच बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास—सभापति, बाबू माधव प्रसाद, बाबू वेणी प्रसाद, पण्डित रामनारायण मिश्र, बाबू गोपालदास ।

[१] तारीख ८ सितम्बर के अधिवेशन का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का २१ सितम्बर १९०७ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि हिन्दी पुस्तकों की खोज की वार्षिक तथा त्रैवार्षिक रिपोर्टों को

गवर्न्मेंण्ट के पास भेजने के लिये सभा कौन सी तिथियां नियत करती है और साथ ही प्रस्ताव किया था कि इनके लिये क्रमात १ अप्रैल और १ जूलाई नियत की जाय तो उत्तम है।

निश्चय हुआ कि इसके लिये क्रमात् १ अप्रैल और १ जूलाई की तिथियां नियत की जांय।

[३] पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा, राजा कमलानन्द सिंह, पण्डित नवरत्न गिरिधर शर्म्मा और बाबू कन्हैयालाल के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उन्होंने पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी का "वक्तव्य" देखने के लिये मांगा था।

निश्चय हुआ कि पं० महावीर प्रसाद के "वक्तव्य" की एक नकल करा ली जाय और जो महाशय इसे मांगे उनके पास वह यथाक्रम भेज दी जाया करे और कोई महाशय उसे एक सप्ताह से अधिक न रक्खें।

[४] पण्डित छन्नूलाल वकील का २७ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा के निश्चय के अनुसार उन्होंने दीवानी अदालत में नागरी की अर्जियां लिखने के लिये लाला माता पलट को १ सितम्बर १९०७ से पांच रुपए मासिक वेतन पर नियत किया है।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

[५] इस वर्ष सभा के वार्षिकोत्सव के विषय में निम्नलिखित बातें निश्चित हुईं।

१ मिस्टर ई० एच० रैडीची से प्रार्थना की जाय कि वे कृपाकर इसमें सभापति का आसन ग्रहण करें और उनकी सम्मति से इसके लिये अक्तूबर मास में कोई तिथि नियत की जाय।

२ महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, पण्डित मदन मोहन मालवीय, बाबू श्यामसुन्दर दास और मिस्टर ई० ग्रीव्स से प्रार्थना की जाय कि वे इसमें व्याख्यान दें।

३ इसके लिये बाहरी सभासदों को भी निमंत्रण भेजा जाय।

[६] नागरीप्रचारिणी पत्रिका में विज्ञापन की छपाई के लिये निम्न लिखित नियम स्वीकृत हुए--

	एकमास	तीनमास	छमास	एक वर्ष
प्रति पंक्ति	।)	॥)	।॥)	१)
आधा पृष्ठ	२॥)	६)	१०)	१५)
पूरा पृष्ठ	४)	१०)	१६)	२५)

[७] निश्चय हुआ कि "आघातों की प्रथम चिकित्सा" शीर्षक लेख की एक हजार प्रति चित्रों के सहित पुस्तकाकार छपवाई जाय ।

[८] नागरीप्रचारिणी पत्रिका में छपने के लिये निम्न लिखित लेख उपस्थित किए गए--

१ बाबू दामोदर सहाय सिंह लिखित "उद्यम विचार" और "अन्योक्ति" लेख ।

निश्चय हुआ कि ये पत्रिका में नहीं प्रकाशित हो सकते ।

२ बाबू रामवदन सिंह लिखित "कर्णमाला" उपन्यास ।

निश्चय हुआ कि यह पत्रिका में नहीं प्रकाशित हो सकता ।

३ बाबू हरिदास माणिक लिखित "शिवा जी की चतुराई ।"

निश्चय हुआ कि यह पत्रिका में प्रकाशित किया जाय ।

४ बाबू बेणी प्रसाद लिखित "पुष्प नाटक ।"

निश्चय हुआ कि यह पत्रिका में प्रकाशित किया जाय ।

[९] बाबू लक्ष्मीनारायण धवन का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि सभा उनकी "ज्ञान विचार" नामक पुस्तक को नागरी प्रचारिणी पत्रिका के साथ बांट दे ।

निश्चय हुआ कि पण्डित रामनारायण मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे इस पुस्तक को पढ़ कर इसके बांटे जाने के विषय में सभा को सम्मति दें ।

[१०] बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि हिन्दी भाषा के कोश और व्याकरण के लिये जो सव-

कमेटी बनाई गई है उसमें लाला छोटे लाल का नाम भी सम्मिलित कर लिया जाय।

[११] बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि इस समय जो दुर्भिक्ष पड़ रहा है उसके लिये १०) रु० वा इससे कम वेतन पाने वाले सभा के नौकरों का वेतन ता० १ अक्तूबर १९०७ से चार मास के लिये एक रुपया बढ़ा दिया जाय।

[१२] सभा के क्लार्क बाबू महादेव प्रसाद का आवेदनपत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपना वेतन बढ़ाए जाने के लिये प्रार्थना की थी।

निश्चय हुआ कि यह मंत्री की सम्मति के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

[१३] निश्चय हुआ कि बनारस के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपल बोर्ड से प्रार्थना की जाय कि वे सभा के पुस्तकालय की कुछ वार्षिक आर्थिक सहायता करके सभा की सहायता करें।

[१४] बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि पण्डित केदारनाथ पाठक ने इस सभा की जो सेवा की है उसके लिये वे सभा के सभासद चुने जांय और उनका चन्दा क्षमा किया जाय।

[१५] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गोपालदास,
सहायक मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

सितम्बर १९०७।

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	१७०	५	११
सभासदों का चन्दा	७७८	१३	६
पुस्तकों की बिक्री	४१	१२	६
गवर्मेंण्ट की सहायता	२५०	०	०
रासो की बिक्री	२०६	०	०
स्थायी कोष	१५	१५	९
नागरी प्रचार	१	२	०
सूद		६	१०
पारितोषिक	५	०	०
पुस्तकालय का चन्दा	१२	२	०
फुटकर		८	०
जोड़	१४८२	२	६
देना ६०००)			

व्यय	धन की संख्या		
आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६५	१४	९
पुस्तकालय	२२	१५	०
रासो	२०	०	०
स्थायी कोष	६०	०	०
पुस्तकों की खोज	२५	०	०
नागरी प्रचार	१३	५	०
डाक व्यय	८८	४	९
फुटकर	४४	६	६
पुस्तकों की बिक्री मद्धे	३	५	२
जोड़	३४३	३	२
बचत	११३८	१५	४
जोड़	१४८२	२	६

जुगुलकिशोर,
मंत्री।

स्वर्गवासी बाबू राधाकृष्ण दास ।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

भाग १२] नवम्बर १९०७ । [संख्या ५

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न ।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र ।

सभा का वार्षिकोत्सव ।
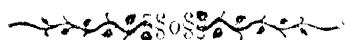
काशीनागरीप्रचारिणी सभा का चौदहवां वार्षिकोत्सव शनिवार ता० २६ अक्तूबर १९०७ को संध्या के ६॥ बजे सभा भवन में बड़े समारोह के साथ हुआ । सभा का हाल रईसों,

महाजनों, विद्वानों तथा अन्य मान्य और पढ़े लिखे लोगों से भरा हुआ था। भीड़ इतनी अधिक थी कि बरामदे तक में बैठने वा खड़ा रहने का स्थान न था। यथासमय बनारस के सर्वप्रिय मजिस्ट्रेट मिस्टर ई० एच० रेडीचे ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

सभा के उपमंत्री बाबू बेणी प्रसाद ने चौदहवें वर्ष की संक्षिप्त रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्ट से सभा के कार्य्यों और उसकी सफलताओं का परिचय मिलता था।

रिपोर्ट पढ़ी जाने पर महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की सुन्दरता पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अनेक उदाहरणों से इस बात को सिद्ध किया कि हिन्दी कविता बड़ी ही मनोहर और सुन्दर है और इसके अच्छे अच्छे ग्रन्थों का बड़ा आदर है। गोस्वामी तुलसी दास जी की रामायण ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसका बड़ा आदर है और जिसे सब श्रेणी के स्त्री पुरुष पढ़ते और अपनी अपनी रुचि के अनुसार उसका आनन्द उठाते हैं। संस्कृत और हिन्दी कविता का मुकाबला करते हुए उन्होंने यह सम्मति प्रगट की कि अनेक स्थानों पर हिन्दी के कवि संस्कृत के कवियों से कहीं बढ़ गए हैं। श्रीहर्ष ने दमयन्ती के मुख का जो वर्णन किया है वह तुलसी दास जी के सीता के मुख के वर्णन की समता नहीं कर सकता। हिन्दी दिनों दिन उन्नति करती जा रही है। प्राचीन काल से काशी विद्यापीठ चला आ रहा है। इसके अनेक उल्लेख मिलते हैं। यहीं राजा शिव प्रसाद और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से हिन्दीसेवी उत्पन्न हुए और यहीं इस नागरी

प्रचारिणी सभा का जन्म हुआ। जैसे प्राचीन काल से काशी संस्कृत के इतिहास में प्रसिद्ध है वैसे ही आगे इस सभा के द्वारा यह नगर हिन्दी के इतिहास में सदा आदरणीय होगा, इसमें भी कोई सन्देह नहीं है।

इसके पीछे बाबू श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी की आवश्यकताओं पर व्याख्यान दिया। उन्होंने यह दिखाया कि किसी भाषा में अभाव और आवश्यकता का होना कोई लज्जा की बात नहीं है वरन आवश्यकता ही उन्नति का कारण है। जब तक आवश्यकता बनी रहेगी उन्नति होती जायगी। जब लोगों को कोई आवश्यकता न देख पड़ेगी, जब वे अपनी भाषा को सब प्रकार से पूर्ण समझने लगेंगे तभी से इसकी अवनति आरम्भ होगी। हिन्दी की पहिले से बहुत उन्नति हुई है और दिनों दिन होती जा रही है। किसी देश में पहिले पहल अच्छे से अच्छे ग्रंथ नहीं लिखे गए। यह अवस्था हिन्दी की भी है। हिन्दी में उपन्यासों की भरमार है पर अभी वे उत्तम श्रेणी के नहीं हुए हैं। ज्यों ज्यों हिन्दी का पठन पाठन बढ़ता जायगा और विद्वान लोग उसके भंडार की पूर्ति में लगते जांयगे त्यों त्यों इसमें अच्छे से अच्छे ग्रंथ रत्न निकलते जांयगे। हिन्दी में जीवनचरित, यात्रा और इतिहास का तो अभाव अभी तक बनाही हुआ है पर साथ ही व्याकरण और कोश की भी बड़ी आवश्यकता है। किसी भाषा का व्याकरण पहिले ही नहीं बन गया। व्याकरण साहित्य पर निर्भर रहता है। जैसा अच्छे अच्छे लेखक लिखते हैं वही व्याकरण का मूल होता है। पाणिनि का व्याकरण संस्कृत का पहिला व्याकरण नहीं

है। हिन्दी में अभी कोई पाणिनि नहीं उत्पन्न हुआ है और न साहित्य की आधुनिक अवस्था में उत्पन्न ही हो सकता है। पर इससे व्याकरण के कार्य में शिथिल नहीं रहना चाहिए। यदि अभी ही अच्छे व्याकरण के बनाने का उद्योग नहीं किया जायगा तो कभी भी सर्वांगपूर्ण व्याकरण न बन सकेगा। कोश की तो बड़ी ही आवश्यकता है पर यह काम भी बड़ा कठिन है; सभा इस काम को अपने हाथ में लेने का विचार कर रही है। उसने कुछ सभासदों से यह प्रार्थना की है कि वे इस बात पर विचार करें कि कोश कैसा और किस प्रकार से बनाया जाय। इस कमेटी के आरम्भ के कार्य से ही यह विदित हो गया कि यह कार्य कैसा कठिन है और इसमें कितने द्रव्य की आवश्यकता है। क्या सभा ऋण की अवस्था में इस कार्य को ले सकती है? इसका उत्तर हिन्दीप्रेमियों के हाथ में है। अन्त में बाबू श्यामसुन्दर दास ने युवा पुरुषों को हिन्दी के कार्य में लगने की उत्तेजना देते हुए अपने व्याख्यान को समाप्त किया।

इसके अनन्तर मिस्टर ई० ग्रीव्स ने खिचड़ी भाषा पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने इस बात को दिखाया कि हिन्दी में खिचड़ी भाषा दो प्रकार की है एक हिन्दी-उर्दू, दूसरी हिन्दी-संस्कृत। दोनों ही खिचड़ी बुरी है। हिन्दी लेखकों को बीच का मार्ग लेना चाहिए। जिस बात वा भाव को प्रगट करने लिये सीधा से सीधा शब्द मिल सकता है उसके लिये कठिन संस्कृत या फारसी अरबी का शब्द चुनना अच्छा नहीं। इससे कोई लाभ नहीं होगा और भाषा के

कठिन होने से पढ़ने वालों की गिनती नहीं बढ़ेगी और न विद्या ही का प्रचार होगा। जो लोग यह चाहते हैं कि हमारे ग्रन्थों को थोड़े ही लोग पढ़ें उन्हें मुझे कुछ भी नहीं कहना है। जो लोग हिन्दी की उन्नति चाहते हैं उनको मेरी प्रार्थना पर ध्यान देना चाहिए। किसी दूसरी भाषा के शब्दों को अपनी भाषा में ले लेना कुछ बुरी बात नहीं है। उस ख्याल से तो अंग्रेज़ी सब से खिचड़ी भाषा है पर वह सब भावों के प्रगट करने में समर्थ है। नए भावों और विचारों के साथ नए शब्द भी आवेंगे इसलिये नए शब्दों को आदर के साथ लेना चाहिए। यदि हिन्दी अपना प्रचार कर सकती है तो सरलता से न कि कठिनता से। इसलिये जहां तक हो सके सरल हिन्दी के लिखने और लिखवाने का उद्योग करना चाहिए।

इन व्याख्यानों के हो जाने पर सभापति महाशय ने सभा की सफलता पर आनन्द प्रगट किया। उन्होंने कहा कि मुझे इस सभा की उन्नति से बड़ा आनन्द होता है। और मैं इसकी सहायता करने को सदा उत्साहित रहता हूं। यह सभा बड़ा अच्छा काम कर रही है। जिन विषयों पर आज व्याख्यान हुए हैं उनके विषय में मैं कुछ सम्मति नहीं दे सकता। यह काम हिन्दी के विद्वानों का है। मुझे यह कहते बड़ा सन्तोष होता है कि बनारस की म्युनिसिपेल्टी ने दो दिन हुए इस सभा के पुस्तकालय को ३०) रु० मासिक सहायता देनी स्वीकार की है। अभी वह इतना ही दे सकी है पर अगले वर्ष वह शायद और अधिक दे सके। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है इस

लिये अभी वह कुछ नहीं दे सकता पर वर्ष के अन्त में यदि बचत कुछ भी रही तो कम से कम ५०) नहीं तो १००)रु से सभा की सहायता की जायगी। अदालतों में नागरी प्रचार के सम्बन्ध में जो कठिनता पड़ रही है उसका कारण जहां तक मुझे मालूम है यही है कि मुहर्रिर हिन्दी नहीं जानते हैं। नए लोग जो लिए जाते हैं वे तो हिन्दी उर्दू दोनों जानते हैं पर पुराने लोग हिन्दी नहीं जानते। इससे कठिनता पड़ती है। अब तो पुलिस में भी जो थानेदार और कोतवाल परीक्षा देकर नौकरी पाते हैं उनको भी हिन्दी और उर्दू दोनों में परीक्षा देनी पड़ती है। इस वर्ष तो ऐसा ही हुआ है इससे आशा है कि समय पाकर नागरी अक्षरों के प्रचार में जो बाधाएं हैं वे दूर होजांय। मैं सभा को पुनः धन्यवाद देता हूं और इसके उद्देश्यों की सफलता पर आनन्द प्रगट करता हूं।

सभापति महाशय के कथन के पीछे बाबू श्यामसुन्दर दास ने उन्हें इस सभा में पधारने के लिये धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि मिस्टर रडीचे से इस सभा को बड़ी सहायता मिली है। जिस ज़मीन पर यह सभा का भवन बना है उसका मिलना इन्हीं की कृपा का फल है। मैजिक लालटैन का खरीदना, म्युनिसिपैल टिकस का माफ कर देना, म्युनिसिपैल्टी से पुस्तकालय को सहायता मिलना आदि सब इन्हीं की कृपा से हुआ है। यह सभा इन कारणों से उनकी बड़ी अनुगृहीत है और हृदय से चाहती है कि वे काशी ही में कमिश्नर होकर भी रहैं और इसी प्रकार सभा पर सदा कृपा बनाए रहैं।

पण्डित रामशङ्कर व्यास ने सभा की ओर से व्याख्यान दाताओं को धन्यवाद दिया और यह आशा प्रगट की कि यदि इसी प्रकार लोग हिन्दी के हित में दत्तचित रहेंगे तो इसका अवश्य उपकार होगा।

इस प्रकार इस वार्षिकोत्सव का कार्य सानन्द समाप्त हुआ। इसी उत्सव के सम्बन्ध में लाला भगवानदीन जी ने एक कविता लिखी है जो नीचे दी जाती है—

अम्बे प्रवीण मति दै निज दीन दासै
काहे न सत्य सुयशै जग में प्रकाशै।
हिन्दी अनाथ लखि तोहि दया न आवै
हे मातु हाथ गहि कै अब क्यों भगावै ॥१॥
हिन्दी अनाथ अबला कहु काहि टेरै
काहे न नेक चित दै तिहि ओर हेरै।
जानै अनाथ तिय को दुख तीय नीके
जानै सतीहि दुखहू भल कै सती के ॥२॥
हिन्दी पुकार अब तू सुनु कान दीन्हें
राखै सतीत्व यहि को मन मोद कीन्हें।
ऐसे सपूत नर तू रचु देश माहीं
हिन्दी हि मातु निज लों चितवैं सदांहीं ॥३॥
आगे रहे लपन सिंह कवीश नामी
भारी करी सुचित दै यहि की गुलामी।
काशी मझार पुनि भे हरिचंद दासा
सेवा करी मगन ह्वै सुयशै प्रकाशा ॥४॥
बांकीपुराहु मधि अम्बिकदत्त व्यासा
हिन्दीहि मानि जननी सुयशै प्रकाशा।

भो कालचक्र गति ते इनको विनाशा
ता द्यौस ते निपट भै मन में निराशा ॥५॥
हिन्दी प्रचारक सभा बहुठां दिखाहीं
पै नेकु चित्त उनके यहि ओर नाहीं ।
बुद्धी प्रकाश अपनो सब हीय धारे
हिन्दी सतीत्व रखिबो तृण सों विचारे ॥६॥
कोऊ कठोर उरदु पद धारि धारी
हिन्दी सतीत्व हरहीं बनि कामचारी ।
कोऊ लगाय अंगरेज विराम चीन्हा
बीबी सरूप रचवे महं चित्त दीन्हा ॥७॥
भारी समासयुत दै पद की समाजै
कोऊ सुजान जटिली ऋषिपत्नि साजै ।
हे मातु भारति लखै किन याहि ओरी
राखै सदैव मन में यह आस तोरी ॥८॥
हिन्दी सनाथ करिबो निज काज जानौ
ऐसो विचारि अबते यहि युक्ति ठानौ ।
दै दीन दास प्रमुखै मनते प्रसादू
भाषा विवेक बल दे बुधि निर्विवादू ॥९॥
पाये प्रसाद तव ये मन चित्त लाई
गैहैं सदैव हरि को यश सुक्खदाई ।
जाके सुने जननि तू नित सुक्ख पैहै
हिन्दीहु मोद लहिके उलहात जैहै ॥१०॥
आर्य्या सुवंशजनितै बुधि शुद्ध दे तू
हिन्दी हितैषि सबको जननी करै तू ।
दे तू लखाय इनको अब ज्ञान पूता

हिन्दीहि जानि जननी न बनैं कुपूता ॥११॥
कैसो विलक्षण मतो हिय माहिं धारे
आवै हरे समझ में न कछू हमारे।
पानी अनाज सब हिन्दहि को उड़ावैं
हिन्दीहि भाषत हिये बहुतै लजावैं ॥१२॥
खावैं अनेक फल फूलहु हिन्द केरे
धारैं सुवस्त्र अरु भूषण हिन्द केरे।
हिन्दू कहावत हिये बहु मोद पावैं
पै हिन्दि बोलत सबै मन में लजावैं ॥१३॥
हिन्दीहि वायु जल तें बल बुद्धि पाई
अन्यान्य देशगत बिद्यहि सीख लाई।
ताही सुज्ञान बल ते सब भोग पावैं
पै हिन्दि बोलत सबै मन में लजावैं ॥१४॥
जापान और अमरीकहु देश माहीं
इंगलैण्ड फ्रान्स अरु जर्मन में सदाही।
हिन्दू कहाय अति आदर भोग पावैं
पै हिन्दि बोलत सबै मन में लजावैं ॥१५॥
या दीन की सुविनती सुनि मातु लेहू
हिन्दू सुनामधर को अस बुद्धि देहू।
हिन्दीहि सीख पुजवैं मम एक आशा
मानैं सप्रेम मनतें निज मातृ भाषा ॥१६॥
जैसे सुपाख सित में नित चंद बाढ़ै
पानीहि पाय महिभू उलहैं असाढ़ै।
त्योंही सदैव जननी यहि देश माहीं
हिन्दी हितैषि जन की अवली लखाहीं ॥१७॥

जैसे सुपूष मधि ऊख रसै बढ़ावै
घी वायु पाय जिमि आग सिरै उठावै ।
त्योंहीं सदैव जननी यहि देश माहीं
हिन्दी हितैषि जन की अवली लखाहीं ॥१८॥
ऊंचे चढ़े क्षितिज ज्यों बढ़तैहि जावै
आवर्त दृशमलवहू जिमि बाढ़ पावै ।
त्योंहीं सदैव जननी यहि देश माही
हिन्दी हितैषि जनकी अवली लखाहीं ॥१९॥
संक्रान्ति ज्यों मकर की दिवसै वढ़ावै
संक्रान्ति पाय करकी निशि बाढ़ जावै ।
त्योंही सदैव जननी यह देश माहीं
हिन्दी हितैषि जनकी अवली लखाहीं ॥२०॥
पंचालि चीर बढ़कै जिमि भौ अनंता
घेरयो त्रिविक्रम हरी बाढ़ि कै दिगंता ।
त्योंही सदैव जननी यहि देश माहीं
हिन्दी हितैषि जनकी अवली लखाहीं ॥२१॥

स्वर्गवासी बाबू राधाकृष्ण दास ।

सभा की अनेक मासों से इच्छा थी कि स्वर्गवासी बाबू राधाकृष्ण दास का एक अच्छा चित्र सभासदों के अर्पण किया जाय। पर किसी अच्छे चित्र के न मिलने से अब तक यह इच्छा पूरी न हो सकी। अब अनेक उद्योगों के करने पर एक अच्छा चित्र प्राप्त हुआ है जो इस मास की पत्रिका के साथ प्रकाशित किया जाता है। आशा है कि इस चित्र

को देख कर सब हिन्दी प्रेमियों को बाबू राधाकृष्ण दास की सेवाओं का स्मरण हो जायगा और वे उनका अनुकरण कर अपनी मातृभाषा की सेवा में तत्पर होंगे ।

ज्योतिष प्रबन्ध ।

[चौथे अंक के आगे]

सौर जगत ।

हम ऊपर सौर जगत का वर्णन कर आए हैं कि जितने ग्रहादि हमारे सूर्य की परिक्रमा करते हैं उनके समुदाय का नाम सौर जगत है । बड़े ग्रहों में प्रसिद्ध ग्रह आठ ही हैं, जिनकी कक्षा (Orbit) का क्रम नीचे दिया जाता है । विदित रहे कि जिस पथ पर कि ग्रह घूमा करते हैं उसको उस ग्रह की कक्षा कहते हैं ।

[नवां चित्र देखो ।]

हमारे सौर जगत में सूर्य के पास बुध, फिर शुक्र, तदु-परान्त चन्द्र सहित पृथ्वी, इसके आगे मंगल (जिसके दो उपग्रह वा चन्द्र (Satellites) हैं), इसके परे चार उपग्रह सहित गुरु, फिर शनि (इसके सात उपग्रह हैं), इसके भी आगे यूरेनस (जिसके ४ उपग्रह हैं) और अन्त में नेपचून (इसका एक ही उपग्रह अब तक जाना गया है) है । उक्त क्रम से हमारी पृथ्वी का तीसरा नम्बर है । उक्त चित्र में कुछ केतु और बहुत से क्षुद्र ग्रह छोड़ दिए गए हैं ।

चन्द्र ।

पृथ्वी का वर्णन संक्षेप के साथ कर दिया गया । पृथ्वी

से चन्द्र का घनिष्ट सम्बन्ध है, क्योंकि यह इसीकी परिक्रमा करता रहता है, इसलिये इसीका विवरण लगे हाथों कर देना उचित है।

चन्द्र अपनी ही ज्योति से प्रकाशित नहीं है, किन्तु सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित है। चन्द्र भी पृथ्वी के सदृश गोलाकार है, अतएव इसका आधा भाग सूर्य की ओर रहता है और दूसरा आधा भाग आड़ में। जिस भाग पर रवि तेज पड़ता है और उसपर से वह प्रकाश प्रतिपतन (reflected) वा प्रतिबिम्बित होकर पृथ्वी पर आता है इसीको चांद की चांदनी कहते हैं। जब चन्द्र पृथ्वी के एक ओर और सूर्य पृथ्वी के दूसरी ओर रहता है, तब चन्द्र का समस्त आधा भाग, जिस पर रवि-तेज पड़ता है, चमकता हुआ दिखाई देता है, यही पूर्ण चन्द्र वा पूर्णिमा का चन्द्र कहाता है। और ज्यों ज्यों वह वहां से हटता जाता है त्यों त्यों उसका प्रकाशित भाग ओट में होता जाता है और अप्रकाशित भाग हमारे साम्हने आता रहता है। इसी कारण से हम चांद को घटते बढ़ते देखते रहते हैं और जब वह और सूर्य, दोनों पृथिवी के एकही ओर आ जाते हैं, तब चन्द्र का प्रकाशित भाग दूसरी ओर होने से हमें नहीं दिखाई देता और उस समय सूर्य के साथ रहने के कारण भी चन्द्र प्रकट नहीं हो सकता—फिर वह ज्यों ज्यों सूर्य से हटता जाता है उसका कुछ कुछ प्रकाशित भाग दृष्टि में आता जाता है।

दसवें चित्र के देखने से यह बात स्पष्ट हो जायगी। उस चित्र में—

च१=पूर्ण चन्द्र।

नवां चित्र।
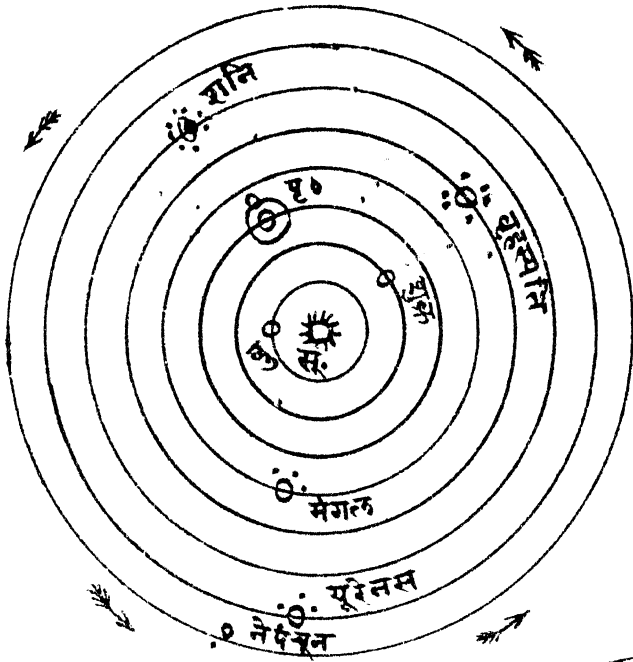
दसवां चित्र।
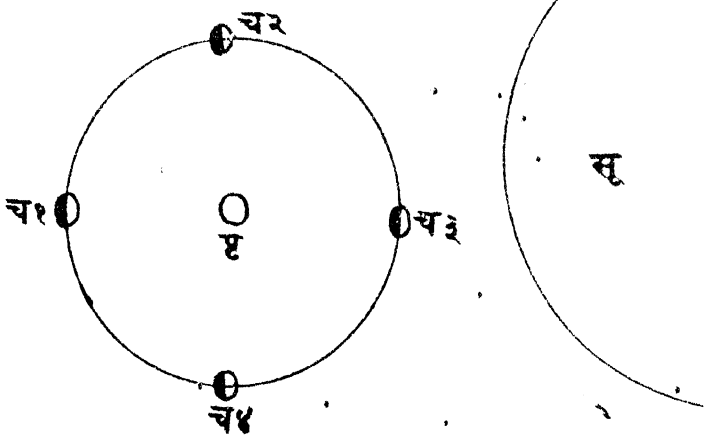
च२=अष्टमी का चन्द्र।

च३=अमावास्या का चन्द्र।

च४-अष्टमी का चन्द्र।

यदि ध्यान करके देखाजाय तो मालूम होगा कि नित्य प्रति १३° के लगभग हटकर चन्द्र उदय हुआ करता है। इसका कारण यह है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती हुई आगे बढ़ जाती है, इसलिये चन्द्र के उदय स्थान में भी भेद पड़ता जाता है। यदि पृथ्वी स्थिर होती तो चन्द्र नित्य एकही स्थान पर उदय हुआ करता।

चन्द्र के परिक्रमण में एक विचित्रता यह है कि उसका एकही भाग पृथ्वी के साम्हने रहता है, उसका पिछला भाग हमारे देखने में कभी नहीं आता। चन्द्र की परिक्रमा २७$\frac{1}{3}$ दिन में पूरी होती है अर्थात् वह एक नक्षत्र से होकर फिर उसी स्थान पर घूम कर २७$\frac{1}{3}$ दिन में आजाता है। चन्द्र का परिभ्रमण काल भी २७$\frac{1}{3}$ दिन का होता है। जैसे कोई व्यक्ति एक गोल टेबुल की ओर मुंह किए हुए खड़ा हो और वह टेबुल की ही ओर मुंह किए हुए उसके चारों ओर घूमे तो इस प्रकार एक बेर उसका मुंह पूरब होगा और फिर आधा चक्कर लगाने पर उसका मुंह पच्छिम हो जायगा। ठीक इसी प्रकार चन्द्र भी अपनी कीली पर उक्त समय में एकही बेर घूमेगा और उतनेही काल में भूमि की भी परिक्रमा कर लेगा।

मास अर्थात महीना।

जितने दिन में चन्द्र एक नक्षत्र से चलकर फिर वहीं आजाय, इसको **नाक्षत्रमास** (Siderial Lunar month) कहते

हैं, इसका परिमाण २७ दिन ७ घ०,४३ मि०,११·५४ से० है।

जितने काल में चन्द्र सूर्य के साथ से होकर फिर उसके साथ होजाय अर्थात एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक के काल को पाक्षिक चान्द्रमास (Synodical Lunar month) कहते हैं। इसमें २९दि०, १२घ०, ४४मि०, २·८४सि० लगते हैं।

यहां एक बात और भी स्मरण रखने की है कि चन्द्र की कक्षा भी ठीक ठीक गोल नहीं है किन्तु दीर्घाकार गोल है। इसलिये कभी वह पृथ्वी के निकट होजाता है और कभी दूर। जब वह निकट रहता है तब वह भूमिनीच (Perigee) कहाता है और जब अत्यन्त दूर चला जाता है, तब उसे भूम्योच्च (Apogee) कहते हैं।

चन्द्र की कक्षा क्रान्तिवृत्त पर ५° ८′ झुकी है और दो स्थानों पर उसे काटती हुई गई है। जिन स्थानों पर क्रान्तिवृत्त और चन्द्र कक्षा एक दूसरे को काटते हैं, उनका नाम चन्द्रपात (Moon's Nodes) है।

अब जितने दिन में चन्द्र भूम्योच्च किंवा भूमिनीच से चल कर उसी स्थान पर आजाता है, उसे 'चन्द्र केन्द्र सम्बंधी मास' (Anomalistic month) कहते हैं। यह महीना २७ दि०, १३ घ०, १८ मि०, ३७·४० सि० का होता है

इसी प्रकार चन्द्र अपने एक पात से चल कर २७ दि०, ५ घ०, ५ मि०, ३५·६ सि० में फिर उसी पात पर आजाता है, इसको चान्द्र पातिक मास (Nodical month) कहते हैं।

ऊपर जो कई प्रकार के मास लिखे गए हैं, उनमें अन्तर पड़ने का कारण यह है कि पृथ्वी परिक्रमण के साथ साथ चन्द्र, चन्द्र की कक्षा और उसके पात भी घूमते हैं

और सूर्य्य और अन्य ग्रहों के निकट वा दूर होने के कारण चन्द्र की गति भी समान नहीं रहा करती । इसलिये अन्तर पड़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

चन्द्र की दूरी इत्यादि ।

चन्द्र पृथ्वी से बहुत छोटा है, इसका व्यास २१६३ मील की है अर्थात् भू-व्यास का ६/५१ वां भाग हैं । समझने के लिये साधारण रूप से यों भी कह सकते हैं कि यदि ४९ चांद एकत्रित किए जांय तो इस पुंज का पिण्ड पृथ्वी के समान होगा ।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि चन्द्र की कक्षा दीर्घवृत्ता-कार है अतएव वह कभी पृथ्वी के निकट आ जाता है और कभी दूर चला जाता है ।

पृथ्वी से चन्द्र की अत्यन्त दूरी=२५१९४७ मील

पृथ्वी से चन्द्र की न्यूनतम दूरी=२२५७१९ मील

चन्द्र के प्रकाश का तेज रवितेज की अपेक्षा १/५४७१३ है अर्थात सूर्य की दूरी पर यदि ५४७१३ चन्द्र मिला कर स्थापित किए जांय तब उनका तेज पृथ्वी पर उतनाही आवेगा जितना कि सूर्य का प्रकाश आता

चन्द्रपृष्ट ।

जब हम चन्द्र को देखते हैं, तब हमें धब्बे धब्बे उसकी पृष्ट पर दिखाई देते हैं, जिसे हमलोग चन्द्र कलंक कहते हैं । ये धब्बे जब दूरदर्शक यंत्र द्वारा देखे जाते हैं तो ऐसा मालूम देता है कि कहीं तो प्रकाश बहुत है कहीं कम और कहीं अंधियारा होने से काले दाग हैं । इससे अनुमान होता है कि

चन्द्रपृष्ट पर बड़े बड़े पहाड़ हैं जिनकी सब से ऊंची चोटियां अधिक चमकती हैं, और जहां उनकी छाया पड़ी है वहां अंधियारी है । दूरदर्शक यंत्र द्वारा कुछ देर तक देखते रहने पर छाया घटती बढ़ती रहती है, क्योंकि ज्यों ज्यों चन्द्र घूमता हुआ हटता जाता है, उसके पृष्ट का कोई भाग जो पहिले आड़ में था अब सूर्य के प्रकाश के साम्हने आता जाता है और उसपर की छाया हटती जाती है, इसी प्रकार दूसरे किसी स्थान का प्रकाश कम होता जाता है और वहां के पर्वतों की छाया उधर को बढ़ती जाती है ।

इन बातों से प्रगट होता है कि वहां पर्वत बहुत हैं और इनके बीच बीच में बड़े बड़े गर्त भी हैं । विद्वानों का यह भी सिद्धान्त है कि वहां जल वायू नहीं है और यदि हो भी तो इतना कम है कि हम जैसे मनुष्य वहां जीवित नहीं रह सकते । इसके अतिरिक्त एक बात यह भी है कि चन्द्र के एक भाग में जब पन्द्रह दिन तक सूर्य-ताप बराबर रहता होगा तो वहां की उष्णता असह्य हो जाती होगी और दूसरे भाग में इतना शीत हो जाता होगा कि उसमें मनुष्य सरीखे जीव कदापि जीवित नहीं रह सकते ।

चन्द्र ग्रहण ।

यह विषय बहुत ही उपयोगी है परन्तु इसका वर्णन यहां नहीं किया जाता, किन्तु इसका विवरण सूर्य्याभिधान के अन्तरगत सूर्य ग्रहण के साथ किया जायगा, क्योंकि दोनों के कारण एक ही समान हैं, इसलिये एक ही स्थान पर उनके विषय में लिखना अधिक उपयोगी होगा ।

[क्रमशः]

पुष्पनाटक *।

जूही–आहा! तुम आ गए, आओ आओ, चले आओ, प्राणनाथ, मेरे प्राण प्यारे, हृदय रूपी आसन तुम्हारे लिये तय्यार है। आओ, इस पर बैठ जाओ। मेरे तप्त हृदय को शीतल करो, मुंहजले सूरज से यह कुम्हला गया है, इसे ठंढा कर दो। आहा! तुम्हारा स्पर्श कैसा ठंढा है। मेरा तन मन सब ठंढा हो गया। वह सूरज, ओह पापी सूरज, पहिले तो ऐसा न था, न जाने क्यों मूवा बढ़ता बढ़ता आकाश पर आ पहुंचा और मुझे जलाने लगा। नहीं, नहीं, देखो अब फिर उस हत्यारे के पापभोग का समय आ गया और वह पश्चिम के किसी खाई खन्दक में जा गिरेगा। जाय, जाय, जहन्नुम में जाय, आफ़त गई, बला टली। आओ, तुम हमारे हृदय पर विराजते रहो। यह क्यों, हिलते क्यों हो? धरती पर गिरोगे क्या? नहीं, नहीं, ऐसा न करना। मैं तुमको कलेजे पर चढ़ा कर रक्खे हुए हूं, यहीं पर आनन्द से विराजते रहो और मेरे कोमल कलेजे को ठंढा करते रहो।

बेला (चमेली से)–देखो, देखो, बहिन, जरा छोकरी का मचलना तो देखो।

चमेली–कौन सी छोकरी?

* यह लेख बाबू बंकिमचन्द्र चैटर्जी के एक बंगला लेख के आधार पर लिखा गया है।

बेला—अरे वही जूही। अब तक तो सिर नीचे किए मुंह छिपाए चुप चाप पड़ी थी, पर ज्योंही हरामजादे नव्वाब के खालू का लड़का नव्वाब—पानी का बूंद, हवा के घोड़े पर सवार हो, छोकरी के कलेजे पर आ गिरा, बस त्योंही लगी छोकरिया मारे हँसी के लोट पोट होने—(जूही से) देख, देख, कहीं खुशी के मारे फूल कर कुप्पा न हो जाइयो, नहीं तो सब रस चू पड़ेगा। अरी, अभी, तेरा लड़कपन न है, लड़िकाई की सब ही बातें अनोखी होए हैं।

चमेली—छी! छी! राम राम!

बेला—देखो तो बहिन! क्या हमें खिलना नहीं आता? गृहस्थी करने से, दिन दोपहर, सांझ सवेरे गरमी बरसात सभी समय खिलना पड़ता है—नहीं तो चलती क्यों कर रानी? क्या हमारी उम्र बीत थोड़े ही गई है? सो तो नहीं, पर बात यह है कि हमें ऐसे नाज़ नखरे नहीं भाते।

चमेली—यही तो मैं भी कहूं हूं, रानी।

जूही—आहा! अब तक कहां थे, प्राणेश्वर, अब तक कहां थे? क्या तुमने बिसार दिया कि तुम्हारे बिना मेरा जीना मुहाल है?

वृष्टिविन्दु—नहीं प्यारी, दुखी मत हो। बहुत दिन से आने आने की सोच रहा था, पर अब तक न हो सका। देखो तो! आकाश से धरती पर आने में कितने विघ्न हैं। अकेले दुकेले आना भी तो नहीं होता। दल बादल के साथ आना पड़ता है, हर वक्त सब का

मिजाज भी ठिकाने नहीं रहता, कोई वाष्परूप ही में रहना पसन्द करते हैं—अपने को बड़े आदमी समझ कर आकाश के सबसे ऊंचे हिस्से ही में छाए रहते हैं। कोई कहते हैं कि अरे भाइ ! जरा ठंढा तो होने दो, वायु का विचला हिस्सा अभी बड़ा गरम है, उतरते ही सूख जांयगे, कोई कहता है कि नीचे गिरने में बड़ी दुर्दशा है, जान बूझ कर अपनी दुर्दशा कौन कराये ? कोई कहते हैं कि हां, हां, ठीक है आकाश ही में मुंह काला कर रहना अच्छा, पर मिट्टी पर औंधे मुंह गिरना अच्छा नहीं। केवल इतने ही से तो छुटकारा नहीं है—धरती पर गिर कर नदी, नाले, मोरी पनाले में से होते हुए, फिर उस नोने समुद्र में जाना पड़ता है, इससे तो यही अच्छा है कि चलो सब लोग मिल कर इन्द्रधनुष होकर अपने अपने रंगों की बहार दिखा कर पशु पक्षी सबको मोहें। यदि किसी तरह से मिल जुल कर सब इकट्ठे भी हुए तो भाई भतीजे और भानजे सालों का गोल माल नहीं थमता। कोई कहता है, अरे अभी ठहरो, चलो काले काले बूटेदार अंगे और बिजली की माला पहिन कर कुछ देर तक जगत को अपनी शान शौकत दिखावें। कोई कहता है कि क्या हम लोग मामूली आदमी हैं—हम जलवंशी हैं—भूलोक उद्धारार्थ पयान करने वाले हैं, इतना भारी मर्तबा रख कर क्या चुप चाप चलना शोभा देता है ? आओ, कुछ देर तक तर्जन गर्जन करें। कोई गरजता है अठखेलियां देखने लगता है यह कामसी

भी तरह तरह के नखरे जानती है कभी इस मेघ की गोदी में, कभी उसके कंधे पर कभी आकाश के छोर और कभी बीच में, कभी चक् चक् तो कभी झक् झक्।

जूही—हां! हां! क्यों नहीं! जब तुम बिजली ही पर इतने रीझ रहे हो तो भला यहां आने का क्या काम था-हां जी! वह बड़ी-हम अदने से अदने —"

वृष्टिविन्दु—अरे, राम! राम! खफा क्यों होती हो? क्या मैं भी औरों की तरह हूं? देखो जो लोग छोकरे छोकरे हलके आदमी थे वेही रह गए और हम जैसे बड़े और भारी आदमी रह न सके। इसी लिये उतर आए और बहुत दिन हुए तुमसे भी तो भेंट मुलाकात नहीं हुई थी।

कमलिनी (तालाब में से) ऊंह! बड़ा जी न जाने कितने भारी हैं। अरे आ न, तेरे ऐसे दस पांच हजार को अपने एक पत्ते पर बैठा रक्खूं।

वृष्टिविन्दु—क्यों री! कमलिनी!! तैं क्या असल बात भूल गई? यदि वृष्टि न होती तो न तो पंकही होता, न जल ही होता और न तैं ही इस तरह मचल मचल कर जल पर क्रीड़ा करती और खिल खिल कर हँसवाती! अरी बेटी, तैं तो घर की लड़की है, इसी लिये तुझे सदा से छाती पर लाद कर पालते हैं नहीं तो तेरा यह सौरभ और अभिमान कुछ भी न रहता। पापिष्टा! जानती नहीं तू हमारे पुस्तैनी दुश्मन उस अग्निपिण्ड की अनुरागिनी है?

जूही—छीः प्यारे! ऐसी ऐसी स्त्रियों से क्या कभी इतना

बोलना चाहिए ? इसका तो यह हाल है कि बस सवेरा होते ही मुंह खोल उसी मुँहझौंसे नायक की ओर टकटकी लगाए रहती है। जिधर वह जाता है बस उधर ही यह भी गर्दन फेर लेती है। इसी बीच में कितने ही भौंरे मधुमक्खी और बर्रें आआ कर इसका रस चूस जाते हैं। पर इस बेहया को हया कहां ? ऐसी बेहया, जलशायिनि, भौंरे मक्खियों की प्यारी, कांटे की कयारी को क्या मुंह लगाना चाहिए ?

बेला–अरी रानी जूही ! क्या भौंरे की करतूत घर घर एक सी नहीं है ?

जूही–अरी रानी ! तू अपने की बात आप जान। मैं तो यहीं खिली हूं। भौंरे मक्खी की जलन क्या जानूं।

वृष्टिविन्दु–तुमही क्यों फालतू आदमियों से बोलती हो। जो आप मुँह काला कर चुकी है वह क्या तुम्हारे ऐसी स्वच्छ स्वेत रंग की शोभा और सुगन्धी की गमक सह सकती है।

कमलिनी–भला रे भला। बड़ा लेकचर फटकार रहा है। देख ! वह पवन आया।

जूही–अरे तेरा नाश हो ! क्या कहा कि.........

वृष्टिविन्दु–अरे बाप रे ! ठीक तो है !! अब मेरा रहना असम्भव है।

जूही–रहो न।

वृष्टिविन्दु–नहीं–रह नहीं सकते–पवन मुझे झकोरा देकर पटक देगा। उसका सामना मैं नहीं कर सकता।

जूही–थोड़ी देर तो और रहो।

(पवन देव का प्रवेश।)

पवन (वृष्टिविन्दु से) उतर !

वृष्टिविन्दु-क्यों जनाब।

पवन-मैं इस भोली भाली सीधी सादी मुलायम, खुशबूदार कली में क्रीड़ा करूंगा। तैं पाजी अधःपतित, नीच-गामी, और नीचवंशी होकर इस सुखमय आसन पर बैठेगा ? उतर यहां से।

वृष्टिविन्दु-मैं आकाश से आया हूं।

पवन-पाजी ! तैं पार्थिवयोनि से है-नदी नाले और नीच गामी पनाले में तेरा वास है-तैं इस आसन पर ? उतर।

वृष्टिबिन्दु-अच्छा प्यारी ! लो अब जाता हूं।

जूही-रहो न।

वृष्टिबिन्दु-रहने दे तब न।

जूही-नहीं, नहीं, रहो न, रहो न।

पवन-तैं इतना सिर क्यों हिलाती है।

जूही-तुम जाओ ! हटो !

पवन-नहीं प्यारी, मैं तुम्हें कलेजे से लगाऊंगा।

(जूही का हट कर भागने की कोशिश करना।)

वृष्टि विन्दु-इतने गोलमाल में तो अब नहीं रह सकता।

जूही-अच्छा प्यारे, जाते हो तो जाओ, पर मेरा जो कुछ है सब तुम्हें दिए देती हूं। धो बहा कर ले जाओ।

वृष्टि बिन्दु-क्या दोगी ?

जूही-थोड़ा सा रस और सौरभ।

पवन-हट ; सौरभ तो मैं लूंगा। इसी लालच से तो तेरे पास आया हूं-दे ”

(पवन का जूही से जबरदस्ती करना।)

जूही—(वृष्टि विन्दु से) डाकू है, डाकू है ! भागो प्यारे ! भागो !

वृष्टिविन्द—तुम्हें छोड़ कर कैसे जांय ? आह ! जैसा खदेड़ रहा है, रह भी तो नहीं सकते—जांय जांय।

(वृष्टिविन्दु का भूपतन।)

बेला और चमेली—ह ! ह! क्यों भाई स्वर्गवासी ? आकाश से न आए हो ? अब मिट्टी पर गिरो, धूल से घिरो और पनाले में फिरो।

जूही (पवन से) छोड़ ! छोड़ !!

पवन—छोड़ें क्यों ? दे सौरभ दे !

जूही—हाय ! तुम कहां गए, ठंढे ठंढे सादे सादे रसीले स्वच्छ निर्मल पानी के बूंद। हाय ! इस हृदय को प्रेम से पूर्ण कर अब खाली क्यों कर गए। प्राणनाथ ! एक बार अलछट सा मुंह दिखा कर कहां लोप होगए। प्यारे ! हाय ! मैं तुम्हारे संग क्यों न गई ? क्यों न मरी ? क्यों इस सूखे अनाथ तन को शून्य में धारण किए रही......

पवन—ले अब रोना रख—दे सौरभ—दे—

जूही—छोड़ दे, नहीं तो जहां मेरा प्यारा गया है, मैं भी वहीं चली जाऊंगी।

पवन—जाना हो तो जाइयो पर सौरभ दे। हूं। हुम्म।

जूही—मैं जान दे दूंगी—मरूंगी—मरी—चली।

पवन—हूं—हुम्म।

(इति। जूही का डाली से टूट कर गिर पड़ना।)

पटाक्षेप।

उपसंहार।

प्रथम श्रोता—कहिए, नाटककार महाशय! यह क्या खाक हुआ?

द्वितीय " —सोई तो। एक फूल नायिका और एक पानी का बूंद नायक। वाह! क्या Drama (नाटक) है?

तीसरा " —शायद हो। कुछ Moral teaching (नीत्युपदेश) है? शायद हो, नीति उपदेश होगा।

चौथा " —नहीं जी—एक तरह की Tragedy (दुःखान्तनाटक) है।

पांचवां " —Tragedy (दुःखान्तनाटक) है या Farce (प्रहसन)

छठां " —Frarce (प्रहसन) है या Satire (हास्यात्मक कविता)? जो हो किसी के तरफ़ इशारा करके हँसी उड़ाई गई है।

सातवां " —नहीं जी—इसके बड़े गूढ़ार्थ हैं। मुझे तो यह परमार्थ विषय का कोई काव्य मालूम पड़ता है। यदि इसका नाम "कामना" या "तृष्णा" रक्खा जाता तो ठीक था। मालूम पड़ता है कि लेखक महाशय अखूबी लिखनहीं जानते।

आठवां " —हां! हां! यह रूपक है। अच्छा मैं इसका अर्थ करूंगा।

पहिला " —अच्छा! लेखक ही क्यों नहीं कहते कि यह क्या है?

लेखक—यह सब कुछ भी नहीं। मैं इसका अंगरेजी नाम रक्खूंगा।

"A true and faithful account of a lamentable tragedy which occurred, in a flower-pot on the evening of the 15th August1907 and of which the writer was an eye-witness."*

---

* लेखक के आंखों देखा एक अति शोकजनक दुःखान्त नाटक का विवरण जो सन् १९०७ ईस्वी की १५ अगस्त के शाम को एक फूल के गमले में अभिनित हुआ था।

श्रीमान् लेफ्टनेण्ट गवर्नर का सभाभवन में पधारना।

संयुक्त प्रदेश के लेफ्टनेण्ट गवर्नर श्रीमान् सर जॉन प्रेसकूट ह्युवेट के कृपाकर सभाभवन में पधारने के उपलक्ष में समस्त स्थान भलीभांति सुसज्जित किया गया था। चारों ओर झंडियों और पेड़ पत्तियों की एक अनोखी छटा छा रही थी जिसे देख मन मोहित हो जाता था। इसके अतिरिक्त सड़क की चौमुहानी से दोनों ओर झंडियां लगाई गई थीं जिससे सड़क की शोभा भी अनुपम हो गई थी। सभाभवन के अन्दर बड़ी सादगी का सामान था। सब जगह दरियां बिछी हुई थीं और बाहर की सीढ़ियों से लेकर भीतर श्रीमान् के बैठने के स्थान तक लाल बानात बिछी हुई थी। श्रीमान् के बैठने का स्थान एक चौकी पर था जिस पर एक सुन्दर गालीचा बिछा हुआ था और उस पर एक सोने की सुन्दर कुर्सी रक्खी हुई थी। काशीस्थ प्रायः सभी सभासद उपस्थित थे। आठ बज के १० मिनिट पर श्रीमान् लेफ्टनेण्ट गवर्नर बनारस के कमिश्नर, चीफ सेक्रेटरी और एडी कॉग के संग पधारे। गाड़ी के ठहरते ही बनारस के कलेक्टर मिस्टर रडीचे के साथ बाबू श्यामसुन्दरदास, बाबू इन्द्र-नारायणसिंह और बाबू जुगुलकिशोर ने उनका स्वागत किया और उन्हें सभाभवन में नियत स्थान पर ले जाकर बैठाया।

श्रीमान् के बैठने पर बाबू श्यामसुन्दरदास ने अभिनन्दन पत्र पढ़ने की आज्ञा मांगी। आज्ञा मिलते ही बाबू श्याम-

सुन्दरदास ने निम्नलिखित अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया और उसको एक सुन्दर मखमल के खलीते में तथा उस खलीते को एक सोने चाँदी के काम की थाली पर रखकर श्रीमान् के अर्पण किया।

अभिनन्दन पत्र।

"श्रीमन्,

हम काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासद इस पवित्र और प्राचीन नगर में श्रीमान् के प्रथम आगमन के अवसर पर बड़े सम्मान पूर्वक अपने नम्र और हार्दिक अभिनन्दन पत्र के साथ श्रीमान् के सम्मुख उपस्थित होते हैं। श्रीमान् ने जो कृपा पूर्वक हमारे विनीत अभिनन्दन पत्र को लेना और अपने शुभागमन से सभा को कृतार्थ करना स्वीकार किया है उसके लिये हम लोग श्रीमान् को हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

यह सभा सन् १८९३ में देवनागरी अक्षरों के प्रचार, हिन्दी भाषा की उन्नति, उसके भण्डार की पूर्ति और उसके अध्ययन का उत्साह बढ़ाने के अभिप्राय से स्थापित हुई थी क्योंकि ये सब बातें सर्वसाधारण की शिक्षा की उन्नति के लिये आवश्यक हैं और इसी में इनका हित है। हम लोगों को श्रीमान् के समीप यह निवेदन करने में बड़ी प्रसन्नता होती है कि गत चौदह वर्षों में सभा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये निरन्तर उद्योग करती रही। इस समय हमारे सभासदों की संख्या ६६३ है और हमारे संरक्षक श्रीमान् रीवांनरेश और श्रीमान् ग्वालियरनरेश हैं तथा अनेक राजे

महाराजे, रईस और विद्वान हमारे सहायक हैं। हम लोग हिन्दी हस्तलिपि के लिये पारितोषिक संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के द्वारा और आवश्यक तथा लाभदायक विषयों पर हिन्दी लेखों के लिये पदक देते हैं। हमारे पत्र अर्थात् नागरीप्रचारिणी पत्रिका और ग्रन्थमाला, हमारा तुलसीदास की रामायण का संस्करण, चन्द बरदाई का पृथ्वीराज रासो और हिन्दी वैज्ञानिक कोष, ये हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये हमारे कुछ उद्योगों के फल हैं। हम लोगों ने बालिकाओं के व्यायाम, सिलाई और शारीरिक आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा की पुस्तकें तथा हिन्दी शीघ्र-लिपि प्रणाली की भी एक पुस्तक के प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया है। इसके अतिरिक्त हिन्दी के एक पूर्ण कोश और एक पूर्ण व्याकरण के प्रकाशित करने के लिये हमारी प्रबन्धकारिणी सभा उद्योग कर रही है और हमें आशा है कि इनके पूर्ण होने पर एक बड़ा भारी अभाव दूर हो जायगा। हमारे यहां एक हिन्दी का पुस्तकालय भी है, जो सर्वसाधारण के लिये खुला रहता है और इसमें बहुत से हिन्दी पढ़ने वाले काशीनिवासी आया करते हैं। बनारस के म्युनिसिपल बोर्ड ने कृपाकर इस पुस्तकालय के लिये हम लोगों को जो अच्छी वार्षिक सहायता देनी स्वीकार की है उसके लिये हम लोग बोर्ड के बड़े अनुगृहीत हैं। गत आठ वर्षों से हम लोग संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेण्ट की कृपा और सहायता से हिन्दी साहित्य के छिपे हुए रत्नों को प्रगट करने के लिये हस्तलिखित पुस्तकों की खोज कर रहे हैं और हमें श्रीमान् को यह सूचना देते हुए बड़ा हर्ष होता है कि इस विषय में हमारी पांच रिपोर्टें

की जो गवर्नमेंट की आज्ञा से प्रकाशित हुई हैं यहां तथा यूरोप के विद्वानों ने बड़ी प्रशंसा की है। गत चार वर्षों से हम लोग विज्ञान सम्बन्धी विषयों पर प्रति वर्ष सुबोध व्याख्यानों का प्रबन्ध कर रहे हैं। इनमें से अधिकांश व्याख्यान मैजिक लालटैन के चित्रों के सहित होते हैं जिसमें वे अधिक मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद हों। इन्हीं विनीत उपायों से हम लोग हिन्दी साहित्य और सार्वजनिक शिक्षा का उद्योग करते हैं और हमें इस बात पर हर्ष होता है कि हमारे उद्योगों की उत्तमता मानी जाती है और हमें उनके करने में उत्साह मिलता है। संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट हमें हिन्दी पुस्तकों की खोज तथा उसमें प्राप्त अच्छे अच्छे ग्रंथों के प्रकाशित करने के लिये वार्षिक सहायता देती है। श्रीमान् के पूर्व के दोनों यशस्वी लेफ्टनेंट गवर्नर, सर एण्टनी मेकडानेल और सर जेम्स ला टूश, सब अवसरों पर कृपाकर सभा से सहानुभूति रखते और उसे सहायता देते थे और इस भवन को जिसे श्रीमान् ने कृपाकर आज सुशोभित किया है सर जेम्स ला टूश ने सन् १९०४ में खोलने की अनुग्रह की थी। हम लोग यहां पर यह निवेदन किए बिना नहीं रह सकते कि हमारे सर्वप्रिय मजिस्ट्रेट मिस्टर ई० एच० रडीचे ने सदैव हमारे उद्योगों में हमारी बड़ी सहायता की है और इधर कई वर्षों से अनेक विषयों में सफलता प्राप्त करने के लिये हम उनके बहुत कुछ अनुगृहीत हैं और हमें आशा है कि आगामी वर्षों में भी हम लोग श्रीमान् की सहायता और हिन्दी प्रेमियों की सहानुभूति तथा सहयोगिता से अपने उद्देश्यों में और भी सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

हमें आशा है कि श्रीमान् हमारी वैसी ही सहायता करेंगे और हमसे वैसी ही सहानुभूति रक्खेंगे जो कि श्रीमान् के पूर्व के दोनों यशस्वी लफटनेगट गवर्नरों से सदैव हमें प्राप्त थी जिससे हम लोगों ने जिस कार्य को उठाया है उसे हम अधिक सफलता तथा और भी अधिक उपयोगिता के साथ कर सकें।

हम लोग श्रीमान् को पुनः इस अभिनन्दन पत्र के स्वीकार करने और इस सभा को अपने शुभागमन से प्रतिष्ठित करने के लिये धन्यवाद देते हैं।"

अभिनन्दन पत्र के अर्पण करने पर श्रीमान् ने यह उत्तर दिया—

"नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदो,

जब पहिले यह निश्चय हुआ था कि मैं आपका सभाभवन देखने आऊंगा तो मैंने यह नहीं समझा था कि मुझे अभिनन्दन पत्र दिया जायगा और उसका उत्तर मुझे देना होगा, तिस पर आज प्रातः काल मुझे जो दूसरे कार्य करने हैं उनके कारण यह मजबूरी है कि मैं अपना उत्तर थोड़े से शब्दों में दूं। बनारस में पहिली बेर आने पर जो आपने मेरा स्वागत किया है उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। अभिनन्दन पत्र में जो आपकी सभा का वृत्तान्त दिया है उसे मैंने बड़ी चाह के साथ सुना है और जिन उद्देश्यों से यह सभा स्थापित हुई है उनसे मेरी सहानुभूति है। आप कहते हैं कि मेरे पूर्व के दो यशस्वी अधिकारी (लेफटनेगट गवर्नर) सर एगटनी मेकडानेल और सर जेम्स ला टूश सदा आपके कथनों पर सहानुभूति के साथ विचार करने और आपको

सहायता देने को उद्यत रहते थे। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं उन्हीं की नीति का अनुकरण करूंगा। मैं यह जानकर प्रसन्न हुआ हूं कि इस ज़िले के मजिस्ट्रेट मिस्टर रडीचे आपके कार्यों में सहायता करने पर सदा उद्यत रहे हैं और उन्होंने जो सहायता दी है उसका आप गुन मानते हैं। आज इस स्थान पर थोड़ी देर के लिये भी आने और आपकी सभा तथा आप लोगों से जान पहिचान करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।"

इसके अनन्तर बाबू इन्द्रनारायणसिंह एम० ए० ने सभा द्वारा प्रकाशित सब पुस्तकें श्रीमान् के अर्पण कीं और उन्हें एक सुन्दर हार पहिनाया। सब पुस्तकों की सुन्दर जिल्द बँधी हुई थी। पुस्तकों के स्वीकार होने पर बाबू श्यामसुन्दरदास ने श्रीमान् से आज्ञा लेकर प्रबन्धकारिणी सभा तथा बोर्ड आफ ट्रस्टीज के सब उपस्थित सभासदों का पारी पारी से श्रीमान् को परिचय दिया और श्रीमान् ने सभों से हाथ मिलाया। यह हो जाने पर श्रीमान् गाड़ी तक पहुंचाए गए और पहुंचाने वालों से हाथ मिलाकर अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए वहां से बिदा हुए।

सभा के लिये यह अत्यन्त गौरव और सम्मान का विषय है कि संयुक्त प्रान्त के श्रीमान् लफ्टनेण्ट गवर्नर ने उन की सभा में पधारना स्वीकार किया और वहां आकर तथा अभिनन्दन पत्र लेकर और सभासदों से मिलकर उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई।

हिन्दुस्तान का इतिहास।

[चौथे अङ्क के आगे।]

सन् ६ हिजरी (संवत ६८४) में महात्मा मोहम्मद ने ७ बादशाहों और अमीरों के पास मुसल्मान हो जाने के लिये पत्र और दूत भेजे। इन सातों में ये ४ बहुत प्रबल थे।

१ ईरान का बादशाह खुसरो परवेज़ जो ज़रदुश्ती धर्म (अग्निहोत्र) को मानता था।

२ रूम का कैसर (ज़ार) हरकल।

३ हबश का बादशाह नज्जाशी ये दोनों ईसाई (कृश्चियन) थे

४ यमन का बादशाह।

हिन्दुस्तान के किसी राजा के नाम न तो कोई पत्र था और न किसी हिन्दू का मोहम्मद के पास जाकर मुसल्मान होना उनकी तवारीख़ से जाना जाता है क्योंकि हिन्दुस्तान मदीने से बहुत दूर समुंदर के पार था इससे यह न जानना चाहिए कि मोहम्मद पैगम्बर हिन्दुस्तान को न जानते हों या हिन्दुस्तान उस देश में अज्ञात हो, यह तो प्राचीन समय से जगद्विख्यात था, यहां की तलवार अरब देश में बहुत मशहूर थी और महात्मा मोहम्मद जब लड़ने को जाते थे तो लड़ाई के समय अभिमान से अपने शत्रुओं को सुनाकर कहते थे कि "अनासेफुंमुहम्मद" अर्थात् हम हिन्दुस्तान की तलवार हैं तुम को काट डालेंगे। मोहम्मद पैगम्बर के शिष्यों में ये ४ मुख्य थे जो चार यार कहलाते थे।

१ अबूबक्र।

२ उमर।

३ उसमान ।

४ अली जो चचेरे भाई और जमाई भी थे ।

सन् ११ हिजरी के रबीउलअव्वल महीने (आषाढ़ सुदी संवत ६८९) में मोहम्मद का देहान्त होने पर अबूबक्र ख़लीफा उत्तराधिकारी हुए। उनके समय में मुसल्मानों की फौज अरब से पश्चिम को शाम देश की तरफ बढ़ी।

उमर का खलीफा होना और मुसल्मानों का हिन्दुस्तान में आना।

सन् १३ हिजरी (संवत ६९१) में अबूबक्र के पीछे उमर खलीफा हुए। इनके लश्करों ने पश्चिम में शाम का देश रूम के कैसर हरकल से, दक्षिण में मिस्र का मुल्क वहां के बादशाह अरस्तूलिस से, और पूर्व में ईरान का विशाल राज्य फारसी बादशाह यज्दजुर्द से छीन लिया। फिर खुरासान लेकर सन् २३ (संवत ७०१) में कंधार पर चढ़ाई की और राजा जैपाल ने मकरान का मुल्क जिसे अब बलूचिस्तान कहते हैं उनके १ अफ़सर मुग़ीरा नाम को दे दिया। मुगीरा उसी वर्ष सिंध नदी से उतर कर दवलबन्द (ठट्ठे) पर चढ़ आया मगर सिंध देश के राजा जच्च की फौज ने अरबों को भगाकर मुग़ीरा को मार डाला और बहुत से मुसल्मानों को पकड़ लिया। इस पर मकरा के हाकिम मअबूमूसा ने कुछ फौज नावों में बैठाकर सिंध को रवाने की और उमर खलीफा को भी फ़ौज भेजने की अरजी भेजी। खलीफ़ा ने जवाब में लिखा कि तू ने लकड़ी में घुन लगा दिया मुसल्मानों को फौरन दरयाई सफर से लौटा ले, इससे वह चढ़ाई बन्द रही।

[क्रमशः]

सभा का कार्यविवरण ।

[४]

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २६ अक्तूबर १९०१ सन्ध्या के ७॥ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

(१) गत अधिवेशन (ता० ३० सितम्बर १९०१) का कार्य विवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) प्रबन्धकारिणी सभा का ता० ८ सितम्बर का कार्य विवरण उपस्थित किया गया ।

(३) निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए—

१ बा० रामनारायण-एजेण्ट राजा उदित सिंह-बाराबंकी ३), २ पं० नन्दलाल शर्म्मा-एजेण्ट मि० फोर्ड मेकडानेल्ड-कानपुर ३), ३ बा० कपिलाल साहु-गौरा बादशाहपुर-जि० जौनपुर१॥), ४ कुं० अवधेन्द्र प्रताप-दियरा-जि० सुलतांपुर ३), ५ म० कु० बाबू देवनारायण सिंह,संटवा बादशाहपुर गोमरा, जि० जौनपुर १॥), ६ बा० शिवमंगल प्रसाद, सब-ओवरसीयर, बलिया १॥), ७ कुं० रोशन सिंह जमींदार, मौजा सीढ़ी, पो० इंटारा, जि० कानपुर ३), ८ बा० भैया लाल, हेड मास्टर, मिडिल स्कूल, बकती ३), ९ बा० छेदालाल, असिस्टेण्ट रिकार्ड कीपर, मोतीमहल, ग्वालियर १॥), १० बा० नरेन्द्रनारायण सिंह, ५२ शम्भुनाथ स्ट्रीट, भवानीपुर, कलकत्ता ३), ११ पं० हरेकृष्ण मिश्र, सब-पोस्ट मास्टर, अरवल जि० गया १॥), १२ पं० शिवनन्दन मिश्र वैद्य, सेकेण्ड पण्डित, मि० इ० स्कूल अरवल, जि० गया १॥), १३ पं० रजनीकान्त, थर्ड पण्डित, मि० स्कूल, अरवल जि० गया १॥), १४ महाराज कुमार बाबू जंगशेर बहादुर सिंह, बेलघाट जि० गोरखपुर ३), १५ पण्डित रामदुत तिवारी, पाथरकोला बगीचा, पो० आदमपुर जि० मिरज़ापुर ३) ।

(४) सभासद होने के लिये निम्न लिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

१ म० कु० लाल भार्गवेन्द्र सिंह जी देव, मेयो कालिज, अजमेर, २ बाबू अमीरचन्द प्रसाद, असीस्टेंट मास्टर, राज हाई इङ्गलिश स्कूल, डुमरांव, जि० शाहाबाद (आरा), ३ पं० अखज मिश्र वैद्य, अरवल जि० गया, ४ बा० छोटूलाल, शेरपुर, पो० करपी, जि० गया, ५ मिस्टर जमशेद जी नवरोजी उनवाला, प्रोफेसर, सेण्ट्रल हिन्दू कालेज, बनारस, ६ बाबू जगलाल प्रसाद C/ o रामहित भ० रामटहल राम, नेतपुर, जि० दीनापुर, ७ बाबू निहालचन्द्र गौड़, नयाबाजार, लश्कर, ग्वालियर, ८ बाबू कृष्णगोपाल, चरखारी, ९ कुंवर प्रतिपाल सिंह, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद, १० लाल जैकरन सिंह, मेयो कालेज, अजमेर, ११ लाल रघुराज सिंह, मेयो कालेज, अजमेर, १२ पं० इकबाल नारायण गुर्टू, सी० एच० कालेज, काशी, १३ बा० न्यादर सिंह, जनकगंज अजमेर, १४ बा० कल्यान दास, बुलानाला, काशी।

(५) निम्न लिखित सभासदों का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ—

१ राय साहब गोवर्द्धन लाल साहब, गवर्न्मेंट प्लीडर, दिल्ली।

२ पण्डित कन्हैया लाल, खेतड़ी, राजपुताना।

(६) निम्न लिखित नवीन पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं-

बाबू रामजी दास, वैश्य, लश्कर, ग्वालियर—धोखे की टट्टी।

पण्डित बालमुकुन्द नागर, काशी—छवी।

बाबू कन्हैयालाल, हाई स्कूल, रायपुर—Annals and antiquities of Rajasthan of India.

गुजरात साहित्य परिषद—प्रथम साहित्य परिषद नी रीपोर्ट।

Indian Thonght Vol I No. 3.

(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुलकिशोर, मंत्री।

[७]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार तारीख ४ नवम्बर १९०७ सन्ध्या के साढ़े पांच बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, सभापति । आनरेबल पण्डित मदन मोहन मालवीय । मिस्टर ए० सी० मुकर्जी । पण्डित माधव प्रसाद पाठक । बाबू जुगुलकिशोर । बाबू माधव प्रसाद । बाबू गोपालदास ।

(१) गत अधिवेशन (ता० ७ अक्तूबर १९०७) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) हल्दी घाट के युद्ध के विषय में खड़ी बोली की चार कविताएं सब-कमेटी की सम्मति के सहित उपस्थित की गईं ।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में इन चारों कविताओं में से कोई भी ऐसी नहीं है जिसके लिये पदक दिया जाय अतः आगामी वर्ष भी यही विषय रक्खा जाय और इसके लिये समय जून १९०८ तक का रक्खा जाय ।

(३) बाबू लक्ष्मीनारायण धवन रचित "ज्ञान विचार" नामक पुस्तक के विषय में पण्डित रामनारायण मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यह पुस्तक यदि नागरी प्रचारिणी पत्रिका के साथ बांट दी जाय तो कोई हर्ज नहीं है ।

निश्चय हुआ कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका की रजिस्टरी होगई है अतः डांकखाने के नियमानुसार उपरोक्त पुस्तक पत्रिका के साथ नहीं बांटी जा सकती ।

(४) बाबू जगन्नाथ सिंह वर्म्मा का ८ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा को

ऋणमुक्त करने के लिये एक डेप्युटेशन का बाहर भेजा जाना बड़ा आवश्यक है।

निश्चय हुआ कि आगामी अधिवेशन में मंत्री यह प्रस्ताव उपस्थित करें कि इस विषय में क्या प्रबन्ध किया जाय।

(५) एकलिपिविस्तार परिषद् का १७ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति उनके पुस्तकालय के लिये बिना मूल्य दी जाय।

निश्चय हुआ कि उनको लिखा जाय कि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति उन्हें अर्द्ध मूल्य पर दी जा सकती है।

(६) वेतन बढ़ाए जाने के विषय में सभा के क्लार्क बाबू महादेव प्रसाद का निवेदन पत्र उपस्थित किया गया।

मंत्री के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि उनका वेतन १ नवम्बर १९०७ से पन्द्रह रुपया मासिक कर दिया जाय।

(७) बनारस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का २४ अक्तूबर १९०७ का पत्र नं० ६१८ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि बोर्ड ने सभा के पुस्तकालय की सहायता के लिये यदि वर्ष के अन्त में बचत हो तो ५०) रु० देना स्वीकार किया है।

निश्चय हुआ कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को लिखा जाय कि सभा केवल एक वर्ष के लिये सहायता नहीं चाहती और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे प्रति वर्ष के लिये पुस्तकालय की कुछ वार्षिक सहायता नियत करें, चाहे वह कितनी ही कम हो।

(८) बनारस म्युनिसपिल बोर्ड का ३१ अक्तूबर १९०७ का पत्र नं० १८८० उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि बोर्ड ने ता० २५ अक्तूबर १९०७ के रिजोल्यूशन नं० ७२६ के द्वारा सभा के पुस्तकालय के लिये ता० १ अक्तूबर १९०७ से ३६०) रु० की वार्षिक सहायता देना निश्चय किया है।

निश्चय हुआ कि इसके लिये म्युनिसिपल बोर्ड को धन्यवाद दिया जाय।

(९) सभा की नियमावली की भाषा सरल करने के विषय में प्रस्ताव उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि इसकी भाषा सरल करने के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय—

मिस्टर ए० सी० मुकर्जी। पण्डित रामनारायण मिश्र। महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी। बाबू श्यामसुन्दरदास और बाबू माधव प्रसाद, मंत्री।

(१०) बाबू श्यामसुन्दरदास ने हिन्दी शीघ्र-लिपि प्रणाली की पुस्तक उपस्थित की जिसे पण्डित निष्कामेश्वर मिश्र की सहायता से बाबू श्रीशचन्द्र बोस ने बनाया था।

निश्चय हुआ कि इस पुस्तक की एक हजार प्रतियां छपाई जांय। इसके छपने का प्रबन्ध मेसर्स थैकर स्पिङ्क एण्ड को० या दूसरे किसी प्रेस से किया जाय और बाबू श्रीशचन्द्र बोस को धन्यवाद दिया जाय।

(११) बाबू रामप्रसाद चौधरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने वृन्दावन की वैष्णव पबलिक लाइब्रेरी का पत्र भेजा था और प्रस्ताव किया था कि उक्त पुस्तकालय को सभा अपनी कुछ पुस्तकें बिना मूल्य दे।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(१२) पण्डित धरनीधर वैद्य का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने औषधियों का एक विज्ञापन नागरीप्रचारिणी पत्रिका के साथ बंटवाने के लिये भेजा था।

निश्चय हुआ कि सभा इस विज्ञापन को पत्रिका के साथ नहीं बांट सकती।

(१३) पत्रिका और ग्रन्थमाला के सम्पादकों की सम्मति के

सहित पण्डित श्यामविहारी मिश्र का "विद्याविवाद" शीर्षक लेख उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि यह नागरीप्रचारिणी पत्रिका द्वारा प्रकाशित किया जाय ।

(१४) "हिन्दी केसरी" के म्यानेजर का २४ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा की पुस्तकों का १३ इंच का विज्ञापन छः मास और एक वर्ष तक हिन्दी केसरी में छापने के लिये क्रमात् १२०) रु० और २००) रु० लेंगे ।

निश्चय हुआ कि हिन्दी केसरी में एक वर्ष तक के लिये पुस्तकों का विज्ञापन छपवाने का प्रबन्ध किया जाय और तीन विज्ञापन रहें जो एक दूसरे के बाद छपें ।

(१५) निश्चय हुआ कि हिन्दू कालेज मेगज़ीन के साथ वैज्ञानिक कोश का विज्ञापन सिलवा कर बँटवाने का प्रबन्ध किया जाय।

(१६) निश्चय हुआ कि श्रीमान् लेफ्टनेण्ट गवर्नर के बनारस पधारने पर उन्हें सभा भवन में अभिनन्दन पत्र दिया जाय । इस अभिनन्दनपत्र का मजमून ठीक किया गया और निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दर दास और पण्डित रामनारायण मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे इसे अन्तिम बार दोहरा कर ठीक कर दें ।

(१७) निश्चय हुआ कि प्रताप नाटक के साथ उसकी समालोचनाओं के छापने की आवश्यकता नहीं है ।

(१८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर,

मंत्री ।

[८]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

रविवार ता० १० नवम्बर १९०७ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दरदास—सभापति, पण्डित रामनारायण मिश्र, बाबू माधव प्रसाद, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू गोपालदास ।

(१) मंत्री ने सूचना दी कि संयुक्त प्रदेश के श्रीमान् लेफटनेण्ट गवर्नर ने ता० १५ नवम्बर को प्रातःकाल सभाभवन में पधारना निश्चित किया है ।

(२) श्रीमान् लेफटनेण्ट गवर्नर के लिये बाबू श्यामसुन्दरदास और पण्डित रामनारायण मिश्र का दोहराया हुआ अभिनन्दनपत्र उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) ता० १५ नवम्बर के लिये प्रोग्राम ठीक किया गया और निश्चय हुआ कि इसकी २००प्रतियां छपवा ली जांय और एक प्रति बनारस के कलेक्टर के पास सूचनार्थ भेज दी जांय ।

(४) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर,

मंत्री ।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

अक्तूबर १९०१।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	११३८	१५	४½	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६४	१०	६
सभासदों का चन्दा	२७१	०	०	पुस्तकालय	२२	२	०
पुस्तकों की बिक्री	६०	०	०	रासो	४२०	०	०
रासो की बिक्री	८७	६	०	स्थायी कोश	३८	२	६
स्थायी कोश	२८	१२	०	पुस्तकों की खोज	२५	०	०
पुस्तकालय का चन्दा	८	१२	०	नागरी प्रचार	१३	४	०
फुटकर	८	०	०	डांक व्यय	१२	६	६
जोड़	१६२०	१३	४½	फुटकर	२८	१३	१½
				पुस्तकोंकी बिक्री मद्धे	०	१२	३
				पारितोषिक	४०	०	०
				छपाई	५०१	७	६
				जोड़	११६८	१३	४½
				बचत	४५२	०	०
देना ६०००)				जोड़	१६२०	१३	४½

जुगुलकिशोर,

मंत्री

ग्यारहवां चित्र।

बारहवां चित्र।
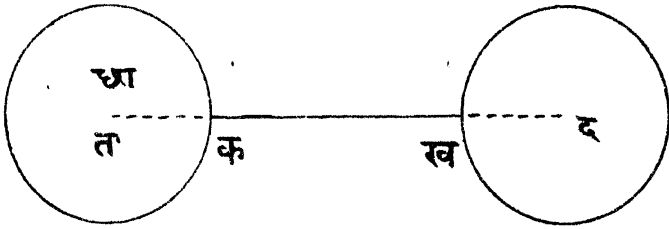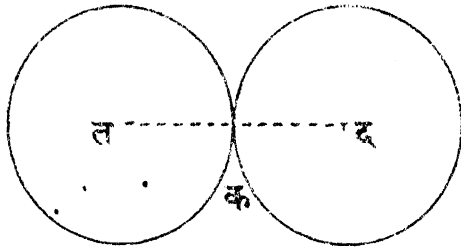
नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

भाग १२] दिसम्बर १९०७ । [संख्या ६

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न ।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र ।
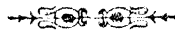
विविध विषय ।

गत सितम्बर मास की पत्रिका में सभा का जो कार्यविवरण छपा था उसमें यह उल्लेख था कि सभा हिन्दी के एक बृहद् कोश के बनवाने के सम्बन्ध में विचार कर रही है और उसने एक छोटी कमेटी इस कार्य के सम्बन्ध में पूर्ण विचार करके अपनी सम्मति देने के लिये नियत की है ।

इस कमेटी ने इस सम्बन्ध में पूर्ण विचार करके तीन महीने के अनन्तर अपनी रिपोर्ट दी है जो छाप कर प्रकाशित की गई है। रिपोर्ट बहुत बड़ी है और उसके पढ़ने से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि कमेटी ने इस काम में कैसा परिश्रम किया है। इस स्थान पर उस कमेटी की रिपोर्ट का सारांश देना कुछ अनुचित न होगा क्योंकि सब लोगों के पास उस रिपोर्ट का पहुंचना कठिन है पर यह विषय ऐसा है कि इसकी सूचना सब लोगों को हो जानी आवश्यक है।

* * *

कमेटी की सम्मति है कि दो कोश बनाए जांय एक में हिन्दी शब्दों का अर्थ हिन्दी में रहे और दूसरे में हिन्दी शब्दों का अर्थ अंग्रेज़ी में रहे। इससे लाभ यह होगा कि दोनों श्रेणी के पढ़ने वालों को लाभ पहुंचे और वे दोनों अपनी आवश्यकता के अनुसार इसका उपयोग कर सकें। हिन्दी के पढ़ने वाले अब केवल उन्हीं प्रान्तों में नहीं मिलते जहां की यह मातृभाषा है पर अन्य प्रान्तों में भी इसका प्रचार दिनों दिन बढ़ता जाता है और सभा के पास प्रायः ऐसे पत्र आते हैं जिनमें अन्य प्रान्तवाले हिन्दी पढ़ने में सहायक ग्रन्थों के नाम पूछते हैं, विशेष कर एक उत्तम कोश और व्याकरण की माँग रहती है। अतएव हमारा कर्तव्य है कि ऐसे लोगों की सहायता जहां तक हो सके करें। यह कहा जा सकता है कि दो भिन्न भिन्न कोशों के बनने की क्या आवश्यकता है। क्या एकही कोश में हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों अर्थ नहीं रह सकते हैं। यह ठीक है पर ध्यान रखना चाहिए कि कोश ऐसा बनाने का उद्योग किया जायगा जिस

में हिन्दी के सब शब्द रहें अतएव वह निस्सन्देह वह बहुत बड़ा होगा। इसलिये यदि उसमें दोनों भाषाओं में शब्दों का अर्थ दिया जाय तो वह इतना बड़ा हो जायगा कि जिस का खरीदना साधारण श्रेणी के लोगों के लिये कठिन हो होगा। इन कारणों से दो अलग अलग कोशों का छपना ही आवश्यक और उचित है।

* * *

अब यह कोश कैसे बनाया जाय? कमेटी की सम्मति है कि जितने कोश अब तक छपे हैं उनके शब्द तो ले ही लिए जांय पर इनके अतिरिक्त अन्य शब्दों का भी संग्रह करना आवश्यक है। इसलिये कमेटी का प्रस्ताव है कि चुने चुने ग्रन्थों से शब्दों का संग्रह किया जाय। कमेटी ने ऐसे ग्रन्थों की सूची बनाई है और उसमें १५५ ग्रन्थों के नाम हैं। इनसे प्रत्येक शब्द का चुनना कोई साधारण काम नहीं है और न वह किसी एक या दो व्यक्तियों के किए ही हो सकता है। अतएव कमेटी सम्मति देती है कि हिन्दी पढ़े लिखे लोगों से प्रार्थना की जाय कि वे एक एक ग्रन्थ ले कर शब्दों को चुन दें। बिना ऐसे महाशयों की सहायता के इस कोश का बनना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है और उसके लिये बहुत समय तथा धन की आवश्यकता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि जब इस कार्य के आरम्भ करने का समय आवेगा तो ऐसे १५५ लोगों का मिल जाना कठिन न होगा जो शब्दों के संग्रह करने में सहायता दें। कमेटी ने शब्दों के संग्रह करने के कुछ नियम बनाए हैं जो नितान्त आवश्यक और उचित हैं। इस स्थान पर उनके वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है।

इन बातों के अतिरिक्त कमेटी ने इन बातों पर भी विचार किया है कि, कोश में शब्दों का क्रम कैसा रहे? कहां कहां पर शब्दों के अर्थ उदाहरण सहित दिए जांय? इसकी भूमिका में क्या क्या बातें दी जांय? इन सब बातों पर खूब विचार किया गया है और जो सम्मति दी गई है वह उचित जान पड़ती है।

* * *

इस कोश के बनने में कितना समय लगेगा और उसके लिये कितने द्रव्य की आवश्यकता है? ऐसा अनुमान है कि शब्दों के संग्रह हो जाने पर कम से कम दो वर्ष का समय लगेगा। छपने में भी यदि दो वर्ष नहीं तो एक वर्ष का समय तो अवश्य लगेगा। यदि सब मिलाकर ५ वर्षों में भी यह ग्रन्थ तय्यार हो जाय तो हम समझेंगे कि बहुत जल्दी हुआ। वैज्ञानिक कोश के बनाने में सभा का ८ वर्ष का समय लग गया है। यह उससे बड़ा काम है परन्तु इसमें अधिक लोग काम करेंगे अतएव यदि यह ५ वर्ष में समाप्त हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। रही धन की बात। इसके बिना तो कोई काम हो ही नहीं सकता। हमारा अनुमान है कि इस काम में २० हजार से कम और ३० हजार से अधिक रुपयों की आवश्यकता न पड़ेगी। इतना रुपया कहां से आवेगा, कौन देगा? क्या हिन्दी के प्रेमियों में इतना उत्साह है कि इतना रुपया इकट्ठा हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है? अब तक जो बातें लिखी गई हैं वे सब ख्याली हैं। उनका कार्य में परिणत होना हिन्दी के धनी प्रेमियों पर निर्भर है।

इस कोश के विषय में इतनी सूचना दे देनी हमने आवश्यक समझी जिसमें हिन्दी के सब प्रेमियों को

इसकी सूचना हो जाय और वे इस कार्य में उत्साहित हो सभा की सहायता करें ।

ज्योतिष प्रबन्ध ।

(पाचवें अंक के आगे ।)

सूर्य्य (THE SUN)

सूर्य्य भी एक स्वप्रकाशित तारा है और पृथिवी के निकट होने के कारण यह बहुत बड़ा दिखाई देता है । इसका स्वरूप गोलाकार है । इसमें जो प्रकाश है उसके कारण अब तक ठीक निश्चित रूप से नहीं जाने गए हैं । इसके विषय में कई विद्वानों में मतभेद है । दो कल्पनाएं ऐसी हैं जिन पर अधिक विद्वान सहमत हैं । यह विषय इतना गूढ़ और कठिन है कि केवल इसी विषय पर कई बड़े बड़े ग्रंथ बन गए हैं । इस विषय को छेड़ना उचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि हमें संक्षेप में मुख्य सिद्धान्तों का पाठकों के अवलोकनार्थ लिखना ही लाभदायक जान पड़ता है । इतनी बात अवश्य लिख दी जाती है कि इसी (सूर्य्य) के तेज और प्रकाश पर हमारा जीवन निर्भर है, यदि सूर्य-तेज पृथ्वी पर न पड़े तो हमारा जिवित रहना, अनाज का उपजना इत्यादि न हो सके, प्रलय होजाय, इसीलिये संस्कृत में सूर्य्य का नाम 'सविता' भी रक्खा गया है ।

हमारी पृथ्वी से सूर्य ९२,८९००००० मील दूर है । इसका डील पृथ्वी से १२००० गुणा बड़ा है अर्थात् इसका आकार इतना बड़ा है कि यदि पृथ्वी के समान १३०००० पिण्ड

इकट्ठे किए जांय तो वे सूर्य पिण्ड के बराबर होंगे। सूर्य का व्यास ८६१००० मील का है और इसका स्फुट मध्यम व्यास ३२ ०५″ (कोणमान में) है।

सूर्य की ही आकर्षण शक्ति के आधार से पृथ्वी आदि ग्रह अधर आकाश में विचर रहे हैं। सूर्य के पृष्ठ पर आकर्षण शक्ति इतनी अधिक है कि जो वस्तु यहां १ मन की तौल में है उसी का बोझ सूर्य पृष्ठ पर २७.६ मन का हो जायगा। क्योंकि पृथ्वी के आकर्षण से वस्तु नीचे को खिची रहती है और उसको उठाने में जितना बल लगाना पड़ता है उसी को हम बोझ कहते हैं। अतएव सूर्य पृष्ठ पर जिस आकर्षण से उक्त पदार्थ उसके केन्द्र की ओर खिचा रहेगा उसको हटाने के लिये २७.६ गुना बल अधिक लगाना पड़ेगा, तब जाकर उक्त पदार्थ उठेगा।

सूर्य में इतना तेज है कि उस पर हमारी आंखें देर तक नहीं ठहर सकतीं, परन्तु एक शीशे पर काजल लगाकर उसमें से देखने पर रवितेज कम होजाता और हम भली भांति उसे देख सकते हैं।

बहुधा देखने में आता है कि यद्यपि सूर्य एक तेजोमय पिण्ड है तथापि उसके पृष्ठ पर काले काले धब्बे दिखाई देते हैं इन धब्बों को सूर्य कलंक (Sunspot) कहना अनुचित न होगा। ये धब्बे स्थिर नहीं रहते, कुछ तो ऐसे हैं कि एक सिरे से दिखाई देकर कुछ दिनों बाद बीच में आजाते और फिर कुछ दिनों के उपरान्त दूसरे सिरे पर जाकर लोप हो जाते हैं और फिर कुछ काल पीछे दिखाई देने लगते हैं।

इस से प्रतीत होता है कि सूर्य भी अपनी अक्ष पर घूमा करता है, जिसकि अवधी लगभग २५ दिन की है ।

कभी कभी तो ऐसे भी धब्बे देखने में आ जाते हैं जो इसके पूर्व नहीं आए थे । ऐसे धब्बे कभी शीघ्र लुप्त हो जाते हैं, कभी बढ़ कर बड़े हो जाते हैं, कभी छोटे और बड़े अनेक धब्बे दिखाई देते रहते हैं और कुछ दिनों रहकर आपही विलीन हो जाते हैं । इनके विषय में विद्वानों की यह कल्पना है कि सूर्य पृष्ठ पर तेजोमय वाष्प है, जब कभी किसी स्थान के तेजोमय वाष्प की घनिष्ठता कम हो जाती है तो उस स्थान पर साक्षेप कालिमा सी प्रतीत होने लगती है ।

विदित रहे कि सूर्य पिण्ड पर जो ज्वाज्वल्यमान पदार्थ है उसे प्रभामण्डल (Photosphere) कहते हैं । सूर्य पृष्ठ की उन बातों को हम यहां नहीं लिखते हैं जो रासायनिक-ज्योतिष-सम्बन्धी हैं ।

हम पहिले लिख आए हैं कि जिस रेखा वा पथ पर सूर्य साल भर घूमा करता है उसे क्रान्तिवृत्त कहते हैं । इस क्रान्तिवृत्त पर सूर्याक्ष लम्बस्वरूप (Perpendicular) नहीं है, वरन् 7° झुका हुआ है ।

सूर्य ज्योति और ताप ।

कई रीतियों से सूर्य के ज्योति और ताप के मान किए गए हैं । एक मोमबत्ती की ज्योति की अपेक्षा सूर्य का प्रकाश कितना अधिक है यही इसकी ज्योति का मान हुआ । विद्वानों का कथन है कि ६००८० वा ७०००० मोम वत्ती का प्रकाश एक गज की दूरी पर उतनाही होता है जितना कि

सूर्य का प्रकाश पृथिवी पर होता है अर्थात १५७५ अंक पर यदि २४ शून्य बढ़ा दिए जांय तो इतने दीपक के तेज के समान सूर्य का तेज है ।

ग्रहण ।

अब तो सभी लोग जान गए हैं कि ग्रहण लगने का कारण भूमि वा चन्द्र की छाया है । क्या संस्कृत ज्योतिष क्या अंग्रेज़ी ज्योतिष सब का यही सिद्धान्त है कि जब चन्द्र सूर्य और पृथ्वी के बीच में ऐसा आ जाता है कि सूर्य का समग्र वा कुछ भाग आड़ में पड़ जाने से नहीं देखाई दे सकता तब सूर्यग्रहण लगता है । इसी प्रकार जब भूमि सूर्य और चन्द्र के बीज में ऐसी आ जाती है कि सूर्य का प्रकाश चन्द्र पर नहीं पड़ता, किन्तु पृथ्वी के बीच में आ जाने से रुक जाता है, तब चन्द्र ग्रहण होता है ।

अब प्रश्न यह होता है कि प्रत्येक पूर्णिमा को चन्द्र और सूर्य के बीच में पृथ्वी आ जाया करती है और प्रति अमावास्या को सूर्य और पृथ्वी के बीच में चन्द्र आ जाता है फिर भी सदा ग्रहण नहीं हुआ करता ? इसके जो कारण हैं उन्हें आगे वर्णन करेंगे । इसके पहिले उन बातों को लिख देना आवश्यक है जो इस विषय के समझने में उपयोगी हैं।

(१) पहिली बात यह जान लेनी चाहिए कि यदि किसी दीपक के आगे एक गोला रक्खें और उसकी छाया एक कागज पर देखें तो वह छाया गोल ही होगी—और ज्यों ज्यों इस कागज़ को हटाते जांयगे छाया छोटी होती होती अन्त को एक विन्दु मात्र रह जायँगी । इस से प्रगट होता है कि गोलाकार वस्तु की छाया सूच्याकार (Conical) होती है ।

तेरहवां चित्र।
त
द
ख
क
चौदहवां चित्र।
त
द
ख
क
पन्द्रवहां चित्र।
ख
क
त
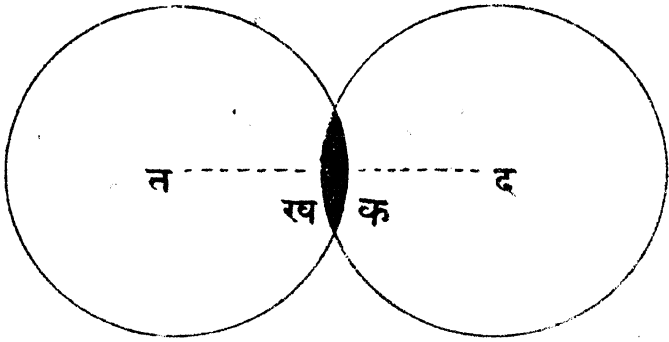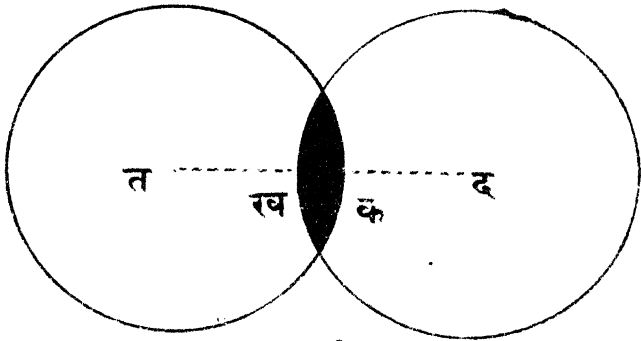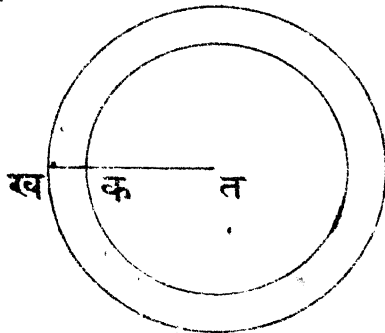
(२) दूसरी बात यह भी समझने की है कि उक्त छाया की ओर यदि कोई गोल पदार्थ हो तो जितना ही वह दूर होगा उतनीही उसपर छोटी छाया पड़ेगी अर्थात् उसका पूरा भाग छाया में न आवेगा और जितना ही निकट उक्त पदार्थ होता जायगा उसका अधिक भाग छादित होता जायगा, यहां तक कि समस्त वस्तु छायाग्रस्त हो जायगी।

(३) चन्द्र पृथ्वी की परिक्रमा करता हुआ उसके साथ साथ सूर्य की भी परिक्रमा कर लेता है। पृथ्वी भी सूर्य की परिक्रमा करती रहती है, इसलिये चन्द्र और पृथ्वी की छाय भी आकाश में कहीं न कहीं अवश्य रहती है।

(क) छादक वृत्त और छाद्य वृत्त के व्यासार्द्ध मिलकर यदि उक्त दोनों वृत्तों के केन्द्रों की दूरी से अधिक हैं तो छाद्य छाया से बाहर ही बाहर निकल जायगा। (चित्र ग्यारहवां देखो) मान लो कि छा छादक वृत्त है जिसका व्यासार्द्ध त क है और मान लो कि द छाद्य है जिसका केन्द्र द और व्यासार्द्ध द ख है। चित्र से स्पष्ट है कि त क+ख द छोटा है त द से। इसलिये त क छाया से दूरही दूर छाद्य गोला 'द' निकल जायगा।

(ख) जब दोनों वृत्तों के व्यासार्द्ध और उनके केन्द्रों की दूरी समान होगी तो छाया का स्पर्श मात्र होगा। जैसे त क+द क=त द (चित्र बारहवां)

(ग) जब दोनों केन्द्रों की दूरी दोनों के व्यासार्द्ध के समूह से छोटी होगी तो जितनी हीवह छोटी होगी उतना ही अधिक खण्डग्रास होगा।

जैसे त द छोटा है त क+द ख से (चित्र तेरहवां और चौदहवां) ।

(घ) जब छाद्य का व्यासार्द्ध छादक के व्यास से बड़ा होगा तब पूर्ण रूप से वह छादक को छा लेगा ।

(च) जब छाद्य का व्यास छादक से बड़ा है तब छाद्य के बीच में से होता हुआ छादक निकल जायगा ।

जैसे त ख > त क । इसी कारण से वलयाकार ग्रहण लगता है ।

(४) छाद्य पदार्थ पर तभी छाया पड़ेगी जब छादक छाया के पथ वा सीध में आवेगा । नहीं तो ऊपर या नीचे से बच कर निकल जायगा ।

अब इन नियमों को स्मरण रख कर ग्रहण के कारण दिखाते हैं

[क्रमशः]

हिन्दुस्तान का इतिहास ।

[पांचवें अंक के आगे]

सन् २३ (संवत ७०२) में मुग़ीरा के गुलाम अबूलूलू ने उमर खलीफ़ा को शहीद (क़तल) किया तब उसमान मदीने में खलीफ़ा हुए । इनके राज में मुसल्मानों ने फ़रिंगिस्तान (यूरोप) की तर्फ़ बढ़कर स्पेन का देश जीत लिया । इधर मकरान में आमिर का बेटा अबदुल्लाह हाकिम होकर आया । उसको खलीफ़ा का हुक्म पहुंचा कि अपने भरोसे के आदमियों को भेजकर सिंध का हाल मालूम करे और लिखे । उसने जुबला के बेटे हकीम को भेजा । हकीम ने पीछे आकर ख़बर

दी कि पानी खारा है, मेवे खट्टे और ज़हरेली हैं, ज़मीन ऊसर और पहाड़ी है।

जब यह रिपोट खलीफ़ा को भेजी गई तो उन्होंने हकीम से पुछवाया कि तूने वहां के आदमियों को कैसा पाया। हकीम ने रिपोट की कि आदमी कपटी हैं। यह सुन कर खलीफ़ा ने फ़ौज भेजने की तजवीज़ जो मदीने में हो रही थी मौकूफ़ कर दी।

सन् ३५ (संवत ७१३) में उसमान के मारे जाने पर अली खलीफ़ा हुए। इनके समय में मुसल्मानों का लशकर मकरान से चलकर फतह करता हुआ कोहपाया और कीकानान्त को पहुंचा, जो सिंध की सरहद पर हैं, जहां २०००० पहाड़ियों ने रास्ता रोक रक्खा था। मुसल्मान एक दम अल्लाहहु अकबर पुकारते हुए उन पर झपटे जिससे डर कर बहुत से उनके शरणागत हो गए बाकी भाग निकले। इतने में ही अली के शहीद हो जाने की खबर आ गई और मुसल्मानों को अपनी फतह अधूरी छोड़कर भागना पड़ा।

सन् ४१ (संवत ७१८) में अली भी एक मुसल्मान के हाथ से शहीद हो गए। उनकी जगह पहिले उनके बेटे इमाम हसन और ६ महीने पीछे अमीर मुआविया खलीफ़ा हुए।

अमीर मुआविया ने मुसल्मानों की राजधानी मदीने से उठाकर शाम के प्राचीन नगर दमिश्क़ में थापी और सवाद के बेटे अबदुल्लाह को ४००० फ़ौज के साथ सिंध पर भेजा। वह कीकानिया पहाड़ में पहुंच कर हिन्दुओं के हाथ से शहीद हुआ। उसका लश्कर भाग गया और कुछ लोगों ने मकरान में जाकर दम लिया।

अमीर मुआविया ने यह सुन कर अरब के हाकिम ज़ियाद को फ़ौज भेजने का हुक्म लिखा। उसने उमर के बेटे राशिद को भेजा। राशिद ने कोहपाए का बन्दोबस्त करके अगला पिछला कर उगाहा और कीकानियों से मेल जोल करके वह आगे बढ़ा, मंदड़ और बरौंच के पहाड़ तक पहुंचा, वहां ५० हजार पहाड़ियों ने मिलकर घाटियों का रस्ता बंद कर लिया, तड़के से तीसरे पहर तक बड़ी घमासान लड़ाई हुई, राशिद शहीद हुआ और उसका बाकी लश्कर भाग गया।

अमीर मुआविया ने इस हार का बदला लेने के लिये सलमा के बेटे राशिद को नियत किया। वह तूराबी की हद में पहुंच कर बीमार हुआ और मर गया।

फिर तुरंतही सन् ५९ (संवत ७३६) में अमीर मुआविया का देहान्त हो गया। इनके समय में मुसल्मानी राज्य की सीमा पूर्व में तूरान तक बढ़ गई थी और पश्चिम में मुआविये के बेटे यज़ीद ने रूमियों को भगाकर "कुस्तुनतुनिया" को जा घेरा था परन्तु हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करना मुसल्मानों को फलीभूत नहीं हुआ था और अजब बात यह थी कि जिस वर्ष उन्होंने चढ़ाई की उसी वर्ष या दूसरे वर्ष उनके खलीफ़ा की जान गई जैसे उमर, अली, मुआविया हिन्दुस्तान में हार होने के पीछे बहुत दिनों तक जीते नहीं रहे थे।

हिन्दुस्तान पर मुसल्मानों की चढ़ाई अमीर मुआविया के समय तक दो तर्फ़ से हुई थी—एक तो ईरान की सीमा से सिंध पर, जिसका हाल इन अध्यायों में लिखा जाता है

दूसरी काबुल की तर्फ़ से, जिसका बयान पंजाब के अध्यायों में किया जायगा।

[क्रमशः]

विद्या विवाद।

आश्चर्य्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्य्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्य्यवत्कश्चिदेनं शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्॥

भगवान श्रीकृष्णचन्द्र का अर्जुन प्रति गीता में लिखा हुआ यह उपदेश वास्तव में कितना यथार्थ है सो सब विचारशील मनुष्यों पर प्रकट है। सचमुच यह संसार बड़े ही आश्चर्य्य का स्थान है और इसे कोई भी नहीं जानता। मनुष्य का ज्ञान हर ओर से सीमाबद्ध है और ये सीमाएं बहुत ही संकुचित हैं। किसी पदार्थ को ले लीजिए और सोचने लगिए तो जान पड़ेगा कि मनुष्य उसके विषय में कुछ बातें जानता है परन्तु उन बातों के आगे वह उसी साधारण से साधारण पदार्थ के विषय में भी नितान्त अनभिज्ञ है। और बातों को जाने दीजिए वह स्वयं अपने को नहीं जानता कि वह कौन है? कहां से आया है?, क्या करने आया है? और कहां जायगा? यदि वह यहां न आता तो क्या हानि होती? और आया है तो कितने दिन के लिये? और जाने के पहिले उसे क्या क्या काम कर लेने चाहिएं? यह विस्तृत संसार कहां तक फैला हुआ चला गया है, और किस समय से यह इसी भांति स्थित है और कब तक रहेगा? समय कब से प्रारम्भ हुआ? इन प्रश्नों पर विचार करने

से मनुष्य की बुद्धि चक्कर में पड़ जाती है। उस कारीगर ने हम लोगों को एक ऐसे स्थान पर छोड़ दिया है कि जहां पद पद पर विचित्रताएं हैं। हर मौके और हर समय विचित्र बातें देखते देखते हम में कुछ ऐसी धृष्टता सी आ गई है कि हम साधारणतः किसी पदार्थ को भी विचित्र नहीं समझते और हम में से जो जितना ही अज्ञ है वह अपने को उतनाही बहुज्ञ समझता है।

ज्ञान का प्रादुर्भाव आश्चर्य से होता है। जब कोई मनुष्य किसी वस्तु को देख कर नहीं समझ पाता तभी उस को आश्चर्य होता है, और तभी वह उसे जानने का प्रयत्न करता और यथासाध्य जान भी लेता है परन्तु जो मनुष्य जितना ही ज्ञान प्राप्त करता चला जाता है उतना ही वह यह भी जानता जाता है कि अमुकामुक पदार्थों का उसे ज्ञान नहीं है; यहां तक कि इस संसार के जानने योग्य पदार्थों के सामने मनुष्य के जाने हुए पदार्थों की वही समानता है जो हिमाचल की सरसों से है। फिर भी मनुष्य अपने उत्कट आत्मस्नेहजन्य घमण्ड में ऐसा चूर्ण रहता है कि उसे अपनी अनुमति के सामने दूसरे के विचार बिल्कुल रद्दी समझ पड़ते हैं। तभी तो कहा जाता है कि प्रत्येक मनुष्य दुनिया में केवल डेढ अकल समझता है जिसमें से एक स्वयं उसके पास होती है और शेषार्द्ध समस्त पृथ्वी मंडल के मनुष्यों में विभाजित रहती है। इसीसे जब कभी विद्यासम्बन्धी विवाद में वह सम्मिलित होता है तो प्रायः अपने मत को वह इतना पुष्ट समझता है कि प्रतिवादी के प्रमाणों पर वह निष्पक्षपात होकर विचार ही नहीं कर सकता। इसी

कारण उसे प्रायः यह भी भासने लगता है कि उसका प्रतिवादी उसकी बात न मानने में केवल धींगा धींगी कर रहा है, नहीं तो वह अपनी बात को बिल्कुल युक्तिहीन होने पर भी क्यों प्रतिपादित किए ही जाता है। सुतरां बहुत से लोग अपने प्रतिवादी पर इतने बिगड़ जाते हैं कि उसे गालियां दिए बिना उन्हें चैन ही नहीं पड़ता। कुछ लोगों का यह भी विचार होता है कि उन जैसे बुद्धिमान व्यक्ति से उनके प्रतिवादी जैसे मूर्ख को सामना करने का कैसे साहस हुआ? बस वह उसकी मूर्खता पर उसे सजग करने को उस का गालियों से सत्कार करता है। इसी प्रकार वादी प्रतिवादी के प्रमाणों को अशुद्ध प्रमाणित करने के साथही साथ उसे मूर्ख बनाने का भी वह पूरा प्रयत्न करता है। यदि साधारणतः विद्वान लोगों के भी वादविवाद को देखिए तो उस में भी दलीलें कम मिलेंगी परन्तु प्रतिपक्षी की मूर्खता, दुर्जनता आदि प्रमाणित करने के प्रयत्न अधिक देख पड़ेंगे।

प्रतिवादी को शत्रुवत देखने की लेखकों को ऐसी कुछ बान सी पड़ गई कि बहुतों को किसी से बहस करने की हिम्मत नहीं पड़ती कि कहीं गाली गलौज न होने लगे। यदि किसी के लेख का उत्तर देने का विचार उन्होंने किया तो मित्र लोग प्रायः यह कहने लगते हैं कि क्यों कीचड़ में ईंट फेंक कर छींट लेते हो? कहां तक कहा जाय। स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती और दयानन्द सरस्वती ऐसे संसार त्यक्त महाशयों के शास्त्रार्थ में भी धींगा धींगी की नौबत आई थी। आज कल के कितने ही लेखकों में भी इस

कारण घोर शत्रुता है कि दैवात उनमें किसी मतभेद के कारण विवाद उठ खड़ा हुआ।

विद्या सम्बन्धी विवादों में यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि दोनों वादियों का अभीष्ट एकही है अर्थात् यथार्थ बात की ज्ञानप्राप्ति। फिर जब दो मनुष्य एकही बात को चाहते हैं और फिर भी वे मिलकर काम न करैं वरन् आपस में झगड़े द्वारा एक दूसरे का समय नष्ट करके मुख्य प्रयोजन की प्राप्ति में बाधक बन बैठें, तो उनको बुद्धिमान कौन कहेगा?

विद्या विवादों में प्रायः कृतविद्य मनुष्य ही लगते हैं। दोनों का सत्य बात जानने का प्रयोजन होता है, और वह बात कुछ कठिन अवश्य होती है, नहीं तो उनमें मत भेद कैसे हो? तब कहिए कि किसी कठिन बात का निरूपण निष्पक्षपात हो कर शान्तिपूर्वक विचार करने से हो सकता है कि लड़ने और क्रोध करने से? फिर विद्वान मनुष्य को वृथाही क्रोध प्रकाश करने से कितना लज्जित होना चाहिए सो कहने का प्रयोजन नहीं। मनुष्य कितना अल्पज्ञ है और संसार की किसी भी वस्तु को कितना कम जानता है इसका दिग्दर्शन ऊपर कराया जा चुका है। ऐसी दशा में मनुष्य को अपना मत ऐसा दृढ़ कभी न समझना चाहिए कि वह उसके प्रतिकूल कुछ सुननेही को तयार न हो। मनुष्य जिस देह में उत्पन्न होता और अधिकतर रहता है, और उसकी संगति जैसी होती है, उसी के अनुसार उसके विचार भी होते हैं यहां तक कि अंगरेज़ी में एक मसल है कि Man is the creature of circumstances (मनुष्य के विचार उसकी

भिन्न भिन्न दशाओं से उत्पन्न होते हैं)। अतः यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि यदि कोई मनुष्य आपसे बिल्कुल विपरीत दशा में रहा हो तो उसके विचारों में आपके विचारों से प्रतिकूलता होना न केवल सम्भव वरन, स्वाभाविक है। सच तो यह है कि यदि आप पूर्णतया उसकी दशा में होते तो आपके भी विचार प्रायः उसी प्रकार के होते जैसे कि उस मनुष्य के हैं। अब आप दोनों के विचारों में पूर्ण प्रतिकूलता होने पर भी दोनों में कुछ बातें यथार्थ और कुछ अयथार्थ अवश्य हैं, हां उनकी यथार्थता की मात्रा में कुछ अन्तर होना ही चाहिए। अतः यदि आप दोनों मिलकर एक दूसरे की यथार्थ बातें मान लें और अपनी अपनी अयथार्थ बातें छोड़ दें तो क्या ही अच्छा हो।

सब से अधिक विवादपूर्ण मत मतान्तरों ही के झगड़े होते हैं अतः आइए इन्हीं पर उदाहरणार्थ कुछ विचार करें। यदि भिन्न भिन्न मतों पर ध्यान दीजिए तो उनमें एक दूसरे से बड़ा ही प्रचंड पार्थक्य पाया जायगा, यहां तक कि उनमें अनुयायियों में रोज लट्ठ चला करता है। संसार की सब से प्रचंड लड़ाइयां और शत्रुताएं इन्हीं मतों के कारण उत्पन्न हुई हैं। तो क्या उनमें कोई समानता नहीं है? विचार पूर्वक देखने से प्रकट होगा कि प्रत्येक मत और प्रत्येक मत के संस्थापक का उद्देश्य एक ही है। वे अपने अनुयायियों की उन्नति चाहते हैं। जिस दशा में मुहम्मद उत्पन्न हुए थे उसी दशा में यदि गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए होते तो उनके भी उपदेश कुरान शरीफ से मिलते जुलते होते। वास्तव में मनु, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, नानक, दयानन्द, ईसा,

महम्मद आदि में कोई भी अन्तर न था । उनमें से प्रत्येक महानुभाव पृथ्वी के वास्ते अपने जीवन को हवन कर देना तुच्छ समझता था, प्रत्येक के मतिष्क में परमेश्वर ने इतनी दूरदर्शिता भर दी थी कि वह अपने समकालीन मनुष्यों से बहुत आगे देख सकता था, और प्रत्येक की जिह्वा में इतना बल था कि उस पर उस काल के मनुष्य न्योछावर थे ।

ब्राह्मणों के यज्ञों की रीतियों में फँस कर जब संसार असली धर्म्म भूला जाता था तब बुद्ध महाराज ने उसे सचेत कर दिया । बौद्ध भिक्षुकों की आत्मशुद्धि और निर्वाण को छोड़ कर जब संसार नास्तिकता के चंगुल में फंसा तब शंकर स्वामी ने उसका निराकरण कर के फिर सीधा सादा मत सिखलाया । यदि बुद्ध देव के समय में उनके स्थान पर शंकर स्वामी उत्पन्न हुए होते तो यज्ञादि की रीतियों में उलझे हुए धर्म्म को उन्हीं की भांति शंकर स्वामी भी सुलझाते और यदि बुद्ध शंकर स्वामी के स्थान पर हुए होते तो वे भी परमेश्वर को भूले हुए संसार को उस महाप्रभु का ध्यान दिलाते । यद्यपि उन दोनों में घोर शत्रुता समझ पड़ती है तथापि यथार्थ में उनमें रत्ती भर का अन्तर नहीं है । वे दोनों महानुभाव अपने अपने समय के लोगों की यथार्थ उन्नति में प्रवृत्त हुए थे और उन्होंने तत्का-लीन दोषों को हटाया। उनमें बाह्य अन्तर इस कारण समझ पड़ता है कि वे अपने अपने समय के लोगों को उन्नत बना-ने वाले थे, और उन दोनों के समकालीन लोगों में जो जो दोष थे उन्हींके नाश करने के उपाय उन दोनों ने बतलाए । फिर उन दोषों में जितना और जैसा अन्तर था

उतनाही और वैसाही अन्तर महानुभावों के उपदेशों में प्रतीत होता है। माने एक श्वांस की दवा करता था और द्वितीय ज्वर की। अब उन दोनों का अभिप्राय यही है कि शरीर निरोग रहे, परन्तु औषधियों में प्रचंड अन्तर है। यदि कोई स्वस्थ मनुष्य उन दोनों को मिलान कर के उनमें विभिन्नता पावे, और फिर एक की निन्दा और द्वितीय की स्तुति करे तो उसीकी भूल मानी जायगी। इसी प्रकार बाबा नानक ने हिन्दू मुसल्मानों का अन्तर देख कर उन दोनों को मिलाना चाहा, और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रतिमापूजन और गंगास्नानादि में अनुचित व्यय होते देख हिन्दू धर्म्म की उन त्रुटियों के हटाने का प्रयत्न किया। पैगम्बर ईसा मसीह ने उस समय के यहूदियों के दोष छोड़ कर सीधा सादा मत चलाया, और हज़रत मुहम्मद ने तत्कालीन अरबवालों में तलाक़ का बाहुल्य, विरासत की त्रुटियां, बहुविवाहादि के दोष देखे उनका यथाशक्ति निराकरण किया। इस स्थान पर यह कहा जा सकता है कि यों तो एक समय के मनुष्यों में अन्तर होना ही न चाहिए परन्तु प्रत्येक मनुष्य एकही दशा में नहीं होता वरन एकही स्थान में पृथक पृथक मनुष्यों की भिन्न भिन्न संगति इत्यादि होती है। फिर हर मनुष्य शंकर स्वामी इत्यादि की भांति बुद्धिमान भी नहीं होता कि वह कोई ग़लती करे ही नहीं।

अत: यह प्रकट होता है कि इन भिन्न भिन्न मतावलम्बियों में जो विभेद हैं वे इस कारण देख पड़ते हैं कि प्रत्येक मत किसी खास समय में किसी प्रचंड दूषण विशेष के हटाने के निमित्त उत्पन्न हुआ था, और उस समय उभी

प्रकार समझाने से लोग समझ सकते थे, अन्यथा नहीं। फिर इन सब मतों में मुख्य मुख्य सिद्धान्त एकही हैं। अमुख्य बातों में भेद इस कारण से भी कभी कभी पाया जाता है कि जिस देश में जिस मत का प्रादुर्भाव हुआ था उस देश के निवासियों के लिये वही नियम है अथवा जो उस मत में पाया जाता है, यथा गोमांस, शूकरमांस आदि का निषेध एवं प्रचार।

कहते हैं कि एक स्थान पर चार जन्मान्ध बैठे थे। उन्होंने सुना कि एक हाथी आ रहा है। उन्हें हाथी के जानने की बड़ी लालसा थी। सो वे चारों पारी पारी हाथी को टटोल कर उसका आकार समझ आए। अब उनमें उस विषय की बात चीत होने लगी। एक ने हाथी के केवल पैर टटोले थे सो उसने हाथी को खम्भे के समान बतलाया। दूसरे ने कहा, नहीं वह पक्खे के समान है। उसने उसका पार्श्व टटोला था। इतने में केवल कान टटोलने वाले ने उसे सूप के समान बतलाया। तब चौथे ने, जिसने उसकी पूंछ मात्र टटोली थी कहा कि तुम तीनों निरे मूर्ख हो हाथी तो ऐसा होता है जैसा रस्सा। अब इन चारों का कथन कुछ अंशों में यथार्थ था, परन्तु उनके कथनों में पृथ्वी और आकाश का अन्तर था। इसी प्रकार यह संसार हम लोगों के लिये ऐसाही है जैसा उन अन्धों को हाथी। इस कारण हम लोगों को एक दूसरे के मतों का उपहास कर के डेढ़ अकल वाली मसल को चरितार्थ न करना चाहिए। इसी भांति दो सवार एक मूर्ति के पास से होकर निकले जो मूर्ति एक दो पर्ती ढाल लिए थी। इस ढाल का एक पर्त

तांबे का था और दूसरा पीतल का। वे दोनों सवार मूर्ति के एकही ओर न निकल कर भिन्न भिन्न ओर से निकले। आगे चल कर उनमें ढाल के विषय विवाद होने लगा। एक ने कहा कि वह तांबे की है और दूसरे ने उसे पीतल की बताया। बड़े झगड़े के बाद फिर वहां जाकर जब उन्होंने ढाल को दोनों ओर से देखा तब भेद खुल गया। ऐसाही हाल अनेक विवादों में होता है, क्योंकि प्रतिद्वन्दी गण प्रश्न के दोनों रुख नहीं देख लेते और आधा आधा अनुभव प्राप्त कर अपना राग अलापने लगते हैं।

जब कोई मनुष्य हमारी ही पुस्तकों पर तीव्र आलोचना कर बैठता है तब हम लोग अभिमान से ऐसे अन्धे हो जाते हैं कि हमें केवल यही नहीं जान पड़ता कि हम में और हमारे आलोचक में मतभेद है, वरन् हम यह सोचने लगते हैं कि अमुक कारण से हमारा समालोचक हमारे कथन में बेईमानी से दोषारोपण कर रहा है। यही हमारा प्रचंड अभिमान, जिसे ज्वलन्तमूर्खता भी कह सकते हैं, बहुत से बेकार विवादों का कारण होता है। हम को समझ पड़ने लगता है कि समालोचक हमारे गुणों पर जान बूझ कर धूल डाल रहा है और दोषों को बढ़ाकर लिखता है। हमें अपने ग्रन्थों में दोष न देख पड़ने का एक यह भी कारण है कि हमारी समझ में जितने दोष होते हैं वे तो हम निकालही डालते हैं, यदि फिर भी कोई दोष दिखलाता है तो हमारा क्रोध तुरन्त प्रज्वलित हो उठता है। क्रोध तो हम इस कारण प्रकट करते हैं कि हमें लोग बुद्धिमान मानें, परन्तु

फल बिल्कुल विपरीत होता है और लोग उसी क्रोध के कारण हमें और भी निर्बुद्धि समझने लगते हैं।

फिर यदि समालोचक का कथन वास्तव में अशुद्ध हो, तो भी हमें सभी दशाओं में यह न समझना चाहिए कि उसने जान बूझ कर हम में दोषारोपण किया है क्योंकि अन्य मनुष्यों की भांति वह भी तो भूल कर सकता है। इन कारणों से जब कभी विद्या सम्बन्धी विवाद करना पड़े तो लेखकों को उपर्युक्त, एवं ऐसी ही ऐसी अन्य बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। कहा भी है कि—

विद्या विवादाय, धनम्मदाय, शक्तिः परेषाम्परिपीड़नाय ।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय, दानाय, च रक्षणाय ॥

सिकन्दर शाह ।

[चौथे अंक के आगे]

सिकन्दरशाह के घोड़े की बाग उठाते ही समस्त यूनानी सेना उसी व्यूहबद्ध अवस्था में उसके पीछे हो ली। तुरही ढोला आदि रणवाद्यों के रव और कड़खों की कड़ी तान से गरनिक के किनारे पथरीला मैदान गूंज उठा। सिकन्दर ने कुछ तिरछा रुख काट कर चाल दी और वह इस रीति से कि उसकी सेना के व्यूहबद्ध तारतम्य में तनिक भी गड़बड़ न हो सकी। यूनानी सेना ने जलधारा पार करके ज्योंही किनारे पर चढ़ना चाहा कि उधर से पारसी सेना ने आ-क्रमण कर दिया। इस समय यूनानी सेना की भी हिम्मत बढ़ी और यह बहादुरी का काम था कि ढलुए और कीचड़

के स्थान में होने पर भी ऊपर से आक्रमण करने वाली शत्रुसेना का वे मुकाबला कर सके। उन्होंने केवल मुकाबला ही नहीं किया वरन वे अपने तेज और तर्जदार चमकीले भालों की नोक से ठेल कर शत्रु को गर्निक के किनारे पार की समतल भूमि पर ले गए। इस मैदान में बड़ी ही निकट मार पड़ी। सिकन्दर अपने राजसी भड़कीले बख्तर और कलगी से पहिचाना तो जाता ही था अतएव रोहतक्ष और स्प्रीडेटस दो पारसी सैनिकों ने उसे आ घेरा। इसी अवसर में सिकन्दर का भाला टूट गया, तब वह तलवार से लड़ने लगा परन्तु रोहतक्ष ने बगल से फरसे का ऐसा वार किया कि हाथ ओछा पड़ने से सिकन्दर के सिर की केवल कलगी कट सकी और जब तक वह दूसरा वार करे कि सिकन्दर के भाई क्लीटस ने उसे हो भाले से छेद लिया तब तक सिकन्दर ने स्प्रीडेटस को काट कर दो कर दिया। इन दोनों सेना नायकों के मरते ही समस्त पारसी सेना तीन तेरह होकर भाग उठी, केवल कुछ यूनानी लोग जो उस सेना में थे इस उम्मेद से डटे रहे कि सिकन्दर उनसे शिष्टाचार का बर्ताव करके उन्हें अपना ले और सिकन्दर को यह उचित भी था। परन्तु उसने ऐसा न किया। उसने तामसी वृत्ति के अधीन हो कर उनको भी दमन करना ही निश्चय किया अस्तु वे लोग भी प्राण का मोह छोड़ कर भिड़ पड़े। इन लोगों के मुकाबले में सिकन्दर को बड़ी कठिनता पड़ी क्योंकि वे भी युद्ध विद्या में वैसे ही दक्ष थे जैसे कि उसके निज सैनिक। अन्त में वे सब के सब काम आए और सिकन्दर ने फतह पाई। कहा जाता है कि इस

युद्ध में पारसी सेना के दल के बारह हजार पैदल और दो हजार सवार काम आए और सिकन्दर के २५ सर्दार और कुछ सवार प्यादे *। इस समय उसके जो सरदार काम आए उसने उनकी पाषाण मूर्ति बनवाकर स्थापित करवाई। यह उनके सम्मान और अन्य सेनानायकों का उत्साह बढ़ाना दोनों का हेतु कहा जा सकता है।

सिकन्दर ने रणक्षेत्र को साफ करवा कर दोनों तरफ के मृतकों को मिट्टी दिलाई और घायलों की औषधि आदि का उचित प्रबन्ध करवा कर वह उनसे बड़े ही नम्र और सुहृद भाव से मिला, और अपनी सेना को लूट की आज्ञा न देकर सब प्रजा से निज सनातन प्रजा की तरह पेश आया, जहां के शासन की जो प्रथा प्रणाली थी उसमें भी किसी प्रकार का हेर फेर न किया, केवल पारसी अफसरों के स्थान में यूनानी अफसर नियत कर दिए। सिकन्दर की इस विजय और विजित लोगों पर उसके इस राज्योचित व्यवहार का यह परिणाम हुआ कि समुद्र के किनारे की बहुत सी जातियां और प्रसिद्ध धनवान नगर जो फारस राज्य की प्रजा थे वे आप बिन प्रयास सिकन्दर को अपना सिरताज मानने लगे। सहर सर्दीस जहां पर खुसरो या करूं का मशहूर खजाना था वहां के सरदार ने शहर का सब धन धान्य सिकन्दर के आगे रख दिया। वहां से बहुत कुछ अमूल्य रत्न और स्वर्णादि लेकर वह एपसिस

* ये सब हालात केवल यूनान के इतिहासकारों की लेखनी से उद्धृत किए गए हैं इसलिये शत्रु की हानि के विषय में अत्योक्ति और निज हानि का छिपाया जाना मालूम होता है।

में आया जहां कि आर्टिस देवी का मन्दिर उसकी जन्म तिथि को जल कर भस्म हो गया था। वहां उसने उस मन्दिर को बनवाया। आगे चल कर सिकन्दर ने मलीटस को उड़ा कर बरबाद कर दिया। [क्रमश:]

सभा का कार्यविवरण।

[५]

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० ३० नवम्बर १९०७, सन्ध्या के साढ़े पांच बजे।

स्थान—सभाभवन।

[१] गत अधिवेशन (ता० २६ अक्तूबर १९०७) का कार्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

[२] प्रबन्धकारिणी सभा का तारीख ७ अक्तूबर का कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

[३] निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए—

१ महाराजकुमार लाल भार्गवेन्द्र सिंह जी देव-मेयो कालेज अजमेर ५), २ बाबू अमीरचन्द प्रसाद, असिस्टेण्ट मास्टर, राज हाई इङ्गलिश स्कूल, डुमरांव, जि० शाहाबाद (आरा) ३), ३ पण्डित अखज मिश्र वैद्य, अरवल जि० गया १॥), ४ बाबू छोटूलाल, शेरपुर पो० करपी, जि० गया ३), ५ मिस्टर जमशेदजी नवरोजी उनवाला प्रोफेसर, सेण्ट्रल हिन्दू कालेज, बनारस ३), ६ बाबू जगलाल प्रसाद, C/o रामहित म० रामटहलराम, नेतपुर जि० दीनाजपुर ३), ७ बाबू निहाल चन्द गौड़, नयाबाजार, लश्कर ग्वालियर १॥), ८ बाबू कृष्ण गोपाल, चरखारी ७), ९ कुं० मतिपाल सिंह, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद ३), १० लाल जयकरन सिंह, मेयो कालेज, अजमेर ३),, ११ लाल रघुराज सिंह, मेयो कालेज, अजमेर ३), १२ बाबू न्यादर सिंह, हिन्दी हेड मास्टर, जनकगंज स्कूल लश्कर ग्वालियर १॥), १३ पण्डित इकबाल नारायण गुर्टू, सी० एच० कालेज, बनारस ३), १४ बाबू कल्यान दास बुलानाला, काशी १॥)।

[४] सभासद होने के लिये निम्नलिखित महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

१ बाबू ओंकारमल, दक्खिन फाटक मिर्जापुर, २ पण्डित प्यारेलाल शर्म्मा, कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज शाहाबाद, जि० हरदोई, ३ ठाकुर कान सिंह, दैसा खवा जैपुर ४ बाबू देवनारायण भक्त, डिपटी इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स उत्तरी विभाग, वस्तर, जगदलपुर रायपुर, ५ बाबू महादेव प्रसाद सेठ, गऊघाट मिर्जापुर, ६ बाबू बाल गोविंद राम, रेलवे स्टेशन गोचा।

[५] निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं—

नागर क्लब, गणेशगंज लखनऊ—नागर पुष्पाञ्जली प्रथमांक। पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य, मुरादाबाद—लग्नचन्द्रिका। पण्डित गोविंद शास्त्री दुगवेकर, काशी—बचेंगे तो और भी लड़ेंगे। पण्डित लोचन प्रसाद पाण्डेय, बालपुर—दो मित्र, प्रवासी। महाराज कपूर विजय—श्री जैन हितोपदेश भाग १, प्रथम रति प्रकरणम्। बाबू रामनारायण, भगवानगंज, लखनऊ—परमेश्वर विरहदर्पण। पण्डित चन्द्रशेषर पाठक विहार—मदालसा। पण्डित महेन्दुलाल गर्ग, लखनऊ—जापानदर्पण। बाबू लक्ष्मीनारायण धवन, काशी—ज्ञानविचार २ प्रति। पण्डित देव नाथ पाठक, काशी—फूलकुमारी। बाबू नवलनाथ, जोधपुर—अनुभव प्रकाश। बाबू छोटूलाल, मिर्जापुर—Ramayan of Tulasi Das by F. S. Growse. ठाकुर हनुमन्त सिंह, आगरा—Uttara Rama charita by C. H. Tawney. बम्बई की गवर्न्मेंट—Report of search for Sanskrit Mss in Rajputana and Central India in 1904—05 and 1905—06. संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंएट—List of Sanskrit and Hindi Mss in the Sanskrit College Benares purchased during the year 1906. कुं० कन्हैया जी, काशी—वीरबाला। Indian Antiquary for August 1907. खरीदी गईं—अर्थशास्त्र प्रवेशिका, लड़कों का खेल, History of the Sanskrit College, Benares, Imperial Gazetteer Vols I, III and IV.

[६] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगलकिशोर, मंत्री

[९]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ९ दिसम्बर १९०७ सन्ध्या के ५½ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, सभापति । मिस्टर ए० सी० मुकर्जी बी० ए० । रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स । पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० । बाबू जुगलकिशोर । बाबू माधव प्रसाद । पण्डित माधव प्रसाद पाठक । बाबू गोपालदास ।

[१] गत अधिवेशनों (ता० ४ नवम्बर और १० नवम्बर) के कार्यविवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए ।

[२] हिन्दी कोश तयार करने के विषय में सब-कमेटी की रिपोर्ट पण्डित रामनारायण मिश्र, पण्डित श्यामबिहारी मिश्र और पण्डित माधव राव सप्रे की सम्मति के सहित उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि-(क) कमेटी के मुख्य मुख्य सिद्धान्त स्वीकार किए जांय और पण्डित श्यामविहारी मिश्र और पं० माधव राव सप्रे के इस सम्बन्ध के पत्र जो स्थायी कमेटी इस कार्य के लिये नियत की जाय उसके पास विचार करने के लिये भेज दिए जांय ।

(ख) कोश कमेटी के मंत्री और सभासदों को उनकी पूर्ण और बहुमूल्य रिपोर्ट के लिये सभा की ओर से धन्यवाद दिया जाय ।

(ग) कोश के कार्य को कमेटी के सिद्धान्तों के अनुसार चलाने और इस सम्बन्ध के अन्य आवश्यक कार्यों को करने के लिये निम्नलिखित महाशयों की एक प्रबन्धकर्तृ कमेटी नियत की जाय और उसे अधिकार दिया जाय कि आवश्यकतानुसार वह अन्य महाशयों को भी इसका सभासद बना सके ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी । लाला छोटे लाल । रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स । बाबू इन्द्रनारायण सिंह एम० ए० । बाबू गोविन्द दास । पण्डित माधवप्रसाद पाठक । पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० । बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०-मंत्री ।

(च) इस कोश के कार्य में सम्मति और सहायता देने के लिये निम्नलिखित महाशयों की एक बड़ी कमेटी नियत की जाय जिसमें कोश-प्रबन्धकर्तृ कमेटी आवश्यकतानुसार इन महाशयों से सम्मति लेकर कोश के कार्य का प्रबन्ध करे।

(१) पण्डित गौरीशंकर हरिचन्द ओझा, उदयपुर (२) पं० चन्द्रशेषरधर मिश्र, चम्पारन (३) डाक्टर जी० ए० ग्रियर्सन, इङ्गलैंड (४) डाक्टर रुडल्फ हार्नली, इङ्गलैंड (५) डाक्टर जी० थीबो, कलकत्ता (६) पण्डित दुर्गा प्रसाद मिश्र, कलकत्ता (७) उपाध्याय पण्डित बदरीनारायण चौधरी, मिर्जापुर (८) पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, मथुरा (९) महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, काशी (१०) बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, काशी (११) बाबू इन्द्रनारायण सिंह एम० ए०, काशी (१२) रेवरेण्ड ई० ग्रीव्ज, काशी (१३) मिस्टर ए० सी० मुकर्जी बी० ए०, काशी (१४) बाबू गोविन्द दास, काशी (१५) बाबू दुर्गा प्रसाद बी० ए०, काशी (१६) स्वामी नित्यानन्द, काशी (१७) बाबू भगवान दास एम० ए०, काशी (१८) पण्डित माधव प्रसाद पाठक, काशी (१९) पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, काशी (२०) लाला भगवान दीन, काशी (२१) लाला छोटेलाल, काशी (२२) पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय, आज़मगढ़ २३) महामहोपाध्याय पण्डित आदित्य राम भट्टाचार्य एम० ए०, प्रयाग (२४) बाबू काशी प्रसाद जायसवाल, इंगलैंड (२५) पुरोहित गोपीनाथ एम० ए०, आबू (२६) पं० चन्द्रधर शर्म्मा बी० ए०, अजमेर (२७) बाबू जगन्नाथदास बी० ए०, अयोध्या (२८) रेवरेण्ड जे० ट्रेल, जयपुर (२९) मुंशी देवीप्रसाद, जोधपुर (३०) पण्डित नवरत्न गिरिधर शर्म्मा, झालरापाटन (३१) पण्डित भवानी दत्त जोशी बी० ए०, अजमेर (३२) पण्डित माधव राव सप्रे बी० ए०, नागपुर (३३) पण्डित रामावतार पांडे एम० ए०, कलकत्ता (३४) पण्डित रामशंकर व्यास, गोरखपुर (३५) पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०, इटावा (३६) पण्डित श्रीधर पाठक, प्रयाग (३७) पण्डित शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए०, लखनऊ (३८) पण्डित सूर्यनारायण दीक्षित एम० ए०, लखीमपुर (३९) ठाकुर हनुवन्त सिंह, आगरा (४०) पण्डित हरिनारायण शर्म्मा

बी० ए०, जयपुर (४१) पण्डित बालकृष्ण भट्ट, प्रयाग (४२) पण्डित कामता प्रसाद गुरू, रायपुर (४३) पण्डित सूर्य प्रसाद मिश्र, काशी (४४) मुंशी संकटाप्रसाद, काशी (४५) बंगाल, संयुक्त प्रदेश, मध्य प्रदेश श्रीर पंजाब की गवर्न्मेंएटों के एक एक प्रतिनिधि (४६) आरा नागरीप्रचारिणी सभा का एक प्रतिनिधि (४७) काशी नागरीप्रचारिणी सभा के मंत्री ।

(ङ) कोश के सम्पादक नियत करने के विषय में आगे चलकर निश्चय किया जाय ।

(च) इस कार्य के लिये निम्नलिखित बजेट अभी स्वीकार किया जाय श्रीर आवश्यकतानुसार इसे घटाने बढ़ाने का सभा को अधिकार रहे ।

प्रारम्भिक छपाई ५००) । पुस्तकें २००) । कोश आदि ७००) । कोश की छपाई १५०००) दो दो हजार प्रति दोनों की । एक सहायक तीन वर्षों के लिये १८००) । दो क्लार्क तीन वर्षों के लिये१८००) । सम्पादक का पुरस्कार ५०००) । फुटकर व्यय ५०००) । कुल जोड़ ३००००) ।

(छ) ऊपर के बजेट के अनुसार ३००००) रु० इस कार्य के लिये स्वीकार किया जाय जिसमें इस सम्बन्ध का सब कार्य समाप्त हो जाना चाहिए । इस कार्य की प्रबन्धकर्तृ कमेटी को अधिकार दिया जाय कि ज्यों ज्यों सभा इसमें से रुपया उसे दे उसके अनुसार वह अपनी आवश्यकता को समझकर उसका उपयोग करे ।

(ज) कोश प्रबन्धकर्तृ कमेटी को अधिकार दिया जाय कि वह अपने कार्य के लिये जिसे उचित समझे वेतन पर नियत करे परन्तु ऐसे लोगों को जिनका वेतन ५०) रु० वा उससे अधिक हो नियत करने के पहिले सभा की स्वीकृति ले ले ।

(झ) सभा के मंत्री को अधिकार दिया जाय कि वे इस कोश के कार्य के लिये आवश्यक द्रव्य तथा ऋण चुकाने के लिये ६०००) रु० की अपील गवर्मेंएट सर्वसधारण तथा राजों महाराजों आदि से करें श्रीर जो रुपया ऐसा आवे जिसके विषय में यह न लिखा हो कि वह किस कार्य के लिये आया है ऋण चुकाने और कोश के

कार्य के लिये आधा आधा बांट लिया जाय तथा ऋण चुक जाने पर इस अपील से आया हुआ सब रुपया कोश के लिये दिया जाय।

[३] सभा का डेप्युटेशन बाहर भेजने के विषय में मंत्री का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि वह पहिले इलाहाबाद भेजा जाय।

निश्चय हुआ कि अभी कुछ दिन के उपरान्त इस विषय पर विचार किया जाय।

[४] बाराबंकी के बाबू रामनारायण का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपने नगर में नागरी का एक अर्जी लिखने वाला नियत करने के लिये सभा से सात वा आठ रुपए की मासिक सहायता मांगी थी।

निश्चय हुआ कि धनाभाव से सभा इस समय यह सहायता नहीं दे सकती।

[५] पुस्तकालय के निरीक्षक के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि पुस्तकालय का चन्दा वसूल करने तथा पुस्तकालय और सभा सम्बन्धी अन्य कार्यों के करने के लिये ५) रु० मासिक वेतन पर एक चपरासी नियत किया जाय।

[६] निश्चय हुआ कि पुस्तकालय के निरीक्षक से प्रार्थना की जाय कि वे कृपा कर ऐसी पुस्तकों की एक सूची बना कर दें जो पुस्तकालय के लिये खरीदी जानी चाहिएं।

[७] मंत्री ने निम्नलिखित महाशयों की नामावली उपस्थित की जिनके यहां दो वर्ष से अधिक का चन्दा बाकी है—

१ बाबू अमरनाथ बेनर्जी, काशी। २ बाबू बेणी प्रसाद, काशी। ३ बाबू बैजनाथ दास, भाट की गली, काशी। ४ पण्डित मन्नदेव शर्म्मा, काशी। ५ बाबू लक्ष्मीचन्द एम० ए०, काशी। ६ बाबू लाल बिहारी सिंह, काशी। ७ बाबू शिवनारायण लाल, काशी। ८ बाबू के० डी० राय, रोहिनी, वाया वैद्यनाथ, देवगढ़। ९ लाला गिरिधारी लाल महरा, अनारकली, लाहौर। १० बाबू जङ्गबहादुर सिंह, अध्यर थाना चोलापुर पो० बाबतपुर ज़ि० बनारस। ११ पण्डित महाराज सिंह शर्म्मा, किशरौल, मुरादाबाद। १२ पण्डित मुरलीधर मिश्र,

रायबरेली। १३ बाबू रघुनन्दन लाल, कासगंज, जि० एटा। १४ बाबू रामगुलाम, पेपर मर्चेंट, हरिद्वार। १५ पण्डित रामचन्द्र मोरेश्वर साने वकील, बारसी जि० शोलापुर। १६ कुं० श्याम सिंह, स्थान नयाबांस, पो० हरदुआगंज, अलीगढ़। १७ बाबू साधोलाल भारती, नायब तहसीलदार, सुन्या जि० रायपुर। १८ बाबू सुमेरचन्द्र, एजण्ट राजा नाहन, बटाला, पंजाब। १९ ठाकूर सूर्यकुमार वर्म्मा, राजपूत आफिस, आगरा।

निश्चय हुआ कि यदि ये महाशय ता० १५ जनवरी १९०८ तक अपना चन्दा न देदें तो नियमानुसार इनका नाम सूची "ख" में लिखा जाय।

[८] मंत्री की यह रिपोर्ट उपस्थित की गई कि सभा के लिये कोई चैाकीदार ५) रुपए मासिक वेतन पर नहीं मिलता।

निश्चय हुआ कि मंत्री को अधिकार दिया जाय कि ६) रुपए मासिक वेतन पर चैाकीदार नियत करें।

[९] निश्चय हुआ कि इस वर्ष जो नवीन पुस्तकें छपें उनपर रिपोर्ट लिखने का कार्य पण्डित रामनारायण मिश्र को सैांपा जाय।

[१०] मिस्टर ए० सी० मुकर्जी ने समय न रहने के कारण सुबोध व्याख्यानों के निरीक्षक के कार्य से इस्तीफा दिया।

निश्चय हुआ कि मिस्टर ए० सी० मुकर्जी का इस्तीफा स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू माधव प्रसाद निरीक्षक चुने जांय।

[११] पण्डित माधव प्रसाद पाठक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने ग्रन्थमाला के सम्पादन के कार्य से इस्तीफा दिया था।

निश्चय हुआ कि यह पत्र आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

[१२] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुलकिशोर, मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब

नवम्बर १९०७ ।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	४५२	०	०	स्थायी कोश	८४	३	०
सभासदों का चन्दा	८१	८	०	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६७	१२	४½
पुस्तकों की बिक्री	७४	१३	६	पुस्तकालय	१७	१२	०
रासो की बिक्री	२७	६	०	पृथ्वीराज रासो	२०	०	०
पारितोषिक	२०	०	०	नागरी प्रचार	१३	४	०
पुस्तकालय	४५	४	०	पुस्तकों की खोज	७०	१५	०
फुटकर	११	०	०	फुटकर	१४३	१२	७½
जोड़	७११	१५	६	छपाई	८	५	०
				पुस्तकों की बिक्री	७०	०	०
				डांक व्यय	२२	१०	०
				जोड़	५१८	१०	०
				बचत	१८२	५	६
				जोड़	७११	१५	६
देना ६०००)							

जुगुलकिशोर,

मंत्री ।

सोलहवां चित्र।
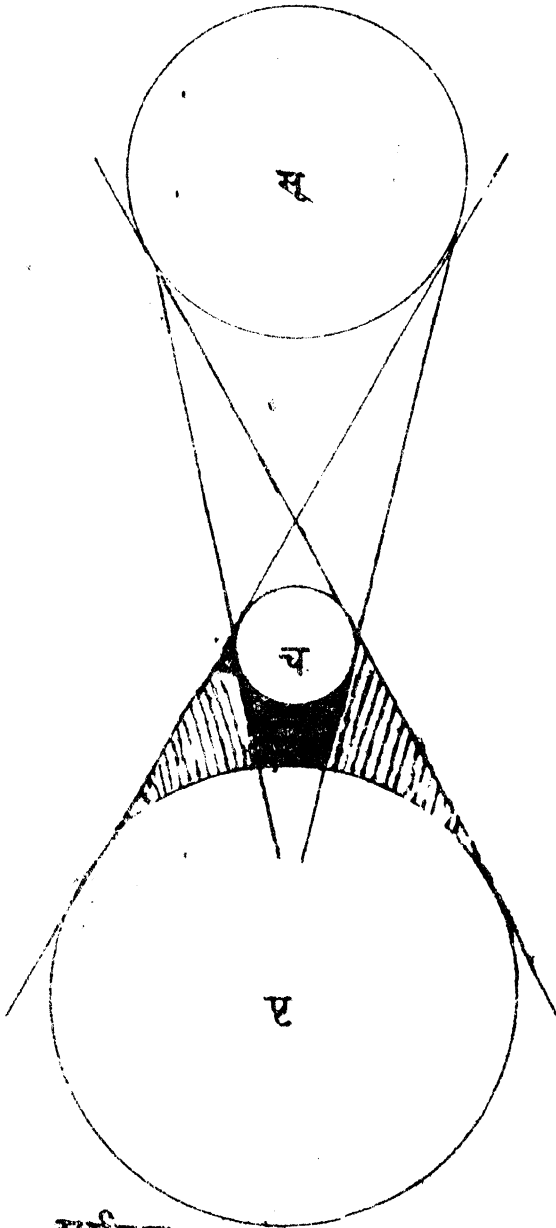
सूर्यग्रण

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] जनवरी १९०८। [संख्या ७

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥ १॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल॥ २॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार॥ ३॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ ४॥

हरिश्चन्द्र।

विविध विषय।

कोटा राज्य में हिन्दी भाषा का प्रचार हो गया। अब वहां के सब राजकाज देवनागरी अक्षरों और हिन्दी भाषा में होने लगे हैं।

* *

प्रयाग में नागरी प्रवर्धिनी सभा के स्थापित होने का सूचनापत्र प्रकाशित हुआ है। इसके सभापति हिन्दी के

पुराने लेखक पण्डित बालकृष्ण भट्ट हुए हैं। इस सभा का उद्देश्य हिन्दी भाषा की उन्नति और नागरी अक्षरों का प्रचार रक्खा गया है। प्रयाग में ऐसी सभा के स्थापित होने से हमको विशेष आनन्द हुआ है। यदि यह सभा और कार्यों के अतिरिक्त अच्छे अच्छे ग्रन्थों का हिन्दी में प्रकाशित करना अपना मुख्य उद्देश्य और कर्तव्य रखती तो वह हिन्दी भाषा की विशेष सहायता कर सकती। गुजरात वर्नाक्यूलर सोसायटी के ढंग पर एक अच्छे समाज के स्थापित होने की हिन्दी पढ़े लिखे लोगों में बड़ी आवश्यकता है। हम इस नई सभा का ध्यान इस ओर दिलाते हैं और आशा करते कि वह इस निवेदन पर ध्यान देगी।

* * *

हमारी काशी की सभा अपने पुस्तकालय की विशेष उन्नति की ओर इस समय दत्तचित्त है। बनारस के म्युनिसिपल बोर्ड ने ३६०) रु० से वार्षिक सहायता करना निश्चय किया है और वह ३०) रु० मासिक गत अक्तूबर मास से बराबर दे रही है तथा बनारस के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से भी ५०) रु० वार्षिक सहायता देना स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष के बजेट में सभा ५१०) रु० पुस्तकालय के लिये खर्च करना स्वीकार कर चुकी है। अब सब मिलाकर पुस्तकालय की उन्नति के लिये १०००) रु० के लगभग प्रति वर्ष व्यय हो सकेगा। इससे आशा है कि इस कार्य में विशेष सफलता प्राप्त हो। पुस्तकालय का एक नया सूचीपत्र तय्यार हो रहा है। यह उसी ढंग पर बनाया जा रहा है जैसा कि योरप के बड़े बड़े पुस्तकालयों का सूचीपत्र होता है। इसके

तय्यार होने पर ग्रन्थ, ग्रन्थकर्ता और विषय के क्रम से सब पुस्तकों का अलग अलग पता लग सकेगा। परन्तु सब से आवश्यक काम नई पुस्तकों का संग्रह करना है और यह काम हिन्दी लेखकों और पुस्तकप्रकाशकों की सहायता बिना नहीं हो सकता। इसलिये सभा की प्रार्थना है कि जो नई पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित हो उसकी सूचना सभा को अवश्य मिल जाय जिसमें वह उसके प्राप्त करने का उद्योग कर सके। हमें आशा है कि लेखकगण सभा की इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे जिसमें सभा का पुस्तकालय कम से कम हिन्दी में छपी पुस्तकों का बड़ा भारी भंडार हो जाय।

* * *

इस पत्रिका के पिछले कई अंकों में "प्रणव की पुरानी कहानी" नाम का एक लेख छप चुका है, उसके सम्बन्ध में जिन नेत्रहीन पंडित जी का उल्लेख है उनके विषय में अनेक लोगों ने प्रश्न किए हैं। अतएव सब महाशयों की सूचना के लिये प्रकाशित किया जाता है कि उनका नाम पण्डित धनराज मिश्र है। वे पण्डित नैपाल मिश्र के पुत्र और पण्डित हरगोविन्द मिश्र के पौत्र हैं। उनका स्थान बस्ती ज़िले के इटावल ग्राम, डांकघर बेलहर-कलां है। वे प्रायः देशाटन किया करते हैं। जब वे दो ही वर्ष के थे तभी वे नेत्रहीन हो गए। छोटी ही अवस्था में अनेक प्रसिद्ध स्थानों में जा जा कर उन्होंने संस्कृत का अभ्यास प्रारम्भ किया। पहिले उन्होंने संस्कृत व्याकरण को कंठस्थ किया और उसके पीछे अनेक प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध ग्रन्थों को कंठाग्र किया। पठन पाठन में ये अब तक दत्तचित्त हैं। इस सूचना के लिये हम

सफदरगंज के पण्डित प्रयाग नारायण त्रिवेदी के अनुगृहीत हैं।

* * *

हिन्दी के वृहद् कोश के विषय में यह सभा जो उद्योग कर रही है उसकी सूचना इस पत्रिका के पिछले अंक में दी जा चुकी है और उसी अंक में सभा का जो कार्यविवरण छपा है उससे यह भी विदित होता है कि सभा ने इस कार्य के करने का क्या प्रबन्ध सोचा है। इस सम्बन्ध में जो पत्र अब तक सभा के पास आए हैं वे अत्यन्त उत्साहवर्द्धक हैं। अनेक लोगों ने सभा के इस उद्योग की प्रशंसा की है और जिस प्रणाली से वह इस कार्य को चलाया चाहती है उसे स्वीकार किया है। परन्तु यह काम बिना आर्थिक सहायता के नहीं चल सकता, यहां तक कि बिना १०००) रु० मिले इस कार्य का आरम्भ भी नहीं हो सकता। सभा बुलन्दशहर के बाबू बंशीधर वैश्य मारवाड़ी की अत्यन्त अनुगृहीत है कि उन्होंने इस कार्य के लिये ५) रु० बिना मांगे ही भेज कर सभा के उत्साह को बढ़ाया है। यदि इसी प्रकार से और हिन्दी प्रेमी भी इस कार्य में सहायता करें तो शीघ्र ही १०००) रु० एकत्रित होकर इस कार्य का आरम्भ हो सकता है, हां, यह अवश्य है कि इस कार्य के लिये हमें ३००००) रु० की आवश्यकता है परन्तु कार्य आरम्भ होने की देर है, फिर तो हमें अनेक ओर से सहायता मिल सकती है। इसलिये हम आशा करते हैं कि हमारे हिन्दी प्रेमी इसी बड़े काम के आरम्भ कराने में यश के भागी अवश्य होंगे।

तेरहवाँ चित्र
च
पृ
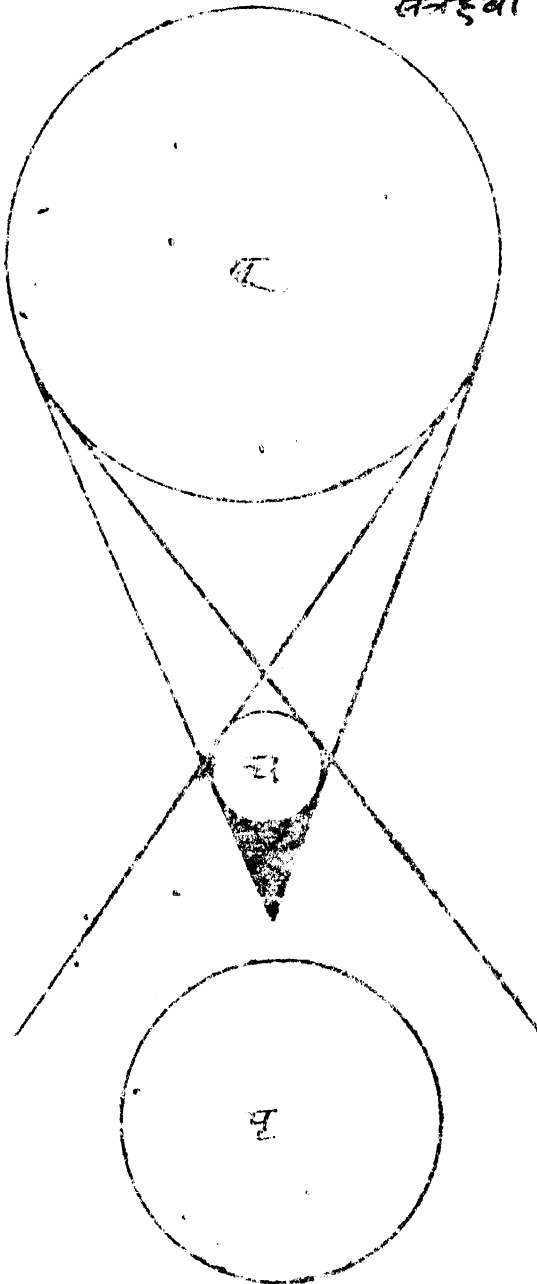
ज्योतिष प्रबन्ध ।

[छठें अंक के आगे].

---:o:---

सूर्य्य ग्रहण ।

यदि चन्द्र की कक्षा भी क्रान्तिवृत्त के धरातल पर समान होती तो प्रति अमावास्या को चन्द्र सूर्य्य के ठीक आगे आकर उसे छा लेता और सूर्यग्रहण होता रहता। इसी प्रकार प्रति पूर्णमासी को चन्द्र भूछाया में प्रवेश करता और ग्रहण होता रहता, परन्तु चन्द्र की कक्षा का धरातल क्रान्तिवृत्त पर से ५° उठा हुआ है। इसलिये ग्रहण लगने के लिये यह आवश्यक है कि चन्द्र अपने सम्पात (Nodes-अर्थात् जहां उसकी कक्षा क्रान्तिवृत्त को काटती है) पर हो वा ५° तक उसके निकट हो, नहीं तो वह पृथ्वी और सूर्य के ठीकम ठीक बीच में न रहने से सूर्य की आड़ न कर सकेगा। [१६वां चित्र देखो]

दूसरी बात यह है कि कभी पृथ्वी सूर्य से दूर रहती है कभी निकट, क्योंकि इसकी कक्षा ठीक गोल नहीं है। यदि ऐसे अवसर पर अमावास्या के दिन चन्द्र अपने पात पर आ गया और पृथ्वी भी चन्द्र से इतनी निकट रही कि चन्द्र छाया भूमि तक पहुंची तब चन्द्र ग्रहण लगेगा, और यदि उक्त अवसर पर पृथ्वी चन्द्र से इतनी दूर रही कि चन्द्र छाया उस तक न पहुंची तब ऐसा मालूम देगा कि सूर्य के बीच से कोई काली चीज निकली चली गई है, सूर्यतेज कुछ धुंधला सा तो हो जायगा पर पृथ्वी पर प्रकाश बनाही रहेगा। इसे **वलयाकार** ग्रहण कहते हैं। [१७वां चित्र देखो]

यह सिद्ध हो चुका है कि चन्द्र छाया २३६००० मील तक रहती है। इसलिये आवश्यक है कि अमावास्या के दिन चन्द्र अपने पात पर वा उसके निकट हो और उसकी दूरी भी २३६००० मील से कम की हो तब जाकर ग्रहण लग सकता है (विदित रहे कि चन्द्र की पृथ्वी से न्यूनतम दूरी २२५७१९ मील तक हो जाती है)। ऐसी अवस्था में जब चन्द्र अपने सम्पात पर रहे तो पूर्णग्रहण होगा, वह भी थोड़ी ही देर तक के लिये पूर्ण ग्रास रहता है, क्योंकि चन्द्र छाया की लम्बाई और चन्द्र की न्यूनतम दूरी में इतना अधिक अन्तर नहीं है कि चन्द्र की शंङ्काकार छाया का कुछ चौड़ा भाग भूमि पर पड़े। पूर्ण ग्रास १६७ मील तक भूमि पर ज्यादा से ज्यादा दिखाई दे सकता है, इसके ऊपर खण्ड ग्रास दिखाई देगा।

बड़े से बड़े चन्द्र बिम्ब का व्यास १००६"×२ और छोटे से छोटे सूर्य बिम्ब का व्यास ९४६"×२ है, इन दोनों का अन्तर हुआ २×६०" अर्थात् इस अवस्था में चन्द्र का व्यास १२०" बड़ा हुआ। अब जितनी देर में चन्द्र १२०" न हट जाय पूर्ण ग्रास लगा रहेगा। चन्द्र की गति प्रति मिनिट ३०" है इस हिसाब से ज्यादा से ज्यादा ४ मिनिट तक पूर्ण ग्रास रह सकता है, तदुपरान्त खण्ड ग्रास हो जायगा।

वलयाकार ग्रहण में सूर्य का बड़े से बड़ा व्यास १९५६" और चन्द्र का छोटे से छोटा व्यास १७६८" है। इनका अन्तर हुआ १८८"। इसलिये $\frac{१८८}{३०}$ = ६.२६ मिनिट तक पूर्ण चन्द्र सूर्य के अन्दर दिखाई देगा। इस अवस्था में यद्यपि दोनों

अट्ठारहवां चित्र
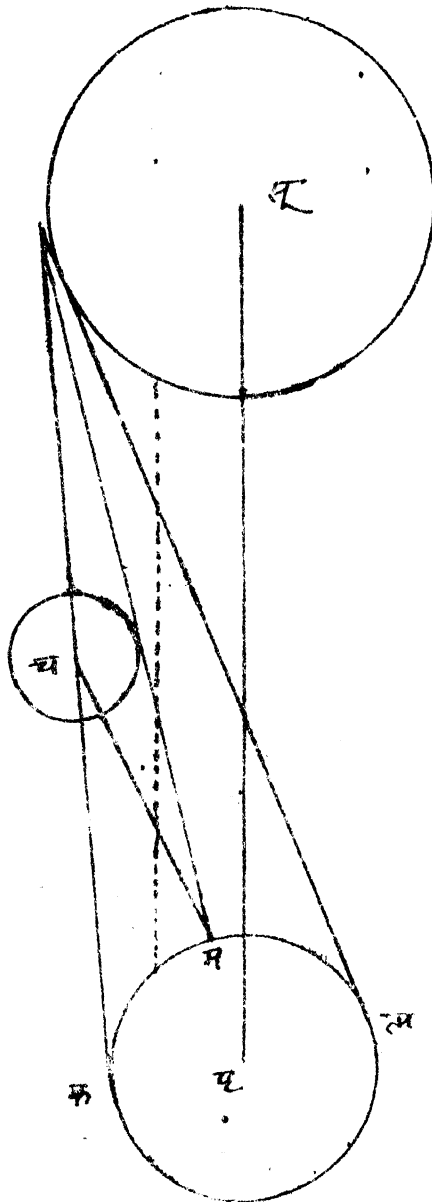
के कन्द्र एक स्थान पर न भी हों तो भी चन्द्र बिम्ब सूर्य बिम्ब से छोटा होने के कारण उसमें आजाता है।

प्राय: ऐसा होता है कि ग्रहण पृथ्वी के एक भाग में लगता है और उसी और दूसरे भाग में नहीं दिखाई देता है। इसका कारण १८वें चित्र से प्रगट होजायगा । मान लो सू = सूर्य, च = चन्द्र, पृ = पृथ्वी है। यह स्पष्ट ही है कि म ल स्थानों के बीच में सूर्य की आड़ करने वाला कुछ नहीं है परन्तु म क के बीच में ग्रहण लगा देखाई देगा। म स्थान पर मोक्ष का समय है और म से क तक खण्ड ग्रास दिखाई देगा।

चन्द्र ग्रहण ।

चन्द्र पृथ्वी के चारों ओर घूमता है और जब वह सूर्य से षड्भान्तर (opposition) अर्थात् १८०$^{\circ}$ पर आता है तब पूर्णिमा होती है। इस समय यदि चांद अपने पात पर हो अथवा उसके निकट ५$^{\circ}$ तक रहे तब भूछाया में उसका प्रवेश होता है। क्योंकि भूछाया क्रान्तिवृत्त पर ठीक सूर्य से १८०$^{\circ}$ पर ही पड़ती है। चन्द्र कक्षा भी दीर्घवृत्ताकार है। इसलिये भूछाया के वृत्त का व्यास जो चन्द्रकक्षा के पात पर पड़ता है ज्यादा से ज्यादा २१४२" और कम से कम २२६९" का होता है। इसी लिये सूर्य ग्रहण की अपेक्षा चन्द्र ग्रहण अधिक होता है। चन्द्र बिम्ब का सब से बड़ा व्यास २०१२" है, इसलिये पूर्ण चन्द्र ग्रहण का समय भी देर तक का है।

पृथ्वी चन्द्र से बड़ी है इसलिये इसकी छाया चन्द्र कक्षा के पार तक चली गई है और चन्द्र छोटा है, इसलिये इसकी छाया भूमि तक कभी पहुंचती है, कभी नहीं। क्योंकि

यह प्राकृतिक नियम है कि छोटे पदार्थों की छाया छोटी होती है अर्थात् उसका फैलाव दूर तक नहीं होता और बड़े पदार्थ की छाया दूर तक जाती है। (देखो चित्र १७) यही कारण है कि चन्द्र ग्रहण बहुत होता है और सूर्य ग्रहण कम। [क्रमशः]

हिन्दुस्तान का इतिहास।

[छठें अंक के आगे]

दूसरा अध्याय।

सिंध में हिन्दूराज्य।

मुसलमानों ने सिंध के इतिहास की कई किताबें लिखी हैं जिनमें सब से पिछली तहुफतुलक्राम है जो सन् ११९५ (संवत् १८३८) में बनी है। इसमें ऐसा लिखा है कि हिजरी सन ६१३ (संवत् १२७३) तक सिंध की कोई तवारीख अरबी फारसी में नहीं थी, पीछे इतनी किताबें लिखी गई हैं।

१ काजी इसमाइल के पास, जो अली का बेटा, मूसा का पोता और नाई का पड़पोता था, उसके पुरखाओं का लिखा हुआ १ मसोदा था जिसमें सिंध के फतह होने का वृत्तान्त अरबी भाषा में लिखा था। उसका उलथा सन ६१३ संवत् १२७३) में उच्च के रहने वाले अबीबक्र के पोते, हामिद के बेटे, अली ने फारसी* में किया।

* इसका नाम तारीख हिंद वा सिंध है। इसकी १ नकल लंदन में इंडिया आफिस के पुस्तकालय में है। अरबी मसोदा अबुल कासिम के कुछ पीछे का ही लिखा हुआ है क्योंकि जिंदा लोगों के नाम और खतों से भी मोहम्मद कासिम की फतह के कुछ हाल और उसमें पहिले के हिंदू राजाओं के वृत्तान्त भी लिखे हैं। (एलफिंस्टन)।

२ अकबर बादशाह के राज्य में नक्कुर के मीर मासूम ने एक तवारीख सिंध की बनाई।

३ जहांगीर बादशाह के समय में मीर मोहम्मद ताहिर ने भी एक तवारीख लिखी।

४ अरगूंनामा।

५ तरखांनामा।

बेलगरनामा*।

इसके पीछे फिर कोई किताब नहीं बनी।

इन किताबों में सिंध के पुराने हिंदू राज्य का जितना कुछ हाल मिलता है वह तुहुफ़तुलक्राम से यहां लिखा जाता है।

सिंध नाम एक आदमी के नाम पर यह मुल्क सिंध कहलाया है। इसके बेटों पोतों ने यहां राज्य किया। उनसे बहुत सी जातें निकलीं परन्तु उनके वृतान्त किताबों में लिखे नहीं गए।

उनके पीछे बनिया, टांक, और लोमेद जाति के लोगों का राज्य हुआ परन्तु उनके हालात का भी कुछ पता नहीं लगा इसलिये पिछले राजाओं का वर्णन किया जाता है जो राय कहलाते थे। रायों का राजस्थान शहर अलोर× (अरोड़) में था। उनका राज्य पूर्व में कश्मीर और

---

* इनके सिवाय जचनामे का नाम भी सुना जाता है पर वह देखने में न आया।

× अलोर अब उजड़ा पड़ा है उसके खंडहर अक्कुर के पास बताए जाते हैं। अक्कुर का किला अलोर की ईंटों से बनाया गया है। और ठट्टा अलोर के रहने वालों से बसा है। अरोड़ से निकले हुए हज़ारों अरोड़े खत्री मारवाड़ में बसते हैं।

कन्नौज तक, पश्चिम में मकरान और समुंदर के देवल बंदर तक, दक्षिण में सूरत बंदर तक, और उत्तर में कंधार, सीस्तान सुलेमान, फरदान, और केकानान के पहाड़ों तक था।

इन राजाओं की परम्परा का तो पता नहीं मिला। पिछली कई पीढ़ियों के नाम मालूम हुए सो ही लिखे जाते हैं।

१ राय देवायज-बड़ा बादशाह था, हिंदुस्तान के सब बादशाहों से उसकी दोस्ती और रिश्तेदारी थी।

२ राय सहरसन (महरसन)-राय देवायज का बेटा।

३ राय साहसी।

४ राय सहरसन (वा महरसन) दूसरा, इस पर नीमरोज (फारस वा ईरान) के बादशाह ने चढ़ाई की, यह केच में जाकर उससे लड़ा, तड़के से दो पहर तक लड़ता रहा, फिर गले में एक तीर लगा जिससे मर गया, बादशाह उसके लश्कर को लूट कर लौट गया, फिर फौजवालों ने मिलकर उसके बेटे साहसी को तख्त पर बैठाया।

५ राय साहसी दूसरा-इसने पहिले तो अपने राज्य की सीमाओं का प्रबंध किया, फिर प्रजा को हुक्म दिया कि राज कर के बदले में माथेला*, सिवराय†, मऊअलोर‡ और सेवस्तान के छओं किलों की जमीन को मट्टी से पाटकर ऊंची कर देवें, प्रजा ने ऐसा ही किया।

साहसी के प्रतिहारी (ड्योढीदार) का नाम राम था, और मंत्री का नाम भी राम ही था। एक दिन शीलायज§ नाम

---

* माथेला सिंध में अब भी बसता है।

† इसका पता नहीं लगता, शायद सिवस्तान वा सूस्थान हो।

‡ मऊ भी सिंध नदी के परे उजड़ा पड़ा है।

§ शीलायच वा शीलाज।

के एक प्रसिद्ध ब्राम्हण का बेटा जच्च* आकर राम प्रतिहारी से मिला। प्रतिहारी ने उसकी बातों से प्रसन्न होकर उसे मंत्री से मिलाया, वह थोड़े ही दिनों में मंत्री का मित्र बन गया।

एक समय राजा बीमार था, दरबार में नहीं आता था, उसने देश देशांतर के पत्रों को पढ़ने के लिये मंत्री को अंदर बुलाया। मंत्री ने जच्च को जो बड़ा मुंशी (बहुत पढ़ा लिखा) था भेज दिया। राजा उस वक्त ज़नानख़ाने (अन्त:पुर) में था, जच्च को वहीं बुला लिया, रानी सोहंदी परदा करने लगी तो कहा कि ब्राम्हणों से क्या परदा!

जच्च अंदर गया, राजा उसकी बाणी का चमत्कार देखकर चकित रह गया और मंत्री को कहला भेजा कि प्रतिहारी का काम इसको दिया जाय और यह अंदर आकर बात चीत करता रहे। जच्च इस तरह भीतर आने जाने का अवसर पाकर रानी के चित भी चढ़ गया, उसने चाहा कि जच्च उससे भी मिला करे।

परन्तु वह इस काम से नहीं नहीं करता रहा और अपने अच्छे बरताव और कामों से सब छोटे बड़े आदमियों का कृपा पात्र बन गया। उसके भाग्यबल से जब राजा बहुत बीमार

* चच्च भी पढ़ा जाता है और जक्ष भी हो सकता है। मारवाड़ के पुराने शहर भीनम्हाल में जाकोब नाम का एक तलाव है। उस पर पत्थर की बैठी हुई एक मूर्ति बनी है जिनका नाम वहां के ब्राह्मण जक्ष बताते हैं और कहते हैं कि यह जक्षराज कश्मीर से आया था और जाकोब तलाव इसी का बनवाया हुआ है। ऐसी ही एक मूर्ति मुलतान में भी बतलाई जाती है। कौन जाने वह जक्ष यही जच्च हो।

होकर मरने लगा तो रानी ने जच्च को बुलाकर कहा कि राजा का तो यह हाल है, बेटा कोई नहीं है, कुटुंबी राज के मालिक बनकर न तुझे जीता छोड़ेंगे न मुझे—इसलिये मैं एक प्रपंच रचती हूं जिससे यह राज तुझ को मिलजाय ।

जच्च ने जब रानी की बात मान ली तो रानी ने सब अमीरों और वज़ीरों से कहलाया कि अब राजा को कुछ आराम हो गया है पर अभी नाताक़ती है और राज के काम बहुत दिनों से बंद हैं इसलिये राय ने जच्च को अपनी अंगूठी देकर यह हुक्म दिया है कि वह तख़्त पर बैठकर नायब (प्रतिनिधि) के तौर से काम किया करे, तुम सब हाज़िर हो कर उसका हुक्म मानो ।

अमीरों ने आकर जच्च को सलाम किया और वह राय की जगह बैठकर राज का काम करने लगा ।

थोड़े दिन पीछे ही राय साहसी मर गया मगर रानी ने ऐसा बंदोबस्त कर रक्खा था कि किसी को खबर न हुई और जो नज़दीकी भाई भतीजे राज के दावेदार थे उनको राय की वसीयत (अन्तिम आज्ञा) सुनने के बहाने से एक एक करके बुलाया और सबको क़ैद कर दिया, फिर ग़रीब कुटुंबियों को बुलाकर कहा कि मैंने तुम्हारी ख़ातिर सब दावेदारों को पकड़ कर क़ैद कर दिया है अब तुम में से जो जिसको अपनी बराबरी का समझे बंदीखाने में जाकर मार डाले और उसके घरबार और माल असबाब का मालिक हो जाय, फिर आकर जच्च की सेवा करे जिससे उसका सब काम ठीक हो जायगा । उन ग़रीबों ने इस बात को मुफ़्त की लूट समझ कर तुरंत वैसाही किया । रानी ने मेहरबानी से एक

को बुला कर जच्च के पास भेजा और पति की लोथ जला दी।

इन पांचों राय वंशी राजाओं ने १३१ वर्ष राज्य किया, पीछे ब्राम्हणों का राज्य हो गया।

ब्राह्मण राज्य।

(१) शील.यच का बेटा जच्च* जब इस तरह तख़्त का मालिक हुआ तो उसने रानी के कहने से ख़जाने का ताला खोला और सब लोगों को बहुत सा दे दिलाकर अपना गुलाम बना लिया। तब रानी ने उसका काम मन चाहा बना हुआ देखकर बड़े बड़े ब्राह्मणों और उन नए अमीरों को बुलाकर कहा कि अब मुझे जच्च के वास्ते हलाल (लीन) करदो। उन्होंने उसका नाता जच्च से कर दिया मगर राना महरत चित्तौरी जो राय साहसी का जमाई था इस बात के सुनते ही बहुत सा लश्कर ले कर लड़ने को आया और रास्ते में से जच्च को खत लिखा कि ब्राह्मणों को राज से क्या काम है। जो तू अपने प्राण बचाया चाहता है तो राज छोड़ दे, तुझे तेरा अगला काम दे दिया जायगा।

जच्च घबराया हुआ रानी के पास गया और बोला कि एक बड़ा प्रबल बैरी चढ आया है, इसका क्या उपाय करूं। रानी ने कहा कि लड़ाई का उपाय तो मर्द ही जानते हैं जो तू मेरी जगह बैठे और अपना बाना मुझे दे तो मैं रण में जाऊं और दुश्मन को मारूं।

जच्च यह सुन कर खिसयाना होगया। रानी ने तसल्ली

---

* जच्च के नाम से जच्चनामा भी बना हुआ सुना जाता है।

देकर कहा कि खजाना तो तेरे पास है लश्कर का मन मना· ले, तेरी जीत रहेगी।

जच्च ने तुरंत दल बांध कर सिपाहियों को बहुत सा रुपया दिया और लड़ने की तैयारी की। जब राना महरत अलोर के पास पहुंचा और दोनों लश्करों की मुठभेड़ हुई तो राना ने जच्च के पास आकर कहा कि इस झगड़े की जड़ तो हम तुम हैं फिर और लोग क्यों खपाए जांय, दोनों लड़कर निपट लें, जच्च ने कहा कि मैं ब्राह्मण हूं घोड़े पर चढ कर नहीं लड़ सकता, हां जो तू भी घोड़े से उतर पड़े तो मैं तुझसे लडूं।

राना महरत भी घोड़े से उतर पाड़ा, जच्च ने अपने सईस से कह रक्खा था सो वह धीरे धीरे घोड़े को उसके पास ले आया, महरत उसके इस कपट से गाफिल था, जब राना अपने घोड़े से कुछ दूर आ गया तो जच्च लपक कर अपने घोड़े पर चढ बैठा और महरत को एकही बार में मार कर लड़ाई जीत गया। राना की फौज भाग निकली, जच्च फतह के बाजे बजाता हुआ अलोर में आया। यह वारदात सन १ हिजरी संवत् ६८० के लगभग हुई।

फिर जच्च हरीसन (वा भरोसन) वज़ीर से सलाह करके अपने राज्य की सीमाओं का बंदोबस्त करने को निकला और अलोर में अपने भाई को छोड़ गया। उस समय सिवस्तान का राजा मत्ता नाम का था। वह जच्च का अधीन हो गया। ऐसेही अगम लोहाने ने भी उसकी ड्योढ़ी पर सिर घिसा, सोयस के क़िले में जिसे अब सेवी कहते हैं चन्ना जाति के राजा कटवा का बेटा काका था, वह भी जच्चकी

बंदगी में हाजिर हो गया और उसके साथही इस जाति के लोग भी जिनके राजस्थान का नाम काकाराज था, जच्च के पैरों पर आ गिरे।

जच्च के ऊपर तीन बार अरबों ने चढ़ाई की परन्तु उसकी फ़ौज ने उनको हरा कर भगा दिया और इस तरह वह सफलता पूर्वक ६२* वर्ष राज करके सन् ६३ संवत् ७४० (१) में मर गया॥

(२) राजा चन्द्र।

(२) जच्च के पीछे उसका भाई चंद्रराज सिंहासन पर बैठा। सेवस्थान के राना मता ने कन्नौज के महाराज के पास जाकर कहा कि जच्च तो मर गया है उसका भाई प्रतिनिधि हुआ है, जो आप कुछ सहायता करो तो सिंध का राज्य सहज ही में हाथ आता है। उसने अपने भाई वसाईस को मता के साथ कर दिया। चंद्र ने भी लड़ने की तयारी की। वसाईस और मता कुछ समय तक सिंध में लूट मार करते रहे। अलोर† से भी आकर चिपटे, जहां बहुत से छलबल किए पर कुछ काम नहीं सरा, सुलह करके लौट गए जिससे चंद्र का नाम और काम बहुत बढ़ गया। वह ७ वर्ष राज करके (संवत् ६७० में) काल प्राप्त हुआ उसके पीछे दाहर (धीर) गद्दी पर बैठा जो उसका भतीजा था।

---

* ४० वर्ष राज करना भी किसी किसी किताब में लिखा है।

† यह शहर अब उजड़ा पड़ा है। सुना है कि गवर्न्मेंट प्राचीन शोध के वास्ते उसके खँडहरों को खुदाया चाहती है। इसका नाम भांभराभीया और वामना भी था।

(३) दाहर, जच्च का बेटा।

३ दाहर ने सिंहासन पर बैठकर अपने भाई धरसैन (धीरसेन) को ब्राह्मणाबाद† में भेजा जो वहां जाकर उस प्रान्त का हाकिम होगया।

एक दिन दाहर ने ज्योतिषियों से अपने जन्मपत्र का फल पूछा तो उन्होंने कहा कि तेरे भाग में और तो कोई अशुभ बात नहीं है परन्तु तेरी बहिन का विवाह जिसके साथ होगा वही तेरे पीछे राज भोगेगा। दाहर ने अपने घराने से राज नहीं जाने का बहाना करके अपनी बहिन से आपही लग्न कर लिया परन्तु वह उसके पास जाता नहीं था। धरसैन यह कुसमाचार सुनकर बहुत चिढ़ा और दल बांध कर अलोर पर चढ़ आया, परन्तु चेचक निकल आने से मर गया। दाहर उसकी दाह क्रिया करके ब्राह्मणाबाद में पहुंचा और उसकी स्त्री को जो अगम लोहाने की बेटी थी अपने घर में डालकर एक वर्ष तक रहा फिर धरसेम के बेटे जच्च को वहां छोड़ कर अलोर में आगया।

अलोर के किले को जिसे जच्च अधूरा छोड़ मरा था दाहर ने पूरा किया। वह जाड़े के ४ महीने तो ब्राह्मणाबाद में रहता था और गर्मी के ४ महीनों में अलोर में रहता। जब इस तौर पर ८ वर्ष बीते और राज्य का प्रबंध होते होते उसका मन चाहा होगया तो वह अपनी पूर्व सीमा को देखने गया और कश्मीर की सरहद पर सर्व के दो पेड़ चिन्ह के वास्ते रोप कर लौट आया।

अरबों का सिंध में फिर आना।

जच्च के समय में अरबों का कई बार सिंध पर आना और हार हार कर भाग जाना हम पहिले अध्याय में लिख

आए हैं। उसके पीछे दाहर के राज्य में फिर अरबों ने इधर मुंह किया। उस समय मुसल्मानों का खलीफा **अब्दुल मलिक दमिश्क** के राज सिंहासन पर था।

खलीफों का कुर्सीनामा मुआविया तक पहिले अध्याय में आ चुका है। उसके पीछे **यज़ीद** सन ५९ (संवत् ७३५) में खलीफा हुआ। उसने राजद्वेष से अली के बेटे और महम्मद पैगम्बर के दोहते एमाम हुसेन को बेटों पोतों सहित १० मोहर्रम सन ६० (कातिक सुदि १२ संवत् ७३६) को मरवा डाला। ये कुल ७३ ही आदमी थे तौ भी यजीद के २०००० सवारों से भूखे प्यासे ३ दिन तक बड़ी बीरता से लड़े थे। मुसल्मान लोग अब तक इन्हीं के ताबूत बना कर रोते पीटते हुए हर साल मोहर्रम के महीने में उन्हें निकालते हैं।

सन ६४ (संवत ७४०) में यजीद के मरने पर पहिले उसका बेटा मुआविया दूसरा ४० दिन तक खलीफा रहा। फिर मरवानुलहकम खलीफा हुआ, मगर दूसरे ही वर्ष उसकी औरत ने उसे जहर खिला दिया जिससे वह मर गया और उसका बेटा अब्दुलमलिक खिलाफत पर बैठा। उसने यूसुफ के बेटे हज्जाज को ईरान की हकूमत दी। हज्जाज ने हिंद और सिंध की फतह के लालच से सईद को मकरान में भेजा। सईद ने वहां पहुंच कर सफहवी नाम के एक अरब को मार डाला जिसके बैर में अबदुल रहीम के बेटे अबदुल्लाह वगैरः कई अरबों ने जो बनी अलाफी जाति के थे और हज्जाज से बागी थे सईद को मारकर मकराने में कब्जा कर लिया, परन्तु फिर डर कर खुरासान में चले गए। तब हज्जाज ने मुजाआ नाम के एक अमीर को अलाफियों को सजा देने के लिये खुरासान को रवाने

किया । उसने वहां पहुंच कर "अशअब" के बेटे अबदुल रहमान को अलाफियों पर भेजा । वे उसको मार कर सिंध में राजा दाहर के पास चले आए और राजा ने भी मुल्की मसलहत (राजनीति) के लिये उनका आना ठीक समझ कर उनको अपने पास रख लिया ।

फिर एक वर्ष पीछे मुजाआ भी किरमान में मर गया और उन्हीं दिनों में खलीफा अबदुलमलिक भी फौत हुआ । वलीद जो उसका बेटा था गद्दी पर बैठा । तब हज्जाज ने महम्मद हारूब को हिंद सिंध और अलाफियों का काम पूरा करने के लिये भेजा । उसने ५ महीने में वलायत मकरान और बाज़े इलाकों का काम ठीक किया ।

कन्नौज के राजा का दाहर पर चढ़ आना और दाहर का अरबों के छल से फतह पाना ।

जब हिंदुस्तान के राजाओं ने राय दाहर के ज़ोर पकड़ने का हाल सुना तो आपुस में सलाह करके कहा कि दाहर के आने से पहिले हमको उसपर जाना चाहिए। तब कन्नौज का राजा रणमल्ल उन सब राजाओं को साथ लेकर अलोर पर चढ़ आया । दाहर ने घबरा कर भरेमन वज़ीर से सलाह पूछी । उसने कहा कि लड़ाई का काम अरब लोग खूब जानते हैं, उनको साथ लेना चाहिए । दाहर सवार होकर मोहम्मद अलाफी के पास मदद मांगने को गया, मोहम्मद ने कहा कि तू लश्कर बाहर निकाल और एक बड़ा गढ़ा खुदा कर उसको घास से ढकवा दे, फिर जो उपाय सोचूंगा उससे काम बन जायगा । दाहर ने ऐसाही किया । मोहम्मद ने ५०० अरब और सिंधी सिपाही चुन कर रात को रणमल्ल के लश्कर पर छापा

मारा। वहां तो सब लोग गाफिल सोए हुए थे। जब गड़बड़ सुनकर जागे तो आपुस में ही लड़ने मरने लगे, फिर तड़केही महम्मद अलाफी लड़ने आया और कुछ योंही सा लड़कर भागा। वे लोग थोड़े से आदमी देख कर पीछे दौड़े और उस घास से ढके गढ़े में गिर पड़े। दाहर ने सवार होकर ८००० आदमी और ५० हाथी जीते पकड़े और जो मर गए वे अलग थे। फिर उसने भरेमन वज़ीर के कहने से उन सबको छोड़ दिया और इसके सिवाय उनपर बहुत महरबानी भी की क्योंकि यह जीत उसीके उपाय से हुई थी और उसके पलटे में उसकी तर्फ से हुक्म दे दिया कि उसका नाम भी सिक्के में एक तर्फ खोदा जाय।

इस फतह से दाहर ने और भी ज़ोर पकड़ा और आस पास के सब राजाओं को दबाकर २५ वर्ष तक बड़े गरूर और घमंड से हकूमत की। निदान उस घमंड से ही उसका राज गया।

सिंहलद्वीप की लौंडियों का पकड़ा जाना और खलीफा का दाहर से जवाब पूछना।

कहते हैं कि सिंहलद्वीप के राजा ने यवाकीत नाम के टापू से कई लौंडियां कुछ हबशी गुलामों और बहुत से अमोलक रत्नों तथा कपड़ों समेत हज्जाज और खलीफा के वास्ते ८ नावों में भेजी थीं जो समुंदर में तूफान आजाने से सिंध के बंदर देवल* में बह आईं। उन्हें देवल के चोरों ने जो तगामरा जाति के थे लूट लिया। उनके साथ अरब की भी एक स्त्री

* देवल भी उजड़ा पड़ा है उसके खंडहरों के पास टट्टा बसता है जिसे जामनंदा ने सन् ८१० हि० (संवत् १५५२) में बसाया था।

थी । उसने अरबी भाषा में तीन बार हज्ज़ाज को पुकार कर कहा था कि हज्ज़ाज हमारी फ़रियाद सुन ।

हज्ज़ाज ने यह सुनकर बदला लेने के वास्ते ख़लीफ़ा को अर्ज़ी लिखी । ख़लीफ़ा दाहर के धमकाने को एक वज़ील भेजकर चुप हो गया । दाहर ने भी कह दिया कि मुझे ख़बर नहीं है चोर मेरे हुक्म से बाहर, हैं चुरा ले गए होंगे तुम जानो वे जाने ।

हज्ज़ाज ने दाहर का यह जवाब ख़लीफ़ा को लिख कर फिर अर्ज़ की और हुक्म मंगवा कर अबदुल्लाह सलमी को मकरान में भेजा और वज़ील को हुक्म दिया कि ३००० आदमी लेकर सिंध को जाय । वज़ील मकरान से चल कर नेरून के किले में पहुंचा और देवल बंदर को रवाने हुआ ।

अरबों की चढ़ाई और हार ।

दाहर ने जब यह ख़बर सुनी तो अपने बेटे हसेसिया† को बहुत सा लश्कर देकर अरबों से लड़ने को भेजा, सवेरे से पिछले दिन तक ख़ूब लड़ाई हुई, वज़ील मारा गया और बहुत से मुसल्मान क़ैदी हुए ।

हसेसिया बड़ा बहादुर था, उसका जन्म भी एक बहादुरी के मौके पर ही हुआ था जिसके बाबत ऐसा कहते हैं कि एक दिन राय दाहर शिकार को गया था । जंगल में एक शेर निकला, लोग मारने को दौड़े, लेकिन राय सब को रोक कर अकेला उससे लड़ने को गया । हसेसिया की मा पूरे दिनों

† किसी किसी किताब में इसका नाम जैसिंह भी लिखा है, यही सही मालूम होता है ।

पेट से थी। उसको राय से बड़ा प्यार था इसलिये राय को शेर के सामने जाता देखकर वह घबरा गई और एक हांक मार गिर पड़ी। राय जब शेर को मार कर लौटा तो देखा कि रानी तो मर गई है और बच्चा पेट में फिर रहा है। राय ने पेट चिरवा कर उसको निकलवाया और हसेसिया नाम रक्खा जिसके मायने शेर के शिकार के हैं। हसेसिया जब बड़ा हुआ तो बहुत बहादुर निकला।

वज़ील के मारे जाने से नेरून* का राना सम्मति डर गया क्योंकि अरबों के रास्ते की आड़ में वही था और उसने मुफ्त में मारे जाने के डर से अपने भले आदमियों को हज्ज़ाज के पास भेज कर अमाननामा (अभयपत्र) मंगवा लिया। अब्दुल्लाह के बेटे आमिर ने हज्ज़ाज से कहा कि जो तू यह काम मुझे सौंपे तो मैं हिंद और सिंध को जाऊं। हज्ज़ाज बोला कि यह काम तेरी क़िस्मत में नहीं लिखा है मैंने ज्योतिषियों से निश्चय कर लिया है कि सिंध और हिंद मोहम्मद कासिम के हाथ से फ़तह होंगे।

फिर हज्ज़ाज ने ख़लीफ़ा को अर्ज़ी भेजी कि सिंध में लुटेरों ने ऐसी हरकत की है, हुक्म हो तो उन्हें सज़ा देकर मुसल्मानों को क़ैद से छुड़ाया जाय। ख़लीफ़ा ने लिखा कि वह मुल्क बहुत दूर और कम पैदा का है। लश्कर का बहुत खर्च पड़ेगा और नुकसान भी होगा। तब हज्ज़ाज ने फिर लिखा कि मुल्क फतह हो जायगा लश्कर में जितना खर्च पड़ेगा उससे दूना फायदा होगा इसका मैं जिम्मा करता हूं।

---

* नेरून के पास अब हैदराबाद सिंध बसता है।

ख़लीफ़ा ने इजाज़त दे दी । हज्जाज ने कासिम के बेटे और अकील के पोते मोहम्मद को जो उसका चचेरा भाई और जमाई भी था इस काम पर नियत किया ।

[क्रमशः]

-:o:-

सिकन्दर शाह ।

[छठें अंक के आगे ।]

यहां पर हेलीकारनेसस और मैमन ने उसका अच्छा मुकाबला किया किन्तु अन्त में वे गढ़ में दबक कर रह गए । सिकन्दर उनको बाहर न होने देने के लिये वहां पर १००० सिपाहियों का घेरा डलवा कर आप आगे बढ़ा । सिकन्द ने शेष शीत काल के समय में लसिया, पामफेलिया, पिसिडिया आदि स्थानों पर अपना अधिकार जमाते हुए सांगरस नदी के किनारे पर स्थित शहर गारडियम में आकर अपनी सफर का प्रथम वर्ष पूरा किया ।

सिकन्दर का यद्यपि मुख्य मन्तव्य पारस की स्वाधीनता को नष्ट करने का था किन्तु यह बात उसे बहुत ही ज़रूरी ज्ञान पड़ी कि सब से पहिले समुद्र के किनारे पर ही वह अपना आतंक और आधिपत्य जमा लेवे । इधर समुद्र के किनारे किनारे अधिकतर उन यूनानी थीबियन और एथोनियन लोगों की बस्ती थी जो कि असभ्य पोरसी लोगों के गुलाम की भांति जीवन व्यतीत कर रहे थे । यद्यपि यूनान देशान्तर्गत थीबियन और एथिनियन चाहे सिकन्दर के प्रभुत्व से सच्ची प्रीति न रखते हों, परन्तु ऐसे पराधीन लोग सिकन्दर को अपना सच्चा हितैषी करके मानने थे

और वे उसके सहायक होते जाते थे। इसलिये सिकन्दर ने इन प्रदेशों के लेवे में अधिक कठिनता न जान कर जाड़े के शुरू में अपने बहुत से साथियों को यूनान को वापिस भेज दिया। इन वापिस जाने वालों में प्रायः वे ही लोग थे जो कि सिकन्दर की यात्रा के कुछ दिन पहिले ही विवाह करके अपनी नव दुलहिनों को विरहाग्नि से तपता छोड़ कर उस के साथ चले आए थे। उसका इससे यह भी अभिप्राय था कि वे लोग अपनी जन्मभूमि में जाकर उसकी विजय की खबर दें जिसमें कि वहां के लोगों का भी उत्साह बढ़े और वे राज्य कार्य्य सम्बन्धी काम अच्छी तरह करते रहें।

जिस समय सिकन्दर कारिया में आया वहां की विधवा रानी इदा स्वयं उसके पास आई। उसने सिकन्दर के सम्मुख हो कर कहा कि हे पुत्र मेरा बहनोई मुझे निकाल कर आप राज्य का स्वामी बना बैठा है। यह सुनते ही सिकन्दर ने उसका राज्य उसे दिलवाया और आप बहुत दिन तक उसका मेहमान बना रहा। इदा सदा सिकन्दर को पुत्र की तरह मानती रही और सिकन्दर भी उसपर माता की भांति प्रेम करता था। वह सिकन्दर के लिये नित भोजन बना कर भेजती थी। जिस समय सिकन्दर उससे विदा हो कर चलने को था इदा ने पाक विद्या में दक्ष कुछ उत्तमोत्तम रसोइएँ उसके साथ भेज देने चाहे परन्तु सिकन्दर ने उस की इस कृपा के लिये कृतज्ञता स्वीकार करते हुए यह उत्तर दिया कि मेरे गुरू अरस्तू के ये वाक्य ही मेरे जीवन भर के लिये उत्तम से उत्तम भोज्य पदार्थ हैं कि प्रातः काल शौच से निश्चिन्त हो कुछ भोजन करके बाहर जाऊं, रात्रि को

हलका और कम भोजन करूं, मेरे साथ में कैसेही गुलगुले विस्तर क्यों न हो परन्तु सफर में सदा अपनी गठरी पुटरी पर ही आराम करूं।

सिकन्दर की दारा से पहिली लड़ाई।

(ई० पू०) ३३३ में वसंत ऋतु के आरम्भ होते ही सिकन्दर को फिर से मुड़कर कूच करना पड़ा क्योंकि इस समय वह एक ऐसे स्थान में था जो कि एशिया माईनर और सीरिया दोनों प्रदेशों का कोना है जहां पर कि तारस पहाड़ के शिखर और उनसे निकले हुए अड़गढ़ झरनों के कारण वहां की भूमि ऐसी विकट है कि कुछ थोड़े से सैनिक भी वहां रह कर एक बड़ी भारी शिक्षित सेना को सहज ही परास्त कर सकते हैं और इस बात की भी सम्भावना थी कि शायद पारसी सेनापति मीम्नो से कुछ रोक टोक करनी पड़े। इसलिये सिकन्दर ने इस पहाड़ी रास्ते से ही इस तरह निकल जाना बिचारा कि जब तक पारसी फ़ौज उसके मुकाबिले को तय्यार हो तब जब वह स्वयं उसके सर पर जा जमे। सिकन्दर ने सुना कि पारसी सेना शहर तारसस को जलाने के लिये जा रही है और तारसस के जलजाने पर सिकन्दर के वहां से समुद्री सफर का मार्ग बंद हो जाना संभव था, इसलिये वह तारसस को बचाने के लिये बड़ी तेज़ी से पहाड़ी मार्ग तै कर मैदान में आन पहुंचा। इसी प्रकार सफर करता हुआ जिस समय सिकन्दर किडंस नदी पर पहुंचा वह रास्ते के गर्द गुबार से भरा हुआ और थका मांदा तो था ही, नदी के स्वच्छ जल को देख कर वैसे ही पसीना भरा जल में पैठ पड़ा। नदी का पानी बरफ के गलाव का था इसलिये सिकन्दर को उसी समय से इस ज़ोर

से बुखार आने लगा कि उसके मरने जीने की पड़ गई। इसका बड़ा भारी कारण यह था कि मैसीडोनियों का यह नियम था कि यदि किसी हकीम की दवा से बादशाह की तबियत मामूल से और भी अधिक बिगड़े तो वह तुरंत ही कत्ल कर दिया जाता था। इससे डर कर इस बेबसी की अवस्था में भी कोई सिकन्दर को दवा पिलाने की हिम्मत न करता था। अन्त में उसके एक मुँहलगे दोस्त फिलिप ने उसके लिये दवा तय्यार की। इसी अवसर में सेनापति परमिनो ने सिकन्दर को लिख भेजा कि उक्त फिलिप को पारस के बादशाह दारा ने निज कन्या विवाह देने का पण करके आपको विष देने पर राजी किया है अतएव आप को सावधान हो जाना उचित है परन्तु सिकन्दर को फिलिप का अधिक विश्वास था इसलिये जब वह दवा पिलाने आया तब सिकन्दर ने स्वयं उसे वह लेख बतलाया और आप दवा पी गया। दवा पीने बाद कुछ देर के लिये तो सिकन्दर की तबियत और भी बेचैन हो गई परन्तु थोड़ी ही देर में उसे पूर्ण रूप से चेत आगया और वह बहुत जल्द ही आराम हो कर चलने फिरने योग्य हो गया। तब उसने परमिनो के आगे जाकर इसब के दर्रे में जम कर सीरिया का रास्ता रोकने की आज्ञा दी और आप धीरे धीरे समुद्र के किनारे किनारे पश्चिम की तरफ बढ़ने लगा।

[क्रमशः]

—:०:—

सभा का कार्यविवरण।

[६]

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २८ दिसम्बर १९०७ सन्ध्या के ५½ बजे।

स्थान—सभाभवन।

[१] गत अधिवेशन (ता० ३० नवम्बर ०७) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

[२] प्रबन्धकारिणी सभा के ता० ४ नवम्बर और १० नवम्बर के कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

[३] निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गए।

(१) बाबू ओंकार मल, दक्खिन फाटक मिर्जापुर ३) (२) पं० प्यारेलाल शर्म्मा, कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज, शाहाबाद जि० हरदोई १॥) (३) ठाकुर कानसिंह, खवो, पो० दौसा, राज्य जयपुर१॥) (४) बाबू देवनारायण भक्त, डिपटी इनस्पेक्टर आफ स्कूल्स, उत्तरीय विभाग, बस्तर, जगदलपुर, रायपुर ३) (५) बाबू महादेव प्रसाद सेठ, गऊघाट, मिर्जापुर ३) (६) बाबू बालगोविन्द राम, रेलवे स्टेशन, गोचा १॥)।

[४] पं० रामनगीना पांडे का पत्र बिना चन्दे के सभासद चुने जाने के लिये उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह प्रबन्धकारिणी सभा में विचार के लिये भेजा जाय।

[५] सभासद होने के लिये निम्नलिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

(१) बाबू कुंजलाल, मंडी राम दास, मथुरा (२) पं० जीवन राम शर्म्मा, केवलजीवनानन्दौषधालय, बीकानेर (३) बाबू मदन गोपाल, नन्दहसाहू की गली, काशी (४) बाबू नौरंग सिंह, पाठशाला बसरकापुर पो० मेलसड़, बलिया (५) बाबू शारदा प्रसाद

एम० ए० एलएल० बी० काशी (६) पं० छोटे लाल त्रिपाठी, पुरनियां बदोसरांय, जि० बाराबंकी ।

[६] मंत्री ने सभा के सभासद आजमगढ़ निवासी बाबू बलदेव नारायण सिंह की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया ।

[७] निम्न लिखित सभासदों का स्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ—

(१) पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, खेतड़ी, राजपुताना (२) बाबू डुंगर सिंह पटवारी, बुलन्दशहर (३) बाबू अमरचन्द जिमिदार, पटना (४) पं० नारायण लक्ष्मण पड़के, सोलापुर (५) राय देवी प्रसाद वकील कानपुर ।

[८] मंत्री ने सूचना दी कि बिजनौर के पण्डित ऊधोराम शर्म्मा विशारद के नाम जो पैकेट आदि भेजे जाते हैं वे लौट आते हैं और उनका कोई पता नहीं लगता ।

निश्चय हुआ कि पण्डित ऊधोराम शर्म्मा का नाम चन्दा क्षमा किए हुए सभासदों की नामावली से अलग कर दिया जाय ।

[९] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं—

(१) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद—बाल भागवत पहिला भाग, बाल मनुस्मृति, बाल नीतिमाला, अर्थशास्त्र प्रवेशिका और लड़कों का खेल (२) बाबू गिरिधर दास, काशी—गो सेवा से लाभ, रत्न सागर (३) लाला छोटेलाल, काशी—ज्योतिष वेदाङ्ग (४) पं० शंकर राव, काशी—सती उपन्यास (५) पं० मकसूदन लाल, काशी—गुलेनार (६) बाबू जंग बहादुर सिंह जिमिदार, नोखा, जि० शाहाबाद, पंचरुजनाशन, प्लेग निवारण, विसूचिका भयहरण, सुतानन्द प्रकाश २ प्रति (६) एशियाटिक सोसायटी बंगाल, कलकत्ता—Journal and Proceedings For July and August 1907 (७) भारत की गवर्न्मेंट—Linguistic Survey of India Vol IX part III (८) बाबू नन्दलाल वर्म्मा, मथुरा—सन् १९०८ की डायरी २ प्रति (८) पं० रामकृष्णानन्द, कुंअर धाम, गुजरात—राजनीति शतक २४ प्रति

(८) खरीदी गई—List of the more inportant Libraries in India; ऋग्वेद संहिता भाग ३, ४, और ५, पद्मावती, परिणाम, वीरेन्द्र वाजी राव का जीवनचरित्र, भारत का अधःपतन, आनन्द सुन्दरी भाग ४ और ५ ।

[१०] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर, मंत्री ।

इसी दिन ६ बजे संध्या समय लाला छोटे लाल का एक व्याख्यान "ज्योतिष" पर सभाभवन में हुआ । सभाभवन श्रोताओं से भरा हुआ था । बनारस के कलेकृर मिष्टर ई० एच० रडीचे सभापति के आसन पर सुशोभित थे । लाला छोटे लाल ने अपने व्याख्यान को मैजिक लालटैन के चित्रों और दूरदर्शक यन्त्र द्वारा समझाया । व्याख्यान बहुतही सरल और मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद था ।

[१०]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ६ जनवरी सन् १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० सभापति, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एलएल० बी०, बाबू गोपालदास ।

[१] गत अधिवेशन (ता० ८ दिसम्बर १९०७) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] मंत्री ने सूचना दी कि सभा के नियमित मेडलों के लिये ३१ दिसम्बर १९०७ तक कोई लेख नहीं आया परन्तु कुछ लोग इसके लिये लेख लिख रहे हैं । अतः यदि सभा इसकी अवधि कुछ और बढ़ा दे तो उत्तम हो ।

निश्चय हुआ कि फरवरी १९०८ के अन्त तक जो लेख आजांय वे ले लिए जांय और उनकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों

की सब-कमेटी बना दी जाय–बाबू गोविन्ददास, लाला छोटेलाल, बाबू दुर्गा प्रसाद बी० ए०, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० और बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०।

[३] निश्चय हुआ कि सन् १९०८ के लिये सभा के नियमित मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत किए जांय।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव। (The effects of physical conditions on the social life of Northern India)

[४] बुलन्दशहर के बाबू वंशीधर वैश्य का ४ जनवरी १९०८ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सन् १९०८ में न्यायालयों में हिन्दी की सबसे अधिक अर्जियां लिखने वाले को वे २५) रु० और उससे कम अर्जियां लिखने वाले को १५) रु० का पुरस्कार सभा द्वारा दिया चाहते हैं, पर यह पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेगा और न वे मोहर्रिर इसे पा सकेंगे जो वेतन पर सभा की ओर से यह काम करते हैं।

निश्चय हुआ कि बाबू वंशीधर का प्रस्ताव धन्यवादपूर्वक स्वीकार किया जाय।

[५] औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार के विषय पर कुंअर प्रतिपाल सिंह का लेख उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि इसकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों से प्रार्थना की जाय–बाबू श्यामसुन्दर दास काशी, पण्डित माधव राव सप्रे नागपुर, बाबू हनुमान सिंह नागपुर, बाबू हीरालाल नागपुर, बाबू ठाकुर प्रसाद काशी।

[६] मंत्री ने सूचना दी कि ३१ दिसम्बर १९०७ तक किसी महाशय ने बाबू राधाकृष्ण दास की जीवनी सभा में नहीं भेजी

परन्तु यदि सभा इसकी अवधि कुछ और बढ़ा दे तो उन्हें आशा है कि कुछ लोग उनकी जीवनी अवश्य भेजेंगे ।

निश्चय हुआ कि इसके लिये तीन मास का समय और बढ़ा दिया जाय और ३१ मार्च १९०८ तक जो जीवनियां आजांय उन पर विचार करने के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय–महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास, पण्डित रामनारायण मिश्र ।

[७] निश्चय हुआ कि सन् १९०७ के लिये कालिशङ्कर व्यास मेडल किसको दिया जाय इस विषय पर विचार करने के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय–बाबू श्यामसुन्दर दास, पण्डित रामनारायण मिश्र, लाला छोटेलाल ।

[८] बनारस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का २ दिसम्बर १९०७ का रिजोल्यूशन नं० ३८ सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा के पुस्तकालय के लिये ५०)रु० की वार्षिक सहायता देना निश्चय किया था।

निश्चय हुआ कि बनारस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को इसके लिये धन्यवाद दिया जाय ।

[९] पण्डित माधव प्रसाद पाठक का ३० नवम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने ग्रन्थमाला के सम्पादन से इस्तीफा दिया था ।

निश्चय हुआ कि उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू श्यामसुन्दर दास ग्रंथमाला के सम्पादक चुने जांय ।

[१०] बाबू शिवप्रसाद गुप्त का २३ दिसम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि हिन्दी कोश कमेटी में दो सज्जनों के नाम और बढ़ा दिए जांय ।

निश्चय हुआ कि यह पत्र कोश कमेटी के पास विचार कर सम्मति देने के लिये भेज दिया जाय ।

[११] बाबू श्यामलाल का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि हिन्दी ग्रंथों को प्रकाशित करने के लिये सभा एक ग्रंथप्रकाशक मण्डली स्थापित करे ।

निश्चय हुआ कि हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशित करने का काम यह सभा तथा अन्य कई सभाएं कर रही हैं। अतः सभा की सम्मति में ऐसी मंडली स्थापित करने की कोई विशेष आवश्यकता अभी नहीं है।

[१२] पण्डित सुमित्रा प्रसाद शर्म्मा के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए (क). सभा के पैकेट पत्रादि पर नागरी अक्षरों में पता लिखा जाया करे। (ख) नागरी के प्रचार के लिये और अर्ज़ीनवीस नियत किए जांय और वे जितनी अर्जियां लिखें उसके अनुसार उन्हें वेतन दिया जाय। (ग) जगह जगह सभा की ओर से उपदेशक और डेप्युटेशन भेजे जाय। (घ) हिन्दूकालेज तथा अन्य स्कूलों में दूसरी भाषा संस्कृत अवश्य रक्खी जाय।

निश्चय हुआ कि (क) यथासम्भव इसका पालन किया जाय (ख) धनाभाव से सभा इस समय इसे नहीं कर सकती (ग) इसके लिये न तो सभा में द्रव्य ही है और न उपयुक्त मनुष्य ही मिलते हैं (घ) इस विषय में वे कृपाकर हिन्दूकालेज से पत्र व्यवहार करें

[१३] काशी स्वोन्ति सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि सभा द्वारा प्रकाशित सब पुस्तकें उनके पुस्तकालय के लिये बिना मूल्य दी जांय।

निश्चय हुआ कि यदि वे सभा द्वारा प्रकाशित सब पुस्तकें एक साथ खरीद लें तो उन्हें वे अर्द्ध मूल्य पर दी जांय।

[१४] बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि कुंअर कन्हैया जू ने पृथ्वीराज रासे का जो कई मास का कार्य केवल एक मास में रात दिन परिश्रम करके समाप्त किया है उसके लिये उन्हें मासिक वेतन के अतिरिक्त ४०) रु० पुरस्कार की भांति दिया जाय।

[१५] निश्चय हुआ कि हिन्दी पुस्तकों की खोज के सुपरैंटेण्डेण्ट को अधिकार दिया जाय कि यदि वे आवश्यक समझें तो तीन मास तक के लिये एक मनुष्य बाबू अमीरसिंह की सहायता के लिये उपयुक्त मासिक वेतन पर नियत करलें।

[१६] निश्चय हुआ कि पुस्तकालय के निरीक्षक और सभा के मंत्री को अधिकार दिया जाय कि वे लोग पुस्तकालय के बजेट के अनुसार जिन हिन्दी पुस्तकों को उचित समझें पुस्तकालय के लिये खरीद लें।

[१७] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगलकिशोर, मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब ।

दिसम्बर १९०७ ।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	१८२	५	६	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७२	५	११
सभासदों का चन्दा	६५	२	०	पुस्तकालय	५४	६	४½
पुस्तकों की बिक्री	७८	७	८	पृथ्वीराज रासो	२०	३	०
रासो की बिक्री	४५	४	०	नागरी प्रचार	२३	०	०
हिन्दी भाषा का कोश	५	०	०	पुस्तकों की खोज	२५	०	०
पुस्तकालय	५७	८	०	फुटकर	१३	३	०
फुटकर	७	१०	६	डांक व्यय	५४	३	६
स्थायी कोश	१८	०	〃				
जोड़	४७१	५	८	जोड़	२६२	५	८½
				बचत	२०८	१५	११½
				जोड़	४७१	५	८
देना ६०००)							

जुगुलकिशोर,
मंत्री

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] फर्वरी १९०८। [संख्या ८

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु मूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।
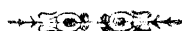
विविध विषय।

"यशोहर" नाम के बंगभाषा के पत्र में एक बढ़ई का वृत्तान्त छपा है जो उसी जिले का रहने वाला है। इस जिले से होकर जो रेलवे लाइन गई है उसी पर नाभारन नाम का स्टेशन है। इस स्टेशन से डेढ़ कोस दक्खिन की ओर रामपुर नाम का एक गांव है जहां का रहने वाला यह बढ़ई

है। इसका नाम द्विजवर है। सामान्य गँवैए बढ़इयों की तरह यह किसानों के औज़ार आदि बनाकर अपनी रोटी चलाता है, पर इसकी बुद्धि बड़ी विलक्षण है।

एक दिन की बात है कि द्विजवर अपनी झोपड़ी वाली दूकान में बैठा हुआ तमाकू पी रहा था कि इसी बीच में बाइसिकल चलाता हुआ एक अंगरेज सदर से उसकी दूकान के सामने से निकल गया। यह कोई साल भर की बात है। बाइसिकल देखकर द्विजवर बड़ा चकित हुआ क्योंकि उसे गांव के बाहर जाने का मौका नहीं मिला था और उसने बाइसिकल नहीं देखी थी। जिस दिन उसने बाइसिकल देखी उसी दिन से वह गांव में कहता फिरता था कि क्या ऐसी गाड़ी यहां नहीं बन सकती। इसी बीच में उस गांव के जमींदार बाबू ने एक बाइसिकल मंगवाई। द्विजवर इस गाड़ी को एक नजर खूब अच्छी तरह देख आया और अपनी दूकान पर आकर उन्हीं गँवैए औजारों से काट छील कर बबूल की लकड़ी का हल्का पहिया और लोहे का एक छोटा पहिया (जो बाइसिकल को चलाता है) उसने बनाया और लोहे की जंजीर लगा उसने एक बाइसिकल बना डाली। फिर उस पर चढ़ने का अभ्यास करके उस पर चढ़ने और दो तीन कोस तक जाने लगा। यह गाड़ी उसने गांव के जमींदार को भी दिखलाई और उस पर उन्हें चढ़ाया, उन्होंने कहा कि इस पर बैठने का स्प्रिंग नहीं है।

इसी तरह आकाश में चीलों को उड़ते देख कर उसने बिचारा कि क्या चीलों की तरह और जीव नहीं उड़ सकते। यह सोच कर उसने एक चील को मारा और उसके डैनों को

काट कर लोथ और डैनों को अलग अलग तौला। फिर स्टेशन पर जा कर अपने को तौलवाया, और इस अंदाज से मनुष्य शरीर के लिये वह उपयोगी पंख बनाने लगा। इन पंखो के द्वारा वह दस बारह हाथ तक उड़ सकता है। इस बढ़ई की बुद्धि निस्सन्देह बड़ी विलक्षण है। यदि इसने शिक्षा पाई होती और कल पुर्जों का काम सीखा होता तो न जाने यह क्या क्या करता।

* *
*

मुरादाबाद से पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य सूचना देते हैं कि इलाहाबाद युनिवर्सिटी की आगामी मैट्रिक्यूलेशन परीक्षा में जो विद्यार्थी संस्कृत में सब से अधिक नम्बर पावेगा उसे वे सुनहली रिस्ट वाच देंगे और जो हिन्दी में सब से अधिक नम्बर पावेगा उसे वे चांदी की रिस्ट वाच देंगे।

इसी प्रकार हाइस्कूल स्कालरशिप परीक्षा में संस्कृत में सब से अधिक नम्बर पाने वाले विद्यार्थी को सुनहली जेबी घड़ी तथा हिन्दी में सब से अधिक नम्बर पाने वाले को चांदी की घड़ी देने की उन्होंने सूचना दी है। जो विद्यार्थी इन उपहारों के पाने के योग्य होगा तथा इन्हें लिया चाहेगा उसे आगे भी संस्कृत या हिन्दी पढ़नी होगी। पण्डित जी का उत्साह सराहनीय है।

* *
*

शनिवार ता० १ फर्वरी को संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर मिस्टर सी० एफ० डी ला फॉस दिन के साढ़े ग्यारह बजे सभा में पधारे थे। उस समय उनसे मिलने

के लिये महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दरदास, मिस्टर ई० ग्रीव्स, मिस्टर ए० सी० मुकर्जी और बाबू जुगुलकिशोर उपस्थित थे। डाइरेक्टर साहब ने पहिले सभाभवन को देखा और तब आफिस में बैठकर कोई सवा घंटे तक सभा के इन प्रतिनिधियों से अनेक विषयों पर बात चीत की। हिन्दी कोश, पुस्तकों की खोज आदि तथा हिन्दी के सम्बन्ध में अनेक बातें हुईं जिनका फल यथासमय प्रकाशित किया जायगा। मिस्टर डि ला फॉस सभा की सब बातों को जानकर बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने इसके कार्यों की प्रशंसा करके अपनी सहानुभूति प्रकट की।

:o:

ज्योतिष प्रबन्ध।

[सातवें अंक के आगे]

ग्रह।

सूर्य पृथ्वी और इसके उपग्रह चन्द्र का वर्णन हो चुका। अब ग्रहों का वर्णन किया जाता है। ऊपर लिखा जा चुका है कि जो तारे सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं उनको ग्रह कहते हैं। ऐसे ग्रह तो बहुत से हैं, परन्तु आठ ग्रह बड़े हैं इस लिये इन्हींका वर्णन यहां लिखा जाता है और शेष ग्रह इतने छोटे हैं कि वे दूरवीक्षण यंत्र द्वारा दिखाई देते हैं सो भी उनका आकार इतना क्षुद्र है कि उनकी गति इत्यादि स्पष्ट रीति से नहीं जानी जा सकती।

उन्नीसवां चित्र
बीसवां चित्र
मं
व
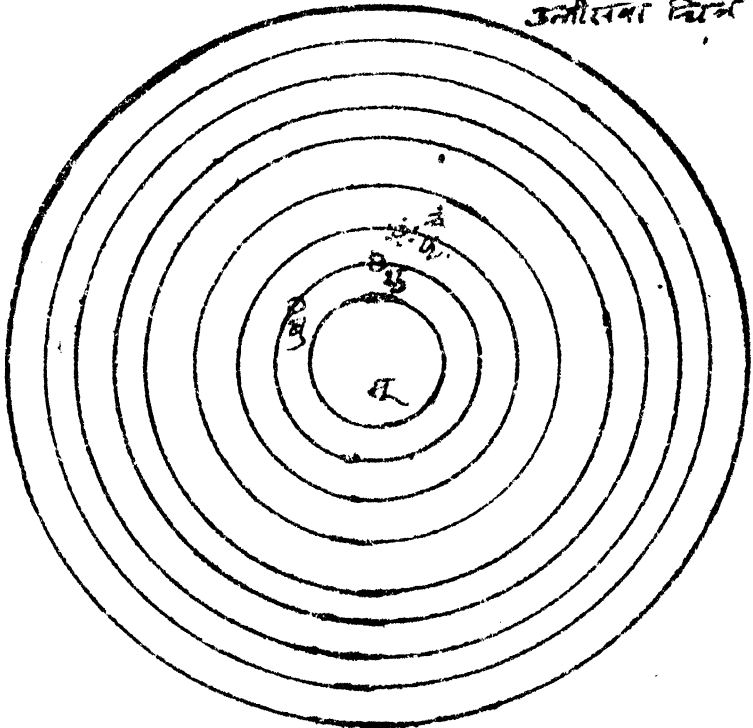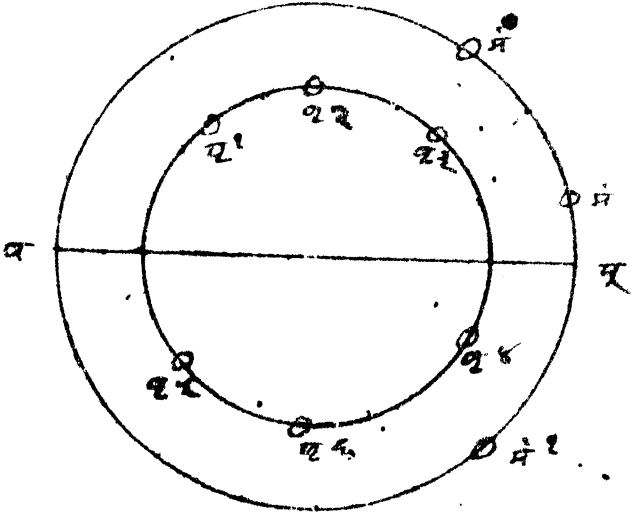
पहिले इसके कि ग्रहों का वर्णन किया जाय, यह दिखा देना उचित है कि उनके स्थान आकाश में किस क्रम से हैं।

उन्नीसवें चित्र से प्रगट होगा कि दो ग्रह ऐसे हैं जिनकी कक्षाएं पृथ्वी की कक्षा के भीतर हैं और शेष ग्रहों की कक्षाएं उसके बाहर। जिनकी कक्षाएं भूकक्षा के घेरे के अन्दर हैं वे लघुग्रह (Inferior planets) कहाते हैं, जैसे बुध औ शुक्र। और जिनकी कक्षाएं बाहर हैं वे प्रधान ग्रह (Superior planets) कहलाते हैं, जैसे मंगल, वृहस्पति इत्यादि।

ग्रहों की वक्र गति।

ऐसा देखने में आता है कि एक ग्रह कभी पूरब से उदय होकर पश्चिम को जा रहा है, परन्तु कुछ दिन पश्चात वही ग्रह फिर पूरब को लौट आता मालुम देता है। इसका कारण क्या है? [चित्र नं० २०]

मान लो कि पृ१ पृथ्वी से मं मंगल ग्रह पूर्व से उदय होता दिखाई देने लगा। जब पृ२ पर पृथ्वी आई तो मंगल निकट होता गया मानों वह पूरब से पश्चिम को जारहा है। जब पृथ्वी पृ३ स्थान पर आगई तब दोनों स्थिर दिखाई देने लगे अर्थात् उनकी गति मन्द हो गई। फिर जब पृथ्वी पृ४ पर पहुंची और मंगल भी चल कर मं१ स्थान पर आया तो मालूम देगा कि मंगल पीछे हटा जाता है अर्थात् वह पूरब को लौटा आता है।

यद्यपि वह भी पृथ्वी के घूमने की ओर जारहा है, तौ भी स्थान भेद से पीछे हटता हुआ प्रतीत होता है, इसीको वक्रगति (Retrograde motion) कहते हैं।

बुध।

सूर्य के निकट यह ग्रह है। ग्रहों में भी यह सब से छोटा ग्रह है। बुध का व्यास २९९२ मील का है और परिधि लग भग ९४७३ मील की हैं। यद्यपि यह ग्रह अन्य ग्रहों की अपेक्षा सूर्य के बहुत निकट है, तो भी इस की मध्यम दूरी ३५९८१००० मील है और यह लग भग ८७ दिन २३ घ० १५ मि० में सूर्य की परिक्रमा पूरी कर लेता है।

सूर्य के निकट रहने के कारण न तो वह स्पष्ट दिखाई देता है और न बहुत देर तक देखने में आसकता है। सूर्योदय से कुछही देर पहिले दिखाई देकर सूर्य के प्रकाश तेज में मंद होजाता है और सूर्यास्त के कुछ बाद दिखाई देकर अस्त हो जाता है, इसलिये इसके विषय में अधिक बातें नहीं जानी गई हैं।

शुक्र।

बुध के बाद शुक्र ग्रह की कक्षा है। इसकी मध्यम दूरी ६ ७२ ४५००० मील है। इसका व्यास ७६६० मील अर्थात पृथ्वी के समान है। यह ग्रह भी चन्द्र के समान घटता बढ़ता रहता है। इसका परिक्रमण काल २२४ दि० १६ घं० ४८ मि० के लग भग का है। यह ग्रह पृथ्वी के बहुत निकट है। यदि यह उदय वा अस्त के समय अपने पात पर किंवा उसके निकट रहे तो सूर्य बिम्ब में से एक छोटा काला गोल पदार्थ सा जाता दिखाई देता है। इसको 'शुक्र बेध, (Transit of Mercury) कहते हैं।

इस ग्रह में वायू का होना पाया जाता है।

मंगल।

शुक्र के बाद पृथ्वी की कक्षा का क्रम सौर जगत में है, फिर इस के आगे मंगल है। इस ग्रह की कक्षा पृथ्वी की कक्षा के बाहर है। सूर्य से इसकी मध्यम दूरी १४१६५००७० मील है।

परिक्रमण काल— ६८६ दि० २३ घं० ३१ मि० के लगभग।

परिभ्रमण काल— २४ घ० ३७ मि० २२.६७ मि।

मंगल का व्यास— ४२११ मील

इसकी कक्षा क्रान्तिवृत्त पर २४° ५०′ का कोण बनाती है। यह ग्रह सूर्य और भूमि के बीच में नहीं आता, इसलिये इसकी कला घटती बढ़ती नहीं, परन्तु जब यह सूर्य के निकट होने लगता है तब दूरवीक्षण यंत्र द्वारा इसका बिम्ब चौदस के चन्द्र की तरह कुछ खण्डित प्रतीत होता है।

इस ग्रह में कुछ लाली झलकती है और इसके पृष्ठ पर लाल रंग के जाल दिखाई देते हैं, उससे अनुमान किया जाता है कि इसके पृष्ठ पर वायु कम घनी होगी। इसके उक्त जालवत चिन्ह घूमते दिखाई देते हैं, जिससे परिभ्रमण काल निकाला जाता है, अर्थात् यदि इसके किसी विशेष चिन्ह को देखा करें तो वह एक सिरे से दिखाई देकर दूसरे सिरे पर जाकर लुप्त हो जाता है और फिर कुछ दिनों बाद दिखाई देने लगता है। इसका परिभ्रमण काल २४ घ० ३७ मि० २७ सि० है।

मंगल के उपग्रह।

मंगल ग्रह के साथ दो उपग्रह भी हैं, जो इसकी परिक्रमा करते रहते हैं। ये उपग्रह दूरवीक्षण यंत्र से ही दिखाई देते हैं, यों नहीं। इनकी दूरी मंगल ग्रह से १४६०० मील और ५७०० मील की है।

क्षुद्र ग्रह ।

उक्त ग्रह के बाद बहुत से क्षुद्र ग्रह ऐसे हैं जो सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं । ये इतने छोटे हैं कि दूरदर्शक यंत्र से भी कठिनता के साथ जाने जाते हैं । इसलिये इनका थोड़ाही सा वर्णन दे दिया गया है ।

वृहस्पति ।

मंगल से परे बड़ा ग्रह वृहस्पति है । इसकी दूरी सूर्य से ४८३६७८००० मील की है । इसका व्यास ८६००० मील का है ।

परिक्रमण काल— ११.९ वर्ष

परिभ्रमण काल— ९ घं० ५५ मि०

क्रान्तिवृत्त पर इसकी कक्षा का झुकाव ३०° का है ।

वृहस्पति के उपग्रह ।

इसके पांच उपग्रह हैं, जिनके व्यास इत्यादि नीचे लिखे जाते हैं ।

उपग्रह	व्यास	परिक्रमण काल			वृहस्पति से दूरी
उपग्रह	मील	दि०	घ०	मि०	मील
नम्बर १	२४००	१	१८	२९	२६००००
" २	२१००	३	१३	१८	४१४०००
" ३	३४८०	७	४	०	६६००००
" ४	२९००	१६	१८	५	११६१०००
" ५	१००	०	११	५७	६७०००

शनि ।

इसका व्यास ७०५०० मील का है और इसकी मध्यम दूरी सूर्य से ८८६७७९००० मील की है । इस ग्रह में एक विचित्र

बात यह देखने में आती है कि उत्तम दूरदर्शक यंत्र द्वारा यदि इसे देखें तो ऐसा मालूम देता है कि यह ग्रह एक चमकीले पटके के बीच में है-इसे कटिबंध कहते हैं । यह पटका ३ लड़ का दिखाई पड़ता हैं ।

इसका परिक्रमण काल—२९½ वर्ष

परिभ्रमण काल—१० घं० १५ मि०

उपग्रह	शनि से दूरी	परिक्रमण काल		
		दि०	घ०	मि०
नं० १	१२१००० मील	०	२२	३७
,, २	१५५०००	१	८	५३
,, ३	१९२०००	१	२१	१८
,, ४	२४६०००	२	१७	४१
,, ५	२४४०००	४	१२	२५
,, ६	३९७०००	१५	२२	४१
,, ७	१००८०००	२१	७	७
,, ८	२३१७००००	७९	७	५७

युरेनस ।

यह ग्रह पहिले पहल सन् १७८१ में देखा गया था । इसको मि० हरशल नामक एक विख्यात ज्योतिषी ने देखा था ।

इसका व्यास—३१७००० मील

सूर्य से इसकी मध्यम दूरी—१७८३३८३००० मील

इसके कक्षा का झुकाव क्रान्ति वृत्त पर—.८२°

नेपचून ।

इसके ४ उपग्रह हैं, परन्तु इनमें एक विचित्रता यह है कि अन्य ग्रहों के सदृश वे पछिम से पुरब की ओर नहीं

घूमते किन्तु वे पूरब से पच्छिम की ओर जाते हैं। यह ग्रह इतना दूर है कि बिना दूरदर्शक यंत्र के कदाचितही दिखाई दे सकता है। यह ग्रह सन् १८४६ में जाना गया है।

इसका व्यास-३४५०० मील

सूर्य्य से इसकी मध्यम दूरी-२७९४०००००० मील

यह ग्रह इतनी दूर है कि इसका परिभ्रमण काल अब तक नहीं जाना गया है। इसका एकही उपग्रह है, जिसका परिक्रमण काल ५ दि० २१ घ० २ मि० का है। अनुमान किया जाता है कि यह उपग्रह लगभग हमारे चान्द के बराबर का होगा। इसकी भी गति उलटी है। यह ग्रह छोटा और बहुतही दूर होने के कारण दूरदर्शक यन्त्र की सहायता के बिना नहीं दिखाई दे सकता।

[समाप्त]

हिन्दूस्तान का इतिहास।

(सातवे अंक के आगे)

तीसरा अध्याय।

अरबों की सिंध पर चढ़ाई, जीत, और ब्राह्मणी राज की समाप्ति।

मोहम्मद बिन कासिम (कासिम का बेटा) उस समय १७ वर्ष का गबरू जवान था और "बसरे" का हाकिम था जो अरब में समुन्दर के किनारे का १ बंदर था। चचा के हुक्म से हव सिंध जैसे काले कोस दूर देश पर चढ़ाई करने के लिये सन् ९२ (संवत् ७६८) में बसरे से ईरान के मशहूर

शहर शीराज में आया और ६००० ऊंट के सवारों, सामान असबाब और रसद से लदी हुई ६०००, उटनियों के साथ मकरान को रवाना हुआ। मकरान से मोहम्मद हारून बीमार होने पर भी हज्जाज के हुक्म से उसके साथ होगया और अरमन बेले में पहुंच कर मरगया।

उधर हज्जाज ने ५ "मजनीक" (गोफन) और किले तोड़ने के सामान ५ नावों में लदवाकर मुगीरा और खजीम के साथ समुंदर के रास्ते से सिंध को भेजे। उनको यह हुक्म था कि देवल बंदर से मोहम्मद कासिम के साथ हो जावें।

जब मोहम्मद कासिम अरमन बेले को फतह कर के देवल के पास समुन्दर के किनारे पर पहुंचा तो वहां मुगीरा और ख़ज़ीम भी उसे मिल गए।

हसेलिया उन दिनों नेरून के किले में था क्यों कि दाहर ने जब यह बात सुनी थी कि संपति ने हज्जाज से अभय पत्र मंगा लिया है और उसको माल गुजारी देने का बचन दे दिया है तो उसने संपति को अपने पास बुलाकर हसेलिया को नेरून में भेज दिया था।

हसेलिया ने जब मोहम्मद कासिम के आने की खबर सुनी तो अपने बाप दाहर को लिखा। उसने अलाफियों से सलाह पूछी तो उन्होंने कहा कि यह हज्जाज का चचेरा भाई है और बड़ा जंगी लश्कर लेकर आता है तू कभी इससे मत लड़ना।

मोहम्मद कासिम की डाक।

मोहम्मद कासिम देवल के पास खंदक खोदकर बैठ गया और यहां तक पहुंचने का हाल हज्जाज को लिखा

जो उस वक्त बगदाद में था। कहते हैं कि ७ दिन में खबरें आती जाती थीं। ०

हज्जाज तेज चलने वाले आदमियों को ऐसा दौड़ाता था कि यहां से बगदाद तक ७ दिन में पहुंच कर वे रोज रोज की खबर एक दूसरे को पहुंचाते थे और जैसा वहां से हुक्म आता वैसाही यहां मोहम्मद कासिम भी करता था।

देवल के किले का टूटना।

देवल के किले में १ मंदिर ४० गज ऊंचा था और ४० गज़ही का उस पर शिखर था। देवल के हिन्दू उसके नीचे जम कर बेधड़क मुसलमानों से लड़ने को तयार हुए। जब कई दिन इसतौर से बीते तो १ ब्राह्मण किले में से आया, अमां मांगकर अबुल कासिम से मिला और कहने लगा कि मुझे अपनी किताबों से ऐसा मालूम हुआ है कि यह देश मुसलमानों को फतह हो जायगा, इस फतह का वक्त भी यही है और मुझे भरोसा है कि फतह करने वाला भी तूही होगा। इस लिये तुझे रास्ता बताने को आया हूं अगले लोगों ने इस मंदिर के झंडे में १ तिलिस्म(टोटका) बांधा है वह जब तक नहीं टूटेगा किला फतह न होगा।

मोहम्मद कासिम यह सुन कर उस कामकी फिकर करने लगा। तब जउबा नाम मंजनीकी (गोफन वाले) ने कहा कि जो तू मुझे १०००० दीनार (मुहरें) इनाम की देतो मैं शर्त करता हूं कि ३ चोट में यह झंडा और गुंबद (शिखर) उड़ा दूंगा। मोहम्मद कासिम ने हज्जाज की मंजूरी मंगाकर जउबा को मंजनीके मारने का हुक्म दिया। उसने जैसा कहा था वैसाही ३ चोट में कर दिखाया। तब तो मुसलमानी

लश्कर लाम बांधकर किले पर चढा। किलेवालों ने आकर अमां मांगी। मोहम्मद कासिम ने कहा कि सिपाहियों को अमां नहीं है। यह सुनकर किलेदार तो कोट पर से कूद कर भाग गया और किलेवालों ने दरवाजे खोल दिए तो भी ३ दिन तक लड़ाई होती रही, फिर जो मुसल्मान कैद थे छोड़ दिए गए, खूब लूट हाथ लगी और वह मंदिर जिसका नाम देवल था तोड़ कर मसजिद बना दिया गया।

कैदी मुसल्मानों का रखवाला केला नाम १ हिन्दू था। जब वे कैदी छूटे तो मालूम हुआ कि केला कैदियों को तसल्ली देकर मुसल्मानों की फौज के पहुंचने की बधाई दिया करता था इसलिये मोहम्मद कासिम ने उसे बुलाकर मुसल्मान हो जाने को कहा। जब वह मुसल्मान होगया तो बड़ी मेहरबानी से उसको दिराये नजदीके बेटे हमीद की शामलात में वहां का हाकिम कर दिया और शरहदों का बंदोबस्त करके मनजनीकों को नावों पर लादा और साकोड़ा दरया के रास्ते से नेरून की तर्फ भेजा, आप खुश्की (स्थल) से रवाने हुआ।

नेरून में मुसल्मानों का अमल।

दाहर ने देवल के टूट जाने की खबर सुन कर हसेसिया को तो नेरून से ब्राह्मणाबाद जाने का हुक्म लिखा और सम्पति को नेरून में भेजा। हसेसिया तो ब्राह्मणाबाद चला गया था और सम्पति अभी रस्ते ही में था कि मोहम्मद कासिम ७ दिन में नेरून जा पहुंचा। शहर वालों ने दरवाजे बंद कर लिए बाहर पानी की तंगी थी मोहम्मद कासिम ने दुआ मांगी, पानी बरसा तलाव भरगए।

५ दिन पीछे सम्पति ने नेरून में पहुंच कर हज्जाज का वह अमान नामा अपने भले आदमियों के साथ मोहम्मद कासिम के पास भेजा और शहर वालों के दरवाजे बंद कर लेने के कसूर की माफी मांग कर हाजिर होने की इजाजत चाही। मोहम्मद कासिम ने कहा कि शहर वालों को सजा देना तो जरूरी था पर तेरी शिफारिस से माफी दी जाती है अब तू जल्दी आ और दरवाजे खोल दे।

नेरुन में अमल।

सम्पति ने दरवाजे खोल दिए और कुंजियां और नजराना लेजाकर वह मोहम्मद कासिम से मिला और खाने पीने की सब चीजें उसके पास पहुंचाई मुसल्मानों के लश्कर ने शहर में जाकर मंदिर तोड़े मसजिद और मिनारों की नींव रखकर मुवज्जन (बांगदेने वाले) इमाम (नमाज पढ़ने वाले) और शहने (कोटवाल) मुकर्रर किए, फिर मोहम्मद कासिम संपति को साथलेकर आगे बढ़ा। जब ३० कोस चल कर गांव लोच (वा मोच) में पहुंचा तो सम्पति ने सेवस्थान के राना बछरा चन्द्रा के बेटे को लिखा कि अरब का यह लश्कर बहुत बलवान है तू अपनी और प्रजा की भलाई के लिये इसकी सेवा में आ जा। मोहम्मद कासिम का बचन बहुत मज़बूत हैं परन्तु बछरा ने नहीं माना और वह लड़ने को तयार हुआ। मुसल्मानों ने धावा करके सेविस्तान को घेर लिया बछरा ७ दिन लड़ा पर फिर हार कर भागा और सेम के राना बोधा के पास चला गया जो काका का बेटा और कौतक का पोता था।

सेविस्तान में अमल और सेम पर चढ़ाई।

मोहम्मद कासिम सेवस्तान वा सुस्तान के किले में क़ब्ज़ा करके उन लोगों पर मेहरबानी करता रहा जिनको सम्पति उसके पास लाता गया। फिर उसने सेम पर कूच किया। बछरा और बोधा लड़ने की तयारी करके छापा मारने की इजाज़त लेने के लिये काका चन्ना के पास गए जो बोधा का बाप था। उसने कहा कि मैंने ज्योतिषियों से सुना है कि मुसल्मानों की फौज इस देश को ले लेगी और उसका यही वक्त है तुम हरगिज़ ऐसा काम न करो। उन्होंने नहीं माना और छापा मारने को गए पर रस्ता भूल कर रात भर भटकते रहे और बिछड़ कर तंग होगए, जब दिन निकला तो सब सेम के पासही थे तब पछताकर फिर काका के पास गए। वह बोला कि तुम मुझको बहादुरी में अपने से कम मत समझो पर इन लोगों से लड़ने में फायदा नहीं है। यह कह कर वह खुद मोहम्मद कासिम के पास गया और अपने लोगों के लिये अमाननामा ले आया। मोहम्मद कासिम ने कैस के बेटे अब्दुलमलिक को काका के साथ भेजा और कह दिया कि जो ये लोग बंदगी करें तो मेरे पास ले आना नहीं तो सजा देना। हिंदू उससे लड़े और हार कर भलटोर, सालोज, और कंदायल के किलों में चले गए, अबदुल्मलिक की जीत रही।

इतने में ही हज्जाज का हुक्म पहुंचा कि मोहम्मद कासिम नेरून में जाकर महरान दरिया (सिंध नदी) से उतरे और दाहर पर चढ़ाई करे।

चन्नो जाति के लोगों की ताबेदारी।

चन्ना क़ौम के लोगों ने जिनका सिंध में बड़ा थोक था

कई गांवों से आकर एक आदमी को खबर लाने के वास्ते. भेजा वह उस वक्त पहुंचा कि जब सारा लश्कर मोहम्मद कासिम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा था। उसने सब लोगों का एकही आदमी के पीछे उठना बैठना खड़ा होना और सिजदा करना देख कर अपने लोगों के पास आके कहा कि जहां हजारों आदमी एक आदमी की ऐसी ताबेदारी करते हैं कि जब वह खड़ा होता है तो सब उठ खड़े होते हैं और जब झुकता है तो सब झुक जाते हैं, बैठता है तो बैठ जाते हैं और जब सिर टेकता है तो सब सिर टेक देते हैं तो वहां दुश्मनी करना बड़े अभाग की बात है।

यह सुन कर वे लोग नजरें लेकर मोहम्मद कासिम के पास गए और मालगुजारी देना करके लौट आए। मुसल्मानी धर्म शास्त्र में प्रजा से अशर अर्थात् दसवां भाग ज़मीन की पैदा का लेना लिखा है वही इनसे भी लेना ठहरा जिससे मुसल्मान 'फुकहा' अर्थात् धर्माधिकारी लोग नदी से पार की ज़मीन को जो चन्ना लोगों के पास थी अशर यानी दसवें भाग वाली लिखते थे और मोहम्मद कासिम ने इन लोगों का नाम मफ़रूक रक्खा था जिसका अर्थ रिज्क अर्थात् रोटी दिए गए का है, क्योंकि जब ये नज़रें लेकर उसके पास पहुंचे थे तो खाने के वास्ते दस्तरख्वान (बिछौना) बिछाया गया था।

इसी तरह से नेरन कोट की ज़मीन पर भी कि जहां के लोगों ने खुद आकर ताबेदारी क़बूल की थी दूसरी ज़मीन से अब्वाब अर्थात् टेक्स कम थे।

मोहम्मद कासिम का सिंध पर पहुंचना।

फिर मोहम्मद कासिम हज्जाज के हुक्म से लौटकर

महरान [सिंध] के घाट पर रावर और चितोर के बीच में पहुंचा और परवाना भेज कर लसाया के बेटे मोगा को बुलाया। उसने जवाब दिया कि जो मैं यों ही आजाऊंगा तो दाहर ख़फ़ा होगा इसलिये तुम मुझ पर लश्कर भेजो मैं पहिले तो यों ही सा कुछ लडूंगा फिर कैद हो जाऊंगा।

मोगा इस तरह से मोहम्मद कासिम के पास पहुंचकर उसकी मेहरबानी में शामिल हुआ और मुसल्मानों को आगे ले जाने लिये के अगुआ बना।

[क्रमशः]

सिकन्दरशाह।

[सातवें अंक के आगे]

यद्यपि पारस के प्रधान सेनापति तथा पारसी राज्यान्तर्गत समुद्र किनारे के प्रधान शासक मीमन के मारे जाने से पारस के बादशाह दारा को बड़ा दुःख हुआ, परन्तु सिकन्दर की उक्त बिमारी के कारण सिलिका में ठहरे रहने से दारा ने समझा कि वह कुछ डर गया है और सिकन्दर के पश्चिम की तरफ धीरे धीरे कूच करने से तो दारा का दिल फूलकर और भी दूना हो गया। इसलिये उसने एक बड़ा भारी लाव लश्कर सजा और सिलिका में ही सिकन्दर को गिरफ़ार करना विचार कर उसने राजधानी से कूच किया। दारा जिस समय चलता था उसके साम्हने अग्नि सूर्य्य आदि देवताओं के रथ और पारसी पंडे पुजारी धार्मिक गीत गाते हुए चलते थे; उसके सैनिक सवारों के बख़्तर सोने और चांदी के थे। दारा का रथ सोने का बना था और उस में भांति

भांति के बहुमूल्य रत्न इस कारीगरी से जड़े हुए थे कि जिन में आप ही आप नाना प्रकार के बेल बूटे और फल फूल देख पड़ते थे। रथ के दोनों तरफ उसी मीनाकारी में विग्रह और सन्धि सूचक भाव दिखाए गए थे और ध्वजास्थान पर चांदी का गिद्ध बना हुआ था। इसके सिवाय उसके रथ के आसपास उसकी स्त्री लड़की और परिवार की अन्यान्य स्त्रियों के रथ चला करते थे। दारा के साथ में आडंबर का साज सामान इतना ज्यादा था कि उसकी इतनी बड़ी सेना के साथ में भी वह अचल हो रहा था, केवल ६०० खच्चर और तीन सौ ऊंट अशर्फी और जवाहिरात से लदे हुए थे। पारसी सेना को अब तक मालूम था कि सिकन्दर सिलिका में पड़ा हुआ है इसलिये वे लोग तारस पहाड़ की एक शाख अमनस के रास्ते से होते हुए इस समय आ पहुंचे परन्तु जब दारा को वहां पर मालूम हुआ कि सिकन्दर पश्चिमी रास्ते से सीरिया में बैठ पड़ा है केवल उसके साथियों में से कुछ लोग घायल और बीमार पड़े हुए हैं तब पारसी फौज सिकन्दर के घायल सिपाहियों पर ही अत्याचार करने लगी। बहुत से अधमरे घायल और बीमार मार डाले गए। साज सामान लूट लिया गया। बचे खुचे आदमियों ने आगे बढ़ कर जब यह समाचार सिकन्दर को दिया कि दारा पीछे से आता है तब उसने अपना आगे का जाना रोक कर अपनी फौज की लगाम एक दम इसस के पहाड़ों की तरफ मोड़ दी। यद्यपि सिकन्दर के पड़ाव से और इसस से १८ कोस का फासिला था परन्तु वह केवल ८ घण्टे की दौड़ में इसस आन पहुंचा। उसने रात्रि को ही पहाड़ों में डेरा डाले हुई पारसी सेना

को भली भांति देख भाल कर ली और अपनी सेना के दक्षिण भाग को पहाड़ी सिलसिले से लेकर समुद्री किनारे की तरफ इस तरह बिखरा कर लगा दिया कि जिसमें पारसी सेना उसे घेर न सके और वह आप स्वयं वाम पक्ष का सेनापति बन कर बिनारस नदी के बहाव के रुख की चाल देकर प्रातःकाल होते ही पारसी सेना के साम्हने आ पहुंचा; पारसी सेना सिकन्दर को सिर पर आया हुआ देख कर अपने अस्त्र शस्त्र सम्हाल कर साम्हना करने को प्रस्तुत हुई। दारा भी स्वयं सुसज्जित रथ पर सवार होकर अपनी फौज के बीच हो लिया, पारसी सेना को लड़ने के लिये बहुत ही थोड़ी और तंग जगह थी इसलिये वे यूनानी सेना के वाम पक्ष का मुकाबला करने के लिये नदी बिनारस के बहाव की तरफ़ बढ़े। तब तक सिकन्दर अपनी दक्षिण सेना सहित पारसी सेना के बीचोबीच ऐसा घुसा कि उन्हें भागते ही बन पड़ा। यूनानी सिपाहियों के बर्छों से छेदे हुए पारसी सिपाही पहाड़ों में जहां तहां तीन तेरह हो गए। उनका सब साज सामान सिकन्दर के साथियों ने लूट लिया और दारा की स्त्री और उसकी दो अविवाहिता लड़कियां भी गिरफ़ार कर ली गईं।

जिस समय सिकन्दर को मालूम हुआ कि दारा की स्त्री माता और कन्या पुत्रादि उसकी फौज से गिरफ्तार कर लिए गए हैं और वे दारा को मृत समझकर और अपने को शत्रु के हाथ में पड़ा हुआ जानकर अत्यन्त विकल और विह्वल होकर क्रन्दन कर रहे हैं तो उसने कहला भेजा कि दारा मारा नहीं गया है वह रणक्षेत्र से भाग गया है और

वे अपनी बेबसी के लिये भी कोई पश्चात्ताप न करें और न भय खांय, उनकी इज्जत और उनके बड़प्पन में किसी प्रकार का बट्टा नहीं लगा सकता। सिकन्दर को यह मालूम था कि दारा की स्त्री संसार भर में अपने सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है परन्तु उसने इस अवस्था में भी उसके देखने की इच्छा न की। दूसरे दिन उसने दारा की माता से मिलना चाहा। उसने भी अपने विजेता से मिलना स्वीकार किया। जिस समय सिकन्दर उसके सम्मुख गया तो वह एक साधारण सिपाही की पोशाक में था। दारा की माता रोती हुई सिकन्दर के पैरों पर गिर पड़ी। सिकन्दर ने उसे हाथ पकड़ कर उठा लिया और कहा कि "माता आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें।" उसने दारा के नाबालिक पुत्र को भी प्यार से पुचकारते हुए गोद में उठा लिया और कहा कि मैं इसे जगद् विख्यात सूरबीर बादशाह बनाऊंगा। इसके पश्चात सिकन्दर ने दोनों तरफ के सैनिकों को यथोचित रीति से सत्कार के साथ मिट्टी दिलवाई। इस विषय के स्मारक में उसने तीन स्तम्भ बनाए।

जिस प्रकार दारा की स्त्री अपने समय की स्त्रियों में सौंदर्य में एकता थी उसी प्रकार पुरुषों में दारा भी अद्वितीय सुंदर गिना जाता था। अस्तु उसकी दोनों राजकुमारियां अपनी माता से कहीं बढ़ चढ़ कर सुन्दर थीं, इसलिये सिकन्दर के मुसाहबों की इच्छा थी कि वह उन्हें स्वीकार करे परन्तु सिकन्दर ऐसी इच्छा के सर्वथा विरुद्ध था। उसके विचार से एक मात्र विजयलक्ष्मी ही सुन्दर है; सौन्दर्य्य पर मोहित हो कर स्त्रियों के प्रेमपाश में पड़ जाने

से मनुष्य का केवल समय ही नष्ट नहीं होता वरन उसका पौरुष और उसकी आध्यात्मिक शक्तियां भी क्षीण हो जाती हैं और इसलिये स्त्रीलोलुप मनुष्य किसी कठिन कार्य्य के करने में समर्थ नहीं रह सकता अतएव इन्हीं विचारों के आधार पर उसने अपनी सेना में यह आज्ञा दे रक्खी कि उसके साम्हने किसी भी स्त्री के सौन्दर्य्य की प्रशंसा न की जाय। यदि उस के साथियों में से कोई विजित स्त्री पर कुकर्म की दृष्टि से देखता हुआ भी सुना जाता तो वह उसे सख़्त सजा देता था। सिकन्दर ने यद्यपि प्रसिद्ध पारसी सेनापति मीमन की स्त्री पारसिन को जो मीमन के मरने बाद डिमासकस के पास कैद की गई थी अपनी स्त्री बना लिया था किन्तु वह केवल उसकी रूपराशि पर मोहित होकर नहीं वरन इसका कारण पारसिन स्त्री की सहनशीलता थी जो कि स्त्रियों का सच्चा आभूषण है।

[क्रमशः]

सभा का कार्यविवरण।

[११]

प्रबन्धकारिणी सभा।

शनिवार ता० २५ जनवरी १९०८ सन्ध्या के ५ बजे।

स्थान सभाभवन।

उपस्थित।

बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०-सभापति, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू गोपाल दास।

[१] [क] निश्चय हुआ कि संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर के बनारस आने पर महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदि, बाबू श्यामसुन्दर दास, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स और मिस्टर ए० सी० मुकुर्जी का एक डेप्युटेशन उनकी सेवा में उपस्थित होकर निम्न लिखित विषयों पर उनसे निवेदन करे-

[१] बालिकाओं के लिये कसरत तथा सुघड़ दर्जिन नामक पुस्तकें जो सभा द्वारा प्रकाशित हो रही हैं।

[२] सभा जो हिन्दी भाषा का कोश तयार करना चाहती है।

[३] हिन्दी पुस्तकों की खोज।

[४] एङ्गलो वर्नाक्यूलर स्कूलों के मिडल विभाग में पढ़ाई के विषयों का प्रबन्ध।

[ख] शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर से प्रार्थना की जाय कि वे कृपा कर सभाभवन में पधारें और इस अवसर पर सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति उनकी भेंट की जाय।

[२] डाक्टर गणेश प्रसाद भार्गव का १८ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने वैज्ञानिक कोश की सब प्रतियां निम्न लिखित शर्तों पर अर्द्ध मूल्य पर लेने के लिये लिखा था-(क) उन प्रतियों को छोड़ कर जिन्हें सभा अपने काम के लिये अथवा भेंट करने के लिये चाहती हो और सब प्रतियां उनके हाथ बेच दी जांय और सभा उनकी बिक्री न करे (ख) ३१ दिसम्बर १८१० तक सभा वैज्ञानिक कोश का दूसरा संस्करण न निकाले और न उसके शीघ्र छापने की सूचना दे परन्तु यदि इसके पहिले ही कोश की सब प्रतियां बिक जांय तो सभा उसका दूसरा संस्करण निकाल सकती है [ग] वे उसके मूल्य मद्धे फ़रवरी १८०८ से प्रति मास कम से कम १००) रु० सभा को देंगे [घ] वैज्ञानिक कोश की जो मांग सभा में आवे वह उनके पास भेज दी जाया करे [ङ] सभा को अपने काम के लिये अथवा भेंट करने के लिये कोश की जितनी प्रतियां आवश्यक होंगी उसे वे अर्द्ध मूल्य पर सभा को देंगे।

निश्चय हुआ कि डाकृर गणेश प्रसाद भार्गव की ये शर्तें स्वीकार की जांय और वैज्ञानिक कोश की सब प्रतियां उनको भेज दी जांय ।

[३] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर,
मंत्री ।

[७]

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २५ जनवरी सं० १९०८ सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान सभाभवन ।

[१] गत अधिवेशन (ता० २८ दिसम्बर १९०७) का कार्य-विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए :—

(१) बा० कुंजलाल, जोइण्ट सेक्रेटरी, सज्जन सभा, मंडी रामदास, मथुरा ३), (२) पण्डित जीवनराम शर्म्मा वैद्य, केवल जीवनानन्दौषधालय, बीकानेर ३), (३) बाबू मदन गोपाल, नन्दन साहु की गली, काशी १॥) (४) बाबू नौरंग सिंह, मदरसा बसरकापुर, पो० भेलसड, बलिया १॥), (५) बाबू शारदा प्रसाद एम० ए०, एलएल० बी० काशी १॥), (६) पण्डित छोटेलाल त्रिपाठी, ग्राम पुरनिया, पो० बदोसराय जि० बाराबंकी १॥) ।

[३] सभासद होने के लिये निम्न लिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए —

[१] सेठ पोपटलाल हंसराज, जामनगर, काठियावाड़, [२] राव पन्नालाल C/o श्रीमती माणिक जू कामदारिन; पन्ना, [३] बाबू चतुर

भुज सहाय वर्म्मा, छत्रपुर, बुंदेलखण्ड, [४] बाबू मृत्युञ्जय भट्टाचार्य-हथोंज, मलियर, बलिया, [५] ठाकुर देवीदत्त पंड्या, कबीर चौरा, काशी [६] बाबू ताराचन्द, चौधर मोहल्ला, अजमेर [७] पं० सुरेन्द्र-नारायण शर्म्मा, गायघाट, काशी [८] पं० निक्कामिश्र, लाहोरी टोला काशी, [९] बाबू गणपति राय सकसेना, सायन्स टीचर, हिन्दू कालेज काशी [१०] मिस्टर जी० एस० खस्ता, पो० अन्ता, राज्य कोटा।

[४] मंत्री ने सूचना दी कि होशङ्गावाद के पण्डित जुगुल किशोर तिवारी को सभा के वार्षिक चन्दे के लिये जो पत्र भेजा गया था वह डेडलेटर आफ़िस द्वारा लौट आया है, उनका कोई पता नहीं है।

निश्चय हुआ कि पण्डित जुगुल किशोर तिवारी का जब तक कोई पत्र न आवे तब तक उनको सभा द्वारा प्रकाशित कोई पुस्तक वा पत्र न भेजा जाय।

[५] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुई:—

(१) बाबू गोपाललाल खत्री, लखनऊ,–नीतिरत्नमाला भाग १ (२) पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय, निजामाबाद–उद्बोधन (३) बा० श्यामसुन्दरदास बी० ए० काशी, लखनउ की नवाबी द्वितीय खंड (२) पं० रामनारायण मिश्र के द्वारा–हिन्दीशिक्षावली के तृतीय भाग की समालोचना, हिन्दी कालिदास की समालोचना (५) पं० बाबूराम शर्म्मा, मेरट–भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास (६) बच्चाबाबू, काशी–काश्मीर पवन (७) बाबू हरिदास माणिक काशी–महाराणा प्रताप की वीरता (८) बाबू गिरिधर लाल लालमोहरिया, काशी–विन्ध्येश्वरी शतक, विचित्र लटका, मायाविलास भाग ५ और ६, राजेन्द्र कुमार, आख्यानमंजरी, सौतेली मा, कामनी कुसुम नाटक, बुन्देलखण्ड केशरी प्रथम और द्वीतीय भाग, नृसिंहावतार, साढ़ेतीन यार भाग १—८, नेकी बदी नाटक, किस्सा चंपा चमेली, हेकड़ माल बेहया, किस्सा गुलाब केवड़ा, भड़ई बिलास भाग १, किस्सा चमेली गुलाब भाग १ और ३, नागरसभा, मुखंदरसभा, चोंचों का मुरब्बा, चार

दोस्तों की हंसी दिल्लगी । [८] पण्डित ब्रजनाथ शर्म्मा, आगरा-सं० १९६५ का पंचांग । [१०] श्रीयुत मनेजर, राघवेन्द्र, प्रयाग-राबर्ट क्लाइव, गौरीशंकर उदयशंकर ओझा ।

Indian Antiquary for September and October 1907.

[६] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर,

मंत्री ।

इसी दिन डाक्टर शरतकुमार चौधरी का एक सुबोध व्याख्यान "सूक्ष्मजन्तु शास्त्र" पर मैजिक लालटैन के चित्रों सहित हुआ ।

[१२]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ३ फरवरी सं० १९०८ सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स-सभापति, बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०, बाबू जुगुल किशोर, मिस्टर गुन्नी लाल शा, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू माधवप्रसाद, बाबू गोपालदास ।

[१] बाबू जुगुलकिशोर के प्रस्ताव तथा बाबू माधव प्रसाद के अनुमोदन पर रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स सभापति चुने गए । पीछे से सभा के उपसभापति बाबू श्यामसुन्दर दास भी आगए ।

[२] तारीख ६ जनवरी और २५ जनवरी के अधिवेशनों के कार्यविवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

[३] भारतरक्षक के मनेजर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा उनके पत्र के लिये दो ढाई सौ ग्राहक जुटा दे।

निश्चय हुआ कि उनको लिखा जाय कि सभा को दुःख है कि यह कार्य उसकी सामर्थ्य के बाहर है।

[४] बाबू सन्तराम का १२ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने पंजाब के पोस्टमास्टर जनरल के पत्र की नक़ल भेजी थी जिसमें उन्होंने लिखा था कि देवनागरी उस प्रान्त की प्रचलित लिपि नहीं है इस कारण हिन्दी में लिखे हुए पत्र डेडलेटर आफ़िस में भेज दिए जाते हैं।

निश्चय हुआ कि बाबू सन्तराम से पोस्टमास्टर जनरल का वह पत्र मंगवा लिया जाय और यदि उनका लिखना ठीक हो तो पोस्ट मास्टर जनरल से इस विषय में लिखा पढ़ी की जाय। साथही बाबू सन्तराम को लिखा जाय कि वे भी इस विषय में अपने प्रान्त से उद्योग करें।

[५] बाबू माधव प्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यदि सभा उन्हें "आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा" नामक पुस्तक को उर्दू में छापने की आज्ञा दे तो वे उसकी प्रति हज़ार कापी बेचने पर सभा को १५०) रु० देंगे।

निश्चय हुआ कि बाबू माधव प्रसाद को "आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा" के केवल उर्दू संस्करण का कापीराइट निम्न लिखित शर्तों पर दिया जाय--(१) पुस्तक का मूल्य वे बारह आना रक्खें (२) वे जितनी पुस्तकें बेचें उसके पूरे मूल्य पर २०) सैकड़ा कमिशन सभा को दें (३) इस का हिसाब तीन तीन मास पर हुआ करे (४) इस पुस्तक के लिये सभा जो ब्लाक बनवाए उन्हें

वे काम में ला सकते हैं (५) इस पुस्तक के उर्दू संस्करण के लिये जो मांग आवे वह उनको विना कुछ कमिशन लिए भेज दी जाय।

[६] पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य का १८ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि (१) संयुक्त प्रदेश में छठें और आठवें दर्जों में गवर्मेंट ने ऐसा नियम बनाया है कि जो लड़के दूसरी भाषा में उत्तीर्ण न होंगे वे ऊपरवाले दर्जों में न चढ़ाए जांयगे परन्तु हाई स्कूल स्कालरशिप की परीक्षा में दूसरी भाषा नहीं रक्खी गई है जिससे सम्भव है कि कोई लड़का हाई स्कूल स्कालरशिप में पास हो परन्तु दूसरी भाषा में पास न होने के कारण दर्जा न चढ़ाया जाय। इस विषय में सभा को उद्योग करना चाहिए (२) सेकेण्ड फ़ार्म वर्नाक्यूलर की शिक्षा प्रारम्भ से ही आवश्यक होनी चाहिए (३) छठें, सातवें और आठवें दर्जों में संस्कृत के साथ हिन्दी शिक्षा का होना अत्यावश्यक है और (४) मेट्रिक्यूलेशन में हिन्दी की पाठ्य पुस्तक जो मुद्राराक्षस रक्खी गई है वह बहुत ही कठिन और नीरस है।

निश्चय हुआ कि (१) छठें और आठवें दर्जों में दूसरी भाषा के रखने और हाई स्कूल स्कालरशिप के लिये उसे न रखने से जो असुविधा है उसपर गवर्न्मेंट का ध्यान दिलाया जाय (२) इससे सभा सहमत नहीं है (३) छठें, सातवें और आठवें दर्जों में विषयों के समुदाय पर गवर्न्मेंट का ध्यान दिलाया जाय और (४) मुद्राराक्षस के स्थान पर कोई सरल और उत्तम पुस्तक जैसे सत्यहरिश्चन्द्र या शकुन्तला (पिनकट का संस्करण) नियत करने के विषय में भी गवर्मेंट को लिखा जाय।

[७] कालिशङ्कर व्यास मेडल के विषय में सब-कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई कि सन् १९०७ के लिये यह मेडल "सोलंकियों का इतिहास" नामक पुस्तक के ग्रंथकार को देना चाहिए।

निश्चय हुआ कि सब-कमेटी की यह रिपोर्ट स्वीकार की जाय और यह मेडल उपरोक्त पुस्तक के ग्रंथकर्त्ता पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा को दिया जाय।

[८] आगरे के बाबू श्यामलाल का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के संरक्षक, नृपतिगण के अतिरिक्त हिन्दी के विशेष सहायक भी बनाए जांय ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय ।

[९] निश्चय हुआ कि धम्मपद और अशोक के जीवनचरित के कर्त्ता ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा को उपरोक्त पुस्तकों की पचास पचास प्रतियों के अतिरिक्त जो दस दस प्रतियां और दी गई हैं उनका मूल्य उनसे न लिया जाय ।

[१०] काशी की गुर्जर वैश्य सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें उनके पुस्तकालय के लिये कुछ रिआयत के साथ दी जांय ।

निश्चय हुआ कि उनको सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें आधे मूल्य पर दी जांय ।

[११] बांदा के नागरी प्रचारक क्लब का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका उन्हें बिना मूल्य अथवा केवल डाक व्यय लेकर दी जाय ।

निश्चय हुआ कि पत्रिका उन्हें आधे मूल्य पर मिल सकती है ।

[१२] राय शिव प्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पुस्तकालय की सूची विषयक्रम से तयार करने के लिये यह उत्तम होगा कि पुस्तकों की छपी हुई सूची ऐसे सज्जनों के पास भेजी जाय जिन्होंने उनको पढ़ा हो और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे पुस्तकों के नाम के आगे उनका विषय लिख दें ।

निश्चय हुआ कि यह पत्र पुस्तकालय के निरीक्षक के पास सम्मति के लिये भेजा जाय ।

[१३] बाबू युगलकिशोर अखौरी का १४ जनवरी का पत्र तथा मंत्री ने उनको जो उत्तर भेजा था वह सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि मंत्री ने जो उत्तर भेजा है वह ठीक है।

[१४] डाकृर छन्नूलाल मिमोरियल मेडल के लिये आए हुए तीन लेख पण्डित रामनारायण मिश्र के २ फ़रवरी के पत्र के सहित उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि (१) इन लेखों की परीक्षा करने के लिये निम्न लिखत महाशयों से प्रार्थना की जाय —

रायबहादुर डाकृर श्रीपति सहाय एल० एम० एस० काशी। मिस जार्ज काशी। डाकृर चिरंजीव भारद्वाज एल० आर० सी० पी०, एम० डी० लाहौर।

(२) आगामी वर्ष के लिये इस मेडल के लिये निम्न लिखित विषय नियत किया जाय अर्थात "छूतवाले रोग और उनसे बचने का उपाय"। इस विषय पर लेख ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाने चाहिएं।

(१५) निश्चय हुआ कि राधाकृष्ण दास स्मारक के लिये जो द्रव्य एकत्रित हुआ है उसमे उनका तैल चित्र भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और सर एण्टनी मेकडानेल के चित्रों के आकार का बनवाया जाय और तब सभा को यह सूचना दीजाय कि इस फण्ड में कितना रुपया बचा है।

(१६) निश्चय हुआ कि १०) रु० वा इससे कम मासिक वेतन पाने वाले सभा के नौकरों को दुर्भिक्ष के कारण चार मास तक जो एक रुपया मासिक सहायता देनी निश्चय हुई थी उसका समय तीन मास के लिये और बढ़ा दिया जाय।

(१७) बनारस कलक्टरी के मोहर्रिर प्यारे मोहनलाल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि उन्हें भी दुर्भिक्ष की मासिक सहायता मिलनी चाहिए।

निश्चय हुआ की उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की जा सकती।

(१८) पुस्तकालय के निरीक्षक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि पुस्तकाध्यक्ष का वेतन बढ़ा दिया जाय।

निश्चय हुआ कि पुस्तकाध्यक्ष का कार्य अभी सन्तोषजनक नहीं है। कार्य सन्तोष जनक होने पर इस प्रस्ताव पर विचार किया जायगा।

(१९) पण्डिक रामनगीना पांडे का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बिना चन्दे के सभासद चुने जाने के लिये लिखा था।

निश्चय हुआ कि उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की जा सकती।

[२०] संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेण्ट का ३१ जनवरी का पत्र नं० २३७-१२-१२८ [ए] उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी पुस्तकों की खोज का कार्य कम से कम इस समय केवल संयुक्त प्रदेश और विहार में हो।

निश्चय हुआ कि राजपुताने और मध्य भारत में प्राचीन पुस्तकों के मिलने की जितनी सम्भावना है उतनी संयुक्त प्रदेश में नहीं है अतः इस विषय में गवर्न्मेंट को पुनः विचार करने के लिये लिखा जाय।

(२१) बाबू मन्नू लाल गुप्त की बनाई हुई शीघ्र लिपि प्रणाली की पुस्तक उपस्थित की गई जिसके लिये उन्होंने लिखा था कि सभा ने इस विषय में जो पुस्तक बनवाई है उसके छपवाने के पहिले इस पर भी सभा विचार करले।

निश्चय हुआ कि यह पुस्तक बाबू श्रीशचन्द्र बोस के पास सम्मति के लिये भेजी जाय।

(२२) बाबू अखिलचन्द्र पालित का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि पण्डित कोकिलेश्वर विद्यारत्न एम० ए० जो संस्कृत तथा बंगला के बड़े विद्वान हैं सभा के आनरेरी सभासद चुने जांय।

निश्चय हुआ कि सभा अभी और आनरेरी सभासद चुने जाने के लिये प्रस्ताव नहीं कर सकती।

(२३) पण्डित वी० श्रीरामशास्त्री शतावधानी का २ फरवरी का छपा हुआ पत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि हिन्दी भाषा और देवनागरी अक्षरों के प्रचार के सम्बन्ध में उनका जो उद्देश्य है उससे सभा सहानुभूति प्रकट करती है।

(२४) पुस्तकालय के निरीक्षक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पुस्तकालय के लिये कुछ अलमारियां बनवाने का प्रस्ताव किया था।

निश्चय हुआ कि यह पत्र सभा के मंत्री के पास उपयुक्त प्रबन्ध के लिये भेज दिया जाय।

(२५) मंत्री ने सूचना दी कि तारीख १ फरवरी १९०८ को संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर सभाभवन में पधारे थे और सभा की आज्ञानुसार डेप्यूटेशन उनकी सेवा में वहीं उपस्थित हुआ था और उसने उनसे नियत विषयों पर बात चीत की थी।

निश्चय हुआ कि डेप्यूटेशन का कार्य स्वीकार किया जाय।

(२६) पत्रिका में छपने के लिये "मिल्टन कवि का काव्य" शीर्षक लेख स्वीकार हुआ।

(२७) सभापति को धन्यवाद दे विसर्जित हुई।

जुगुलकिशोर,
मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब

जनवरी १९०८ ।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	२०८	८	११½	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७३	१०	१०½
सभासदों का चन्दा	५२	१०	०	पुस्तकालय	३७	१	०
पुस्तकों की बिक्री	८०	०	६	पृथ्वीराज रासो	७२	१३	०
रासो की बिक्री	१२०	२	०	नागरी प्रचार	८	१५	०
पारितोषिक	४०	०	०	पुस्तकों की खोज	८५	५	०
पुस्तकालय	५२	०	०	फुटकर	३३	५	८
फुटकर	२	१२	०	डांक व्यय	४	१३	६
राधाकृष्णदास स्मारक	२८	०	०	स्थायी कोश	६०	०	०
				छपाई	३३५	१३	६
गवर्न्मेंट की सहायता	३००	०	०	हिन्दी कोश	१	१२	०
जोड़	८८४	१	५½	पुस्तकों की बिक्री	५	१०	०
				जोड़	७१८	३	७½
				बचत	१७४	१३	१०
देना ६०००)				जोड़	८८४	१	५½

नोट—गत मास के हिसाब में नागरीप्रचार का खर्च २३।≤) और बचत २०८॥) ११½ छपना चाहिए था ।

जुगुलकिशोर, मंत्री

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

"यदि काशी नागरीप्रचारिणी सभा की सहायता करना चाहें और उसकी मासिक पत्रिका जो जुलाई १९०७ से मासिक हो गई है। मुफ़ लेना चाहें तो इस कार्य्यालय से कम से कम ५) की कीमत की इकट्ठी हिन्दी पुस्तके (उपन्यास, जीवनचरित्र, स्त्रीशीक्षा, इतिहास इत्यादि) मंगावें तो यह कार्य्यालय एक साल तक बराबर उक्त सभा की पत्रिका मुफ़ आपकी सेवा में भेजता रहेगा।"

यह नवीन पुस्तकें हमारे यहां प्राप्त हो सकती हैं।

जीवनचरित्र

"बुन्देलखण्ड का शिवाजी"

विदित हो कि "बुन्देलखण्ड केशरी" नामक पुस्तक छप गई है जिस में बुन्देलखण्ड के महाराज छत्रसाल जी के जीवन वृतान्त का लेख है, पद्य में लालकवि कृत छत्रप्रकाश में महाराज की वीरता का वर्णन है, किन्तु बून्देलखण्ड केशरी में महाराज के जन्म से लेकर अन्त पर्य्यन्त उनकी समस्त वीरता, धीरता, पुरुषार्थ, नीति चातुर्य्य और देशहितैषिता का क्रम से गद्य में वर्णन है, साथही इसके बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास और प्राणनाथ जी का जीवन चरित्र भी संक्षेप में लिखा गया है इस पुस्तक के साथ महाराज छत्रसाल जी का चित्र भी है। २ भाग का मूल्य ॥।)

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] मार्च १९०८। [संख्या ९

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥

करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥

बिविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥

प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।

विविध विषय।

महाराज झालरापाटन में नागरी अक्षरों के प्रचार की आज्ञा दे दी है। उन्होंने अपने कारबारियों को नागरी अक्षर सीख लेने का समय दिया है। महाराजा साहब का यह कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। हिन्दी प्रेमी मात्र इसके लिये उनके अनुगृहीत हैं।

कोश के सम्बन्ध में यह समाचार प्रकाशित करते विशेष आनन्द होता है, कि सभा ने इस कार्य को आरम्भ कर दिया है। आनरेबुल रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल ने इस कार्य के लिये सभा को १०००) रु० का दान दिया है। उक्त पण्डित महोदय के हम हृदय से अनुगृहीत हैं कि इस प्रकार इस कार्य में सहायता करके यश के वे भागी हुए हैं। परन्तु अभी उन्तीस हजार की और आवश्यता है। आशा है कि हिन्दी के अन्य प्रेमीगण इसमें सभा की सहायता कर यश के भागी होंगे। कोश के लिये शब्दों के संग्रह करने के कार्य का प्रबन्ध हो रहा है। जो महानुभाव द्रव्य से सहायता नहीं कर सकते हैं आशा है कि वे इस संग्रह के कार्य में सहायता देंगे। जिन प्रकार के शब्दों का पुस्तकों में मिलना कठिन है उनके इकट्ठा करने का अलग प्रबन्ध किया गया है।

* * *

विलायत में एक विचित्र मुकद्दमा चल रहा है। प्रायः सब लोगों ने सुना होगा कि हीरे खानों से निकलते हैं। हिन्दुस्तान में भी हीरों की खानें निकली हैं। बुंदेलखण्ड में पन्ने की खान प्रसिद्ध है। दक्षिण अफ्रिका में तो इसकी बड़ी भारी खानें निकली हैं। कुछ दिन हुए कि योरप में एक विद्वान ने नकली हीरे बनाने की रीति निकाली थी और वे हिन्दुस्तान में बिकने आए थे। अब एक विद्वान ने रासायनिक क्रिया से हीरे बनाए हैं जो बहुत बड़े होते हैं और जो सुन्दरता आदि में असली हीरों से किसी तरह कम नहीं हैं। इस बात की चर्चा फैलते ही कई बड़े बड़े धनाढ्यों ने इस महाशय से ठीका कर लिया कि वे उन्हीं के लिये हीरे बनावें। यह भी ते हुआ कि कई लाख रुपया

लेकर वे इसकी रीति बता दें। ऐसा कहा जाता है कि एक कागज पर इस रीति को लिख कर और लिफाफे में बन्द करके उन्होंने बंक में रख दिया है और कहा है कि जब तक मैं जीता रहूं यह लिफाफा न खोला जाय। मेरे मरने पर वह खोला जाय और तब रासायनिक क्रिया से ऐसे हीरे बनाने की रीति जो उस कागज पर लिखी है विदित हो जायगी। अब इसका मुकद्मा चल रहा है। एक पक्ष वाले कहते हैं कि उस लिफाफे में सादा कागज है और नकली हीरा इतना बड़ा और ऐसा सुन्दर नहीं बन सकता। दूसरे पक्ष वाले कहते हैं कि यह बात निर्मूल है, यह काम रासायनिक क्रिया से किया गया है और जो चाहे उसके साम्हने यह क्रिया दिखाई जा सकती है। इस बात के पक्ष और विपक्ष दोनों में बड़े बड़े विद्वान और तत्ववेत्ता अपना अपना मत प्रकाशित कर रहे हैं। देखा चाहिए परिणाम क्या निकलता है।

* * *

कलकत्ता युनिवर्सिटी की जुबली का उत्सव इस मास में होने वाला है। इस अवसर पर कई एक आनरेरी उपाधियां युनिवर्सिटी की ओर से दी जायंगी। जिन्हें ये उपाधियां दी जांयगी उनके नाम भी प्रकाशित किए गए हैं। इन में बंगाल, मद्रास, बम्बई तथा पंजाब के चुने चुने लोग हैं। विचारा संयुक्त प्रान्त ही इस सम्मान के योग्य नहीं समझा गया यह दुःख की बात है। यह कहा जा सकता है कि डाक्टर थीबो तो इसी प्रान्त के हैं, पर अब उनका सम्बन्ध इस प्रान्त से नहीं रहा। इस समय वे कलकत्ता युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार हैं। इसलिये उनके आदर से संयुक्त प्रान्त का आदर नहीं हुआ। सबसे दुःख की यह बात यह है कि

इन उपाधि पाने वालों में एक भी ऐसा नहीं है जो देश भाषा की विद्वत्ता के लिये प्रसिद्ध हो । और कहीं नहीं तो बंगाल में देशभाषा के एक से एक विद्वान पड़े हुए हैं। उनकी ओर उपेक्षा ऐसी क्यों की गई और वह भी डाक्टर आशुतोष मुकर्जी के वाइस-चैंसलर रहते हुए यह समझ में नहीं आता ।

***

सिकन्दरशाह ।

[आठवें अंक के आगे ।]

सिकन्दर केवल स्त्री सम्बन्धी व्यवहार में रत नहीं था उसके सब कार्य्य बड़े नियमबद्ध थे-वह जैसा शराबी कहा जाता है वास्तव में नहीं था । सिकन्दर शराब बहुत कम पीता था परन्तु उसका अधिक समय वार्तालाप में जाता था । यद्यपि वह बादशाह था और उसके मुसाहिब लोग उसके नौकर थे परन्तु खानपान के समय वह उनका अपनी ही भांति सम्मान करता था, यदि कुछ उत्तम भोज्य पदार्थ या और कोई नवीन वस्तु सिकन्दर के साम्हने लाई जाती तो वह अपने सब दर्बारी मुसाहिबों और यार दोस्तों को यथा भाग बांट देता, चाहे स्वयं उसके स्वाद से वंचित रहे और यही कारण था कि वे लोग भी उसके हुक्म पर अपना तनमन न्यौछावर करते थे । सिकन्दर का अवकाश समय कभी आमोद प्रमोद और व्यर्थ के वार्तालाप में नहीं जाता था। वह अवकाश के समय या तो अच्छे अच्छे राजनैतिक या आध्यात्मिक विद्या सम्बन्धी

ग्रन्थ पढ़ता या बराबर जंगलों में शिकार खेला करता था, और उसको उसी नियमबद्धता और निरालस्य ने कभी भी किसी शत्रु के सम्मुख नीचा देखने का समय नहीं दिया ।

जिस प्रकार ग्रेनिकस की लड़ाई से समस्त एशिया माइनर सहजही सिकन्दर के हस्तगत हो गया था उसी भांति इसस की लड़ाई से साइबेरिया प्रान्त सिकन्दर का हो गया, अब उसे साइबेरिया पर केवल अपना अधिपत्य जमाना बाकी था । इसी अवसर में दारा ने एक राजदूत के हाथ एक पत्र भेजा जिसमें दारा ने सिकन्दर का अपने प्रति अपव्यवहार दिखला कर उसे अपने परिवार के लोगों को मुक्त करने के लिये लिखा था, दारा के इस पत्र का उत्तर सिकन्दर ने इस प्रकार से लिखा जैसे कोई अफ़सर अपने मातहत को लिखे, जिसमें सिकन्दर ने दारा के कारण अपने पिता फिलिप की तकलीफों का इजहार करते हुए लिखा कि यदि तुमने अब से आगे कभी मुझे एशिया का बादशाह करके न लिखा तो मैं तुम्हारे पत्र का उत्तर न दूंगा और यदि तुम्हें अब भी इस बात का घमंड है कि एशिया प्रान्त फारिस का है तो आओ मेरा साम्हना करो भागो मत, मैं तुम पर फिर भी पहिले की भांति आक्रमण करूंगा चाहे तुम कैसेही बलवान और सुरक्षित क्यों न हो।

दारा इससे बहुत दूर न था, और यदि सिकन्दर चाहता तो पश्चिमी सिलसिले पर अधिकार करता हुआ दारा के पीछे पड़ कर उससे फिर भी लड़ाई छेड़ता, परन्तु उसने ऐसा न करके समुद्र किनारे के उन पहाड़ी सिलसिलों पर ही अधिकार जमाना चाहा जिन्हें नौशेरवां ने फतह

करके पारिस के अधीन किया था। इस लिये उसने पहिला वार फिनीशियन लोगों पर किया। ये लोग समुद्र किनारे के उत्तरी भाग पर थे परन्तु इनकी राजधानी टाइर में थी। ये लोग यद्यपि राजसी बल में कुछ भी न थे परन्तु अपने सामुद्रिक व्यापार के कारण धन सम्पति में एकही थे और इसी से उनके धर्म्म सम्बन्धी विचार एवं मनुष्य सम्बन्धी जीवन आचार विचार अत्यन्त नीच और अश्लील होने पर भी सब लोग उनसे सम्बन्ध रखते थे। इस समय उनका ईरान से केवल इतना सम्बन्ध था कि वे कुछ खिराज देते थे और ईरानी सेना उनको बाहरी शत्रु के आक्रमण से रक्षा करने को थी परन्तु उन्हों ने ईसस की लड़ाई में दारा को बहुत मदद दी थी इसी से वे सिकन्दर की नज़र में गड़ गए थे। फिनीशियन लोगों ने सिकन्दर का संदेसा पातेही आपही उसकी अधीनता स्वीकार करली। उन्होंने दूत द्वारा कहला भेजा कि वे सिकन्दर को उसी प्रकार से विजेता मानेंगे जैसा कि वे अब तक दारा को मानते थे, परन्तु सिकन्दर की इच्छा थी कि वह अपनी सब सेना को समारोह के साथ फिनीशियन लोगों की राजधानी में भेज कर अपनी कुल देवी के दर्शन करे और नियमानुसार बलिप्रदान करे। परन्तु उन्होंने समझा कि जो सिकन्दर यहां आवेगा तो किसी न किसी बहाने से यहां पर अपना दखल करके कुछ सिपाही यदि छोड़ जायगा तो हम सदैव के लिये उसके गुलाम बन जायंगे। इसलिये उन्होंने सिकन्दर-का उक्त प्रस्ताव स्वीकार करने से एक दम इंकार कर दिया और कहला भेजा कि वहीं पर जो पुराना मन्दिर है

इसी में आप अपना पूजन और बलिप्रदान कर लें; यहां पर किसी अन्य जाति के लोगों को आना जाना हमारे नियम के सर्वथा विरुद्ध है। न हमने ईरानियों को आने दिया न आपको आने देंगे।

परन्तु सिकन्दर कब मानने वाला था उसने उसी समय आज्ञा दी कि भूभाग से टापू तक बराबर काठ और पत्थर पाट कर मुहाना कर दिया जाय और तब फौज चले। उसकी आज्ञा मानी गई और आधी दूर तक बराबर लकड़ी पत्थर से समुद्र का मुहाना पाटा गया, किन्तु बाद उसके पानी की गहराई अधिक होने से एक तो सिपाहियों को स्वयं अधिक परिश्रम करना पड़ा उधर से वे लोग भी जलते अंगारे फेंक फेंक कर इनकी जान लेने लगे। इस पर सिकन्दर ने दिवार खड़ी करवा कर काम लगवाया। परन्तु कठिन मार के मारे ऐसी हिकमतें एक भी न चल सकीं।

इधर साइप्रस तक पहुंचने का प्रयत्न सोचते विचारते जाड़े का मध्य आगया। सिकन्दर को सुस्त बैठना तो बला से भी भारी जान पड़ता था, उसने सब फौज तो इसी मौके पर छोड़ी केवल आप कुछ अश्वारोही सेना लेकर उत्तरी पहाड़ों के सिलसिले में पैठ पड़ा। कुछ दूर तक बराबर चला गया परन्तु ज्यों ज्यों सिकन्दर आगे बढ़ता था डांकू लोग इसका साम्हना करते हुए पहाड़ी कन्दराओं के ऐसे स्थानों में पैठते जाते थे कि जहां पर मनुष्यों का जाना कठिन था। अस्तु सिकन्दर ने कुछ सिपाहियों के साथ घोड़े तो यहीं छोड़ दिए और वह आप कुछ चुनिन्दा सिपाही लेकर पहाड़ों में घुस पड़ा और रातो रात बराबर मारकाट करते हुए ११ दिन में

सब डाकुओं को उसने अपने अधीन कर लिया। इन डाकुओं के मुकाबले में सिकन्दर को अधिक कठिनता इस बात में हुई कि इस पसर में सिकन्दर का शिक्षक सलीमक्ष भी उसके साथ था; वह एक तो स्वयं अत्यन्त बूढ़ा था तिस पर भी पहाड़ों में पैदल चलना और वह शरीर रक्त जमा देने वाली बर्फीले पहाड़े की वायु-इससे सलीमक्ष मृतप्राय हो रहा था किन्तु सिकन्दर ने किसी तरह उसे बचा लिया और डाकुओं को जीत कर फिर वह शहर टायर के मुकाबिले में आ डटा।

सिकन्दर ने रात्रि को स्वप्न में देखा कि उसकी कुल देवी शहर टायर के शहर पनाह पर से हाथ उठा कर उसे अपने पास बुला रही है। प्रातःकाल होते ही सिकन्दर की कुछ सेना जो साइप्रस में थी आन पहुंची इसलिये सिकन्दर ने और भी उत्साहित हो कर ढाई सौ जहाजों का बेड़ा तय्यार करवाया और इस तरह से जल युद्ध द्वारा ही शहर टायर को फतह करना विचारा। सिकन्दर के बहादुर सिपाहियों ने तुरन्त ही उसकी आज्ञा का अनुकरण किया और वे बड़ी दिलेरी से अपने जहाज शहर पनाह की दीवार के पास तक ले गए परन्तु एक तो शहर पनाह ही मुहाने की तरफ़ १२० फिट ऊंची थी तिस पर भी फिनीशियन लोग ऊपर से बड़ी बड़ी चट्टान डाल डाल कर सिकन्दर के सिपाहियों को चूर कर रहे थे। वे ऊपर से आग के बड़े जलते हुए कोयले और गरम गरम बालू की भी वर्षा करते थे जिसके कारण सिकन्दर की बड़ी भारी क्षति हुई अन्त में यूनानी सेना दीवार पर चढ़ ही गई। वे लोग तो मरने मारने पर मुस्तैद थे ही बस दोनों दलों में परस्पर हाथा बांही की मार होने लगी और इस प्रकार कई एक घंटे के

बाद दोनों ओर के हजारों सैनिक मारे जाने पर यूनानी सेना ने शहर टायर पर अधिकार जमा लिया अतएव सिकंदर ने विजन होने की आज्ञा दी और शहर टायर निवासी लोग जन वच्चे से भेड़ों की तरह काटे जाने लगे सिर्फ जिन लोगों ने देव मंदिरों में छिप कर प्राण बचाने चाहे वे बच सके । शहर टायर का कत्ल आम पांच महीने तक जारी रहा; सिकंदर स्वयं लिखता है कि अब तक मैंने जितनी बड़ी लड़ाइयों में विजय पाई उन सब से मुझे टायर पर विजय पाने का बड़ा गर्व है । यह बात (ई० पू०) ३३२ के वसंत ऋतु की है ।

[क्रमशः]

रामकहानी की भूमिका ।

हिंदी ।

जाति पाँति को भेद तजि प्रेमिहि मिलत जो धाय ।
ताहि राम सों मन रवै द्रवै तासु गुन गाय ॥ १ ॥
अनुचित है या उचित यह यह समझत नहिँ कोय ।
घर घर जो बोलत फिरैँ भाषा कहिए सोय ॥ २ ॥

हिंदी—हिंदुस्तान में यह शब्द मुसल्मानों के समय से फैला है । यह एक विशेषण शब्द है। जिसे हिंदुस्तान कहते हैं वही हिंद है । हिंदुस्तान या हिंद में जो पैदा हो उसे हिंदुस्तानी या हिंदी कहना चाहिए । 'हिंदुस्तानी कपड़े' की जगह जो 'हिंदी कपड़े कहें तो कुछ अनुचित नहीं । इसलिये हिंदी के आगे जब तक कोई नाम न रहेगा तब तक खाली हिंदी से कुछ भी न समझ पड़ेगा । पर अब ऐसी

बात नहीं है । लोग घर घर हिंदी बोली या हिंदी भाषा या हिंदी अक्षर की जगह बोली, भाषा और अक्षर को उड़ा कर खाली हिंदी बोलते हैं ।

आज कल मुँह से 'हिंदी' निकलते ही चली हुई बातों की लड से लोग झट समझ लेते हैं कि 'हिंदी' से 'हिंदी भाषा' या 'हिंदी अक्षर' से मतलब है ।

मुसल्मानी अमल्दारी में पहिले पहल मुसल्मान लोग हिंदवी कहते थे । जायस के मलिक महम्मद ने भी अपनी पद्मावत में एक जगह 'हिंदवी' लिखा है पर पीछे से जल्दी जल्दी बोलने से 'वी' का 'व' उड गया और उसकी मात्रा 'ई' 'द' में मिल गई इसलिये अब 'हिंदवी' का 'हिंदी' शब्द हो गया । हिंदी 'स' की जगह 'ह' लिखना यह बात अक्सर पुरानी फारसी में पाई जाती है जैसे मास का माह, सप्त का हफ़्ता । इसी तरह संस्कृत सिंधु का भाषा में सिंध हुआ फिर पीछे से फारसी में सिंध का हिंद और हिंद से हिंदी शब्द निकला ।

जैसे हमारे लोगों के कान में कभी अँगरेजों के मुँह से निकले हुए शब्दों के अक्षर कुछ और ही समझ पडते हैं उसी तरह अँगरेजों के कान में भी हमारे लोगों के मुँह से निकले हुए शब्दों के अक्षर कभी कभी और ही समझ पडते हैं इसलिये अँगरेजी में मथुरा का मट्रा 'Muttra' हो गया । इसी तरह उस समय मुसल्मानों के कान में 'सिंध' से हिंद समझ पडा जिस से हिंद और फिर हिंदी बना । इसी तरह मुसल्मान लोग हिंद में रहनेवालों को हिंदू कहते हैं ।

पहिले हिंदी के कवि इस हिंदी और हिंदुस्तान शब्द से घृणा करते थे । तुलसीदास ने अपने किसी ग्रन्थ में इसे नहीं लिखा । हिंदी भाषा की जगह बालकाण्ड में एक जगह 'भाषाबद्ध करब मैं सोई' यह लिखा है कहीं कहीं पच्छाहँ के कवियों ने अपनी कविता में हिंद और हिंदुआन लिखा है ।

हिंदुस्तान के जुदे जुदे देशों में जुदी जुदी भाषाएँ हैं इसलिये हिंदू देश के साथ उन भाषाओं के नाम कहते हैं। जैसे व्रजभाषा, माड़वारी, द्राविड़ी, तैलंगी वैलंगी......... ।

अक्षरों की सूरत चाहे जैसी हो पर जहाँ तक क, ख, ग... वर्णमाला का प्रचार है वहाँ तक मेरी समझ में हिंदुस्तान है । ऐसे हिंदुस्तान में तरह तरह की बोलियाँ बोली जाती हैं उन सब को एक शब्द हिंदी से पुकारना मेरी समझ में भूल है । भूल से मुसल्मानों ने जो शब्द बना दिया उसी को जानकार हिंदू कैसे मान सकता है ।

बड़े अचरज की बात है कि पढ़े लिखे लोग भी पंजाबी, बंगाली, तैलंगी वैलंगी बोली को सुन कर झट कह देते हैं कि यह हिंदी नहीं है । वे लोग शायद हिंदी से आगरा, दिल्ली, कान्हपुर, मथुरा, बनारस से लेकर बिहार तक जो बोलियाँ हैं उन्हीं को लेते हों पर तब तो उतने ही देश हिंद नहीं हैं । मेरी समझ में हिंदी से हिंद की सभी भाषाओं को ले सकते हैं । पर अब आज कल बनारस के चारो ओर सौ सौ कोस की दूरी पर जो बोल चाल है उसी को हिंदी भाषा समझना चाहिए या मनु जिसे आर्यावर्त्त कहते हैं उसकी भाषा को हिंदी कहिए । इसी तरह हिंदी

अक्षर से हिंद के सब देशों के अक्षरों को ले सकते हो पर आज कल हिंदी अक्षर से संस्कृत अक्षर या देवनागरी ही लेते हैं।

कभीं कभीं ऐसा भी देखने में आया है कि कोई आदमी हँसी या निंदा करने की ग़रज़ से किसी का एक नया नाम रख देता है फिर पीछे से ज़माने के फेर फार से असली बात को भूल कर लोग उस को इज़्ज़त के साथ उसी नाम से पुकारने लगते हैं। यह मेरे सामने की बात है कि लाहोर के जल्ला पण्डित के वंश के पण्डित रघुनाथ जंबू के महाराज श्रीरणवीर सिंह की नाराज़ी से जंबू छोड़ कर बनारस चले आए थे। उन से और बाबू हरिश्चन्द्र से बहुत मेल था। बनारस के बड़े प्रसिद्ध पण्डित बालशास्त्री ने जब अपनी व्यवस्था से कायथों को क्षत्री बनाया उस समय बाबूसाहब ने अपनी मेगज़ीन में 'सभी जात गोपाल की' इस शिरनामे से काशी के पण्डितों की बड़ी धूर उड़ाई। इस पर पण्डित रघुनाथ जी बहुत नाराज़ होकर बाबूसाहब से बोले कि आप को कुछ ध्यान नहीं रहता कि कौन आदमी कैसा है सभी का अपमान किया करते हो। जैसे आप अपने सुयश से ज़ाहिर हो उसी तरह भोग बिलास और बड़ों के अपमान करने से आप कलङ्की भी हो इसलिये आज से मैं आप को भारतेन्दु नाम से पुकारा करूँगा। उस समय मैं और भरतपुर के राव श्रीकृष्णदेवशरण सिंह मौजूद थे। हम लोग भी हँसी से कहने लगे कि बस बाबूसाहब सचमुच भारतेन्दु हैं। बाबूसाहब ने भी हँस कर कहा कि मैं नाराज़ हूँ आप लोग खुशी से मुझे भारतेन्दु कहिए। मैं ने

कहा कि पूरे चाँद में कलङ्क देख पड़ता है आप दुइज के चाँद हैं जिस के दर्शन से लोग पुण्य समझते हैं। यह मेरी बात सब के मन मे खुशी के साथ समा गई। धीरे धीरे इनकी पोथिओं पर दुइज के चाँद की सूरत छपने लगी। इस तरह अब आज इज़्ज़त के साथ बाबूसाहब भारतेन्दु कहे जाते हैं। आप लोग बिचारेंगे तो यह बात तुरंत मन में आ-जायगी 'हिंद के सूरज' 'हिंद के सितारे' ये ख़िताब तो मशहूर हैं पर किसी विलायत में आदमी के लिये चाँद का ख़िताब नहीं।

मैं समझता हूँ कि इसी तरह पहिले मुसल्मानों ने हम लोगों का अपमान करने के लिये हिंदू नाम रक्खा पर आज कल अपने लोगों की बोल चाल में यह शब्द ऐसा मिल गया है कि इस नाम से हम लोग अब कुछ भी बेइज़्ज़ती नहीं समझते। बहुत से लोग हिंदू की जगह आर्य कहने लगे हैं पर करोड़ों हिंदुओं में शायद दश पाँच आर्य से हिंदू समझते हों।

यूरप के लोग कहते हैं कि हमारे ही देश से एक गोल हिंदुस्तान की ओर आई और यहाँ के दस्यु लोगों को जीत कर अपना दास बनाया इसी से वे दास या शूद्र कहलाने लगे। इस बात को पक्का करने के लिये यूरप के लोग तरह तरह के सबूत देते हैं पर मेरे मन में इस की बहुत ही शंका है। अगर यह बात ऐसी ही है तो हिंदुस्तान में आर्य और शूद्र यही दो जात होतीं पर यहाँ तो चार बड़ी जात और हज़ारों छोटी ज़ात मनु ही के ज़माने से चली आती हैं। दूसरी बात यह कि ऋषिओं ने अपने देश में जाने के लिये

फिर क्यों मना किया। ऋषिलोग कहते हैं कि सिंधु नदी के पार न जाना चाहिए। यहाँ पर इस बात के बढाने का कुछ काम नहीं बात आजाने पर कुछ चर्चा कर दी है।

आज कल बहुत से लोग पुराने फ़ारसी शब्दों को निकाल निकाल कर हिंदी में नए शब्दों की भरती कर रहे हैं। वे लोग हिंदी ही से चिढ़ कर, हिंदी के स्थान पर 'आर्यभाषा' हिंदू के बदले आर्य बोलने लगे हैं। हिंदी-प्रचारिणी सभा को नागरीप्रचारिणी कहते हैं। मैं इन बातों को बहुत ही नापसंद करता हूँ। जो शब्द आप से आप प्रचलित हो गए हैं उन्हें न बदलना चाहिए। उन के बदलने से कुछ भी फ़ायदा नहीं उलटा लोगों के न समझने से नुक़सान ही है। विलायत से जिस समय हिंदुस्तान में दियासलाई (Match) आई उस समय पण्डितों की कौन कमेटी बैठी थी कि म्याच का तर्जुमा "दियासलाई" ठीक किया गया और अब ऐसी कौन ज़रूरत है कि पण्डितों की कमेटी बैठा कर म्याच का तर्जुमा दीपशलाका, स्फुलिङ्गदण्ड, स्फुलिङ्गोत्पादक, स्फुलिङ्गजनक किया जाय। एक दिन मैं ने एक संस्कृत के विद्यार्थी से कहा कि 'लालटेन लेआओ" इस का संस्कृत बनाओ। थोडी देर में उसने कहा कि इस का संस्कृत 'दीपमन्दिरमानय" है। लालटेन का अनुवाद दीपमन्दिर सुन कर मुझे हँसी आई और मैं ने कहा कि मन्दिर तो किसी के ले आने से आ नहीं सकता, ऐसी जगहों में उपसर्ग प्र से काम चल जाता है "प्रदीपमानय" कहो। इसी तरह मेरी समझ में रेल, कमेटी, स्कूल, स्लेट, पेन्सिल टिकट......की जगह धूम्रयान, सभा, पाठशाला, शिलापट्टी, शीशकलेखनी, मूल्यप्रमाण-सूचक-पत्र......लिखने की कुछ

ज़रूरत नहीं। जो शब्द अपनी भाषा में आ गए उन्हें रहने देना चाहिए उन के तर्जुमे से खुदाबख़्श ईश्वरदत्त और बलदेवबख़्श बलदेवदत्त हो जायँगे जिस से सुननेवाले न समझ कर घबड़ा जायँगे कि ये क्या कहते हैं।

बड़े अचरज की बात है कि हाथ से कलम पकड़ते ही ऐसी नशा चढ़ जाती है कि अपनी रात दिन की बोली भूल जाती हैं और उसकी जगह नए नए शब्दों के गढ़ने की सनक बढ़ जाती है। मैं भी इस नशे से बचा नहीं हूँ पर सदा बचने की तदबीर में लगा रहता हूं। कालिज में जिन की दूसरी भाषा संस्कृत थी वे कलम पकड़ने की नशे से संस्कृत की ओर और जिनकी दूसरी भाषा फ़ारसी थी वे फ़ारसी की ओर झुक जाते हैं।

एक दिन एक मेरे मित्र मुझ से मिलने के लिये मेरे घर पर आए, मैं बाहर चला गया था; वे लौट गए। दूसरे दिन मैं शहर जाता था राह में उनके नौकर ने मुझे उनकी चिट्ठी दी। चिट्ठी में लिखा था कि "आप के समागनार्थ मैं गतदिवस आप के धाम पर पधारा, गृह का कपाट मुद्रित था; आप से भेंट न हुई, हताश होकर परावर्त्तित हुआ"। गाड़ी में मैं उनकी चिट्ठी पढ़ रहा था, थोड़ी दूर पर राह में वही मित्र मिले, मैं गाड़ी रोक कर उतरा, उतरतेही उन्हों ने कहा कि कल मैं आप से मिलने के लिये आप के घर पर गया था, घर का दरवाजा बंद था, आप से भेंट नहीं हुई, लाचार होकर लौट आया। मैं ने उन के हाथ में उन की चिट्ठी दी और हँस कर कहा कि इस समय जैसी सीधी बात आप के मुँह से निकलती है वैसी कलम पकड़ने की नशे से चिट्ठी में न लिखी गई।

आज कल के हिंदी को बँगले की लड़की कहैं तो अनुचित नहीं । लोग बंगाली भाषा के नाटक और किस्से कहानी की पोथिओं का उलथा करते जाते हैं । उलथे में अक्सर संस्कृत शब्दों को तो जैसे के तैसे रहने देते हैं ख़ाली हिंदी की विभक्ति और क्रिया जोड़ देते हैं ।

जैसे कोई बंगाली पछाहिआँ हिंदू का पहनावा पहन ले तो उसके देखने से लोग पछाहिआँ समझेंगे उसी तरह आज कल हिंदी की विभक्ति औा क्रिया के मेल से बंगला हिंदी कहलाती है ।

बंगाले की बोलचाल में बहुत संस्कृत शब्द भरे हैं इसलिये उनकी पोथिओं के संस्कृत शब्द बोलचाल ही के शब्द समझ पड़ते हैं पर इधर पच्छाहँ में यह बात नहीं है इधर की बोली से हिंदी पोथी की भाषा बिल्कुल ही जुदी होती जाती है । लोगों को चाहिए कि इस तरफ़ ध्यान दें ऐसा न हो कि धीरे धीरे देशभाषा और संस्कृत के बीच में एक नई भाषा पैदा हो जाय ।

जैसे हम लोग बंगालिओं की हिंदी 'पटरि से चलो' "ह्याँ पेशाब ने करना" को हँसते हैं॰उसी तरह घर में हम लोगों के मुँह से,'मन चलता है कि साफ पानी पीएँ" और बाहर पढ़े लिखे लोगों के बीच 'मन की अभिलाषा है कि निर्मल जल पान करें" यह सुन कर घर के लोग मनही मन हँसते हों तो क्या अचरज । एक बैद ने अपने मजूरे से कहा कि एक पैसा का "इन्द्रयव" ले आओ । उस बेचारे ने इधर उधर पूछ पाछ कर बहुत देर में लौट कर कहा कि पसारी लोग कहते हैं कि हम नहीं जानते कि "इन्द्रयव" क्या चीज है । बैद ने कहा कि अबे कोरैया का फल है जा जल्द

ले आ; इस पर मजूरे ने हँस कर कहा कि वाह साहब "हमारे पिछवाड़े कोरैया तेकरे फर कै गांव इंदरजवा;" यह दशा "साफ पानी" की जगह "निर्मल जल" करने से है ।

[क्रमशः]

महाकवि मिलटन और उनके काव्य ।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पूज्यपाद पिता बाबू गिरधर दास ने अपने विदुरनीति नामक ग्रन्थ में लिखा है कि

सत् कविता सत्पुत्र अरु, कूपादिक निर्मान ।
इनते नर को रहत है, जाहिर नाम जहान ॥

यदि रामायण, शकुन्तला, गुलिस्तां, प्याराडाइज लास्ट (Paradise Lost) इत्यादि ग्रन्थ न होते तो इनके रचयिता वाल्मीकि, कालिदास, शेखसादी, मिलटन प्रभृति को आज कौन जानता ? ऊपर के दोहे में महात्मा विदुरजी ने महाराज धृतराष्ट्र के प्रति नाम अर्थात् यश को जीवित रखने के लिये तीन साधन गिनाए हैं । किन्तु सत्पुत्र और कूपादि निर्म्माण से कहीं बढ़कर सत्कविता को कहना चाहिए क्योंकि इन अमरपदवीप्राप्त कवियों की ऐसी संसार व्यापिनी और अचला ख्याति का कारण केवल उनके ग्रन्थ ही हैं जो सत्पुत्र और कूपनिर्म्माण से कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती थी । यह स्पष्ट है क्योंकि सत्पुत्र और कूपनिर्म्माण सत्कविता की अपेक्षा बहुत कम टिकाऊ हैं ।

अंगरेज कवि मिलटन का नाम तो अंगरेजी साहित्य में प्रसिद्ध ही है पर हिन्दी के अनेक पाठकों से भी अपरिचित नहीं है। अंगरेजी साहित्य में ये बहुत ऊंचे दरजे के कवि थे, यहां तक कि प्रसिद्ध नाटक-कार शेक्सपियर के बाद महाकाव्यकार में आपही की गिनती है। प्याराडाइज लास्ट* (च्युत-स्वर्ग) आपका परम प्रसिद्ध महाकाव्य है। यूनानी दार्शनिक और समालोचक अरिस्टाटल के मत से महाकाव्य (जिसे एपिक—Epic—कहते हैं) के चार लक्षण हैं जो सबके सब एडिसन साहब के मतानुसार इस काव्य में घटित होते हैं। वे ये हैं—

(१) वर्णनीय विषय ऊंचे दरजे का, विषम और एक होना चाहिए।

(२) उच्चतम समाज तथा उच्च विचार के मुख्य पात्र होने चाहिएं।

(३) गम्भीर तथा वीर भाव की छन्दःरचना होनी चाहिए और

(४) वार्तालाप (dialogue) एकान्तकथन (Soliloquy) और वर्णनात्मक लेखों की मिलावट से निबन्ध का विकास होना चाहिए।

किसी अत्यन्त आवश्यकीय नीति का सिखाना, समस्त

* हिन्दुओं के महाभारत और रामायण नामक संस्कृत महाकाव्य (Epics) जगत्प्रसिद्ध हैं। इनकी तुलना के किसी जाति या देश में अब तक महाकाव्य नहीं बने। ये बड़े महत्व के हैं। इनकी पवित्रता और नीति हिन्दुस्तान वा हिन्दुओं के लियेही नहीं वरन सम्पूर्ण संसार के लिये आदर्श हैं। वे बहुत बड़े भी हैं।

प्रचंड मनोविकारों को उसकी प्राप्ति में लगाना, हृदय को शुद्ध करना तथा उच्च और गुरु भावों से भरना महाकाव्य के कर्तव्य हैं। इस ग्रन्थ के विशेष वर्णन करने की यहां आवश्यकता नहीं है क्योंकि आगे इसका विस्तृत वर्णन किया जायगा। यहां केवल इस अंगरेज महाकवि की संक्षिप्त जीवनी के साथ उनके काव्यों की संक्षिप्त आलोचना लिखी जाती है जो विशेष कर अंगरेजी भाषानिभिज्ञ पाठकों को रुचिकर होगी।

दिसम्बर १६०८ इस्वी में लन्दन नगरी में हमारे चरित नायक का जन्म हुआ। आपके पिता लन्दन में कानून लेखक का काम बड़ी सफलता से करते थे और पवित्री ÷ (Puritan) सम्प्रदाय के थे। संगीत से प्रेम और असहिष्णुता से घृणा इन दोनों गुणों को मिलटन ने अपने बाप से ही प्राप्त किया था। पिता ने आपको धर्मप्रचारक (पादरी) बनाने की इच्छा की थी और इसी लिये आप १६२४ ईस्वी में केमब्रिज भेजे गए जहां छात्रवृत्ति के साथ क्राइस्ट कालिज में शिक्षा पाने लगे। यहां सात वर्ष रहकर १६३१ ई० में बी० ए० और १६३२ ई० में एम० ए० की उपाधियों से विभूषित होकर आपने विश्वविद्यालय। (यूनिवर्सिटी) का परित्याग किया। तदनन्तर आपने चट पट कोई पेशा

÷ प्युरिटन (पवित्री) सम्प्रदाय उनलोगों से बना था जो महाराज्ञी एलिज़बेथ और प्रथम दो स्टुअर्टों के राज्य में डिसेण्टर (Dissenter) नामी मत-विरोधी होगए थे अर्थात् जिन्होंने अपने को स्थापित चर्च से अलग कर लिया था। ये बड़ी-कड़ी-नीतियों के पाबन्द थे।

स्वीकार नहीं कर लिया वल्कि बकिङ्गहम प्रान्त (Shire) के हौर्टन ग्राम में अपने पिता के मकान में पांच वर्ष तक रह कर योरप महादेश में परिभ्रमण करने को निकले । ऐसे भावी महान् कवि का सर्वसाधारण की भांति विद्या समाप्त होने पर तुरंत किसी उद्यम में प्रवेश करजाना युक्त भी न होता । क्योंकि जो लोग विद्यालयों की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने ही को विद्वत्ता समझते हैं वे भूलते हैं, परीक्षा के पूर्व जो विषय याद किए जाते हैं उनका अधिकांश उत्तीर्ण होने पर प्रायः भूल जाता है । इसलिये परीक्षोत्तीर्ण मनुष्य भी यदि पुस्तकों का देखना छोड़ दे तो उसकी योग्यता कम होजाती है । परीक्षा के समय में जो अध्ययन का अभ्यास लग जाता है यदि उसे परीक्षा के अनन्तर बरसों तक जारी रक्खा जाय तो वह निस्सन्देह मनुष्य को योग्य बना देता है । कारण यह है कि ऐसा अध्ययन केवल योग्यता के लिये—न कि परीक्षोत्तीर्णता के लिये—किया जाता है। अतएव वह परीक्षा की हलचली और परतन्त्रता से मुक्त एवं सुस्थिरता और मनस्विता से युक्त होता है । यदि परीक्षा समय पढ़ने का है तो उसके अनन्तर का समय गुनने का है । बिना गुनने के पढ़ना व्यर्थ है । जितने बड़े बड़े विद्वान् दृष्टिगोचर होते हैं यदि उनके जीवन के मुख्य समय को घरेऊ रीति से (Privately) विद्या की चिन्तना में अवश्य लगाया है । तब भला हमारे चरितनायक के लिये कब सम्भव था कि वे युनिवर्सिटी की उच्च पदवियां पाकर ही सन्तुष्ट हो जाते और अपने पिता के मकान में हौर्टन में रहकर तथा योरप में पर्यटन कर विद्योन्नति न करते ? कहा भी है "शास्त्रं सुचिन्तितमपि परिचिन्तनीयम्" ।

[क्रमशः]

शिवाजी की चतुराई।

—:o:—

१ औरंगजेब ने शाइस्ताखां और यशवन्तसिंह दोनों को रण में दक्षता न दिखाने के कारण दिल्ली में पुनः बुला लिया; और अपने पुत्र मुअज़िम को दिलावर खां के साथ भेजा। उसने अम्बराधिपति राजा जयसिंह को भी शिवाजी को विजय करने के लिये भेजा। विक्रमशाली जयसिंह चैत्र मास के अन्त में पूना नगरी में आए। जयसिंह ने आते ही दुर्ग-आक्रमण आरम्भ कर दिया। उन्होंने स्वयं अपने प्रभावशाली राजपूतों को लेकर अनेक गढ़ों को घेरा। महाराज शिवाजी हिन्दुओं से युद्ध ठानने में तत्पर न हुए। वे जयसिंह के नाम को, उनकी सेना के प्रमाण को, उनकी कुशाग्र बुद्धि को, दोर्दण्ड प्रताप को, और पराक्रम को भली भांति जानते थे इसलिये युद्ध करना ठीक न समझ उन्होंने संधि की प्रार्थना की। कुशाग्रबुद्धि जयसिंह शिवाजी की सब चलाकी जानते थे इस कारण उन्होंने इस संधि पर विश्वास न किया। अन्त में शिवाजी के विश्वासी मंत्री रघुनाथ पंत न्यायशास्त्री जयसिंह के पास आए और उन्होंने उनको भली भांति समझा दिया कि शिवाजी आपके साथ चतुराई नहीं करते हैं। ब्राह्मण के इस सत्यवाक्य को सुनकर जयसिंह ने विश्वास किया और मंत्री को कहा "द्विजवर! आपके कहने से मुझे आशा हुई, आप शिवाजी से कह दीजिए कि जब तक हम हैं औरंगजेब आपके संग किसी प्रकार का कुव्यवहार नहीं कर सकता"। इसी प्रकार थोड़ी देर तक वार्तालापोपरान्त

मंत्री जी गृह पधारे और आकर सब हाल शिवाजी से उन्होंने कहा।

२ तदुपरान्त शिवाजी ने खुद चाहा कि मैं जयसिंह से मिलूं। शिवाजी ने तुरन्त ही प्रस्थान किया। कुछ घंटों में शिवाजी जयसिंह के पास पहुंचे। प्रतिहारी ने आकर जयसिंह से कहा "महाराज की जय हो, महाराज शिवाजी स्वयं द्वार पर खड़े हैं वे श्रीमान् से मिलना चाहते हैं। सभा अति विस्मय में हुई और महाराज जयसिंह स्वयं शिवाजी को लेने को डेरे के बाहर चले आए और बहुत आदर से हृदय लगाय गृह में ले आए, और राज सिंहासन पर दहिनी ओर उन्हें बैठाया, और कहा "राजन! इस डेरे को भी आप अपना ही गृह समझिए।" शिवाजी ने उत्तर दिया "राजेन्द्र! यह सेवक आपकी आज्ञा से कब विमुख है। आपके सद्-व्यवहार से मैं सम्मानित हुआ हूं।" जयसिंह ने कहा "नृपतिवर! मैंने जो कहा था वह करूंगा, औरंगजेब आप के विद्रोहाचरण की क्षमा दे यथेष्ट सम्मान कर आपकी रक्षा करेंगे इस विषय में मैं बचन दे चुका हूं।" इस प्रकार थोड़ी देर में सभा भंग हुई, डेरे में अब केवल शिवाजी और जयसिंह के अतिरिक्त और कोई नहीं है। शिवाजी अब कपोल पर हाथ रख कर अफ़सोस करने लगे। शिवाजी को चिन्तित देखकर जयसिंह बोले "राजन्! आप यदि आत्मसमर्पण करके शोकाकुल हुए हों तो यह खेद निष्प्रयोजन है। आप हम पर विश्वास करके यहां आए हैं, राजपूत विश्वस्त के ऊपर हस्तक्षेप नहीं करते! आजही आप रात्रि में यहां से कुशलपूर्वक पधारिए, कोई राजपूत

आपके ऊपर हाथ नहीं उठावेगा। आप जाइए और युद्ध का सामान करिए, हां आप युद्ध में पुनः जयलाभ करें यह दूसरी बात है परन्तु हम लोग क्षत्री धर्म को कभी नहीं भूलेंगे।" शिवाजी ने कहा "क्षत्रिवर! इसका मुझको कुछ भी खेद नहीं है पर शोक केवल इस विषय का है कि बाल्यावस्था से जिस सनातन धर्म के निमित्त, जिस हिन्दू गौरव अर्थ चेष्टा की वह महान् उद्यम, आज एक बारगी नष्ट हो गया, बस इसीसे शोकाकुल हूं। राजन् मैंने आत्मसमर्पण किया। महाराज! आपको मैं पिता तुल्य समझता हूं इसलिये हे राजन्! आप इस पुत्रको परामर्श दीजिए।" मैं बाल्यावस्था में जब कोकण देश के असंख्य पहाड़ और तलौटियों पर भ्रमण करता, मेरे हृदय में हिन्दू जाति के लिये नाना प्रकार की चिन्ताएं उदय होतीं। कभी कभी यह विचारता मानों साक्षात भवानी जी मुझे स्वाधीनता स्थापन के निमित्त आज्ञा देती हैं। देवालयों की संख्या बढ़ाने को, ब्राह्मणों का सम्मान बढाने, गोरक्षा करने, धर्मविरोधी यवनों को दूर करने में देवी साक्षात् उत्तेजना देती थीं। मैं बालक था, उस स्वप्न से भूलकर खड्ग पकड़, वीर श्रेष्ठों को पराजित कर दुर्गों पर अधिकार जमाने लगा यही स्वप्न यौवन में देखा है कि हिन्दू धर्म की प्रधानता हिन्दू स्वाधीनता स्थापित हुई? इसी स्वप्न के बल से शत्रु जय किए, देश जय किए, मन्दिर स्थापन किए, राज्य विस्तार किया, वीर श्रेष्ठ! क्या मेरा यह आशय बुरा है! क्या स्वप्न अलीक स्वप्न मात्र है, आप पुत्र को निज इच्छानुसार उपदेश दीजिए।"

३ दूरदर्शी जयसिंह क्षणेक मौन रह गए फिर धीरे से बोले "हे राजन्! इससे बढ़कर और कोई अन्य उद्देश्य नहीं है। राजपूत स्वाधीनता अभी तक तुम लोग भूले नहीं हो, और शिवाजी! तुम्हारा स्वप्न केवल स्वप्न ही मात्र नहीं है। चारों ओर देख जहां तक मैं विचारता हूं उससे विदित होता है कि अब मुगल राज्य का अन्त आ गया, यवन राज्य कलंकराशि से पूर्ण हुआ है, विलासप्रियता से जर्जरित हुआ है, गिरते हुए गृह की नाईं अब नहीं रह सकता। ऐसा जान पड़ता है कि शीघ्र अथवा विलम्ब में प्रासाद तुल्य मुगल राज्य धूल में मिल जायगा। जिसके पीछे हिन्दू प्रधान होंगे। महाराष्ट्र जीवन अंकुरित होता है; जान पड़ता है कि महाराष्ट्र-यौवन भारतवर्ष में फैल जायगा।"

४ शिवाजी इन सब बातों को सुन कर अति हर्षित हुए और गदगद हो बोले तब फिर आप ऐसे महात्मा उस गिराऊ राज्य के स्तंभ क्यों हो रहे हैं। जयसिंह ने उत्तर में कहा जिस विषय में हम लोग व्रती हो जाते हैं फिर उसका किसी न किसी भांति निर्वाह करते ही हैं। यदि आप राजपूतों का इतिहास पढ़िए तो आपको विदित होगा कि राजपूतों ने सुख दुःख सब में अपना सत्य व्रत पालन किया है। हरिश्चन्द्र को देखिए. धन दारा पुत्र कुटुम्बादिक सब को उन्होंने सत्य के आगे तुच्छ समझा। हम लोगों ने सहस्रों वर्ष मुसल्मानों से युद्ध किया है परन्तु कभी सत्य छोड़ा है? कभी विजयी हुए कभी पराजित, परन्तु जय पराजय सम्पद, विपद, सब में सर्वदा सत्य पालन किया है। अब हमारी गौरव की स्वाधीनता जाती रही, पर सत्य पालन करने का

गौरव तो है। देश प्रदेश, विदेश में, शत्रु और मित्रों में राजपूतों का नाम प्रतिष्ठित है। क्षत्रियों ने क्या नहीं किया महाराज टोडरमल ने अपनी राजपूतही सेना से बंगाल को विजय किया, महाराज मानसिंह ने काबुल से उड़ीसा तक मुगलों की पताका फहराई थी परन्तु किसी ने दिए वचन के विरुद्ध न किया।" [क्रमशः]

-:o:--

सभा का कार्यविवरण।

[८]

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २९ फरवरी १९०८ सन्ध्या के ५½ बजे।

स्थान—सभाभवन।

[१] गत अधिवेशन (ता० २५ जनवरी १९०८) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

[२] प्रबन्धकारिणी सभा के ता० ८ दिसम्बर, ६ जनवरी और २५ जनवरी १९०८ के कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

[३] निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए—

१ सेठ पोपटलाल हंसराज–जाम नगर–काठियावाड़ १॥), २ राव पन्ना लाल जी C/o श्रीमती माणिक जू कामदारिन पन्ना ३), ३ बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा–छतरपुर बुंदेलखण्ड १॥), ४ बाबू मृत्युञ्जय भट्टाचार्य हथौज मनियर बलिया ३), ५ डाक्टर देवी दत्त पंडया हेल्थ अफसर बनारस ६), ६ पं० तारा चन्द चौधरी अजमेर १॥), ७ पं० सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा गायघाट बनारस १॥), ८ पं० निक्का मिश्र लाहोरी टोला बनारस १॥), ९ बाबू गणपतिराय सक्सेना हिन्दू कालेज बनारस १॥), १० मिस्टर जी० एस० खल्ला अन्ता कोटा १॥)

[४] सभासद होने के लिये निम्नलिखित नवीन महाशयों के आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

१ बाबू खेमचन्द्र मुनसफी सहारनपुर, २ पं० उदित मिश्र नायब मुदर्रिस शिवपुर बनारस, ३ मिस्टर जी० एम० कार हेडमास्टर हरिश्चन्द्र स्कूल बनारस, ४ पं० चन्द्रदत्त शर्म्मा शिवपुर बनारस, ५ बाबू बलदेव प्रसाद वैश्य शिवपुर बनारस, ६ पं० देवी प्रसाद मिश्र मौजा खरिक काली थान विदपुर जि० भागलपुर, ७ पं० राममणि दीक्षितावार्य रामकटोरा बनारस, ८ बाबू त्रिबेनीप्रशाद दारागंज इलाहाबाद, ९ बाबू इश्कलाल पटवारी ध्याण पो० नागल जि० सहारनपुर, १० पं० गौरीशंकर व्यास, ११ बाबू मुन्नीलाल, क्राउन कम्पनी बरना का पुल बनारस, १२ रेवरेण्ड ई० एच० एम० वालर सिगरा बनारस, १३ बाबू गणेशप्रसाद नारायण शाही चौकाघाट बनारस, १४ लाला अर्जुनदास वासुदेव एकस्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर गुरगांव।

[५] बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव तथा पं० रामनारायण मिश्र के अनुमोदन पर निश्चय हुआ कि आनरेब्ल पं० सुन्दरलाल जिन्होंने हिन्दी कोश के लिये १०००) रु० से सभा की सहायता की है सभा के स्थायी सभासद चुने जांय।

[६] हरदोई के बाबू प्यारे लाल रस्तोगी का इस्तीका उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

[७] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यबाद पूर्वक स्वीकृत हुईं—

१ खड्ग विलास प्रेस बांकीपुर—बाबू साहिब प्रसाद सिंह की जीवनी, २ पं० शंकर राव काशी, लखनऊ की कब्र चौथा—भाग, परिभाषा सूत्र, ३ पं गणेश प्रसाद शुक्ल काशी—गर्ग मनोरमा, ४ बाबू श्यामसुन्दर दास काशी—अद्भुत रहस्य भा० १—४, ज्ञान वर्णमाला, व्याख्यान प्रबोध भाग १, ५ लाला बद्री प्रसाद अग्रवाल, प्रयाग—ज्वरांकुश, ६ बाबू गिरिधर दास, काशी—गंगोत्री मार्ग वर्णन ७ पं० कृष्णानन्द जोशी मुरादाबाद—ज्ञानसमुद्र, ८ श्रीमन्त सर्दार बलवन्त राव भया साहब सींदे—श्रीमद् भाषा भागवत दशम स्कन्ध, ९ पं० जनार्दन जोषी बी० ए०—ज्योतिष चमत्कार, १० पं० श्यामसुन्दर लाल त्रिपाठी, काशी—

वृक्तृतामाला भाग १, ११ महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी काशी-तुलसीसुधाकर, १२ बाबू लक्ष्मीनारायण धवन काशी-प्लानचेट, गीतावली, १३ बाबू मोतीचन्द काशी-वेदस्तुति व्याख्या, १४ बाबू हीरालाल जैन काशी-जैनव्यवस्था भूमिका, १५ पं० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल काशी-मरहठा सरदार ।

संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंण्ट General Report on Public Instruction in the United Provinces for the year ending 31st March 1907.

भारत की गवर्न्मेंण्ट Studies in the medicine of ancient India Pr. I.

[८] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर
मंत्री ।

[१३]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ९ मार्च १९०८—सन्ध्या के ५½ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०—सभापति, रेवरेण्ड ई० ग्रीब्स, मिस्टर गुन्नीलाल शा, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद, बाबू बेणीप्रसाद, बाबू माधव प्रसाद, बाबू गोपालदास ।

१ गत अधिवेशन (ता० ३ फ़रवरी) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

२ आगरे के बाबू श्यामलाल का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के संरक्षक "नृपतिगण" के अतिरिक्त "हिन्दी के विशेष सहायक" भी बनाए जांय । निश्चय हुआ कि सभा इस समय इसे स्वीकार करना उचित नहीं समझती ।

३ बाबू छन्नूलाल गुप्त की बनाई हुई शीघ्रलिपि प्रणाली की पुस्तक बाबू श्रीशचन्द्र बोस की इस सम्मति के सहित उपस्थित की गई कि यह पुस्तक ठीक नहीं है और सभा ने इस विषय की जो पुस्तक बनवाई है वह इससे कहीं उत्तम है। निश्चय हुआ कि बाबू छन्नूलाल गुप्त की पुस्तक उन्हें लौटा दी जाय।

४ ग्वालियर राज्य के नागरी हस्तलिपि परीक्षा के सन् १९०७ के पर्चे उपस्थित किए गए। निश्चय हुआ कि इनकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय—पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू अमीर सिंह और बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०।

५ पण्डित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल के लेखों की परीक्षा के लिये जो सब-कमेटी नियत हुई है उसमें मिस ज्यार्ज हिन्दी भाषा नहीं जानतीं अतः उनके स्थान पर डाक्टर एस० के० चौधरी नियत किए जांय।

६ पण्डित रामनारायण मिश्र की सम्मति के सहित राय शिवप्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पुस्तकालय की सूची विषयक्रम से तय्यार करने के लिये यह उत्तम होगा कि पुस्तकों की छपी हुई सूची ऐसे महाशयों के पास भेजी जाय जिन्होंने उन पुस्तकों को पढ़ा हो और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे पुस्तकों के नाम के आगे उनका विषय लिख दें। निश्चय हुआ कि राय शिव प्रसाद के प्रस्ताव के अनुसार कार्य होने में बहुत अड़चन पड़ेगी।

७ पण्डित महादेव शरण पाण्डेय का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि गोरखपुर की छात्रोपकारिणी सभा की ओर से बाबू सीताराम सिंह इस सभा के सभासद चुने जांय और उनका चन्दा क्षमा किया जाय। निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जा सकता।

८ महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी का 'रामकहानी की भूमिका' शीर्षक लेख उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि यह नागरीप्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित किया जाय।

९ मंत्री ने सूचना दी कि अन्नपूर्णा मिल्स कम्पनी में सभा का जो एक शेयर था उसकी बिक्री का सभा को ३२) रु० मिला है। निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

१० संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का १८ फरवरी का पत्र नं० जी-४६८४ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि हिन्दी कोश के लिये सभा स्वयं कितना द्रव्य जुटा सकेगी और क्या उसने हिन्दी प्रेमियों से इसके लिये चन्दा उगाहने का कोई प्रबन्ध किया है। निश्चय हुआ कि डाइरेक्टर साहब को लिखा जाय कि सभा इसके लिये चन्दा उगाहने का उद्योग कर रही है और उसे आशा है कि वह १५०००) रु० इसके लिये एकट्ठा कर लेगी। सभा की प्रार्थना है कि संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेण्ट उसकी इस कार्य में विशेष सहायता करे।

११ मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का २७ फरवरी का पत्र नं० १३८६ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि हिन्दी कोश की एक प्रति का मूल्य क्या होगा और सूचना दी थी कि उसने इस कोश के काम में सहायता के लिये अपने प्रान्त से राय साहब नानक चन्द को प्रतिनिधि नियत किया था। निश्चय हुआ कि उनको लिखा जाय कि अभी यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि इस कोश का मूल्य कितना होगा, अनुमान से वह २०) रु० के लगभग होगा। प्रतिनिधि नियत करने के लिये उन्हें धन्यवाद दिया जाय।

१२ पण्डित जगदीश्वर प्रसाद ओझा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे चांदी का एक पदक सभा द्वारा उस मनुष्य को दिया चाहते हैं जो "सरूपारी ब्राह्मणों की उत्पत्ति और इतिहास" पर एक सर्वोत्तम लेख लिखे।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में इस पदक का सयूपारी ब्राह्मण सभा द्वारा दिया जाना उपयुक्त होगा।

१३ पण्डित त्रैलोक्यनाथ पाठक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा से वीरविनोद नामक पुस्तक के नकल करने की आज्ञा मांगी थी। निश्चय हुआ कि उनको इसके लिये आज्ञा नहीं दी जा सकती।

१४ श्रीमान् राजा साहब भिनगा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यदि सभा "Minor Hints by Sir. T. Madhava Rao" का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करे तो वे उसके अनुवाद तथा छपाई के लिये सभा को ३००) रु० की सहायता देंगे। निश्चय हुआ कि इस पुस्तक की केवल छपाई में ४००) से अधिक व्यय होगा और इसके लिये एक योग्य अनुवादक भी आवश्यक है। अतः सभा को यदि इसके लिये ७००) रु० की सहायता मिले तो वह इसे प्रकाशित कर सकती है।

१५ बाबू खानचन्द्र का पत्र पण्डित रामनारायण मिश्र की इस सम्मति के सहित उपस्थित किया गया कि जो पुस्तकें सभा के पुस्तकालय में आवें उनकी विशेष सूचना नागरीप्रचारिणी पत्रिका द्वारा दी जाय जिसमें पत्रिका पढ़ने वाले हिन्दी रसिक उनमें से चुन कर अच्छी अच्छी पुस्तकें अपने लिये मंगा सकें। निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव आगामी वर्ष में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

१६ सन् १९०७ की हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की रिपोर्ट उपस्थित की गई। निश्चय हुआ कि यह स्वीकार की जाय और गवर्न्मेंट के पास भेज दी जाय।

१७ कोश प्रबन्धकर्त्तृ कमेटी के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि निम्नलिखित महाशय उसकी बड़ी कमेटी के सभासद चुने जांय—

पण्डित मदनमोहन मालवीय, प्रयाग; पण्डित गणपत जानकी राम दुबे, ग्वालियर; ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा, प्रयाग; बाबू सन्नूलाल गुप्त, बुलन्दशहर; बाबू युगल किशोर अखौरी, बांकीपुर; पण्डित

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, हुशंगाबाद; पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, मुजफ्फरपुर; पण्डित लज्जाराम मेहता, बूंदी; बाबू ठाकुर प्रसाद, काशी; पण्डित विनायक राव, जबलपुर; पण्डित राधाचरण गोस्वामी, वृन्दावन; राजा कमलानन्द, सिंह श्रीनगर; पण्डित गंगा नाथ झा, प्रयाग; पण्डित रमाशङ्कर मिश्र, गाजीपुर; मिस्टर ड्यूहर्स्ट रायबरेली और मिस्टर आर० बर्न, गोंडा।

१८ निश्चय हुआ कि प्रबन्धकारिणी सभा में जो बाहरी सभासदों का चुनाव होता है वह स्थायी रूप से हुआ करे और प्रत्येक प्रान्त के प्रतिनिधि के चुनाव के लिये उस प्रान्त के सभासदों को प्रस्ताव करने का अधिकार दिया जाय।

१९ बाबू माधव प्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने १७ मार्च को पवित्र होली का उत्सव करने के लिये सभाभवन मांगा था और मैजिक लालटैन भी बिना कुछ दिए मांगी थी। निश्चय हुआ कि इनकी प्रार्थना स्वीकार की जाय।

२० निश्चय हुआ कि सभा के नोकरों को वेतन मद्धे पेशगी रुपया बिना प्रबन्धकारिणी सभा की विशेष आज्ञा के किसी अवस्था में न दिया जाय।

२१ बांकीपुर के बाल सम्मिलन समाज का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपने समाज के लिये सभा से पुस्तकों की सहायता मांगी थी। निश्चय हुआ कि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति उन्हें अर्द्ध मूल्य पर दी जाय।

२२ निश्चय हुआ कि भविष्यत में प्रबन्धकारिणी सभा के अधिवेशनों की सूचना टाइप में छपाई जाय।

२३ इलाहाबाद युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार का ४ मार्च का पत्र नं० ८७६ सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि बोर्ड आफ स्टडीज की सम्मति में मैट्रिक्यूलेशन परीक्षा के लिये हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में अभी परिवर्तन करने का समय नहीं है।

२४ प्रयाग की नागरी प्रवर्द्धिनी सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपनी सभा के लिये नागरीप्रचारिणी पत्रिका बिना मूल्य दिए जाने की प्रार्थना की थी। निश्चय हुआ कि उनकी प्रार्थना स्वीकार की जाय।

२५ सुदामा चरित ग्रंथमाला में प्रकाशित होने के लिये उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि सभा इसे नहीं प्रकाशित कर सकती।

२६ सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

बेणीप्रसाद, उपमंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

फरवरी १९०८।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	१७४	१३	१०	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७७	१०	०
सभासदों का चन्दा	२८	१४	०	पुस्तकालय	६५	१	०
पुस्तकों की बिक्री	१४३	५	०	पृथ्वीराज रासो	४३	१२	०
रासो की बिक्री	१४	०	०	नागरी प्रचार	८	११	३
हिन्दी कोश	१०००	०	०	पुस्तकों की खोज	७५	१०	१०½
पुस्तकालय	१०१	८	०	फुटकर	३५	८	१½
फुटकर	३६	४	०	डांक व्यय	२६	५	३
राधाकृष्णदास स्मारक	५	०	०	हिन्दी कोश	२	८	०
नागरी प्रचार	१	१	३	छपाई	४८	५	०
जोड़	१५०५	१४	१	पुस्तकों की बिक्री		८	०
				जोड़	३८६	०	६
				बचत	१११९	१३	७
देना ६०००)				जोड़	१५०५	१४	१

जुगुलकिशोर, मंत्री।

विशेष सूचना।

गत दो वर्षों से प्रबन्धकारिणी सभा में ६ बाहरी और १४ नगरस्थ सभासद रहते आए हैं। अभी तक यह कार्य परीक्षारूप में होता था अब सभा ने इस प्रबन्ध को स्थायी रूप से रखना निश्चित किया है जैसा कि इस पत्रिका में प्रकाशित कार्य-विवरण से स्पष्ट होगा। अतएव सब सभासदों को सूचना दी जाती है कि नियमानुसार वे जिन जिन महाशयों का नाम आगामी वर्ष के पदाधिकारी तथा प्रबन्धकारिणी सभा में सभासद होने के लिये चुना चाहें उनकी सूचना १५ मई तक सभा को दे दें जिसमें सब प्रस्तावों पर विचार कर प्रबन्धकारिणी सभा नियमित सूची प्रकाशित कर सके।

काशी	जुगुलकिशोर
१५-४-०८	मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] अप्रैल १९०८। [संख्या १०

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।

सिकन्दर शाह।

[नवें अंक के आगे]

इसी अवसर में दारा का एक एलची फिर से सिकन्दर के पास आया। उसने अपने परिवार प्रति सिकन्दर के सभ्य एवं राज्योचित व्यवहार पर धन्यवाद प्रकाश करते हुए लिखा कि मैं एशिया को छोड़ देता हूं और मेरे बाद आपही यहां के बादशाह रहिए मेरा विचार तो यह है कि इफवात

के पूर्व्व के समस्त प्रदेश पर आप शासन करें और मेरी एक लड़की के साथ आप व्याह करना भी स्वीकार करें तो अच्छा हो। इसके उत्तर में सिकन्दर ने दारा को लिखा कि मैं तुम्हारी चाहे जिस लड़की को व्याह सकता हूं जब कि वे मेरी बन्दी हैं तब ये सर्वथा मेरे अधीन हैं, मैं उस वस्तु का एक थोड़ा सा भाग पाकर कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता जिस पर कि सर्वथा मेरा हक है।

इसके पश्चात् सिकन्दर ने सीरिया में पैठकर फिलिस्लाइन प्रदेश के किनारे किनारे कूच किया। फिलिस्लाइन निवासी जन समूह यद्यपि सब तरह से सिकन्दर का साम्हना करने योग्य थे परन्तु वे सदा से पूर्व्वी जातियों के शासनाधीन चले आते थे इसलिये उनकी रगों मे तेजस्विता का खून और स्वतंत्रता की इच्छा जरा भी शेष न थी। फिलिस्लाइन प्रदेश के पांच शहरों में से चार ने तो आपसे ही सिकन्दर का अधिपत्य स्वीकार कर लिया लेकिन पांचवें शहर गाज़ा के अधिपति ने जो कि एक हब्शी जनखा था—अपने तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते दम तक स्वतंत्रता का रखना विचार कर सिकन्दर का साम्हना करने का साहस किया। उसकी उत्तेजना जनक एवं उत्कर्षमय शिक्षा के कारण बहुत से अरबी और स्वाधीनता खोए हुए फिलास्लोनियनस में से भी कुछ लोग उसका साथ देने को तय्यार हो गए। जनखे का नाम बतीस था।

गाजा।

जिस समय सिकन्दर की फौज शहर गाजा के बाहरी प्रान्त में घेरा डाले हुए साधारण रोक टोक कर रही थी और सिकन्दर अपने नियमानुसार कुछ ज्योतिषी और विद्वान यूनानियों की मंडली सहित अपने कुल देवताओं को बलि

दे रहा था कि सिकन्दर के सर पर से उड़ते हुए एक गिद्ध ने एक ऐसा पत्थर का ढोका छोड़ा कि जिससे उसकी कंठमाला (हंसुली) पर कड़ी चोट बैठी। इस पर उसके ज्योतिषियों ने विचार किया कि इस युद्ध में सिकन्दर विजयी तो अवश्य होगा परन्तु उसे कोई गहरी चोट भी लगेगी। सिकन्दर के सगुनिया लोगों ने और मैसारों ने भी यही बात कही कि गाजः का किला अभेद्य है परन्तु सिकन्दर ने उनकी इन बातों पर ध्यान न दे कर अपनी फ़ौज को किले पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। तीन दिन तक बराबर लड़ाई होती रही परन्तु किले वालों का बाल भी बांका न हुआ वरन किले वालों के चलाए हुए पत्थरों में से एक पत्थर सिकन्दर की ठीक कंठमाला में ऐसा लगा कि वह मूर्छित होकर गिर पड़ा किन्तु जब उसे कुछ चेत हुआ उसने फ़ौरन किले की दीवार के नीचे सुरंग लगाने की आज्ञा दी। जब तक एक तरफ से सुरंग लगी तब तक सिकन्दर के एक निज रिश्तेदार ने दूसरे बाज़ू से इस चाल से धावा किया कि किले का फाटक टूट गया और यूनानी सेना किले में घुस पड़ी। क़िले की फौज के सहस्रों सिपाही खड़े काट डाले गए—बहादुर बतीस अगनित घावों के कारण लोहू से तरातर अधमरा गिरफ्तार कर लिया गया—कहा जाता है कि सिकन्दर ने बतीस को हाथी के पैर में बंधा कर शहर पनाह के गिर्द घसीटे जाने की आज्ञा दी किन्तु यह बात विश्वसनीय नहीं हो सकती क्योंकि सिकन्दर शूर बीर पुरुषों का बड़ाही सच्चा दोस्त था और क्या अश्चर्य है कि उसने उस मृतप्राय कंचुकी की कुछ इज़्ज़त की हो।

गाजा की लूट में धूप और इत्र दो चीजें अधिकता से पाई गई थीं और ये चीजें अपनी किस्म की अच्छी भी थीं। सिकन्दर को इसी समय अपने बचपने की एक बात याद आ गई। एक समय उसकी धा कुछ पूजन अर्पण कर रही थी और वह खेल रहा था। उसने धूप का बड़ा भारी भेला उठा कर आग में डाल दिया इस पर उसकी धा ने अत्यन्त कुपित होकर उसे बहुत झिड़का और डपटा इसलिये सिकन्दर ने कई मन धूप अपनी बुड्ढी धा के पास भेज कर लिख भेजा कि मैं बहुत सा धूप भेजता हूं सो देवताओं को अर्पण कीजिए और मेरी लड़कई का अपराध क्षमा कीजिए।

जेरूसलम और मिश्र।

इस प्रकार गाजा पर अधिकार जमा कर सिकन्दर ने अपने लश्कर की लगाम शहर जैरूसलम की तरफ फेरी; पहाड़ी और जंगली रास्ते ते करता हुआ वह जिस समय जैरूसलम के पास पहुंचा तो उसने देखा कि समस्त जैरूसलम निवासी जन समूह उसकी तरफ आरहे थे। उन लोगों के हाथ में न तो कोई तलवार, बंदूक या तीर कमठा वगैरह हथियार था, न कोई लड़ाई का सामान; वे सब के सब नीले गोटदार टिहुने तक लंबे सफेद अंगे पहने और सर पर सफेद पगड़ी बांधे सोने चांदी की तुरही बजाते और अपने उदासीन धर्म सम्बन्धी पवित्र गीत गाते हुए एक बड़े समारोह से सिकन्दर की तरफ चले आ रहे थे। उनके मुखिया या प्रोहित या नेता का नाम युद्दा था उसकी पोशाक भी उसी तरह की थी परन्तु उसमें चमक विशेष

थी और किनारे पर लैस (गोटा) भी लगी हुई थी और सीने पर बहु मूल्य रत्न जड़े हुए थे। उसकी टोपी पहाड़ियों की तरह थी जिसकी रूलामी पर सुनहले अक्षरों में लिखा हुआ था कि "ईश्वर पवित्र है"।

फिनीशियन लोगों का जो कि सिकन्दर के साथी बन गए थे अथवा उसके अन्य साथियों का अनुमान था कि सिकन्दर उन पर आक्रमण किए जाने की आज्ञा देगा। किन्तु ज्योंही वे कुछ और पास आकर दिखादाव में हुए सिकन्दर फौरन साष्टांग दण्डवत करके पृथ्वी पर लकुटाकार गिर पड़ा; उसने फिर उठकर दोनों हाथ फैला कर बड़ी सभ्यता के साथ युद्दा को प्रणाम किया और उसका आशीर्वाद लिया। उसी समय युद्दा के अन्यान्य साथी लोगों ने सिकन्दर को चारों ओर से घेर लिया। यद्यपि सिकन्दर के मुख्य सेनापति परमिनो तथा अन्यान्य सैनिक नेताओं को सिकन्दर का युद्दा के साथ इस प्रकार सहसा मित्र भाव का व्यवहार अच्छा न लगा और उन्होंने अपना मत भी प्रकाश किया परन्तु सिकन्दर ने उनसे कहा कि मैं यह व्यवहार किसी मनुष्य के साथ नहीं कर रहा हूं वरन यह सब युद्द की टोपी पर लिखे हुए ईश्वर के नाम पर है। सिकन्दर इस साहस से अपने साथियों को संतोष देकर युद्दा के साथ हो लिया। उसने युद्दा के देवमंदिर में जाकर उचित श्रद्धा के साथ पूजन किया और बलि भी दिया, देवमन्दिर से लौटते वक्त युद्दा ने अपनी भविष्यवाणी के लेख का लपटा हुआ चर्मपत्र निकला और इस प्रकार कहने लगा कि आपका आक्रमण हम लोगों को पहिले से

मालूम था। हमारे उस प्रचीन नेता या बादशाहों ने जिन्हें पारस के बादशाह नौशेरवां और कैखुसरो वगैरह की गुलामी और कैद भोगनी पड़ी इस भविष्यवाणी में लिखा है कि उन्होंने स्वयं देखा कि पश्चिम की तरफ से एक मेढ़े ने आकर मेढ़ा और फारिस के सब मेढों को मार भगाया, और इसका फल एक स्वर्गीय दूत ने यह बतलाया कि यह मेढा (ग्रीस) यूनान का है अतएव आगे होने वाला यूनानी बादशाह इन सब को परास्त करे गा। यद्दा ने कहा कि जिस समय आपका घेरा गाजा पर पड़ा हुआ था तभी मुझे स्वप्न हुआ था कि भविष्यवाणी में वर्णन किया हुआ जगत् विख्यात विजेता आ रहा है शीघ्र ही उसके लिये शहर का दरवाजा खोला जाय और सब लोग उसकी अगवानी के लिये जांय अतएव हम लोगों ने वैसाही किया। जैरूसलम के यद्दा से इस प्रकार भविष्य वाणी सुनकर एवं उसके सद् व्यवहार से प्रसन्न होकर सिकन्दर ने तमाम जैरूसलम के सिपाहियों पर तथा अन्य यहूदी जाति पर बड़ी ही कृपा दिखाई। उसने उनकी धार्मिक उदासीनता को भी उत्तम तत्व सूचक पंथ माना—सिकन्दर ने वहां से कूच करते समय यहूदियों को अपनी सेना में सम्मान सहित चलने की आज्ञा दी।

जैरूसलम हस्तगत होते ही मिश्र का प्रशस्त भूभाग भी बिना प्रयास सिकन्दर के हाथ लगा। क्या जाने मिश्र वासी लोग या तो सिकन्दर के प्रचण्ड प्रकोप से डर गए या फारिस के शासन से दुखी थे। खैर जो हो। यहां पर इतना और कह देना आवश्यक है कि उस समय मिश्र में यूनानी लोगों की बस्ती अधिक थी। सिकन्दर की यह भी इच्छा

थी कि जहां तक होसके उन यूनानी लोगों पर जो कि अन्यान्य देश में निवास करते थे और अन्यान्य जातियों के शासनाधीन थे अपना अधिकार केवल नाम मात्र को जमा कर उन्हें यूनान देश की उन्नति शाली विद्याओं से परिचित करके अच्छी अच्छी राजनैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षाएं देवे और इस प्रकार से उन्हें प्रदेश का स्वतंत्र नेता या शासक बनाकर संसार भर में यूनान के उन्नतिशाली विचारों का आधिपत्य फैला दे—सिकन्दर की यह इच्छा मिश्र में पूर्णतया सफल हुई । सिकन्दर के मिश्र में पहुंचते ही समस्त मिश्र प्रदेशवासी जन समूह ने सिकन्दर के आधिपत्य को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करलिया । सिकन्दर मैसीडोन छोड़ कर अब तक जितने भूभाग का सफर कर चुका था उतने में उसे अन्य कोई स्थान ऐसा अच्छा न जंचा जैसा कि मिश्र—मिश्र की समयोचित्त उत्तम जल वायु, जहां तहां उमदा उमदा फल फूल और मेवों के वृक्षों तथा समस्त प्रदेश के हरे भरे उपजाऊ रमणीक स्थल ने सिकन्दर का मन मोह लिया । उसने ऐसी उत्तम भूमि पर अपने नाम का अचल कीर्ति स्थंभ रोपने अथवा पूर्व और पश्चिम के देशों में व्यापारिक सम्बन्ध का द्वार खोलने के लिये एलेकजेंड्रिया के शहर की नींव डाली । कहा जाता है कि सिकन्दर ने पहिले तो उक्त शहर की नींव मिश्र देश के मध्य प्रदेश में स्थापित करना विचारा किन्तु उसी रात्रि को स्वप्न में एक वृद्ध पुरुष—जो कि उसके अनुमान से उसका पूर्व पुरुष था दिखाई दिया और उसने सिकन्दर से कहा कि वह नाइल नदी के मुहाने पर अमुक अमुक स्थान पर ही अपेक्षित नगर को आबाद

करे क्योंकि उक्त स्थान पर बसाया हुआ नगर केवल उसका कीर्ति स्तम्भ और व्यापारिक आय व्यय का द्वारही न होगा वरन वह मिश्र देश निवासी यूनानी मनुष्यों की रक्षा के लिये मिश्रदेश रूपी दुर्ग का फाटक भी होगा। अत एव सिकन्दर ने ऐसाही किया। जिस समय सिकन्दर उक्त स्थल पर पहुंचा उसे भी स्वप्न सम्बन्धी बातें यावत् ठीक जंची। इस लिये उसने उसी समय पिसान को पगेर कर सिकन्दरिया की नीव की डोरी डलवाई। सिकन्दर ने सिकन्दरिया में यहूदी यूनानी और प्राचीन मिश्र निवासी आदि सब लोगों को उचित स्थान दिए। जब सिकन्दरिया हाट बाट चौहटे बाज़ार बाग बगीचे आदि सब भांति से सज बज कर एक उत्तम शहर बन गया तब उसने कहा कि वह मिश्र निवासी लोगों की इष्ट देवी के टूटे हुए मन्दिर को निज व्यय से बनवा कर दुरुस्त कर दे। परन्तु मिश्र निवासियों ने सिकन्दर की इस उदारता को एक राजनैतिक चाल समझ कर किसी प्रकार टाल दिया।

इस समय सिकन्दर की अवस्था केवल २४ वर्ष की थी। यूनान वासी लोगों का मत था कि उनके वे पूर्वज जो कि अत्यन्त भाग्यशाली एवं पराक्रमी पुरुष हो गये हैं किसी न किसी देवी या देवता के अवतार स्वरूप थे। सिकन्दर यद्यपि जानता था कि उसके माता पिता मनुष्य हैं परन्तु लगातार फतहयाबियों ने उसके दिल में भी इस बात का ख्याल डाल दिया था कि वह भी अपने को किसी न किसी शक्तिशालिनी देवी का अवतार मानता था। उसके दल के ज्योतिषी और शकुनियां भी उसके इस विचार के उत्तेजक थे। [क्रमशः]

रामकहानी की भूमिका ।

[नवें अंक के आगे ।]

मेरा यह कहना है कि हिंदी भाषा के लिये हम लोगों को दूर पूर्व बंगाले या पच्छिम दिल्ली तक न जाना चाहिए । बीच में ठहर कर ऐसी राह बनानी चाहिए जिस में सब को सुभीता हो । जो काव्य करना हो तो अपनी भाषा को बढिआँ बनाने के लिये चाहे जैसे शब्दों का गहना (अलङ्कार) पहनाइए । जैसे—

कल कलकत्ते से रेल गाड़ी आई, जिसके सेकंड क्लास की गाडी रचना की कला से ऐसी चित्रित थी कि जी यही चाहता था कि रचयिता के हाथ की अर्चा करें । लंडन राजधानी की चर्चा जाने दीजिए, आज कल कलकत्ते के देखने से धी चकरा जाती है । सकल जन यह कहा करते हैं कि कलकत्ता कल का आकर है । कालिका-जननी की दया से देश देश के कारीगर निज कर से अनन्त कल रच कर कलकत्ते शहर की छटा अधिक कर दिए हैं ।

इसमें कवि की इच्छा थी कि पवर्ग और उ, ऊ, ओ, औ अक्षर न आवें इसलिये इस काव्य में कठिन शब्द अर्चा (पूजा) धी (बुद्धि), कर (हाथ)......के ले आने में कुछ दोष नहीं । पर यह समझ रक्खो कि काव्य में भी उसी काव्य की तारीफ़ होती है जिसमें कि प्रसादगुण हो बाक़ी और सब काव्य दुष्ट काव्य हैं ।

सूरदास का कूट—

* सारँगतट † सारँगहित सजनी अब कबहूँ नहिँ जैहैँ।
बिन समझे ‡ बिपरीतमालिका कौन § बदन महँ लैहैँ॥
|| पगरिपु लगत सघनकुच ऊपर बूझत कहा बतैहैँ।
सूरदास अब वा मग सजनी भूलिहु नाहिँ चितैहैँ॥

मेरा दो अक्षर का दोहा र, ल के सावर्ण्य से—

रैरैँ नीर नर नरन नर नारा नारी नार।
रैरैँ नीर नर न रन नर नारा—नारी नार॥
(लैरैँ नील नल न रन नर नारा—नारी नाल)॥

मेरा एक अक्षर का दोहा र, ड, ल के सावर्ण्य से—

लाल लालिली लालि लल लोली ले ले लोल।
लालैँ ली लीला ललैँ लालि लालि ललि लोल॥
(लाल लाडिली डारि डर रोरी ले ले डोल।
डारैँ री लीला लडैँ लालि लालि लडि डोल॥)

ए सब दुष्ट काव्य हैँ।

तुलसीदास की चौपाइआँ—

कोटि मनोज लजावनहारे।
सुमुखि कहहु को आहिँ तुम्हारे॥

---

* सारँग=सारङ्ग=तालाब।

† सारँग=सारङ्ग=कमल।

‡ विपरीतमालिका=मालिका का उलटा=कालिमा=कारिख

§ बदन=वदन=मुँह।

|| पगरिपु=पैर का शत्रु—काँटा।

सुनि सनेहमय मंजुल बानी।
सकुचि सीय मन महँ मुसुकानी॥
तिन्हहिँ बिलोकि बिलोकति धरनी।
दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी॥
सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी।
बोली मधुरबचन पिकबयनी॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे।
नाम लखन लघु देवर मोरे॥
बहुरि बदन बिधु अंचल ढाँकी।
पिय तन चितइ भौंहँ करि बाँकी॥
खंजन मंजु तिरीछे नैनन।
निज पति कहेउ तिन्हहिँ सिय सैनन॥

प्रसादगुण और स्वभावोक्ति से भरी हैं।

और बिहारी के—

फिरि फिरि बूझति कहि कहा कह्यो सावँरे गात।
कहा करत देखे कहाँ अली चली क्यों बात॥

इस दोहे में भी प्रसादगुण है।

सुनतेही सुननेवाले के मन में सब अर्थ झलक उठे उसी को प्रसादगुण कहते हैं।

आज कल सब देश के लोगों की यही राय है कि भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे पढ़तेही मन में मतलब आ जाय। बनारस के बड़े बड़े पण्डितों की चिट्ठी देखो तो अचरज करोगे; उस में भी अवच्छेदकता—अवच्छिन्न भरे

रहते हैं; उन्हीं के ऐसा जो हो उसी का काम है कि सब मतलब समझ सके ।

भाषा सुधारने के लिये कमेटी बैठाने की ज़रूरत नहीं है, हम लोग घर में जैसी बोली बोलते हैं उसी को सुधार कर लिखने की आदत डालें तो थोड़ेही दिनों में आप से आप भाषा सुधर जाय ।

आज कल लोग 'यदि, और 'इत्यादि, को बहुत लिखने लगे हैं पर बोल चाल में ए आते ही नहीं । यदि की जगह जो. जौं और अगर आते हैं; जैसे 'जो यह बात है तो', या 'जौं यह बात है तो', या 'अगर यह बात है तो', । यदि को तो लोग बड़ी खुशी से लिखते हैं पर इस के भाई तदा को तो लिखना कौन कहे फूटी आँख से भी नहीं देखते । संस्कृत यदि, यदा, यर्हि, से हिंदी का जो, जौं, जब और संस्कृततदा, तर्हि से हिन्दी का तो, तब बना है । बोलचाल की हिंदी में जब, तब, और जो, तो बराबर आते हैं; कभी कभी संस्कृत "तदा तु" की जगह बोल चाल में 'तब तो भी' आता है ।

अब मेरा कहना है कि 'जो' को निकाल कर यदि रखने से क्या बात सुधर जाती है । बहुत से लोग कहते हैं कि 'जो' भद्दा जान पड़ता है इसलिये 'यदि' रक्खा गया । मेरी समझ में भद्दा और बढ़िआँ अपनी आदत पर है । हम लोग जिस सितार की गत सुन कर मोह जाते हैं यूरोप के लोग उसी को सुनकर कड़ुआ समझ कान बंद कर लेते हैं । आफ्रिका में काले और कश्मीर में गोरे रंग की तारीफ़ की जाती है । शङ्कर, रामानुज, श्रीधर वग़ैरह के भग-

वंदगीता के अर्थ फीके पड़ गए। अब श्रीमती बीबी बेसंट का किया हुआ अर्थ अच्छा लगता है।

सभी के मुँह में जो शब्द बसे उसी को मैं अच्छा समझता हूँ। लल्लू जी ने अपनी पोथिओं में "यदा" तदा, की जगह आगरे के बोल चाल के "जद" तद, लिखे हैं।

बोलचाल में जिस शब्द के आगे "इत्यादि" लगाना होता है उस शब्द के पहिले अक्षर की जगह व कर फिर उस को दोहरा देते हैं जैसे धोती वोती=धोती इत्यादि। लोटा वोटा=लोटा इत्यादि। बहुत से लोग "इत्यादि की जगह" वग़ैरह बोलते हैं जैसे धोती वग़ैरह। अब फ़ैसला कीजिये कि नहाने के लिये धोती वोती लाओ, स्नानार्थ धोती इत्यादि लाओ, स्नानार्थ धौतवस्त्र प्रभृति लाओ, इन में कौन वाक्य बोलें जिस से मेरा आदमी झट बात को समझ ले। मेरी समझ में अगर "वोती" को भद्दा समझो तो वग़ैरह से सब साफ़ साफ़ समझेंगे। "लिये" की जगह "वास्ते" को रखना यह अपने पसंद पर है आज कल की बोलचाल में दोनों बराबर आते हैं। "उस के लिये इस काम को करो" या "उस के वास्ते इस काम को करो" दोनों बोल चाल में आते हैं। मैं "यदि" और "इत्यादि" का विरोधी नहीं पर जो बात है उसको सच कहा चाहता हूं।

खड़ी बोली—मेरे मित्र बाबूराधाकृष्णदास ने कुछ हिंदी के बारे में लिखा था, उस समय मुझ से पूछा था कि खड़ी बोली से क्या मतलब है; शायद मेरे अर्थ को वे लिखे भी हों।

हिंदी और संस्कृत में र, ड, ल का अक्सर अदल बदल हुआ करता है इसलिये "खरी बोली" के स्थान में

"खड़ी बोली" है। जैसे खरे खोटे मिले जुले सिक्कों में से परख कर खरे सिक्कों को चुन लेने से फिर वे खरे सिक्के कहलाने लगते हैं उसी तरह खोटी खरी बोलिओं में से खरी को चुन लेने से खरी बोली कहलाने लगी। बोली से शब्द लिआ गया है।

अपनी भाषा में शब्दों के रहते उन की जगह भूल से जो दूसरे शब्द आ गए हों उन्हें खोटे शब्द कहते हैं; उन्हें निकाल देने से खरे शब्द को "खरी बोली" कहते हैं। जैसे 'यह किताब अच्छी है, इस में पोथी शब्द के रहते दूसरे देश का शब्द 'किताब, आगया है। इसे निकाल देने से खरी बोली "यह पोथी अच्छी है" हुई। ऐसे ही "यह रेल गाड़ी किस तेज़ी से दौड़ती है" यहाँ "रेल" को खोटी बोली न समझना क्योंकि इस की जगह हिंदी में दूसरा शब्द ही नहीं। इस लिये ऊपर के वाक्य को खरी बोली कहेंगे।

जो गवाँरी बोली को मोटिआ कपड़ा समझो और अपनी हिंदी की विभक्ति और क्रियाओं को रेशम का टुकड़ा, तो मोटिए के टुकड़े में रेशम के गोटे लगा देने से नया दुपट्टा बनेगा। बहुत से लोग इसी दुपट्टे को सच्ची हिंदी कहते हैं। ए लोग गवाँरी बोली दूध में पहले से मिले हुए फ़ारसी शब्द पानी को हंस बन कर अलगाए हैं पर अलगाने में कहीं कहीं खींचा खींची से दुपट्टे में खोंच लग गए, दुपट्टा फट गया, लोगों के काम का न रहा, अपने अपने मन के गाढ़े शब्दों से जोड़ मिलाने से वह दुपट्टा और भी भद्दा हो गया।

ठेठ हिंदी-खरी बोली ही के अर्थ में दूसरा शब्द

ठेँठ हिंदी, चला आता है पर इस के पदोँ के अर्थ से खरी बोली का अर्थ नहीँ आता।

ऊख जब सूख जाती है तब उसे ठेँठा या ठेँठ कहते हैँ, इस लिये ठेँठ सूखे को कहते हैँ। ठेँठ हिंदी से सूखी हिंदी, जिस मेँ दूसरी भाषा का रस न हो।

पण्डित श्री अयोध्यासिंह ने इस सूखी हिंदी से फूलोँ का गुच्छा (अधखिला फूल) तयार किया है। इस गुच्छे मेँ जो जो शब्द फूल लगाए गए हैँ उन मेँ बहुतेरे ऐसे हैँ जो खरी, या ठेँठ हिंदी मेँ कहीँ नहीँ पाए जाते। पण्डित जी ने जो "इसतरी" आदि शब्द लिखे हैँ वे बनारस वगैरह मेँ कहीँ नहीँ बोले जाते। ठेँठ हिंदी से सूखी हिंदी याने मरी हुई हिंदी अगर ली जाय तो शायद किसी पुराने जमाने मेँ लोग 'इसतरी' बोलते होँ पर किसी पुरानी पोथिओँ मेँ "इसतरी" नहीँ मिलता। तिरिया, नारी, यही शब्द मिलते हैँ आज कल तो सब जगह गवाँरोँ मेँ "मेहरारू" "मेहरिया" और औरत प्रसिद्ध है। पोथी के पढ़ने से साफ साफ जान पड़ता है कि पण्डित जी की भूमिका से वह गुच्छा नहीँ पैदा हुआ है। भूमिका मेँ जो फूल हैँ वे गुच्छे मेँ नहीँ मिलाए गए।

मुझसे पण्डित जी से आज तक भेँट नहीँ पर पण्डित जी के भाई गुरुसेवक सिंह से मुझ से भेँट है। वे मुझ से क्वीन्स कालेज मेँ बी० ए० का गणित पढते थे। पण्डित जी ने अपनी भूमिका मेँ लिखा है कि मेरे भाई से पं० सुधाकर द्विवेदी ने जो जो बातेँ पूछी थी भूमिका मेँ सब

का उत्तर हो गया। मेरे पास वह पोथी न थी मैं ने दूसरे से मँगनी लेकर दो तीन बेर भूमिका पढी पर अपनी बातों का उत्तर कहीं नहीं देखा। मेरी बात ही क्या है, इतना ही तो कहना है कि आप जिस बोली में रात दिन बात किया करते हैं उसे लिखने के समय क्यों भूल जाते हैं।

हिंदी रीडर की कमेटी में गवर्नमेंट की ओर से मैं भी एक मेंबर था, उस में सब अवध के मेंबर थे, लड़कपन से उन लोगों की बोली में फारसी शब्द मिले हैं इस लिये उन्हीं के रखने के लिये उन लोगों की राय होती थी और काम भी जल्दी में किया गया; तो भी जहाँ तक हो सका मैं ने और मेरे मित्र बर्न साहेब ने हिंदी की ओर बहुत ध्यान दिया।

राजा शिवप्रसाद फारसी के पण्डित थे स्कूल की इन्सपेक्टरी मिल जाने से इन्हें हिंदी की ज़रूरत पडी, बनारस नार्मलस्कूल के पण्डित विष्णुदत्त जी से सब अपनी पोथिआँ शुद्ध कराते थे तो भी पोथिओं में बहुत फारसी के शब्द आ गए हैं। मेरी समझ में थोडे से शब्दों के हेर फेर से उनकी पोथिओं की भाषा बहुत ठीक हो जायगी। इन्हें पोथिओं के नामकरण पर बहुत प्रेम था, बड़े बड़े पण्डितों की सलाह से बडे कडे संस्कृत शब्दों में पोथिओं के नाम 'भूगोलहस्तामलक, वामामनरंजन, इतिहासतिमिरनाशक, रक्खे हैं।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की खास हिंदी भाषा अपने देश की बोल चाल से भरी है, कुछ यदि इत्यादि के मेल जरूर हैं। इनका बादशाह दर्पण, और मेरी बनाई इनकी

जन्मकुण्डली पर इनकी राय के पढ़ने से साफ साफ मालूम हो जायगा कि ए उसी हिंदी को चाहते थे जिसकी चर्चा यहाँ हो रही है ।

चिट्ठी-पत्री—आज कल लोग अँगरेजी चाल पर चिट्ठी पत्री लिखने लगे हैं । जिस "डीयर" का तर्जुमा प्रिय या प्रियवर करते हैं वह अँगरेजी में बाप बेटे भाई बंधु सभी के लिये आता है, पर हमारे लोगों में सब के लिये एक शब्द नहीं आ सकता । प्रिय या प्रियवर भी बोल चाल का शब्द नहीं हैं । बहुत से लोग संस्कृत से जुदे जुदे शब्दों को लिये भी हैं पर मेरी समझ में आने जाने पर जिस चाल से जो छोटे बड़े पुकारे जाते हों उसी तरह से संबोधन में जो उनके नाम लिखे जायँ तो बहुत अच्छा हो। जैसे बाबूजी, बड़े भैया, बड़े चाचा या खाली प्रणाम, आशीर्वाद, नमस्कार, लिखना चाहिए । संबोधन के आगे बड़े छोटे के लायक प्रणाम, आशीर्वाद भी लगा देना चाहिए । अंत में बड़े बढ़े हितैषी,—शुभचिंतक... संस्कृत शब्दों का कुछ काम नहीं उन की जगह में बोल चाल के छोटे छोटे शब्दों को लिखना चाहिए । जैसे —

भाई रामदास, आशीर्वाद ।

कल गजेट में तुमारे बी ए पास होने की खबर देख जी बहुत खुश हुआ, भगवान से बिनती है कि दिनों दिन तुमारी बढ़ती हो । अपनी चाची से कह देना कि बड़े दिन की छुट्टी में चाचा ज्यादे कामों में लगे थे इस लिये घर

न आ सके भगवान चाहेगा तो आगे आखिरी शनीचर को रात की गाड़ी में घर आवेंगे ।

१४-१-०८ | तुमारा हितू भगवानदास ।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि कलम पकड़ने की नशे से मैं भी बचा नहीं हूँ पर आप और दूसरों के बचाने के उपाय में लगा हूँ । ऊपर सब जगह मैं ने "लफ्ज़" की जगह "शब्द" या पद लिखा है, वह नशे का झोंक नहीं है, मेरी ओर इसका बहुत प्रचार है इस लिये जान बूझ कर लिखा है । हिंदी के पंडितों से अर्ज है कि मेरे लिखने पर ध्यान दें मानना न मानना उनकी राय पर है मैं हठी नहीं, जैसा वे लोग कहेंगे उसी को मैं भी मानूंगा पर थोड़ी सी तकलीफ और करें, आगे हिंदी में लिखी मेरी रामकहानी को धीरे धीरे ध्यान देकर पढ़ जायँ फिर हिंदी के सुधारने की तदबीर करें—

सुधाकरद्विवेदी ।

महाकवि मिल्टन

और

उनके काव्य ।

[नवें अंक के आगे ।]

इन्होंने मुख्य कर इटाली देश में परिभ्रमण किया जहां इनकी जगत्प्रसिद्ध गलीलियो साहब से भेंट तथा बात

चीत हुए जिन्हे अनुशासन समिति (Inquisition)* ने अनेक स्वतंत्र सम्मतियां प्रकाश करने के लिये उस समय कैद कर रखा था जिनमें मुख्य यह थी कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। ध्यान देने की बात है कि जिस सिद्धान्त को प्रकाश करने के लिये योरप में यह दुर्दशा होरही थी उसके † बहुत पहिलेही भारतवासी सिद्धान्तशिरोमणिकार ने सूर्य के समान्तातर पृथ्वी का परिभ्रमण स्पष्ट अक्षरों में कहा था यद्यपि कुछ अल्पज्ञ पाश्चात्यों ने समझ रखा है कि यह सिद्धान्त गलीलियो के पूर्व भारतवासियों को विदित नहीं था।

इटली के अनेक प्रसिद्ध मनुष्यों ने तथा साहित्य समाजों ने मिलटन साहब का बड़ा सत्कार किया और उनकी प्रशंसा के इटालियन ज़बान में गीत बनाए जिनके उत्तर भी हमारे चरितनायक ने उसी भाषा के गीतों ही द्वारा दिए। आपने ग्रीक हिब्रू और रोमन भाषाओं के उत्तमोत्तम ग्रन्थों को तथा सामयिक लेखकों के लेखों को भी पढ़कर बड़ी विद्वत्ता प्राप्त की और अपने को उस महान कार्य के लिये धीरे धीरे योग्य किया जिसके निमित्त परमेश्वर ने आपको इस संसार में भेजा था।

---

* रोमन काथोलिक देशों में प्रचलित मत विरोधियों को दंड देने के लिये यह एक सभा थी।

† परम प्रसिद्ध अद्वीतीय ज्योतिर्विद श्रीमान् भास्कराचार्य ने अपना सिद्धान्त शिरोमणि नामक विख्यात ग्रन्थ ११५० ई० में लिखा था क्योंकि आचार्य जी स्वयं इसी ग्रन्थ में लिखते हैं कि मेरा जन्म शाके १३०६ अर्थात् १११४ ई० में हुआ और मैं ने ३६ वर्ष की उम्र में सिद्धान्त शिरोमणि बनाया।

मिलटन साहब के सहयोगी पवित्री लोग (Puritans) धार्म्मिक दृष्टि से इनके इटालियन भ्रमणों को दूषण समझते थे। क्योंकि इटाली सारे योरप भर में संगीत के लिये प्रसिद्ध थी इसलिये उनकी दृष्टि में वह दुराचरण की खानि थी। धार्म्मिक और नैतिक उत्साह के अतिरिक्त हमारे चरितनायक दर्शन, साहित्य, संगीत, कला कौशल इत्यादि के बड़े प्रेमी थे। आप आरगन (Organ) बाजा बहुत अच्छा बजाते थे। किन्तु ये सब गुण उस धार्म्मिक और राजनैतिक सम्प्रदाय के सभ्यों में बहुत ही कम पाए जाते थे जिसके महान् विद्रोह (Great Revolution) के समय मिलटन साहब भी सभासद थे। पवित्रयों को संगीत से इतनी चिढ़ थी कि * परमेश्वर की प्रार्थना करने में सङ्गीत से सहायता लेना उनको सह्य नहीं था। ये लोग चित्रकारी, रङ्गसाज़ी प्रभृति सुन्दर कलाओं के ऐसे विरोधी थे कि गवैयों बजवैयों और चित्रकारों को अपनी रक्षा और उन्नति के लिये केवल बादशाह प्रथम चार्ल्स और उनकी कचहरी का मुंह ताकना पड़ता था। इस भांति मिलटन साहब अपने सम्प्रदाय से इस विषय में स्पष्ट रूप से पृथक थे। संक्षेपतः बात तो यह

* हिन्दुओं के यहां प्राचीन काल से संगीत का बड़ा आदर चला आता है यहां तक कि यह ईश्वर-भजन का सर्व्व प्रधान साधन समझा जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण का कथन है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद् भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद॥

इसके अतिरिक्त "प्रथम नाद तब बेद" की कहावत मशहूर है। प्रिय पाठक—इस ख़याल को पवित्रियों के ख़याल से मिलाइए तो सही, कितना अन्तर है!

थी कि हमारे चरित्रनायक साहित्य और कला की सुन्द-रता को बखूबी समझ सकते थे जब कि उनके सम्प्रदाय के लोग (जिनके मज़हब और मूल सिद्धान्त यद्यपि एक थे) केवल बाइबिल पढ़ते थे और साहित्य, दर्शन और कला के अहानिकर आनन्दों की ठीक वैसी निन्दा करते थे जैसी दुराचारिता और नास्तिकता की ।

जब इंगलेंड देश में विद्रोह और आपस के युद्ध (Civil war) की आग भड़कने वाली थी तब उसकी खबर आपको भी मिली । आपने ऐसे समय में स्वदेश लौट जानाही अपना प्रधान कर्तव्य समझा और सन् १६३९ ई० में सीधे घर की राह ली ।

केम्ब्रिज में रहने के समय आपने कई काव्य भी लिखे थे जिनमें सबसे उत्तम 'क्राइस्ट-जन्म, (Ode on Nativity-Brith of Christ) है जिसकी गणना अँगरेजी भाषा के उत्त-मोत्तम गीतों में है । हौर्टन में रहने के समय भी आपने अनेक कविताएं लिखी थीं जिनमें से लैलिग्रो* (L' Allegro) इल पेनसेरोसो (Il Penseroso) अर्किडीज़ (Arcades) कोमस (Comus) और लिसिडास (Lycidas) प्रसिद्ध हैं । लैलिग्रो

* L' Allegro=प्रफुल्लित मनुष्य, Il Penseroso=शोकित मनुष्य । थियासोफी अर्थात् ब्रह्मज्ञान किसी काल देश, पात्र वा समाज की विशेष अपनी सम्पत्ति नहीं है बल्कि सब देशों सब कालों सब पात्रों और सब समाजों की साधारण जायदाद है । आधुनिक थिओसोफिकल सोसाइटी (ब्रह्मज्ञान-समाज) के पूर्व थिओसोफिस्ट (ब्रह्मज्ञानी) और थिओसोफी नहीं थी ऐसा नहीं कह सकते । इच्छा है कि कतिपय प्राचीन देशी और विदेशी थिओसोफिस्टों का वृतान्त पाठकों की सेवा में और समर्पण करूं ।

का पूरक इल पेनसेरोसो है। पहिले में प्रफुल्लित मनुष्य के उपभोग दृश्य और प्रयत्न दिखलाए गए हैं और दूसरे में शोकातुर मनुष्य के। आर्केडीज़ और कोमस अल्पाभिनय (Masque) हैं। मास्क (अल्पाभिनय-विशेष) किसी राज्योत्सव के उपलक्ष में अथवा धनिकों के भवन में प्रायः खेले जाते हैं। कोमस अधिक प्रख्यात और वृहत् है। मिलटन साहब के शुभचिन्तक ब्रिजवाटर के अर्ल* (ज़मीन्दार) के मकान पर लडलो किले में १६३४ ई० में अभिनय करने के लिये कवि ने इसकी रचना की थी। अर्ल साहब की एक लड़की और दो लड़कों ने इसे पहिले पहिल खेला था†। अंगरेजी भाषा में यह सर्व्वोत्तम मास्क है। इसमें वार्तालाप के मिस बहुत अच्छी नीतियों का उपदेश किया गया है और यह दिखाया गया है कि सत्पंथ पर चलने वालों की बड़ी कड़ी जाँच होती है जिसमें उत्तीर्ण होने से अन्त में विजय प्राप्त होती है। इसमें दो तीन अत्युत्तम मधुर गीत भी हैं। इसमें कचहरियों की बुराइयों पर कटाक्ष हैं। लिसिडास मृत्युशोक प्रकाशक काव्य है जो कवि के एक सहपाठी की मृत्यु पर लिखा गया था। इसमें हमारे कवि जी ने क्रिस्तानी धर्म्म के कट्टरपने और हठशीलता

* अर्ल शराफत की तीसरी ब्रिटिश पदवी है।

† नाटक खेलना जिसमें गाना बजाना नाचना और भाव बताना चतुष्क्रिया सम्मिलित हैं प्राचीन भारत की सभ्योचित कला थी जिससे प्रेम करने वाले रामकृष्णार्जुन प्रभृति नरोत्तम थे। समय के हेर फेर से कुसंगति के संसर्ग से यह कला आज दिन अपमानित और दूषित समझी जाती है। किन्तु इस कला के भाग्य से कुछ शुभ चिन्ह देख पड़ने लगे हैं।

पर बहुत अफसोस करके सच्चे थिओसोफिस्ट (ब्रह्मज्ञानी) का काम किया है ।

अब मिलटन साहब ने राजनैतिक और मजहबी पुस्तिकाओं का लिखना आरम्भ किया । १६३९ ई० के अनन्तर २० वर्ष तक इन्होंने केवल १४ पंक्ति वाली सौनेट (Sonnet) नाम की छोटी छोटी कविताएँ (जो इटालियन कवियों को बहुत पसन्द थीं) बहुत सी लिखीं जिनमें पीडमेंट का कतल (Massacre of Peedmont) अपने अन्धेपने और क्रामवेल पर जो सौनेट लिखे गए हैं वे बहुत विख्यात हैं ।

[क्रमशः]

सभा का कार्य विवरण ।

[१४]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

बृहस्पति वार ता० १२ मार्च १९०८-सन्ध्या के ५½ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० सभापति, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद, बाबू माधव प्रसाद, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू गोपालदास ।

गत अधिवेशन के निश्चय नं० १० के अनुसार संयुक्त प्रदेश के शिक्षाविभाग के डाइरेक्टर को जो पत्र सभा से भेजा जाना चाहिए

था उसके मजमून पर पुनः विचार किया गया और घटा बढ़ा कर मजमून ठीक किया गया और निश्चय हुआ कि यह चिट्ठी भेजी जाय।

जुगुलकिशोर,

मंत्री

-:0:-

[९]

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २८ मार्च १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

[१] गत अधिवेशन (ता० २८ फरवरी १९०८) का कार्य्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] प्रबंधकारिणी सभा का तारीख ३ फरवरी का कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

[३] प्रबंधकारिणी सभा के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए –

[क] सभा की नियमावली के ग्यारहवें नियम में यह बढ़ा दिया जाय– "इनमें से १४ काशीस्थ और ६ बाहरी होंगे। बाहरी सभासद इस प्रकार होंगे–संयुक्त प्रदेश से २, पंजाब से १, बंगाल विहार से १, मध्यप्रदेश से १, मध्यभारत और राजपूताना से १।

[ख] २८ वें नियम के अन्तर्गत १ उपनियम में "स्थानिक,, निकाल दिया जाय।

[४] निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए–

[१] बाबू खेमचन्द्र, मोहर्रिर हुजराय डिगरी मुंसफी सहारनपुर ३) । [२] पण्डित उदित मिश्र-नायब मुदर्रिस-शिवपुर बनारस १॥) । [३] मिस्टर जे० एम० कार-हेडमास्टर-हरिश्चन्द्र स्कूल बनारस १॥) । [४] पण्डित चंद्रदत्त शर्म्मा-शिवपुर-बनारस १॥) । [५] बाबू बलदेवप्रसाद वैश्य मुनीब, शिवपुर-बनारस १॥) । [६] पण्डित देवीप्रसाद मिश्र-मौजा खरिक-कालीलोन पो० बिहरपुर, जि० भागलपुर १॥) । [७] पण्डित राममणि दीक्षिताचार्य्य-रामकटोरा बनारस ३) । [८] बाबू त्रिवेनीप्रसाद-दारागंज-इलाहाबाद १॥) । [९] बाबू इश्कलाल-घ्य मा-परगना-नागल-जिला सहारनपुर १॥) । [१०] पण्डित गैारीशंकर व्यास-प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीमान् इन्द्रगढ़-नरेश, इंद्रगढ़ ३) । [११] बाबू चुन्नीलाल-बरना का पुल-काशी १॥) । [१२] रेवरेंड ई० एच० एम० वालर-सिगरा-बनारस ३) । [१३] बाबू गणेशप्रसाद नारायण शाही चैाकाघाट-बनारस २५) । [१४] लाला अर्जुनदास बसुदेव-एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर गुरगांव ।

[५] सभासद होने के लिये निम्न लिखित महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए –

[१] बाबू रामनाथ राय शिक्षक अगरैाली पाठशाला–पो० भेलसड़ जि० बलिया । [२] पण्डित साधुशरण पाण्डेय शिक्षक शिवपुर दियर पो० भेलसड़ जिला बलिया । [३] पण्डित गंगादीन द्विवेदी C/o चैाधुरी रनबहादुरसिंह रामनगर बनारस । [४] पण्डित बैजनाथ मिश्र भारद्वाजी, गायघाट, काशी । [५] पण्डित हरिशंकर जुटसी, गायघाट, काशी । [६] पण्डित बसंत शर्म्मा टंडनी कोठी भंग, सहारनपुर । [७] पण्डित बद्रीनारायण मिश्र डिप्टी इंसपेक्टर-आफ स्कूल्स इलाहाबाद । [८] बाबू खुशहालसिंह मानी पो० फूल-पुर जि० बनारस । [९] पण्डित रामदत्त पंत असिस्टेंट इंसपेक्टर आफ स्कूल्स जि० गोरखपुर । [१०] मिस्टर सी० वाई० चिंतामणि असि-स्टेंट सेक्रेटरी इंडियन इंडिस्ट्रियल कानफरेंस अमरावती (बरार० ।

[६] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुई -

[१] सेठ खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई ।

भक्तमाल हरिभक्तप्रकाशिका, वैश्यकुलभूषण, हारीत संहिता, श्रीमद्भगवद्गीता पंचरत्न, भक्तसागरादि १७ ग्रंथ, लघुसिद्धांतकौमुदी, आध्यात्म रामायण भाषा, पत्री मार्ग प्रदीपिका, बुद्धिप्रवेश भा० १, ३, मानसागरी, आल्हा रामायण सातोकाण्ड, शीतलापरिहार, रसमोदक हजारा, महामन मोहनी, मीज़ान तिब्ब, ज्वरतिमिरनाशक, विवाहपद्यावली, विवाह पद्धति, वीर मालोजी भोंसले, कर्मविपाक संहिता, सुशीला विधवा, जातिनिर्णय, भुवनदीपक, दत्तात्रेय तंत्र, आश्चर्य योगमाला तंत्र, सिद्धांत योग, लग्नवाराही, जोगलीला, रंभा और माधव, वृहद्द्वावक होडाचक्र, बाल शिशु विवाह नाटक, फूल चरित्र, व चिड़िया चरित्र, गुप्तनाद, संध्यातंत्र, ममलनामा, जानकी सतसई, एक मारवाड़ी की घटना, हास्य उपन्यास, मनहरण उपन्यास, कादम्बरी, मृत्युसभा प्रहसन, ऋषिपंचमी व्रत कथा, छंदपयोनिधि, राजनीति पंचोपाख्यान, तर्क संग्रह भाषा टीका, स्तोत्र रत्नमाला, ज्योतिष की लावणी, पञ्चपक्षी, चर्पट पञ्जरी, जंजीरा, जादू बंगाला, नशा खण्डन चालीसी, द्रव्य स्तोत्र, गोपी वियोग की बारहखरी, वर्ष योग समूह, वर्ष ज्ञान, तुलसीदास का जीवन चरित्र, शिवरात्रिमाहात्म्य, संसार का महास्वप्न, राधासुधानिधि स्तोत्र, पुरंजनाख्यान, शकुन्तला नाटक, परिहास दर्पण, मुहूर्त गणपति, शतश्लोकी, रघुवंश महाकाव्य, क्षेत्रप्रकाश, आत्मपुराण, भर्तृहरिशतक, श्री सीताराम पीयूष अमृत की बूंद, आह्लादर्पण, प्रेमाम्बु वारिधि, प्रेमाम्बु प्रस्रवण, प्रेमाम्बु प्रवाह, द्रव्यगुण शतक छोटा, अमृत लहरी, माधव शकुनेन्दु चंद्रिका, स्वामी दयानंद मतपरीक्षा, हरिनाम सुमिरिणी, आरती संग्रह, हनुमद्बन्दी मोचन, प्रेमप्रपञ्च, ज्ञानमाला, व्यापार समाचार, गोविन्दाष्टक, ज्ञानभैषज्य मंजरी, कल्पपञ्चक प्रयोग, श्रीकृष्णचंद्रचंद्रिका, प्रश्न वैष्णव शास्त्र, नीतिमनोरमा, ज्ञानानंद रत्नाकर दूसरा भाग, मुहूर्त मंजरी, कल्याण कल्पद्रुम, ऊषाचरित्र, जातक चंद्रिका, महाभारत,

विराट पर्व नेपाली, गणेश सङ्कट चतुर्थी कथा, मुक्ताभरण सप्तमी व्रतकथा, पंचभीष्मक कथा, अनन्तव्रत कथा, अजिर विहार।

[२] पं० गणेश प्रसाद शुक्ल काशी–रस लहरी, ऊषा अनिरुद्ध का व्याह आल्हा, [३] सुख संचारक समिति, मथुरा–सुख सञ्चारक पञ्चाग सम्वत् १९६५ का, [४] बाबू मुकुन्दलाल काशी–ब्रह्मद्रोह का फल। [५] बाबू मनोहर जी काशी–रामचंद्रोदय, सदुपदेश, अङ्कगणित, सङ्कट मोचन, प्राइमरी भूगोल, रेखागणित, भावार्थ सिंधु, हिन्दी भूगोल, [६] खरीदी गई–आर्य भजन संग्रह, शकुन्तला पिंकट साहब की, जनक बाग दर्शन, चंद्रशेखर, श्रीमद्भगवद्गीता सुबोध कैमुदी टीका सहित, वायसनेय संहितोपनिषद्, तलवकारोपनिषद् मुण्डक उपनिषद् और माण्डूक्य उपनिषद्, प्रश्न उपनिषद् ऐतरेय उपनिषद्, वृहदारण्यक उपनिषद्, आर्य ग्रंथावली भा० ३ स० १, २, ५, ६, ७, और ८ | [७] पण्डित विनायक शास्त्री बेताल काशी–शिक्षापत्री ध्वान्तभास्कर।

[८] Indian Antiquary for December 1907.

[९] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुल किशोर,

मंत्री।

बोर्ड आफ ट्रस्टीज़

का एक साधारण अधिवेशन सोमवार ता० ६ अप्रैल को सन्ध्या के ५॥ बजे सभाभवन में हुआ ।

उपस्थित ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी—सभापति, पण्डित रामनारायण मिश्र, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू श्यामसुन्दर दास ।

[१] गत अधिवेशन का कार्य्य विवरण पढ़ागया और स्वीकृत हुआ ।

[२] निश्चय हुआ कि जब कहीं से निश्चित् आय की कुछ भी आशा नहीं है तो कोई बजेट नहीं बनाया जा सकता ।

[३] निश्चय हुआ कि स्थायी कोश के लिये रुपया एकत्रित करने के निमित्त जून मास के आरम्भ में निम्न लिखित महाशय इलाहाबाद तथा अन्य स्थानों में जांय ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू माधवप्रसाद ।

आगामी वर्ष के लिये बाबू गौरीशंकर प्रसाद और बाबू लक्ष्मीदास आडिटर चुने गए ।

श्यामसुन्दरदास,

सहायक मंत्री

[१५]

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० ६ अप्रैल १९०८ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी—सभापति, बाबू श्यामसुन्दर दास, बाबू जुगुलकिशोर बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू माधव प्रसाद, रेवरेंड ई० ग्रीव्स, पण्डित रामनारायण मिश्र, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू गोपाल दास।

[१] गत अधिवेशनों (ता० ८ मार्च और १२ मार्च ०८) के कार्य्य विवरण उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए।

(२) बाबू श्यामसुन्दर दास का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा हिन्दी के विद्वानों तथा सेवियों को प्रति वर्ष कुछ उपाधियां दिया करे।

निश्चय हुआ कि अभी इस प्रस्ताव के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

[३] सभा के क्लार्क बाबू महादेव प्रसाद का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने विना वेतन के ६ मास की छुट्टी मांगी थी।

निश्चय हुआ कि बाबू महादेव प्रसाद की छुट्टी स्वीकार की जाय और पण्डित विश्वनाथ तिवारी उनके स्थान पर ६ मास के लिये १० मासिक वेतन पर नियत किए जांय।

[४] ग्वालियर की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा के पर्चों के सम्बंध में सब-कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि ग्वालियर से जो भिन्न भिन्न विभाग के परचे छांट कर आए हैं वे यदि ठीक हैं तो कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार बालकों को पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दिए जांय। इस विषय की जांच ग्वालियर चिट्ठी लिख कर की जाय।

[५] सभा के चौकीदार तथा पुस्तकालय के चपरासी का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन लोगों ने प्रार्थना की थी कि सभाभवन में उन्हें रहने की कोठरी के आगे रसोई बनाने के लिये एक ओसारा बनवा दिया जाय।

निश्चय हुआ कि बाबू माधव प्रसाद से प्रार्थना की जाय कि वे ३०) रु० तक के व्यय में एक उपयुक्त ओसारा बनवा दें।

[६] हिन्दीग्रंथोत्तेजक पारितोषिक के लिये औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार के विषय में कुँअर प्रतिपाल सिंह का लेख पण्डित माधव राव सप्रे, बाबू ठाकुर प्रसाद और बाबू श्यामसुन्दर की सम्मति के सहित उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि कुँअर प्रतिपाल सिंह को इस लेख के लिये पारितोषिक दिया जाय।

[७] पण्डित रामनारायण मिश्र का ६ मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने श्रीमान् राजा साहब भिनगा का २२ मार्च का पत्र भेजा था कि सर टी माधव राव के माइनर हिंट्स की ५०० प्रतियों के अनुवाद और छपाई में ३००) से अधिक व्यय नहीं होना चाहिए। साथ ही पं० चंद्रधर शर्म्मा और बारहट केशरी सिंह के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उन्होंने लिखा था कि उन्होंने इस पुस्तक का अनुवाद किया है।

निश्चय हुआ कि यदि इस पुस्तक की केवल ५०० प्रतियां छपवानी हैं तो श्रीमान् राजा साहब का यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय।

पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा और बारहट केशरी सिंह के अनुवाद मँगवाए जांय और उनके आने पर पण्डित रामनारायण मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे इनके विषय में सभा को अपनी सम्मति दें।

[८] बाबू अमीर सिंह का ३० मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बिना वेतन के तीन मास की छुट्टी माँगी थी।

निश्चय हुआ कि उनकी छुट्टी स्वीकार की जाय।

[९] बाबू भगवानदास एम० ए० का ५ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अस्वस्थता के कारण हिन्दी कोश कमेटी का सभासद होना अस्वीकार किया था।

निश्चय हुआ कि उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाय।

[१०] पण्डित रामनारायण मिश्र का ५ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा के लाइब्रेरियन पण्डित गोविन्द प्रसाद का कार्य्य अब बहुत सन्तोष जनक है अतः उनका मासिक वेतन दो रुपया और बढ़ा दिया जाय।

निश्चय हुआ कि १ अप्रैल १९०८ से उनका मासिक वेतन २) रु० बढ़ा दिया जाय।

[११] पण्डित हरनन्दन जोशी का १ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि क्या सभा एक शिक्षा विभाग सम्बन्धी मासिक पत्र निकालने का भार ले सकती है।

निश्चय हुआ कि उन्हें तार द्वारा सूचना दी जाय कि सभा इस कार्य्य के भार लेने के सहर्ष उद्योग कर सकती है।

[१२] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगलकिशोर,
मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

मार्च १९०८।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	११११८	१३	७	आफिस के कार्य कर्ताओं का वेतन	७६	८	०
सभासदों का चन्दा	४१	१३	०	पुस्तकालय	१०८	२	८
पुस्तकों की विक्री	१८५	७	३	पृथ्वीराज रासो	२०	१	०
रासो की विक्री	१३५	०	०	नागरी प्रचार	२३	६	०
पुस्तकालय	५७	४	०	पुस्तकों की खोज	५८	८	०
राधाकृष्णदास स्मारक	२०	०	०	फुटकर	१५	७	८
स्थायी कोश	०	२	०	डांक व्यय	५१	१२	८
				हिन्दी कोश	२८८	१	६
	१५६८	७	१०	छपाई	३८	१४	०
				स्थायी कोश	६०	०	०
				पुस्तकों की विक्री	६२	४	०
				असबाब	११	०	०
				जोड़	८२६	२	८
देना ६०००)				बचत	७३२	५	१
				जोड़	१५[illegible]८	७	१[illegible]

जुगुलकिशोर, मंत्री।

लाला लाजपत राय जी

की लिखी हुई

मेज़िनी के जीवन चरित्र

का हिन्दी अनुवाद

बा० केशव प्रसाद द्वारा

छप गई [illegible] छप गई

मूल्य ।)

क्या आप खरीदेंगे ? यदि खरीदें तो पता नीचे लिखा

पुस्तक कार्य्यालय
धर्म्मकूप
बनारस सिटी

भारत प्रेस बनारस।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] मई १९०८। [संख्या ११.

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥ १॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल॥ २॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार॥ ३॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ ४॥

हरिश्चन्द्र।
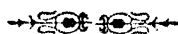
महा कवि मिलटन
और
उनके काव्य।

[दसवें अंक के आगे।]

१६४९ ई० के प्रारम्भ में हमारे चरितनायक ने विदेश व्यवहार समिति (Foreign Affairs Committee) के लैटिन मंत्री का पद स्वीकार कर लिया। अन्धे हो जाने पर भी

कभी कभी इनको लैटिन भाषा में चिट्ठियां लिखने को कहा जाता था तो भी यह इस काम को बड़ी उत्तमता से करते थे। १६५९ ई० तक हमारे महा कवि इस पद पर विराजमान रहे।

द्वितीय चार्ल्स के पुनस्संस्थापन (Restoration) अर्थात् फिर राजा हो जाने से हमारे चरितनायक का राजनैतिक जीवन समाप्त हो गया और साथही साथ आपके सम्प्रदाय की आशाओं की भी इति श्री हो गई। आप मारे जाने के भय में नहीं तो कैद किए जाने के भय में तो अवश्य रहे। कुछ दिनों तक आपको छिपा रहना भी पड़ा क्योंकि आप राज-प्राण-नाशक सम्प्रदाय के अगुआ थे। किन्तु यह भय शीघ्रही दूर हो गया और लन्दन की बड़ी महामारी के आक्रमण के समय (१६६५) ई० में कई महीनों को छोड़कर आपने अपने जीवन के शेष भाग को लन्दन ही मे बिताया। सन् १६६४ ई० में आपने अपनी तीसरी शादी एलिजबेथ मिनशल से की।

हमारे महाकवि लड़कपन से जवानी तक सर्वदा ज्ञात वा अज्ञात रूप से अपने को किसी अपूर्व महाकाव्य की रचना के लिये तैयार करते रहे। बहुतही धीरे धीरे आपने अपने महान् उद्देश्य का मार्ग मन में निश्चित किया। जिन कविताओं में आपने अपनी प्रथम कवित्व शक्ति दिखलाई थी वे गीतीय और नाटकीय श्रेणी की थीं। किन्तु जीवन के प्रारम्भ ही से आपके हृदय में स्वदेशीय और ईसाई समाज के महाकाव्य-प्रतिनिधि बनकर महाकवि होमर और वर्जिल की ख्याति प्राप्त करने की कल्पना का अङ्कुर

जम गया था। पहिले तो आपने इस कार्य की सिद्धि के लिये इंगलैण्ड के इतिहासपूर्व (Prehistoric) किम्बदन्तियों द्वारा ही एक जातीय महाकाव्य का निम्मांण करना चाहा था जिस देशहितैषी ग्रन्थ में इंगलैंड की प्राचीन महिमाओं और कीर्त्तियों का वैसाही वर्णन होता जैसा ईनिड (Æneid) नामक ग्रन्थ में रोम देश के इतिहास का है। किन्तु यह भावना बहुत दिनों तक टिकने न पाई। क्योंकि (जैसा पहिले हम कह चुके हैं) जब देश में महान विद्रोह उपस्थित हुआ तब यह सम्भव नहीं था कि ऐसे समय में पवित्र बाद (Puritanism) और प्रजातंत्र प्रणाली (Republicanism) का मिलटन जैसा उत्साही और सच्चा हितैषी अपनी मानसिक शक्तियों को काल्पनिक प्रेम वा विगत युद्धों के वर्णन में लगाता। क्योंकि कवि होने की प्रतिष्ठा से देशहितैषी होने की प्रतिष्ठा आपके विचार में कहीं बढ़कर थी। जब आप अपनी लेखनी से धार्म्मिक और राजनैतिक स्वतंत्रता के महदुद्देश्य की सेवा कर सकते थे तब तक आपने सभी कवित्व को गौण समझ रक्खा। आपके अधिकार में यथार्थ ब्रह्मवेत्ता का (Theosophist) उदार हृदय था। आप जैसे महाकवि के लिये स्वच्छन्द कविता का मार्ग छोड़कर अपनी साहित्य शक्तियों को उस समय के प्रज्वलन्त प्रश्नों, के विषय में विवाद सम्बन्धी पत्रों और पुस्तिकाओं के लिखने में लगाना (जिनके लिखने में आपको साधारण योग्यता के अपने प्रतिद्वंदियों का सामना करने में अपने को नीचा करना पड़ता था) निस्सन्देह कड़ी आत्मोत्सर्गिता थी। मिलटन के उस समय के लेखों को ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह

बात स्पष्ट हो जाती है । यद्यपि आप अपने सम्पूर्ण जीवन, हृदय और अपनी आत्मा को उस अनिर्णीत महाकाव्य के लिये समर्पण कर चुके थे "जिसे भविष्य सन्तान भरसक विनष्ट नहीं होने देगी" । मिलटन की ऐसीही आशा थी तथापि आपको देशसम्बन्धी कुछ ऐसे आवश्यकीय कार्य करने पड़ गए जिस कारण अपना प्रधान काम बन्द रखना पड़ा । परन्तु अनुक्षण अनेक कार्य्यों में आसक्त रहने पर भी आप अपने मुख्य काम का ध्यान सदा रख करके अपने महाकाव्य के विषय निर्णय की चेष्टा किया करते थे । अनेक विषयों की अलोचना के अनन्तर अन्त में हमारे चरित-नायक ने स्वर्ग-च्युति विषय पर लिखना निश्चित किया । विषय ठीक कर लेने पर काव्य की शैली निश्चित करने को रह गई । पहिले तो आपने इस विषय में नाटक लिखना चाहा किन्तु यह सोचकर कि महाकाव्य (Epic) अधिक उपयोगी होगा अपनी प्रणाली बदल डाली और ग्रन्थ का नाम 'च्युत स्वर्ग' [Paradise Lost] रखा क्योंकि इसमें शैतान (सेटन) के बहकाने से आदम (ऐडम) और हौवा (ईव) के और उनके साथ साथ मानवजाति के स्वर्ग से गिरने का वृत्तान्त है । इस गहन विषय ने जिसमें देवजाति [angel] और मानवजाति के भाग्य सम्मिलित हैं और जिसके दृश्य समस्त सृष्टि मे विस्तीर्ण हैं मिलटन साहब की बलवती कल्पना शक्ति को बहुत बड़ा अवकाश (फैलाव) और उनकी धर्म्मोत्तेजना को प्रकाशित होने के लिये बहुत बड़ा अवसर दिया । इसी कारण ये अपने पूर्व के होमर इत्यादि कवियों से (जिन्हें ऐसे महान विषय को चुनकर काव्य लिखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था) बढ गए ।

यदि वर्त्तमान लेख पाठकों को अरुचि कर न हुआ तो इस महाकाव्य की कथा कहां से ली गई इसमें किन किन कवियों का अनुकरण किया गया वा नहीं किया गया, इस की कविता कैसी हुई है, इसके पात्र कैसे कैसे हैं, स्वर्ग नरक इत्यादि का वर्णन इसमें कैसा है, इसके सिद्धान्त क्या हैं इत्यादि अनेक कौतूहल जनक बातों का समावेश एक दूसरे लेख में करने की चेष्टा करूंगा।

निदान हमारे चरितनायक का यह चिर परिशोधित जगत् प्रख्यात च्युतस्वर्ग (Paradise Lost) नामक अंगरेजी भाषा में अद्वितीय महाकाव्य जिसे आपका जीवन सर्व्वस्व भी कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी, १६६७ ई० में प्रकाशित हो गया। भिन्न उपलेखों के अनुसार कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात वर्ष इसकी रचना में लगे थे। ऐसे तो आपके जीवन का अधिकांश इसकी रचना के सोच विचार में लगा था पर उसकी गिनती ही क्या है? इस ग्रन्थ का स्वत्व एक प्रकाशक के हाथ बिका जिससे हमारे कवि जी को दो बार करके केवल १० पाउंड (१५० रुपए) और उनकी विधवा भार्य्या को उनके मरने के उपरान्त ८ पाउण्ड (१२० रुपए) मिले। सतसईकार कविवर बिहारी को सतसई के दोहों के बनाने के लिये जयपुराधीश ने क्या दिया था और और भी अनेकानेक सत्कवियों को यहाँ के गुणग्राही लोग कितना पारितोषिक देते आए हैं यदि इस बात का विचार किया जाय तो इङ्गलैण्ड और भारतवर्ष की गुणग्राहिता तथा दानशीलता प्रगट हो जायगी। पहिले जब यह ग्रन्थ लाइसैन्स वाले टामकिनसन साहब के

पास भेजा गया तो उन्होंने इस महाकाव्य की प्रथम पुस्तक (स्कन्ध) में कई एक पदों के कारण कठिनाइयां उत्पन्न कीं क्यों कि उनसे द्वितीय चार्ल्स को राजगद्दी से उतारने का मतलब खींच तानकर निकाला जा सकता था । किन्तु यह कठिनाई भी जल्द हट गई ।

१६७० ई० में हमारे महाकवि ने 'इङ्गलैण्ड का इतिहास, (History of England) और १६७१ ई० मे 'पुनः प्राप्त स्वर्ग, (Paradise Regained) नामक ग्रन्थों को निकाला । कहते हैं कि इस द्वितीय महाकाव्य को कवि ने अपने मित्र एलउड साहब (जो क्वेकर *Quaker थे) के यह प्रश्न करने पर "कि स्वर्ग को प्राप्ति के बारे में आपको क्या कहना है?" अपने "च्युत स्वर्ग" नामक महाकाव्य के उपसंहार स्वरूप बनाया था । ईसाई धर्म्म पुस्तक बाइबिल में वर्णित हजरत ईसा को शैतान द्वारा भुलावा देने की बात इसमें विस्तार से कथित है । ईसाइयों का सिद्धान्त है कि हज़रत ईसा अनेक प्रकार के लालचों को रोक कर तथा शैतान के भुलावे में न पड़कर और एवं अनेक प्रकार से अपनी निष्पापता सिद्ध करके ही (जैसा करने में दूसरा कोई मनुष्य समर्थ नहीं था ।) अपने जीवन के बलि प्रदान को मनुष्य मात्र के समग्र पापों के निमित्त प्रमार्जन (Atonement) स्वीकार करालेने में समर्थ हुए थे । अपने पापों के कारण मनुष्य स्वर्ग से गिराया गया था और अन्ततः ईसामसीह के इस परिमार्जित बलिप्रदान के द्वारा मनुष्यों की मुक्ति होकर स्वर्ग फिर भी प्राप्त होगा इसी सिद्धान्त पर इस ग्रन्थ का

* क्वेकर—एक मित्र मंडली थी जिसके सभ्य क्वेकर कहलाते थे ।

"पुनः प्राप्त स्वर्ग" नाम रक्खा गया। सर ई० ब्रिजेज़ साहब का मत है कि यह महाकाव्य "च्युत स्वर्ग" की अपेक्षा सादा, सरल, अलङ्कार हीन तथा कल्पना रहित है। हमारे चरितनायक के प्रसिद्ध चरितलेखक पैटिसन साहब का कथन है कि इस महाकाव्य में घटनाओं की विचित्रता तथा पात्रों के बाहुल्य के अभाव के कारण यह नीरस और कठिन है।

१६७२ ई० में सैमसन अगोनिस्टिस (Samson Agonistes) नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। यह यूनानियों के ढंग का एक गैतिक (Choric) वियोगान्त काव्य है जिसमें कर्म्मचारी पात्रों के अतिरिक्त एक गवैयों का गिरोह है। इन गवैयों के गीतों से तीन प्रयोजन निकलते हैं--एक तो खेल को आधुनिक नाटक के अङ्कों की नाई कई हिस्सों में बांटना, दूसरे दर्शकों को पूर्व्व की घटनाएं तथा ऐसी बातें ध्यानस्थ करना जिनका अभिनीत होना कठिन है, तीसरे सर्वप्रधान प्रयोजन गायक मंडली का यह है कि सज्जनों के साथ विपत्ति में सहानुभूति प्रकाश की जाय और सर्व्वसाधारण को इससे चेतावनी दीजाय। यद्यपि अत्युत्कट समालोचक डाक्टर जानसन की राय में इस वियोगान्त काव्य की तारीफ़ करना केवल अज्ञान और हट तथा मिलटन की ख्याति में अन्धविश्वास है क्योंकि इसके बिचले हिस्से में न कार्य है, न कारण है, न अन्तिम घटना की उन्नति है, न अवनति है। तथापि पक्षपात रहित होकर विचारने से यह काव्य केवल कविता-कला की दृष्टि से ही नहीं देखे जाने योग्य है वरन् सामयिक ऐतिहासिक दृष्टि से भी। सैमसन्

का जीवन हमारे चरितनायक के जीवन से अनेक अंशों में सादृश्य रखता है जिसका विस्तृत वर्णन इस छोटे निबन्ध में नहीं किया जा सकता। इस सादृश्य के कारण इस काव्य की रुचिरता बढ़ जाती है क्योंकि कवि ने सैमसन की भयानक दुर्घटनाओं के समय में उसके हृदयस्थ भावों का वर्णन करने में अपने ही स्वच्छ और पवित्र हृदय के खजाने को खोल दिया है।

इन महाकाव्यों के अतिरिक्त हमारे चरितनायक ने लैटिन भाषा में एक न्याय की किताब प्रकाशित की थी और क्रिस्तानी धर्म्म पर एक प्रबन्ध भी लिख रक्खा था जो छपने नहीं पाया था। इस प्रबन्ध की हस्तलिखित प्रति संयोग से प्राप्त हुई है और १८२४ ई० में छापी गई है।

ऐसे सुन्दर सुन्दर काव्यों के कर्त्ता, सदाचारशील, अनन्य देशहितैषी और धर्म्मात्मा हमारे चरितनायक पर भी पाषाण हृदय काल को कुछ भी दया न आई और आपने १६७४ ई० के ८ नवम्बर को ६५ वर्ष की अवस्था मे इस असार संसार को छोड़कर परलोक की यात्रा की। आपके पश्चात् यद्यपि अंगरेजी भाषा के कई उत्तम कवि भी हुए तथापि आज तक कोई दूसरा मिलटन न हुअ। "इन सम ये उपमा उर आनी"।

महा कवि मिलटन के जीवन पर आदि से अन्त तक नज़र दौड़ाने से यह तीन स्वाभाविक विभागों मे बँटा हुआ जान पड़ता है—

पहिला—(१६०८-१६३९)— जन्म से लेकर परिभ्रमण के पीछे इंगलैंड में प्रत्यावर्तन तक।

दूसरा—(१६३९--१६६०)--प्रत्यावर्तन से पुनस्संस्थापन (Restoration) तक ।

तीसरा—(१६६०-१६७४)--महाकाव्यों के समय से मृत्यु तक ।

इस महाकवि की मृत्यु स्मरण होने पर एक विद्यमान विचक्षण कवि की कविता याद आती है ।

काव्य कला कौशल सम्बन्धी, रुचिर सृष्टि के निम्मोता ।
मधु मिश्री से भी अति मीठी, बचनमालिका के दाता ॥
कालिदास भवभूति आदि को, अन्य लोक पहुंचाय ।
कविता बधू विधे ! तू ने ही, विधवा कर दी हाय !! ॥

शिवाजी की चतुराई ।

[आठवें अंक के आगे ।]

५ शिवाजी ने कहा यह सब तो ठीक है पर क्या हिन्दु धर्म की उन्नति चाहना निन्दनीय कार्य है । हिन्दुओं को दुःख में सहायता पहुंचाना क्या बुरा कार्य है । धर्म के हेतु युद्ध में प्राण त्याग करना इससे अधिक क्षत्रिय का सौभाग्य क्या हो सकता है। हे राजन्! महाराष्ट्र भी समर क्षेत्र में युद्ध से नहीं भागते । यदि इस अकिञ्चन जीवन दान करने से हमारा कार्य्य सिद्ध हो तथा हिन्दू गौरव और स्वाधीनता स्थापित हो तब ईशानी देवी के सम्मुख इसी मुहुर्त यह वक्षस्थल विदीर्ण करदूं अथवा हे राजपूत वीर तुम अव्यर्थ बर्छा धारण कर इस हृदय में आघात करो मैं हर्ष सहित प्राण देने के लिये तत्पर हूं । परन्तु जिस हिन्दू स्वाधीनता और गौरव की चेष्टा के बालावस्था में स्वप्न

देखता था, जिसके हेतु सैंकड़ों शत्रुओं को प्रत्येक युद्ध में पराजित किया, इन्हीं तीस वर्ष तक पर्वतों में, डेरों में, तलैाटियों में, शत्रुओं के मध्य में, सायंकाल और दिन दोनों समयों में चिन्ता की है, मेरी मृत्यु के उपरान्त वे सब स्वप्नवत् हो जायंगे ।

६ जयसिंह ने देखा कि शिवाजी के नेत्रों ने जल छोड़ दिया परन्तु वे आगे की नांई स्थिरभाव से धीरे धीरे बोले। सत्यपालन में यदि सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा न हो तो क्या सत्य लंघन में होगी ? वीरों के रक्त से यदि स्वाधीनता का बीज न जमे तब क्या वीर की चतुरता से होगा । वीर वर ! वीर को चतुरता करना सब समय निन्दनीय है और महान् कार्य साधन करने में तो अतिही निन्दनीय है । महाराष्ट्र गौरव तो बढ़ेही गा और ऐसा भी जान पड़ता है कि कुछ दिवसों में निज बाहुबल और असिद्वारा क्रमशः वृद्धि प्राप्त कर वे भारत के अधीश्वर बन बैठें गे। परन्तु शिवाजी मुझको शोक केवल इस विषय का है कि जो शिक्षा आज कल आप अपनी सेना को देते हैं वह कदाचित् मेरी राय में उचित नहीं है। आज उन्हें ग्राम लूटना सिखाते हैं कल वे समस्त भारतवर्ष को लूटेंगे, आज उन्हें चतुरता से जयलाभ करना सिखाते हैं कल वे सम्मुख नहीं लड़ सकेंगे। जो जाति भविष्यत् काल में प्रधान राजराजेश्वर होगी उसी जाति के आप गुरु हैं आप उनको भली भांति शिक्षा दीजिए। आज यदि आप कुशिक्षा देंगे तो शतवर्ष पर्यन्त देश देश में, नगर नगर में, उस शिक्षा का प्रभाव पड़ जायगा। आप राजपूतों की नांई उन्हें सम्मुख क्षेत्र में मरना मारना सिखाइए। हे महाराष्ट्र के शिक्षा

गुरु! सावधान। आपके प्रत्येक कार्य का फल बहुकाल व्यापी और कतिपय देश व्यापी होगा।

शिवाजी क्षणेक मौन रहे, फिर बोले "आप परम गुरु हैं। आपका उपदेश सराहनीय है। परन्तु एक बात का सोच है कि जब मैंने आत्मसमर्पण किया तब आपके कथनानुसार कैसे युद्ध-शिक्षा दूँगा।" जयसिंह ने नम्र भाव से उत्तर दिया "शिवाजी जय पराजय चिरकाल तक एक सी नहीं रहती। आज हम पराजित हुए हैं तो कल ईश्वर की कृपा से विजयी हो सकते हैं। हमारी आज जय हुई कल तुम्हारी जय हो सकती है। आज तुम दिल्लीपति के अधीन हो, समय के हेर फेर से कल तुम स्वाधीन हो सकते हो।" शिवाजी ने कहा "ऐसाही हो। परन्तु जबतक आप सेनाध्यक्ष रहैंगे तब तक हमारी स्वाधीनता नहीं हो सकती। मुझे स्वयं ईशानी ने हिन्दुओं के विरुद्ध कृपाण धारण करने का निषेध किया है।" जयसिंह ने हँस कर उत्तर दिया "क्षत्रिय प्रवर! निश्चिन्त रहो, महाराष्ट्र गौरव, और हिन्दू स्वाधीनता किसी के रोके नहीं रुक सकती। वीर वर, हमारी बातें ग्रहण करो, मुगल-राज्य अब नहीं रह सकता, हिन्दुओं का विषम तेज अब निवारित नहीं हो सकता।" शिवाजी ने सजल नेत्रों उत्तर दिया। "धर्मोत्नन् मैंने आत्मसमर्पण किया आपसे युद्ध कदापि नहीं करूँगा। वीर वर! जो कभी स्वाधीनता हाथ लगी तो फिर आपके चरणों में बैठ कर आपके सदुपदेशों को ग्रहण करूँगा।"

८ तदुपरान्त सन्धि स्थापित हो गई। शिवाजी ने जितने मुगलदुर्ग विजय किए थे सब लौटा दिए। अहमद-

नगर के जो बत्तीस दुर्ग विजय किए थे उनमें से बीस दे दिए। बारह केवल जागीर की तरह अपने पास रख लिए। फिर औरंगजेब ने इन्हें अपने यहाँ बुलाया। इस बार शिवाजी कुछ हिचकिचाए पर करही क्या सकते थे, आत्म-समर्पण करने के उपरान्त उन्हें औरंगजेब की सब आज्ञा माननी पड़ी। शिवाजी को भय था कि कहीं दिल्ली बुलाकर बन्दी न करले। अस्तु इसके लिये उन्होंने अपनी राज-धानी रायगढ़ में आधी रात के समय एक सभा एकत्रित की, शिवाजी के मुख्य मुख्य कर्मचारी, मंत्री, सेनापति लोग आए। विचारशील मंत्री और बहुदूरदर्शी न्याय शास्त्रियों से सभा सुशोभित हुई। शिवाजी के सदृश इन लोगों के हृदय भी स्वदेशानुराग से परिपूर्ण थे। हिन्दू-गौरव प्राप्त करने की चेष्टा से दिन दिन मास मास वर्ष वर्ष तक वे अनिद्रित रहते थे। परन्तु हाय! वे सब चेष्टाएं आज निष्फल हुईं। वह उत्साह कहां है? हाय, जिस वीर शिरोमणि पर यह सब निर्भर था आज वही आत्मसमर्पण कर दिल्लीश्वर के यहां जा रहा है। सभा के सब लोग इकट्ठे होगए। प्रथम तो शिवाजी थोड़ी देर चुप रहे फिर अपने बाल्य सखा सोमेश्वर जी से बोले "पेशवाजी! क्या आपकी यह राय है कि मैं दिल्लीश्वर का जागीरदार बन कर रहूं। क्या वह बाल्यावस्था का स्वप्न स्वप्नही मात्र रहेगा? क्या महाराष्ट्र गौरव निविड़ अन्धकार में डूबेगा। पेशवा आप विचारशील उत्तर दीजिए॥" पेशवाजी ने उत्तर दिया "स्वामी! इसमें विषाद ही क्या करना, जैसे 'कर्म लेख की लेख नहीं कोई सुरमुनि सकै मिटाय'। इसके अनुसार आप दुःखित न हों। आपने अपने भरसक कुछ

बाकी नहीं रक्खा । 'वीर श्रेष्ठ ? जगत जननी ईशानी देवी की कृपा से एक दिन स्वाधीनता की आकांक्षा की थी, और आज उनकी ही आज्ञा से इसको त्यागते हैं। यह किसको विदित थो कि वीर श्रेष्ठ जयसिंह स्वयं रणस्थल में आवेंगे?" अन्न जी दत्त ने कहा "महाराज! जो होना था सो तो हो गया अब दबी बात को उठाने से क्या लाभ। अब इसका विचार कीजिए कि आपका दिल्ली जाना उचित है अथवा नहीं ?"

९ शिवाजी ने उत्तर दिया "अन्न जी यह ठीक है पर जो आशा, चेष्टा, उद्योग, साहस बहुत दिनों से हृदय में स्थान पाए हुए हैं वे सहज ही से नहीं उखड़ सकते।" फिर ताना जी से कहा "मित्र ताना जी! पूर्ण चन्द्रमा की चाँदनी में ये जो दक्षिण देश के विशाल शैलादिक देख पड़ते हैं, उनकी शिखरों पर चढ़ते हुए, दुर्गम गुफा और गढ़हों में भ्रमण करते हुए, हृदय में स्वप्न की नाईं कैसे कैसे भाव उत्पन्न होते थे, कुछ स्मरण है? क्या यह महाराष्ट्र देश निविड़ अन्धकार में न डूब कर पुनः स्वाधीन होगा, समस्त भारतवर्ष स्वाधीन होगा, क्या हम लोग हिमाचल से लेकर कन्याकुमारी पर्यन्त, युधिष्ठिर व रामचन्द्र की नाईं पुनः सनातन धर्म स्थापन कर राज्य करेंगे।" शिवा जी थोड़ी देर तक चुप रहे, और सब सभा मौन व्रत धारण किए चुप चाप खड़ी है, पत्ता तक नहीं हिलता है। शिवा जी फिर बोले "हाय! जिसने जागीरदार से राजपदवी ग्रहण की, जिसने असिधारण कर अनेक दुसह्य क्लेश उठा कर स्वाधीनता प्राप्त की, जिसने पहाड़ों पर, गुफाओं में, वन

और ग्रामादिकों में बीरता के चिन्ह बनाए वही आज सब को तिलांजलि देने को सभा में बैठा है, हाय! चारों ओर प्रचण्ड मार्तण्ड की नांई जो महाराष्ट्र-गौरव, सब अन्धकार को भेदन कर रहा था, वही बाल दिवाकर आज चिरकाल के लिये अस्त हो जायगा। हाय!—"

१० सब सभासद लोग मौन हैं, परंतु शिवाजी के नेत्र रक्त वर्ण हो अंगारे के सदृश दीख पड़ने लगे। इतने में एक बीर ने कहा! "स्वामी! आप इस बात से चिन्तित मत हूजिए कि प्रतापशालिनी राजपूत सेना के सम्मुख आपकी सेना न ठहर सकेगी, निस्सन्देह राजपूत बीराग्रगण्य हैं पर महाराष्ट्र लोग भी ठंढे हाथ से असिधारण नहीं करते। जयसिंह रण पंडित हैं, तो आपने भी क्षत्री वंश में जन्म ग्रहण किया है।" शिवाजी ने उत्तर दिया "यह सब तो सत्य है पर मैं हिन्दुओं के विरुद्ध कदापि हाथ नहीं उठा सकता!" बीर ने पुनः उत्तर दिया "पर स्वामी! उस पाप से अधिकतर पापी और कौन हो सकता है, जो स्वजाति के अर्थ, स्वधर्म के अर्थ, युद्ध करै अथवा अन्य जाति का धन ग्रहण कर स्वजाति से बैर भाव करै।" शिवाजी मौन होकर चिन्ता करने लगे, फिर धीरज धर बोले "अस्तु जो हो गया सो हो गया। अब हिन्दूधर्म के अवलम्बन स्वरूप हिन्दू प्रताप के प्रतिमूर्ति स्वरूप महाराज जयसिंह से संधि हुई है, इस संधि का खण्डन मैं नहीं कर सकता। विधर्मियों से कपटाचरण करने के पाप को ईश्वर क्षमा करे, परन्तु जीवन रहते महानुभाव राजपूतों से शिवा जी कपटाचरण नहीं कर सकता। उस धर्मात्मा ने एक दिन मुझ से कहा था कि जब

सत्यपालन से सनातन हिन्दूधर्म की रक्षा न हुई तो क्या सत्य के छोड़ने से होगी, यह बात मैं अभी भूला नहीं हूं। बीर बर! यदि औरंगजेब संधि को लंघन करे तब मैं आप लोगों का परामर्श ग्रहण करूंगा, और जब असिधारण कर लूंगा तब फिर सहज में उसको म्यान में न रक्खूंगा परन्तु जयसिंह से जो वचन दे आया हूं उसको मैं नहीं तोड़ सकता।"

११ अन्ताजी ने पुनः पूछा कि "महाराज! क्या आपने दिल्ली जाना स्थिर कर लिया।" शिवाजी ने कहा "हाँ संधि के विषय में मैं जयसिंह को वचन दे चुका हूं।" अन्ताजी ने कहा "राजन्! औरंगजेब को चतुर जान बूझ कर फिर आप क्यों अपने पैर में कुल्हाड़ी मारते हैं। मैं जहां तक समझता हूं कि वह अवश्य आपको बन्दी करेगा। शिवाजी ने उत्तर दिया "अन्ताजी! आप घबड़ाइए मत मैं भी बालक नहीं हूं। यदि उसने संधि तोड़ी तो उसका फल उसको अवश्य मिलेगा। महाराष्ट्र भूमि बीर प्रसविनी है। औरंगजेब का ऐसा आचरण देखते ही महाराष्ट्र देश में जो युद्ध की अग्नि सुलग उठेगी, वह समुद्र के जल से भी बुझने वाली नहीं। मुग़ल राज चूर्ण विचूर्ण, हो पददलित हो चिरकाल के लिये भस्म हो जायगा। अन्ताजी, आवाजी स्वर्ण देव, और मोरेश्वरजी मैं कुल राज्य का भार आप ही लोगों पर छोड़े जाता हूं, आपसे कार्यकुशल सावधान पंडित महाराष्ट्र देश में विरलाही है। मेरे न रहने पर आप तीन जन महाराष्ट्र देश का शासन कीजिए।" यह कह शिवाजी ने सभा का विसर्जन किया। तदुपरान्त अनेक बीरों ने संग जाने के लिये कहा पर शिवाजी ने स्वीकृत

न किया, केवल आप और विचारशील मंत्री और कुछ सैनिकों को लेकर आपने दिल्ली जाने का विचार किया।

१२ सन् १६६६ ई० के वसंत काल में शिवाजी दिल्ली पहुंचे। शिवाजी ने दिल्ली से छः कोस पर डेरा डाल दिया। इस समय शिवाजी का चेहरा गंभीर, ललाट पर चिन्ता की रेख पड़ गई है। एक दिन संध्या के समय शिवाजी अपने नौ बरस के बालक संभा के साथ कुछ बातें कर ही रहे थे कि सहसा जयसिंह के पुत्र रामसिंह का आना हुआ। रामसिंह केवल एक सैनिक के साथ शिविर में आए थे इससे शिवाजी अति दुखित हुए। औरंगजेब के इस अपमान से मन में अति क्रोधित हुए, परन्तु क्रोध प्रकाशित न किया। तीक्ष्ण बुद्धि शिवाजी रामसिंह का मुख देखते ही उनका उदार और निष्कपट चरित्र समझ गए। और औरंगजेब के विचार जानने के निमित्त उन्होंने रामसिंह से प्रश्न किया कि दिल्ली में प्रवेश करने के विषय में आपका क्या परामर्श है। रामसिंह ने उत्तर दिया कि, "जहां तक मैं समझता हूं दिल्ली में जाने से कोई विपद् आप पर नहीं आवेगी। पिता ने स्वयं मुझे कहा है और इस विषय में दास की कोई त्रुटि नहीं होगी। पिता का वचन मिथ्या न होगा और आप निरापद स्वदेश में पहुंच जाँयगे।"

१३ अस्तु शिवाजी ने रामसिंह के परामर्शानुसार दिल्ली में प्रवेश किया। जाते ही पृथ्वीराज का दुर्ग दृष्टिगत हुआ। शिवाजी मन ही मन विस्मित हो कहने लगे,—"हाय यही पृथ्वीराज का दुर्ग है! इसी स्थान पर गोरी को हरा कर बन्दी रक्खा था। हा! यही इनकी राजधानी है। अहा!

एक दिन वह था कि इसी प्राचीर पर रँग बिरँगी पताका फह-
राती थी, इसी मरु भूमि के नगर में घनघोर विजय-दुंदुभि
की ध्वनि हुई थी, एक दिन समस्त हिन्दू बालक हिमाचल
से लेकर कावेरी तक राज्य करते थे, हिन्दू ललनाएं अपने
पुत्रों को सहर्ष युद्ध में भेजती थीं और विजय-युद्धगान गाती
थीं! परन्तु हा "सबै दिन नाहिं बराबर जात" वे सब दिन
स्वप्न की नाईं बीत गए। वीर पृथ्वीराज इस प्राचीन
विकट दुर्ग के निकट अन्याय समर में धराशायी हुए,
तभी से पूज्य भारत भूमि में अंधकार छा गया? परन्तु
नहीं, दिन बीतने पर दिन आता है, जाड़ा बीतने पर नवीन
सुखद पुष्प खिलते हैं और ऋतुराज का आगमन होता है।
नियमनानुसार जब सभी आते जाते हैं तब क्या भारत के
गौरव का दिन फिर नहीं आवेगा? नहीं नहीं ईशानी देवी
की कृपा से आवेगा।"

१४ इसी प्रकार अनेक भांति की तर्कना करते हुए
शिवाजी चले। फिर आगे बढ़े तो कुतुब मीनार नील नभ
को छूता हुआ दृष्टिगत हुआ। रघुनाथ पन्त ने कहा "देखिए
महाराज यह वही हस्तिनापुर है जहां के देवालयों के
पत्थर से कुतुबुद्दीन बादशाह ने यह कुतुब-मीनार बनवाया
है। अतएव शिवाजी, संभाजी, रामसिंह और रघुनाथपंत,
कुतुब मीनार पर चढ़े। ऐसा ऊंचा स्तम्भ सम्पूर्ण जगत
में नहीं है। शिवाजी चतुर्दिक अवलोकन करने लगे; क्या
इस स्थान में जगद्विख्यात हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ था;
क्या इसी स्थान में प्रातःस्मरणीय महाराज युधिष्ठिर ने
भाइयों समेत वास किया था, इसी स्थान में उन पुण्य-

वालों ने राज्य करके ससागरा पृथ्वी पर आर्य गौरव का विस्तार किया था, क्या महर्षि वेदव्यास इसी स्थान में रहते थे? क्या भारत के वीर वृन्दों ने इसी जगह ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण कर संसार में अक्षय यश लाभ किया था। हाय! अर्जुन, भीष्म पितामह, भीम, कर्ण, द्रोणाचार्य इत्यादिक कहां गए। हाय! कुन्ती, द्रौपदी, गान्धारी भारत की प्रातः-स्मरणीया ललनागण, क्या यही स्थान आपने पवित्र किया था।" शिवाजी का कण्ठ मारे शोक के रुक गया, दोनों नेत्रों से जल प्रवाहित होने लगा। फिर कुछ सोच कर कहने लगे "हे महान पुरुषो! मैं आपको प्रणाम करता हूं, हमारी भूजा बल शून्य; हमारे नयन अन्धकार से ढके और हमारे हृदय क्षीण हैं! आप इस नीलतम मंडल से प्रसन्न होकर प्रकाश दीजिए; शक्ति दीजिए, जिससे हम फिर आर्य जाति का नाम ऊँचा करें, नहीं तो कार्य को करते करते मृत्यु हो जायगी, और इसके अतिरिक्त और कोई अन्य प्रार्थना नहीं है।"

१५ रामसिंह ने कहा, राजन्! अब शोक करने से क्या होगा मुझको अब मालूम होगया कि अब महाराष्ट्र-गौरव के भविष्यत् काल का बादल नहीं उमड़ेगा। अस्तु सब कोई कुतुब मीनार से उतरे। शिवाजी ने अनेक टुटे फूटे मन्दिर देखे। शिवाजी कुल साथियों के सहित दिल्ली की ओर चले। थोड़ी देर में दिल्ली नगर में पहुंच गए। आज दिल्ली ने अद्वितीय छटा धारण की है। प्रथम तो औरंगजेब स्वयं लड़क धड़क को नहीं पसन्द करता था, किन्तु राज-काज साधने के निमित्त, उसने दिल्ली की समस्त प्रजा को

नगर सजाने की आज्ञा दी । आज शिवाजी दरिद्र महाराष्ट्र देश से विपुल आर्यशाली मुगलों की राजधानी में आवेंगे । मुगल-शक्ति, धन, धाम देख शिवाजी अपने को तुच्छ समझें गे इसलिये औरंगजेब ने दिल्ली को खूब सजाया । शिवाजी, रघुनाथपंत, और रामसिंह एक साथ हो मार्ग में चलने लगे । मार्ग में अनेकानेक अश्वारोही इधर उधर कर रहे हैं। गृहों पर पुष्पों की शोभा विचित्र है । बनियों की दुकाने भी खूब सजी हैं । कहीं कहीं गृहों पर झरिडयां फहरा रही हैं । कहीं कहीं बहुत सी हिन्दु मुसलमान रमणियां इधर उधर इकट्ठी होकर देख रही हैं । बहुत सी युबा कुलकामनियां खिड़की ही में से महाराष्ट्र-केशरी को अवलोकन कर अपने नेत्र सफल कर रही हैं, मार्ग में अनेकानेक सवार, हाथी, घोड़े, राजा, मुंसिफ, अमीर, शेख, उमराव, घोड़े की लगाम उठाए दामिनी की नांईं इधर उधर अपनी छटा दिखाते फिरते हैं । अनेकानेक हाथी सुन्दर सुन्दर गहने पहिले लाल बस्त्र की झूल धारण किए मतवाली चाल से झुराड के झुराड जा रहे हैं । फिर आगे बढ़ के रामसिंह ने कहा कि "देखिए महाराज यही यहां का दुर्ग है ।" शिवाजी ने दुर्ग को भली भांति देखा । दुर्ग के पीछे यमुना चन्द्राकार अपनी अनुपम चंचलता से तटस्थ-वृक्षों को स्पर्श करती हुई प्रवाहित हो रही है । दुर्ग में सिपाही काम कर रहे हैं । सहस्त्रों निशान हवा में फहरा रहे हैं जिनके अवलोकन से औरंगजेब का गौरव प्रगट होता था । शिवाजी थोड़ा और आगे बढ़े तो बहुत सी सेना कतार में खड़ी पाई । सहस्रों अश्वारोही, गजारोही व शिविकारोही भारत के प्रधान प्रधान कर्मचारी पुरुष अनेक मनुष्यों के

साथ दुर्ग के भीतर बाहर आते जाते हैं। उनके वस्त्र अमूल्य रत्नों से खचित विचित्र शोभा दे रहे हैं। इन सब अद्भुत वस्तुओं को अवलोकन करते शिवाजी ने रामसिंह के साथ दुर्ग में प्रवेश किया। दुर्ग में प्रवेश कर शिवाजी ने कतिपय विचित्र बातें देखीं। चारों ओर बड़े बड़े कारखानों में शिल्पकार लोग विविध भांति की वस्तुएँ निर्माण कर रहे हैं। शिवाजी के लिये इतना समय कहां था कि सब वस्तुओं को भली भांति देखते इस लिये जाते समय जो देख लिया सोई देखा। थोड़ी देर में वे रामसिंह के साथ दीवान आम में आए। बादशाह प्रायः यहीं सभा किया करते थे परन्तु आज शिवाजी को अपना गौरव दिखाने के निमित्त भीतर संगमरमर से बने हुए जगत श्रेष्ठ "दीवान खास" में दरबार किया गया। शिवाजी ने वहां जाकर देखा कि दिवानखासं में रत्न माणिक्य विनिर्मित सूर्य रवि प्रतिघाती "तख्त ताऊस" पर बादशाह औरंगजेब विराजमान हैं; सम्राट के सम्मुख भारतवर्ष में अग्रगण्य राजा, मनसबदार, अमीर, उमराव, और असंख्य वीर गण चुपचाप बैठे हैं। रामसिंह शिवाजी का परिचय देकर राजगृह में आए।

१६ शिवाजी तो प्रथमही कपटी औरंगजेब का आशय समझ गए थे पर वह अब स्पष्ट रूप से विदित होने लगा। जिसने बीस वर्ष तुमुल युद्ध करके हिन्दु-स्वाधीनता को बचाया था, जिसने अब बादशाह की अधीनता स्वीकार कर युद्ध में उचित सहायता की, जो अनेक कष्ट उठा कर सम्राट के दर्शन करने महाराष्ट्र देश से दिल्ली पर्यन्त आए

थे। क्या इस प्रकार सम्राट ने उनका आदर किया ! औरंगजेब साधारण सेनापति का भी इससे अधिक सम्मान करता था परन्तु हाय आज कराल काल की गति से वीर केशरी महाराज शिवाजी साधारण कर्मचारी की नांई राज दर्बार में खड़े हैं। मारे क्रोध के शिवाजी का चेहरा बदल गया परन्तु वे कर ही क्या सकते थे साधारण कर्मचारी की नांई उन्होंने भेट दीं औरंगजेब का कपट कार्य सुफल हुआ। औरंगजेब ने भेंट ग्रहण कर शिवाजी को "पंचहजारी" कर्मचारियों में बैठने की आज्ञा दी। अब शिवाजी के क्रोध की अग्नि का पारावार न रहा। मारे क्रोध के शरीर रक्त वर्ण होगया। नेत्र लाल लाल हो आए, शरीर कांपने लगा, वे दांतो से होठों को दबाए धीमे स्वर मे बोले "क्या शिवाजी पँचहजारी ? जब सम्राट महाराष्ट्र देश में जांयगे, तब देखेंगे कि शिवाजी के अधीन ऐसे कितने पँचहजारी रहकर कैसे बल से खड्ग धारण करते हैं" इस बात को सुनकर सम्राट के पास जो कर्मचारी बैठे थे कनफुसकी करने लगे।

१७ औरंगजेब ने शीघ्रही सभा भंग करदी। बादशाह राज-गृह के भीतर चले गए। सब मनुष्य भी अपने घर पधारे शिवाजी के रहने के लिये भी एक स्थान ठीक किया गया था वहीं पर शिवाजी आ कुछ चिन्ता करने लगे। थोड़ेही काल में औरंगजेब ने कहला भेजा कि शिवाजी ने जो बात कही है उसका दंड केवल उनको यही दिया जाता है कि अब भविष्यत में वे राजदरबार में पुन: स्थान नहीं पावेंगे। शिवाजी जान गए कि वास्तव में भविष्यत काल के बादल घिर आए। जिस प्रकार व्याधा सिंह को पकड़ने के

लिये जाल फैलाता है, उसी प्रकार कपटी औरंगजेब ने शिवाजी को बन्दी करने को कपट जाल बिछाया है ! इस जाल को भंग कर क्या फिर महाराष्ट्र गौरव महाराष्ट्र स्वाधीनता पा सकूंगा?" फिर मौन हो चिन्ता करने लगे। अब शिवाजी का कुल ध्यान इस समय केवल चतुराई से भागने की ओर फिरा। अब वे मनही मन अनेक प्रकार के उपाय-लड्डू पकाने लगे। फिर एक दीर्घ स्वांस लेकर उन्हों ने कहा "हा! अन्नजी दत्त सदा युद्ध करने को तुम्ही ने परामर्श दिया था, हाय! मैंने आपकी एक बात न मानी। हा! तुम्हारे "खड्गधारण करो" ये शब्द अभी तक मेरे कानों में गूंज रहे हैं। औरंगजेब सावधान! अब तक शिवाजी ने तुझसे सत्य पालन किया, परन्तु अब वह सत्य पालन नहीं करेगा। अब तेरे लिये कुशल इसीमें है कि कपटाचरण छोड़ तूं मुझसे पवित्र और शुद्ध व्यवहार कर नहीं जो कदाचित तू असत्य और कपट व्यवहार करेगा तो शिवाजी भी इस विद्या में बालक नहीं है। और यदि करेगा तो ईशानी देवी साक्षी रहैं कि महाराष्ट्र देश में जो समरानल प्रज्ज्वलित करूंगा उसमें यह सुन्दर दिल्ली नगरी और विशाल मुगल राज्य चूर्ण विचूर्ण हो जायगा। इसी प्रकार मनही मन तर्कना वितर्कना करते करते शिवाजी बन्दीगृह में रहने लगे।

१८ कुछ दिवसोपरान्त शिवाजी और उनके विचारशील मंत्री ने यह स्थिर किया कि एक आवेदन पत्र औरंजेब के पास भेजा जाय। रघुनाथपंत ने आवेदन पत्र ले जाना स्वीकार किया। आवेदन पत्र लिखा गया जिसमें शिवाजी दिल्ली में क्यों आए, उन्होंने कैसे दुर्ग विजय किए, जयसिंह

ने क्या क्या कहा था यह सब विस्तार से लिखा गया! उसके पीछे शिवाजी की प्रार्थना लिखी गई! शिवाजी औरंगजेब का कार्य करने को प्रस्तुत हैं। बीजापूर और गोलकुण्डा का राज्य मुगलराज्य में मिलाने की यथासाध्य चेष्टा करेंगे। पत्र में यह भी दिखलाया कि दिल्ली नगर का जल वायु मरहट्टों के लिये हानिकारक है। शास्त्री जी पत्र ले गए। औरंगजेब ने पत्र भली भांति देखा। पत्र की सब बातें तो स्वीकृत हुईं पर शिवाजी का महाराष्ट्र देश में जाना स्वीकार न हुआ! रघुनाथपंत मंत्री ने आकर सब हाल कहा इस पर शिवाजी ने कहा मंत्रिवर आप यह आज्ञा ले लें कि हमारे सिपाही कुशलपूर्वक महाराष्ट्र देश में पहुंच जांय और इस पर औरंगजेब राजी भी हो जायगा। मैं अपना बन्दोबस्त कर लूंगा। औरंगजेब अब तक शिवाजी को नहीं जानता, वह अपने बराबर चतुरता में किसी को नहीं गिनता परन्तु इस बात का स्मरण रखना कि शिवाजी भी इस विद्या में बालक नहीं है। इस ऋण से एक दिन उऋण हो जाऊँगा। दक्षिण से हिमाचल तक समरानल प्रज्ज्वलित कर दूंगा।" शिवाजी के कथनानुसार एक पत्र लिखा गया। पत्र सम्राट के पास भेजा गया। शिवाजी के सब नौकर चाकरों का दिल्ली से जाना सुन औरंगजेब ने प्रसन्नता सहित उनको एक परवाना दे दिया। शिवाजी अब अपने मन में सोचने लगे "मूर्ख शिवाजी को कैद रक्खेगा? अभी अनुचर का वेष बना एक अनुमति पत्र ले दिल्ली से चला जाऊँ तो मेरा क्या कर सकता है। जो हो भाई बन्धु नौकर चाकर तो चले गए अब शिवाजी अपने लिये उपाय सोच लेगा।"

१९ कुछ दिन के बाद रामसिंह शिवाजी से मिले। शिवाजी ने कहा क्यों रामसिंह, तुम्हारे पिता जयसिंह ने इसीलिये यहां आने को कहा था कि मैं बन्दी बनूं । इस पर रामसिंह अति सोचाकुल हुए पर वे करही क्या सकते थे। उन्होंने उत्तर दिया "राजन्! जिस तरह पुत्र के मरने से पिता को शोक होता है इसी तरह मुझको अभी शोक हुआ है। मैं क्या करूँ मेरा इसमें कुछ बश नहीं। हाय हमारे ही पिता ने कितने राज्य विजय कर इसके राज्य में मिलाए पर इसको कुछ भी ध्यान नहीं। हमारे पिता अब इस समय इस लोक में नहीं हैं वे विजयपुर में शत्रुओं के बीच में परलोकवासी हुए! शिवाजी ने कहा "यह कैसे?"। रामसिंह ने उत्तर दिया कि "पिता ने सब को विजय कर लिया था, पर उनके भी सब राजपूत कट चुके थे इसलिये वे नगर को न ले सके। उन्होंने सम्राट से और सेना चाही पर कपटी औरंगजेब ने एक सिपाही भी न भेजा। इस अपमान से पिता ने शरीर त्याग दिया। और मैंने भी आपके विषय में महाराष्ट्र देश जाने के लिये पूछा था, पर उत्तर में उसने यह कहा "इसके लिये आप कोई फिकर न करें हमको जो उचित मालूम पड़ेगा वही किया जायगा।" शिवाजी ने कहा ख़ैर इसकी कुछ परवाह नहीं मैं अपना बन्दोबस्त कर लूंगा, औरंगजेब अपने को साक्षात ईश्वर समझता है और बड़ा चतुर लगता है पर वह नहीं जानता कि भूमंडल में एक के एक ददा गुरु निकलते ही आए हैं। रामसिंह मिलकर घर आए पिता वचन पालन न होने से रात दिन चिन्ता करने लगे।

[क्रमशः]

सभा का कार्यविवरण ।

(१०)

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २५ अप्रैल १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान सभाभवन ।

(१) बाबू जुगल किशोर के प्रस्ताव तथा बाबू बेणीप्रसाद के अनुमोदन पर मिस्टर गुन्नीलाल शा सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २८ मार्च) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्धकारिणी सभा के ता० ८ मार्च और १२ मार्च के कार्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(४) निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गए ।

(१) बा० रामनाराण मुदर्रिस-अगरोली स्कूल पो० भेलसड़ जिला बलिया १॥) (२) पंडित साधुशरण पांडे मुदर्रिस-शिवपुर दियर-पो० बैरिया बलिया ३) (३) पं० गंगादीन द्विवेदी-C/o चौधरी रन बहादुरसिंह-रामनगर-बनारस १॥) (४) पं० बैजनाथ भारद्वाजी गायघाट काशी, १॥) (५) पं० हरिशङ्कर जोषी गायघाट काशी १॥) (६) पं० बसन्त शर्म्मा टण्डनी कोठी भंग सहारनपुर ३) (७) पं० बद्रीनारायण मिश्र डिपुटी इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स इलाहाबाद ३) (८) बाबू खुशहालसिंह मानी, पो० फूलपुर जि० बनारस १॥) (९) पं० रामदत्त पन्त असिस्टेण्ट इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स जि० गोरखपुर ६) (१०) मिस्टर सी० वाई० चिन्तामणि असिस्टेण्ट सेक्रेटरी इण्डियन इण्डस्ट्रियल कान्फरेंस अमरावती बरार ३) ।

(५) सभासद होनेके लिये १३ महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

(६) निम्नलिखित सभासदों के इस्तीफ उपस्थित किए गए—

बाबू राधाचरन डिपटी कलेक्टर इलाहाबाद, बाबू सीताराम बी० ए० काशी । निश्चय हुआ कि इन महाशयों से प्रार्थना की जाय कि अपने इस्तीफे पर पुनः विचार करें ।

(७) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं--

(१) सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई–

प्रश्नोत्तरी, जैन व्रत कथा संग्रह नौरत्न, श्रुतबोध, कन्याहित कारिणी, श्री गोकुल वास विहार, शब्दावली, तुलसीमाल धारण वाद, प्रेममंजरी सभाषा टीका, उपदेश रत्नाकर बृहत, प्रेममंजरी वा अन्त्येष्टि श्राद्ध प्रकाश और बीजक मूल ।

[२] ज्यो श्रीनिवास महादेवजी शर्म्मा, रतलाम–ओंकार महिमा प्रकाश [३] राजपूत एङ्गलो ओरिएटल प्रेस, आगरा–राजर्षि भीष्म-पितामह का जीवन चरित, रमणीपंचरत्न, युवारक्षक, चन्द्रकला, भारत महिला मंडल द्वितीय खंड [४] पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्म्मा, तह-सीली स्कूल, जेवर, बुलन्द शहर–अक्षर लेखन विधि ३ प्रति [५]ठाकुर जगन्नाथ सिंह वर्म्मा, जिला हरदोई–पत्नी वियोग [६] पंडित हरिभजन प्रसाद पांडे, कानपुर–स्वामी रामतीर्थ जी का जीवन चरित [७] श्रीमान् राजा साहब मांडा– रामायण सातकांड [८] पण्डित द्वारिका प्रसाद मिश्र अयोध्या फैजाबाद–श्रीवैकुंठ विजय [९] इण्डियनप्रेस इलाहाबाद–बाल भागवत [१०] बाबू गंगा राम बम्बावाले जि० स्यालकोट–प्रेमविलास ४ प्रति [११] पं० रघुनाथ प्रसाद मिश्र–हिन्दी उर्दू समाचार, इटावा, कवायद पटवारियान सूबा आगरा और अवध [१२] सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्ण दास, बम्बई–तोते मैने का किस्सा १२ भाग [१३] आगरा व्यापार समिति, आगरा–अवेदन पत्र अर्थात मेमोरियल का अनुवाद, हमारी स्त्रियां और उनकी शिक्षा [१४] पंडित विनायकराव, जबलपुर–रामायण अरण्य काण्ड [१५] बाबू गजानन्द सोदी, बम्बई–भारत की वर्त्तमान् दशा २ प्रति [१६] बाबू रामप्रसाद बी० एल० पूर्निया-ज्ञानलहरी [१७] खरीदी गई–ईशावास्यम्, अथर्ववेदीयप्रश्नोप-निषद, वेदतत्त्व प्रकाश भा १--४

(१७) Indian Thought for April 1908

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगलकिशोर,

मंत्री ।

[१६]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ११ मई १९०८-सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०-सभापति। रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स । बाबू जुगुलकिशोर । पण्डित रामनारायन मिश्र बी० ए० । मिस्टर मुन्नीलाल शा । बाबू घनश्याम दास बी० ए० । बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए०, एल०एल० बी । बाबू माधव प्रसाद । पण्डित माधव प्रसाद पाठक ॥ बाबू गोपालदास ।

(१) गत अधिवेशन (ता० ६ अप्रैल १९०८) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) नागपुर के बाबू अजोध्या प्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने स्वदेशी इण्डस्ट्रियल कम्पनी के लिये सभा की पत्रिका आदि की कुछ प्रतियां कमिशन पर बिक्री के लिये मांगी थीं । निश्चय हुआ कि इनको चार मास तक नागरीप्रचारिणी पत्रिका की पांच पांच प्रतियां कमिशन पर बिक्री के लिये भेजी जांय और देखा जाय कि उनकी बिक्री किस प्रकार होती है ।

(३) कानपुर के शारदाभवन पुस्तकालय का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपने पुस्तकालय के लिये नागरी प्रचारिणी पत्रिका बिना मूल्य मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि पत्रिका उनको आधे मूल्य पर दी जा सकती है ।

(४) सन् १९०६-०७ का हिसाब आडिटरों के जांचने के नोट सहित उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और आडिटरों के प्रस्ताव के अनुसार भविष्यत में प्रति वर्ष पुस्तकों के हिसाब का एक पर्चा तयार किया जाया करे जिससे यह प्रगट हो कि कितनी पुस्तकें बिकीं और कितनी पुस्तकें सभा के स्टाक में बिक्री के लिये हैं।

(६) कुंअर प्रतिपाल सिंह का १४ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार के विषय में उनके लेख के लिये सभा ने जो उन्हें ५०) रु० पारितोषिक देना निश्चय किया है उसके लिये उन्हें नगद रुपया न दिया जाकर उतने मूल्य का एक स्वर्णपदक बनवा दिया जाय ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और जो मेडल बनवाया जाय उसमें "हिन्दी ग्रन्थोत्तजक पारितोषिक" ये शब्द अवश्य रहें ।

(६) मिसटर गुन्नी लाल शा का १८ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा के वैतनिक मोहर्रिर कचहरी में बाहर खुले स्थान में बैठा करें और हिन्दी में अर्जियां बिना कुछ लिए हुए लिखा करें । साथही उन्होंने दीवानी अदालत के मोहर्रिर के विषय में अपनी जिम्मेदारी लौटाई थी ।

निश्चय हुआ कि दीवानी और फौजदारी कचहरी के मोहर्रिरों को एक एक साइन बोर्ड बनवा दिए जांय जिनमें लिखा रहे कि वे नागरी में अर्जियां बिना कुछ लिए लिखते हैं । दीवानी अदालत के मोहर्रिर के काम करने के विषय में इस समय जो प्रबन्ध है वह ठीक हैं । इस विषय में अगले वर्ष के बजेट के समय पुन: विचार किया जाय ।

(७) पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि (क) देवनागर पत्र में अंग्रेजी भाषा के निबन्ध भी नागरी अक्षरों में छपा करें और (ख) प्रान्तीय टेक्स्ट बुक'कमेटी में सभा का भी एक सभासद नियत हो जो विशेष कर हिन्दी और संस्कृत की पुस्तकों पर अपनी सम्मति दिया करे ।

निश्चय हुहा कि पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य को लिखा जाय कि (क) इस विषय में वे देवनागर पत्र के सम्पादक से पत्र व्यवहार करें (ख) इसके लिये सभा ने कई बार लिखा पढ़ी की पर सभा की प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई ।

(८) बाबू सन्नू लाल गुप्त का १० अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा की "शीघ्र लिपि प्रणाली" नाम की पुस्तक एक सप्ताह के लिये देखने को मांगी थी।

निश्चय हुआ कि "शीघ्र लिपि प्रणाली" जो बाबू श्रीशचन्द्र बोस के यहां दोहराने के लिये भेजी गई है वहां से शीघ्र मंगवाई जाय और उसको शीघ्रता से छपवाने का प्रबन्ध किया जाय। छपने पर उसकी एक प्रति बाबू सन्नू लाल गुप्त को भेज दी जाय।

(६) समर्थ विद्यालय का ५ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा के मासिक तथा त्रैमासिक पत्रों की एक एक प्रति बिना मूल्य मांगी थी।

निश्चय हुआ कि ये उन्हें अर्द्धमूल्य पर दी जा सकती हैं।

(१०) पण्डित रामनारायण मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया कि पुस्तकालय के चपरासी का वेतन ५) रु० से ५॥) रु० कर दिया जाय।

निश्चय हुआ कि उसका वेतन ता० १ मई से ५॥) रु० कर दिया जाय।

(११) बाबू श्यामसुन्दर दास का यह प्रस्ताप उपस्थित किया गया कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका में एक लेख के समाप्त होने पर दूसरा लेख छपा करे और लेख समाप्त होने पर उसके लेखक को उसकी ५० प्रतियां दी जाया करें तथा प्रति संख्या में २४ पृष्ठ लेख के रहें और उनका पृष्ठांक कार्यविवरण आदि से अलग रहे।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय।

(१२) बाबू गौरीशंकर प्रसाद का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि संयुक्त प्रदेश के हाई कोर्ट से प्रार्थना की जाय कि जो कागज़ात नागरी अक्षरों में लिखे हों उनके साथ उनकी प्रतिलिपि फारसी अक्षरों में न दाखिल करनी पड़े और जो कागज़ दूसरे अक्षरों में रहें उनकी प्रतिलिपि हिन्दी के अक्षरों में भी स्वीकार हो।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और हाई कोर्ट को इस विषय में पत्र लिखा जाय।

(१३) हिन्दी कोश के लिये सहायता के सम्बन्ध में श्रीमान् महाराजा साहब बीकानेर का १० अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(१४) मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का ३१ मार्च का पत्र नं० २३२५ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा का हिन्दी कोश छप जाने पर वे उसकी प्रतियां खरीदने के सम्बन्ध में विचार करेंगे जैसा कि उन्होंने वैज्ञानिक कोश के सम्बन्ध में किया था।

निश्चय हुआ कि यह पत्र फ़ाइल किया जाय।

(१५) सभा के पुस्तकालय के अध्यक्ष तथा सभा के चपरासी के सम्बन्ध में मंत्री की रिपोर्ट उपस्थित की गई कि इन लोगों ने अपने काम में असावधानी की है तथा चन्दे के यथासमय जमा कराने में गड़बड़ किया है।

निश्चय हुआ कि ये दोनों सभा की नौकरी से छोड़ा दिए जांय। जिन पुस्तकों का पुस्तकालय में पता नहीं है उनको मंगा देने के लिये पं० गोविन्द प्रसाद को १५ दिन का समय दिया जाय। यदि इस बीच में वे उसे न लादें तो वे पुस्तकें सभा स्वयं मंगवा ले और इसमें जो व्यय पड़े वह पं० गोविन्द प्रसाद के जमानत के द्रव्य में से काट लिया जाय।

(१६) सभा के नियत मेडलों के लिये आए हुए लेखों पर सब-कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि "भारत वर्ष के प्राचीन इतिहास की सामग्री" के लिये पण्डित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को और "ध्रुव प्रदेश और ध्रुवदेश यात्रा" के लिये बाबू ठाकुर प्रसाद को पदक दिए जांय। ध्रुवीय देश के विषय में बाबू महेन्दु लाल गर्ग का जो लेख आया है उसे यदि वे स्वीकार करें तो वह बाबू ठाकुर प्रसाद के लेख की भूमिका की भांति छापा जाय।

(१७) पण्डित दुर्गा प्रसाद मिश्र का १३ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने निम्नलिखित प्रस्ताव किए थे (क) एक कमेटी नियत की जाय जो अच्छे अच्छे ग्रन्थों की पहिली आवृत्ति अपने व्यय से छापे (ख) हिन्दी सेवक मंडली बनाकर हिन्दी का प्रचार सब ओर किया जाय (ग) हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ सेवकों को सम्मानित और उत्साहित किया जाय (घ) चन्द्र बिन्दु का ठीक ठीक प्रयोग हो, अनुस्वार से चन्द्र बिन्दु का काम न लिया जाय (ङ) बिना सच्ची मांग के कहीं वी० पी० न भेजा जाय (च) सभा

को निज का प्रेस खोलना चाहिए (छ) हिन्दी पुस्तकावली में नज़ीर मियां के दीवान को रखना चाहिए (ज) रजवाड़ों में हिन्दी प्रचार के लिये डेप्युटेशन भेजा जाय (झ) जिन प्रान्तों में हिन्दी पाठशालाओं का अभाव है वहां वे खोली जांय (ञ) संस्कृतमूलक हिन्दी का प्रचार होना चाहिए।

निश्चय हुआ कि (क) इसके लिये सभा में आवश्यक द्रव्य नहीं है (ख) उपयुक्त मनुष्यों के अभाव से यह कार्य अभी नहीं हो सकता (ग) सभा यथावश्यक इसे करती है (घ) पत्रिका ग्रन्थमाला के सम्पादकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाय (ङ) सभा में ऐसा नहीं होता (च) इस विषय में आगामी वर्ष के बजेट के समय विचार किया जाय (छ) नज़ीर के दीवान की एक प्रति सभा के पुस्तकालय के लिये खरीद ली जाय (ज) पं० दुर्गा प्रसाद मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे इस कार्य के लिये कृपा कर उपयुक्त मनुष्यों के नाम बतावें (झ) सभा के पास आवश्यक द्रव्य नहीं है (ञ) यह लेखकों की इच्छा पर निर्भर है।

(१८) निश्चय हुआ कि श्रीमान् महाराजा साहब रीवां और श्रीमान् महाराजा साहब ग्वालियर, जो सभा के संरक्षक हैं तथा श्रीमान् राजा साहब भिनगा और स्वर्गवासी श्रीमान् महाराजा साहब अयोध्या, जिन्होंने सभा की बड़ी सहायता की है इन सब की बड़ी फोटो सभा के हाल में लगाई जाय।

(१९) निश्चय हुआ कि १०) रु० वा इससे कम वेतन पाने वाले सभा के नौकरों को दुर्भिक्ष की १) रु० मासिक सहायता मई और जून १९०८ में और दी जाय।

(२०) बाबू गौरी शंकर प्रसाद के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि संयुक्त प्रदेश के इन्स्पेक्टर जनरल आफ़ प्रिज़न्स को लिखा जाय कि कैदियों से मिलने के लिये छपी हुई दर्खास्त का जो फ़ार्म मिलता है वह देवनागरी अक्षरों में भी छपवाया जाय।

(२१) निश्चय हुआ कि Tenancy Act (Act No II of 1901) का अनुवाद सरल भाषा में करके गवर्नमेंट के पास भेजा जाय और इस बात पर ध्यान दिलाया जाय कि सब कानूनों का अनुवाद ऐसी ही सरल भाषा में हो। इसका प्रबन्ध निम्नलिखित महाशय करें।

बाबू गौरीशंकर प्रसाद। बाबू घनश्याम दास। बाबू माधव प्रसाद। मिस्टर गुन्नी लाल शा और। बाबू जुगुल किशोर।

(२२) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुलकिशोर, मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

अप्रैल १९०८।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	७४२	५	१	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६८	४	०
सभासदों का चन्दा	५१	०	०	पुस्तकालय	४१	३	८
पुस्तकों की बिक्री	१५८	१२	५	पृथ्वीराज रासो	२०	०	०
रासो की बिक्री	१२	१५	४	नागरी प्रचार	१५	२	०
पुस्तकालय	५८	१२	०	नागरी प्रचार	८	४	०
हिन्दीभाषाकाकोश	७५	०	०	फुटकर	६३	४	८
फुटकर आय	४	०	०	डांक व्यय	२८	१३	३
	११०४	१२	१०				
				हिन्दी कोश	२८०	१०	६
				पारितोषिक	१०	२	०
				छपाई	१८४	२	८
				स्थायी कोश	३१	१	६
				पुस्तकों की बिक्री	०	४	०
				पुस्तकों की खोज	६५	१४	६
				जोड़	८२७	३	०
देना ६०००)				बचत	२७७	८	१०
				जोड़	११०४	१२	१०

जुगुलकिशोर, मंत्री।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] जून १९०८। [संख्या १२

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।
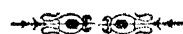
शिवाजी की चतुराई।

[ग्यारहवें अंक के आगे]

औरंगजेब की इस चतुरता को सुनते ही उधर महाराष्ट्र देश में समरानल प्रज्ज्वलित होने लगी पर ताना जी ने कहा कि ऐसा अभी मत करो। तुम लोग यदि अभी से युद्ध छेड़ दोगे तो शिवाजी का बचना कठिन हो जायगा। मैं कुछ चतुर अनुचरों के साथ दिल्ली जाता हूं और शिवाजी

को मुक्त कर ले आने पर युद्ध छेड़ूंगा। अस्तु तानाजी के कथनानुसार सब चतुर अनुचर लोग चले। तानाजी अपने पचीस अमलों के साथ मुसल्मानों की तरह दिल्ली में रहने लगे। सब तो चतुर थे पर किसी का साहस न हुआ कि दिल्ली में शिवाजी के गृह में जासके। कुछ दिनों के उपरान्त ताना जी ने साहस यों किया और हकीम बनकर जाना स्थिर किया क्योंकि शिवाजी ने समस्त दिल्ली नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया था कि शिवाजी को भयंकर रोग हो गया है जिससे उनका बचना कठिन है। उनके घर के द्वार सदा बंद रहते और रात दिन वैद्य आते जाते थे। कोई कहते थे कि रोग आज ऐसा प्रबल है कि कल तक जीना कठिन है। कभी कभी यह गप्प उड़ जाती कि शिवा जी परलोकवासी हुए जिसको औरंगजेब सुनकर मनही मन प्रसन्न होता कि वगैर बदनामी के कांटा निकल गया।

२० ठीक संध्या के समय ताना जी हकीम के वेष में दिल्ली में राजगृह के पास आए। रक्षकों ने पूछा कि "आप किस मतलब से शिवाजी के पास जाया चाहते हैं"। हकीम ने उत्तर दिया "बादशाह के हुक्म से मरीज़ की दवा करने आया हूं।" रक्षकों ने जाने दिया। शिवाजी शय्या पर लेट रहे थे कि इतने में एक प्रहरी ने आकर कहा कि "बादशाह ने एक हकीम भेजा है"। शिवाजी अब चकराए और मन में सोचने लगे कि औरंगजेब ने इसे विष देने के लिये भेजवाया है या किसी और अन्य बिचार से। यह बिचार प्रतिहारी से कहा कि हिन्दू लोग हिन्दू वैद्यों की चिकित्सा करते हैं मुसल्मानी हकीमों की औषधि हम लोग नहीं करते।

परन्तु हकीम इस संवाद पाने के पहिले ही घर के भीतर आगए । शिवाजी इस अपमान से अति क्रोधित हुए परन्तु क्रोध को न प्रकाश कर अति मीठे और दुर्बल स्वर से हकीम को सादर बैठाया । हकीमजी शय्या के एक कोने पर बैठ गए और झट नाड़ी पकड़ बोले—"आपने नौकर को फरमाया वह मुझे मालूम हुआ, अगर आप मेरा मुलाहजा नहीं फरमाते तो आदमी की जान बचाना मैं अपना फ़र्ज समझता हूं मैं अपना फर्ज अदा करूंगा ।" शिवाजी अब छके कि हे ईश्वर यह नई विपद कहां से आई । हकीम ने पूछा "आपको क्या मर्ज है ।" शिवाजी खूब बनकर कातर स्वर से बोले "मुझे नहीं मालूम पड़ता कि यह कौनसा भयंकर रोग है । शरीर में बड़ा दर्द रहता है और कण्ठ हर वक्त सूखा रहता है ।" हकीमजी ने कहा—"मर्ज के बनिस्पत गुस्से (जिघांसा) से बदन ज्यादा जलता है यह तकलीफ बाज बाज वक्त दिल की तकलीफ से पैदा होती है । और बाज़ वक्त ऐसा भी मौका आता है कि आदमी को घर की फिक्र से ये रोग पैदा हो जाते हैं ।" यह कह हकीम जी ने दूसरी नाड़ी और छाती देखनी चाहिए । शिवाजी अब अति विस्मित हुए और हकीमजी के मुख की ओर देखने लगे पर शक का कोई निशान न पाया । अब शिवाजी के बदन का रुधिर गर्म हो चला परन्तु क्रोध को रोककर बोले "जी हां हकीम साहब जो आप कहते हैं वही सब हकीम कहते हैं । यह रोग भीतर ही भीतर रहता है, इसके कुछ बाहरी लक्षण नहीं दिखाई पड़ते परन्तु मुझको मालूम पड़ता है कि मैं इसी रोग में मरूंगा ।" यह कह नाड़ी हटाली ।

२१ हकीमजी कुछ देर चिन्ता कर बोले "अला कला उला व लाभ लून" में जो दे। किताबें हमारे यहां मशहूर हैं उनमें एक हज़ार एक मरजों का हाल लिखा है और आप का रोग भी उसीमें से है। जिसमें एक तो "अकाल तुसामा काता हत्तारा शिरा है" लड़के इस मर्ज के बहाने मछलियां चुरा कर खाते हैं इसकी दवा बेंत वगैरह से मारना है। और दूसरा "वकुशतने आसीरी इमारत कर्द।" कैदी काम न करने के लिये इस मर्ज का बहाना करते हैं। इसकी दवा सिर काटना है। और तीसरा एक मर्ज जिसमें बाहर से कुछ मलामात नहीं मालुम होती है, दुश्मन के हाथ से जो कैदी निकल कर दग़ा से भागना चाहते हैं उसको भी कभी कभी यह मर्ज बहुत तकलीफ देता है। उसकी भी दवा है पर उसमें बड़ा रुपया खर्च करना पड़ता है। उसको भेष बदल कर पहाड़ो में से लाना पड़ता है वही दव मैं आपको देता हूं। शिवाजी इन बातों को न समझ सके या वह समझ गए कि इस हमीक ने चतुराई से मेरी सब चालकी जान ली है। घबड़ाकर पूछा "वह कैान सी दवा है" हकीम ने उत्तर दिया "यह दवा बड़ी अच्छी है उसमें दो सिफ़्तें है। अगर आप वाक़ई बीमार हैं तब आप उससे अच्छे ही हो जांयगे और अगर किसी प्रकार की दगावाजी होगी तब आप हरगिज़ नहीं बच सकते वरना वह दवा ज़हर की तरह भीन कर आपको मार डालेगी। यह कह हकीम साहब ने चट झोली में से दवा निकाल सिलपर रगड़ना शुरू कर दिया। शिवाजी अब बहुत घबराए, वे सोचने लगे कि अगर दवा पीलूं तो हकीम के कथनानुसार मरजाऊं और अगर नहीं पीता हूं तो

हमारा छल प्रगट हो जायगा इसी सोच विचार में उनका शरीर थर थर कांपने लगा। थोड़ी देर में हकीम साहब भी दवा तैयार कर चुके और प्याले में धर शिवाजी को देने लगे। शिवाजी ने उसे झट हाथ से मार फेंक दिया और कहा "मैं मुसल्मानों के हाथ की छुई दवा नहीं खा सकता।" हकीम ने जबाब दिया "जनाब इतना गुस्सा क्यों करते हैं आपने तो इतनी जोर से हाथ में मारा कि मेरा हाथ दर्द करने लगा क्या यह कमजोरी की निशानी है। शिवाजी अब क्रोध न रोक सके और चट्ट से एक थप्पड़ जमाही तो दिया और कहा रोगी से दिल्लगी का यही परिणाम है। और डाढ़ी मोंछे हकीम साहब की पकड़ली जिससे हकीम साहब का सब भेद खुल गया। अपने बालसखा तानाजी को देख शिवाजी अति प्रसन्न हुए और ताना जी भी खिलखिला कर हँस पड़े। तानाजी ने झट से द्वार बंद किया और पास बैठकर बातें करने लगे।

२२ महाराज क्या आप हकीमों को सदा यही पारितोषिक दिया करते हैं। यदि ऐसा ही है तो पहिले फिर हकीम ही स्वर्ग लाभ प्राप्त करेंगे फिर रोगी की इतिश्री तो पीछे होगी। शिवाजी ने हँस कर उत्तर दिया.बंधु सिंह के साथ खेलने से कभी कभी घायल भी होना पड़ता है कहो! अब घर का हाल क्या है। ताना ने कहा महाराज! सब कुशल है आपकी आज्ञानुसार सब सैनिक कुशल पूर्वक महाराष्ट्र देश पहुंच गए हैं और कुछ सैनिक इस समय गुसांई बन मथुरा वृन्दावन वास कर रहे हैं। आपके इच्छानुसार मैंने सब जगह सैनिक रख दिए हैं। दिल्ली की परिखा के

बहार आपने जैसा द्रुतगामी घोड़ा रखने के लिये कहाथा वह भी ठीक है। आप जिस दिन स्थिर करें उसी दिन मैं सब सामान केसाथ तैयार रहूंगा। शिवाजी ने उत्तर दिया "मित्र तुम्हारे सदृश मित्र पाकर मैं अवश्यही यहां से विधिवत् निकल जाऊंगा, और तब मेरी रुग्नावस्था भी भागेगी।" तानाजी ने कहा जब मेरे समान चतुर हकीम ने आपकी दवा की है तब भला आप न अच्छे हों। यह कह तानाजी जल्दी बिदाई मांग चल दिए।

२३ शिवाजी तानाजी से सब ठीक ठाक कर चुके थे। अस्तु थोड़े दिन के बाद शिवाजी ने यह बात नगर में फैलदी की अब शिवाजी अच्छे हैं। शिवाजी को अच्छे होते सुन कर फिर नगर में धूम धाम पड़ गई। प्रजा ने इस प्रसन्नता में कतिपय उत्सव किए। कई भले मुसल्मान भी आरोग्य संबाद पा प्रफुल्लित हो उठे, हाट, बाट, चौतरे, गली, कूचे और मन्दिर मसजिदों में इस विषय में वार्त्तालाप होने लगी। सम्म्राट ने भी संतोष प्रकाश किया। शिवाजी ने अब अपना जाल फैलाया और कोई साधारण जाल नहीं फैलाया बरन ऐसा जाल फैलाया कि जिसनें औरंगजेब ऐसा बुद्धिमान चतुर कपटी पुरुष भी आ फँसा। शिवाजी ने अब दान देना प्रारम्भ किया। देवालयों में पूजा सामान भेजने लगे और वैद्यों को बहुत धन देने लगे। दिल्ली के गरीब गुरबा सभी को इतनी मिठाई बांटी कि दिल्ली में मिठाई का नाम तक न रहा। शिवाजी ने दिल्ली के बड़े बड़े रईसों के यहां मिठाई भेजना प्रारम्भ किया और सूफी मुल्ला शाह पीर सभों के यहां अब मिठाई जाने लगी। शिवाजी मिठाई केवल

बाहर ही बाहर से नहीं भेज देते थे वरन उसको घर में लाकर सजा कर भेजते थे । जिस खोंचे में यह मिठाई सजा कर भेजते थे वह खोंचा दो तीन हाथ लम्बा होता था और उसको दस बारह आदमी मिलकर बाहर लेजाते थे । इसी तरह प्रति दिन मिठाई बटने लगी । एक दिन अवसर पा शिवाजी खांचे में बैठ चंपत हुए । उनका मनोरथ सिद्ध हुआ । दिल्ली से कुछ दूर पहुंच कर एक गुप्त अंधियारे स्थान में दोनों झांपे उतारे गए । कहारों ने देखा कि कोई है तो नहीं । इसी प्रकार चारों ओर खूब भली भांति देखकर शिवाजी और संभाजी खांचे से बाहर निकले और ईश्वर का अन्तःकरण से धन्यवाद दिया ।

२४ शिवाजी और संभाजी दोनों अब शीघ्र ही एक अति द्रुतगामी घोड़े पर चढ़े और दिल्ली की परिखा के बाहर हुए । संभाजी के चेहरे पर इस समय चिन्ता है पर शिवाजी निडर भयरहित ईशानी देवी को स्मरण करते सवेग चले जा रहे हैं । परिखा से बाहर होते समय एक पहरेदार ने पूछा "आप कौन हैं और कहां जाया चाहते हैं ! " शिवाजी ने उसे उत्तर दिया "गोसाईं हूं और मथुरा जाया चाहता हूं । हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नाममेव केवलम् । " यह कह शिवाजी परिखा से बाहर हो मथुरा की ओर जितनी जल्दी हो सका चले । अंधियारी रात्रि में ग्राम और गल्लियों को छोड़ कर शिवाजी चुप चाप चले जाते हैं । नभ मंडल में नक्षत्रादिक टिम टिम कर रहे हैं कभी कभी घटा भी छा जाती है जिससे मार्ग अति बीहण तथा अतिशय हृदय विदारक मालूम पड़ता है । वर्षा काल के होने से यमुना अति प्रबल रूप

हे बह रही हैं पर शिवाजी इन सब की कुछ भी परवाह न कर घोड़ा सवेग दौड़ाए चले जाते हैं। शिवाजी इसी तरह चले जाते थे कि सहसा उन्हें घोड़ों की टाप सुनाई दी। शिवाजी ने छिप कर देखा तो दो तीन मुगल बातें करते चले आ रहे हैं। शिवाजी ने छिपने की चेष्टा की पर चेष्टा निष्फल हुई। दोनों मुगल अति निकट आगए। शिवा जी के निकट एक सवार ने आकर पूछा कौन जाता है शिवाजी ने कहा "गोसाईं हूं श्रौर माथुरा को जाता हूं।" सवार ने कहा हम दिल्ली जांयगे। आज हम लोग रास्ता भूल गए हैं सो दिल्ली का रास्ता बताकर तब और कहीं जाना। शिवाजी के ऊपर बज्र ने आघात किया उनका हृदय धक धक करने लगा। मन में सोचने लगे अगर दिल्ली न जाऊं तो ये लोग बल प्रकाश करेंगे श्रौर तब सब भेद खुल जायगा और यदि दिल्ली जाता हूं तो चालाकी खुलने पर सम्राट कदाचित प्राणदण्ड दे। इस प्रकार अनेक तर्कना शिवाजी करने लगे। शिवजी को कोई उपाय नहीं सूझा अन्त में यही स्थिर किया कि इन तीनों को मारना चाहिए। यह विचार एक को तो ऐसा घूसा मारा कि वह 'उसी जगह घोड़े पर से गिर पड़ा। दो दूसरे मुगलों ने भी आक्रमण किया और शिवाजी के पास अस्त्र शस्त्र न रहने से उन्हें बन्दी कर लिया। पर शिवा जी भी कोई साधारण पुरुष नहीं थे। एक को और घूसे से मारा। उस मुगल के गिरते ही शिवाजी ने उस मुगल की तलवार अपने मस्तक पर देखी। शिवाजी ने जीने की आशा त्यागदी और चुप चाप इष्ट देव को स्मरण करने

लगे और कहा "देव देव आपकी पूजा मैंने पवित्र हृदय से की है। शरणागत की रक्षा कीजिए नहीं तो हमारे विचार स्वप्नवत हो जांयगे"। शिवाजी की आशा, उद्यम, भरोसा, एक पल के लिये सब अन्तर्ध्यान हो गए। शिवाजी मन ही मन इष्टदेव को सुमिरने लगे। शिवाजी इसी प्रकार सोचही रहे थे कि सहसा एक तीर उस मुगल की छाती में जाकर लगा जिससे वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। शिवाजी ने तुरन्त ही फिर कर देखा तो वृक्ष के तले तले अश्वारोही जानकी आ रहा है। निकट आने पर वह अश्वारोही जानकी * नहीं था वरन सीतापति गुसाईं थे। निकट आने पर शिवाजी गले मिल कर बोले सीतापति विपद् काल में सिवाय तुम्हारे और कौन सहायक हो सकता है।

---

* यह अश्वारोही वास्तविक में अश्वारोही नहीं था वरन एक राजपूत था। इसकी कथा यों है। इस अश्वारोही का वास्तविक नाम रघुनाथ हवलदार था। यह एक राजपूत का लड़का था। इसके बाप को एक चन्द्रराव जुमलेदार नामी महाराष्ट्र ने स्वयं युद्ध में तीर से मारा और उसकी लड़की से जबरदस्ती विवाह किया था। एक समय रघुनाथ और चन्द्रराव जुमलेदार दोनों शिवाजी के सैनिक नौकर थे। रघुनाथ की चतुरता पर सब सैनिक मुग्ध थे इस से वह प्राय: जला करता था। सो एक दिन रघुनाथ को मरवाने के लिये उसने एक युक्ति निकाली। एक दिन शिवाजी जब दुर्ग विजय को रात्रि में निकले तब वह संध्याही को मुसलमान किलेदार से कहा आया कि आज शिवाजी आधीरात में चढ़ाई करने आवेंगे। अपने नियमानुसार शिवाजी ने अर्द्ध रात्रि में आक्रमण किया जिसमें शिवाजी के बहुत से मावले मारे गए। विजय के उपरान्त जब शिवाजी ने सभा की तब पूछा कि इसमें से किसने

२५ सीतापति ने उत्तर दिया महाराज मैं सीतापति गुसाईं ही हूं जिसको आपने विद्रोही समझ निकाल दिया था। जो कुछ हमारी चूक भई हो उसको क्षमा कीजिए मैं अपनी प्राणप्रिया से उस समय मिलने गया था इसीसे विलम्ब हुआ था। शिवाजी इस समय घटना से चकित और वाक्य शुन्य हुए और बालक के समान हृदय से लगा रोने लगे और कहा—रघुनाथ! रघुनाथ! तुम्हारे निकट शिवाजी सहस्रों अपराधों का अपराधी है तुम्हारे इस महान् आचरण से मुझे उचित दण्ड मिलगया। हा! मैंने तुम्हे मारने की आज्ञा दी थी, तुम्हारा अपमान किया था तुम्हे द्रोही समझ देश से निकालवाने की आज्ञा दी थी, अपमान

आकर कहा था कि मैं उस समय में चढ़ाई करूंगा। चन्द्रराव ने अवसर पा उत्तर दिया स्वामी कल रघुनाथ सैन्य में देरी से आकर मिला था इस से हमको शंका होती है कि कदाचित उसीने यह कार्य किया हो। शिवाजी ने कहा "यह नहीं हो सकता तुम हमारे सामने से दूर हो।" इसी पर रघुनाथ ने हाथ जोड़ उत्तर दिया हां महाराज कल हमको युद्ध में आने में विलम्ब हो गया था इस पर शिवाजी का चेहरा रक्त वर्ण हो गया और पूछा क्यों। रघुनाथ चुप रहे इससे उनकी शंका और बढ़ गई। यह विचारा रघुनाथ अपनी प्राण प्रिया से मिलने गया था इसी से उसे विलम्ब हुआ। शिवाजी ने उसे प्राण दण्ड की आज्ञा दी पर जयसिंह के आग्रह से उसे विद्रोही समझ निकाल दिया। चन्द्रराव का कार्य साधन हुआ। रघुनाथ धीरे से चले आए पर इस पर भी शिवाजी के विरुद्ध न हुए। पहिले उसने गोसाईं बन सीतापति नाम रखा फिर दिल्ली से भागते समय अश्वारोही बन शिवाजी को बचाया इस समय इसी राजपूत ने तीर छोड़ा था जिससे मुगल धराशायी हुए।

से तुम्हारी तलवार छीन ली थी इन सब घटनाओं को स्मरण कर मेरा हृदय टूक टूक हुआ जाता है। हाय! जब तक मैं जीवित रहूंगा तब तक तुम्हारे उपकार को नहीं भुलूंगा मैं आज से तुम्हारा ऋणी हूं और समय पर ऋण चुकाने की चेष्टा करूंगा। दोनों ने थोड़ी देर तक मिलकर बालकों की नांई अनिवारित अश्रुधारा बरसाई फिर बाकी तीनों मुगलों के घोड़ों में से एक रघुनाथ ने लेलिया और बाकी दोनों की बाग थामे शीघ्र शीघ्र चले। चलते चलते कुछ दिनों में शिवाजी महाराष्ट्र देश में पहुंचे। शिवाजी के महाराष्ट्र देश में पहुंचते ही खूब धूम धाम पड़ गई। शिवाजी उस दुष्ट कपटी औरंगजेब के फंदे से निकल आए। शिवाजी के इस कथन के अनुसार कि "छूटने पर जो समरानल प्रज्वलित करूंगा उससे मुगलराज्य भस्म हो जायगा" ठीकही हुआ। शिवाजी ने मुगल राज्य पर मारना, काटना, लूटना, आरम्भ कर दिया जिससे औरंगजेब बहुत घबड़ाया पर उसको कोई उपाय सूझ न पड़ा क्योंकि राजपूत लोग भी उसके कुव्यवहार से अप्रसन्न थे।

एक वर्ष के बाद शिवाजी ने कोन्दाना दुर्ग लेने का विचार किया। अपनी मनोरथसिद्धि के लिये उन्होंने अपने बाल्यसखा तानाजी से परामर्श लिया। कोंदाना दुर्ग अति सुदृढ़ और दुर्गम था उसका लेना जरा टेढ़ी खीर थी। शिवाजी के निकल जाने के उपरान्त वह और भी सुदृढ़ कर लिया गया था। समाचार देने के लिये कोली और म्हार लोग हर समय हर घड़ी प्रस्तुत रहा करते थे। दुर्ग में अति कट्टर सेना रक्खी गई थी जो कि

उदय भानु के अधिकार में थी। तानाजी ने अब दुर्ग विजय की ओर अपना ध्यान फेरा और म्हार कोलियों को भी मिलाने की चेष्टा करने लगे। तानाजी जानते थे कि म्हार और कोली लोग भली भांति मिला लिए जासकते हैं। अनुकूल अवसर भी आ उपस्थित हुआ। कोलियों के सरदार रायजी अपनी पुत्री का विवाह पूनानिवासी तथा तानाजी के परिचित दौलत रायजी के पुत्र के साथ करते थे। इस उत्सव की शोभा बढ़ाने के लिये एक कलावन्त की आवश्यकता पड़ी। दौलतराव की सहायता से उन्होंने अपना कार्य्य पूर्ण रीति से साधन किया। दौलतराव ने तानाजी को विख्यात गोन्धाजी तोताराम बनाया। प्रथम गान के मधुरालाप से जब श्रोतृवृन्द मुग्ध हुए तब उन्होंने शिवाजी के जन्म तथा बालकपन का गीत छेड़ा। गायक ने यह वर्णन किया कि शिवाजी श्री महादेव के अवतार हैं अम्बाबाई की प्रार्थना पर वह जीजी बाई के गर्भ से उत्पन्न होने और मोगलों का सर्वनाश करने पर सम्मत हुए हैं। शिवाजी ने किस प्रकार कितने क्लेश उठाकर गोब्राह्मण की रक्षा की थी हिन्दुओं की स्वाधीनता के लिये किस प्रकार चना खा खा कर समय वन में काटा था, किस प्रकार अनेक गुण दिखाए यह सब गाया। गीत का अन्तिम पद यों हैं।

"जे जे मोगलछे चाकरथूरे थून्चा जिन गीवर।" गाना ऐसे मधुरालाप में गया था कि जिससे रायजी मुग्ध होगए। अभी गीत समाप्त भी न हुआ था कि तानाजी का मनोरथ सिद्ध हुआ। सबके चले जाने पर तानाजी ने रायजी के सामने अपनी असल मूर्ति प्रगट की और दुर्ग आक्रमण के

समय सहायता देने का बचन चाहा । रायजी ने कोलियों और म्हारों की सहायता का बचन, दिया । कुछ दिनों के उपरान्त तानाजी रायजी से मिलनेगए। सन्ध्या व्यतीत हो गई पर रायजी नहीं दिखाई पड़े। आशा जोहते जोहते रात्रि भी आगई पर भाग्य वश थोड़ी देर में चन्द्रमा भी उग आया । मधुर चांदनी रात्रि हो आई, चन्द्र चांदनी से चतुर्दिक की वस्तु भली भांति दिखाई पड़ने लगी । मधुर दीप्तमती चांदनी से सारी पृथ्वी मनो स्नान कर रही है । चन्द्रकिरण से पर्वत का समस्त भाग एक अपूर्व छटा धारण किए है । पर्वतों की चोटी पर विमल चांदनी छिटक रही है मानों एक एक चोटी पर एक एक चन्द्रमा उदय हो रहा है । पर्वत शिखर पर उस नक्षत्र-माला को, देवताओं की नीरव, निस्तब्ध और जागृत आंख के सदृश टक टकी बांधे तानाजी देख रहे हैं । तानाजी इसी तरह मन में कुछ तर्कना करते हुए टहल रहे हैं कि इनको एक राजपूत सैनिक दिखाई दिया । कोन्दाना दुर्ग का सब वृत्तान्त जानने के लिये तानाजी ने इसको पकड़ना चाहा पर बगैर लोहा बजाए कहां राजपूत को कोई बन्दी कर सकता है । अस्तु तानाजी ने उसपर आक्रमण किया और उसको किसी तरह बन्दी कर शिवाजी के पास ले आए । शिवाजी ने उससे पूछा "तुम कौन जाति हो और किसलिये हिन्दू होकर औरंगजेब के यहां नौकरी करते हो । अपनी जननी जन्मभूमि का अन्न खाकर तुम अपना रक्त दूसरों के लिये क्यों बहाते हो अपना सब हाल कहो और कोन्दाना दुर्ग का सब हाल बताओ कि किस तरह आक्रमण करें कि

हमारी सेना न कटे और हम लोग विजयी हो जाँय ।"

उस राजपूत ने उत्तर दिया "महाराज ! मैं राजपूत हूं और मारवाड़ देश का रहने वाला हूं मेरा नाम जगत सिंह है । काल की कराल गति से मैं ने यह नौकरी की है आप यथाविधि मेरी कथा सुनिए और यथोचित सहायता कीजिए । आज कल जो उदयभानु यहां का दुर्ग स्वामी है वह बड़ा नीच है उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है । उसके पिता उदयपुर के उमरा थे और उसकी मां बांदी थी । कुछ दिवसोपरान्त जब उदयभानु युवा अवस्था को पहुंचा तब कामान्ध हो उसने एक सरदार की पुत्री कमलकुमारी से ब्याह करना चाहा पर उससे उत्तर में यह कहा गया कि "हंस कौवों के साथ शोभा नहीं पाते ।" इसपर वह अति क्रुद्ध हो दिल्लीपति के पास पहुंचा और उसने कमलकुमारी के भाई बहिन माता पिता, सब को समूल नष्ट करना चाहा। दिल्ली में पहुंच कर उसने अपने को मेवाड़ का राजा कहा और फिर मुसल्मानी धर्म अंगीकार कर औरंगजेब का प्रियपात्र बन गया । इधर जोधपुर के यशवन्त सिंह के ऊपर शंका होने से औरंगज़ेब ने बड़ी भारी सेना के साथ उदय-भानु को उनके स्थान पर भेजा, साथही आपको भी बन्दी करने की विधि बतला उसको मेवाड़ पर चढ़ाई करने के लिये भेजा । मेवाड़ में अपनी यशपताका फैलाने के निमित्त वह रुक न सका और कुछ राजपूत और मुसल्मानी सेना के साथ वह मेवाड़-विजय-मोदक मनही मन खाता चला । युद्धोपरान्त जब वह मेवाड़ की सीमा से सटे सटे चला जाता था उसी समय कमलकुमारी अपने

पति केशव को लेकर सती होने की तैयारी कर रही थीं, इतनेही में यह दुष्ट पहुंच गया और जो राजपूत वहां थे उनको मार कमलकुमारी और उसकी सखी देवलदेवी को ले आया। औरंगजेब ने यह समाचार सुन उसको धिक्कारा भी पर उसको इसका कुछ भी विचार न हुआ। औरंगजेब ने क्रुद्ध होकर उसका विवाह रोक दिया और कहा कि तीन मास तक विवाह न होगा। आज कल वह कमलकुमारी और मेरी स्त्री देवलदेवी को कोन्दाना दुर्ग में बन्दी किए है। प्रभु! शरणागत की रक्षा कीजिए और स्त्री देवलदेवी और कमलकुमारी को छोड़ाइए। उदयभानु से सब राजपूत और मुसल्मानी सेना घृणा रखती है। चढ़ाई करिए मैं आपको सब पता बताऊंगा। और आप यदि चढ़ाई कर मेरी स्त्री देवलदेवी को न मुक्त कीजिएगा तो यह पामर राजपूत मानहानि से अपना प्राण तृणवत अर्पण करेगा। तानाजी यह सुनते ही अति व्याकुल हुए और बोले वीर राजपूत मैं नहीं जानता था कि तुम इतने दुःखी हो नहीं तो मैं तुम्हे आक्रमण कर वृथा क्यों घायल करता जो कुछ मेरी भूल हो उसे क्षमा करना और मैं तुम्हे वचन देता हूं कि मेरे प्राण चले जांय पर मैं कमलकुमारी और तुम्हारी प्रिया को अवश्य इस हृदय विदारक दुःख से मुक्त करूंगा। देखो मैं तुम्हारे सामने इस तलवार को लेकर कसम खाताहूं। यह कह तानाजी ने म्यान से तलवार निकाल शपथ खाई।

तानाजी ने शीघ्रही अपना उपाय ठीक किया। उन्होंने कुछ सेना मंगाई। इन सैनिकों में से कुछ योद्धा चुनकर

उन्होंने दुर्ग की दिवार नांघ तथा फाटक खोलकर वीरों के भीतर आने का पथ प्रशस्त कर देने की बात ठान ली। सेना को ऊपर लाने में कुछ दिन लगे तब तक पाणिग्रहण का नियत दिन आगया। अर्ध रात्रि के समय विवाह होने की बात थी पर तानाजी ने प्रतिज्ञा करली थी कि किसी प्रकार यह काम न होने देंगे पर भाग्य उनके विरुद्ध जान पड़ता था। अभी तक उनके वीर लोग नहीं आए थे। काज़ी साहब आगए थे। काज़ी साहब ने कमलकुमारी को बहुत फुसलाया। साम, दाम, दण्ड, भेद चारों का प्रयोग किया पर सब निष्फल हुआ। अन्त में करीब ग्यारह बजे, तानाजी का एक वीर दल आ पहुंचा। अब तानाजी और न ठहर सके। दक्षिण पश्चिम की ओर से चढ़कर वह बड़ी पहाड़ी के नीचे पहुंचे। वहां शिवाजी के प्रसिद्ध यशवन्ती नामक कमन्द को निकाला पर दुर्गम और अतिशय विकट पहाड़ी पर वह कुछ काम न कर सका। तानाजी के मामा सलेर मामा ने इसे अशुभ समझा पर तानाजी सहज ही छोड़ने वाले न थे। एक बार फिर कमन्द फेंका इस बार ईशानी देवी की कृपा से युक्ति फलवती हुई। कमन्द दुर्ग के कोन में फैल गया। कमन्द की रस्सी पकड़ जगत सिंह ऊपर गया वहां से एक और बहुत से रस्से अटका दिए। अन्य रस्सों को पकड़ पचासों चुने हुए वीर दुर्ग पर चढ़ गए। इधर थोड़ी देर में तानाजी के कुछ सिपाही जरजाल जमूरों के साथ आन पहुंचे। तानाजी कुछ और सिपाहियों को ले आप ऊपर चढ़े और इधर गोलान्दाजों से कह दिया कि चिन्ह पातेही तुपक छोड़ना आरम्भ करदेना।

जगत सिंह तानाजी के वीरों को साथ ले पारी पारी प्रत्येक फाटकों पर गए, वहां जाकर प्रत्येक रक्षकों के प्राण लिए। इसी प्रकार सब फाटक खुल गए। थोड़ीही देर में तानाजी के भ्राता सूर्य्यजी ससैन्य पहुंच गए और आतेही कमन्द फेंक दुर्ग पर सब वीरों को चढ़ा ले गए। उधर उदयभानु विवाह के आनन्द मना रहा था इसी में एक दूत ने आकर सहसा आक्रमण की सूचना दी। उदय भानु भी कोई ऐसा वैसा योद्धा नहीं था कि रण में पीठ दिखलाता। उसने तुरन्तही कुछ सैनिकों को बुलाया और खुद ढाल तलवार ले तानाजी का मुकाबला किया। यद्यपि वह धर्म च्युत होगया था पर तिसपर भी वह युद्ध के गोलमाल, तलवारों की खनक, मशालों की चमक तथा मावलों की चिल्लाहट में राजपूतों की तरह लड़ा और उसने मेवाड़ के सूर्य्य वंशी वीरों की नाईं प्राण दिए। उसने शीघ्रही कुछ सैनिकों को लेकर दक्षिण वाले कूप के बन्द करने की चेष्टा की जिससे मावल गण पानी पाते थे। तानाजी उसके अभि-प्राय को ताड़ गए और उसी ओर बढ़े। यम गुफा में ताना जी अपनी प्रतिज्ञा के लिये कूदे तो सही पर उनकी जान का अति भय देख पड़ने लगा। दोनों दलों में खूब घमासान लड़ाई होने लगी। दोनों दलों में खूब घमासान युद्ध हुआ। मुसलमान सेना से "दीन दीन, जहाद" शब्द कर्णगोचर होने लगा, आर्य सेना मुक्त कण्ठ से "हर हर महादेव" शब्द निकल कर नील नभ में प्रतिध्वनित होने लगा। उस समय बादलों के "दीन दीन" शब्द ने बिजुली की "हर हर" ध्वनि में मिलकर पृथ्वी से आकाश तक और भी अधिक तर गम्भीर

ध्वनि पैदा कर दी। पर्वतों की कन्दराओं में वह हृदय-विदारक ध्वनि प्रतिध्वनित होने लगी-वृक्षों के पत्तों से उसकी भयंकर झङ्कार निकलने लगी। उस ध्वनि ने उन वीर मावलों के हृदय में पैठकर उनको और भी भयंकर बना दिया। देखते देखते आंखों के पलक गिरते न गिरते एक नदी प्रवाहित हो चली। तानाजी के कथनानुसार ध्वनि सुनतेही गोलन्दाजों ने तुपक दागना प्रारम्भ कर दिया। मावले मावन की झड़ी के समान गोले बरसाने लगे। आग्न्यास्त्र, तोप, बन्दूक, तमंचा, कड़ाबीन सब छूटने लगे। इस समय तानाजी उदय भानु के मारने का इरादा कर फिर उसकी ओर झुके। दोनों में तुमुल युद्ध होने लगा। दोनों की तलवारें भिड़ गईं पर तानाजी उसकी बराबरी न कर सके। प्रथम आक्रमण में तानाजी की ढाल उड़ गई, दूसरे आक्रमण में उनकी दहिनी केहुनी घायल हुई और तृतीय में उदयभानु की असि ने ताना का हृदय बेध डाला। वीर सूबेदार प्राणहीन हो पृथ्वी पर गिर पड़े। जगत सिंह उनके स्थान पर आ पहुंचा। पर तानाजी के वृद्ध मामा सलेर से न सहा गया और शत्रु को दण्ड देने के लिये आप खुद उदय भानु से युद्ध करने पर तत्पर हुए। यद्यपि इनकी अवस्था अस्सी वर्ष की थी पर युद्ध में जो परिचय इन्होंने अपने बाहु-बल का दिया वह सराहनीय है। सलेर मामा ने उदय भानु की कनपटी में ऐसी तलवार मारी कि फिर वह खड़ा न रह सका वह तुरन्तही प्राणहीन हो पृथ्वी पर गिर पड़ा। तानाजी पृथ्वी पर पड़े पड़े इस घटना को देख रहे थे कि सहसा उदय भानु के मरने से उस की सेना भाग

चली। तानाजी ने मुसल्मानों को भागते देख जगत सिंह को आशीर्वाद दे आंख मूँद ली मानों प्राण की साक्षी देते थे कि मैंने तुम्हारा काम पूर्ण किया। शिवाजी को सूचना देने के लिये मावलों ने दुर्ग पर आग जलाई। राजगढ़ की सूखी घास जलते देख कर शिवाजी ने समझ लिया कि कोन्दाना अब हमारा है। शिवाजी के आनन्द की सीमा न रही उन्होंने उसी वक्त कहा—"भगवति कोन्दाना का नाम सिंहगढ़ हुआ। सिंह सरीखे तानाजी के सदृश इसे और कौन ले सकता था।" शिवाजी चट पट घर से चले और कोन्दाना दुर्ग के निकट पहुंचे।

जाते ही सलेर मामा से भेंट हुई। सलेर मामा ने युद्ध की सब कथा आद्योपान्त कह सुनाई। तानाजी की मृत्यु का समाचार सुनते ही शिवाजी कुछ मुर्छित से हुए पर फिर सम्हल कर कहा हाय! "गढ़" तो हाथ आगया पर सिंह चला गया। हाय तानाजी तुमने वृथाही उस राजपूत स्त्री को छुड़ाने का भार लिया। हाय! उसको मुक्त करने में तुम्ही स्वयं मुक्त हो हमसे चिरकाल के लिये विदा हो गए। सत्य है वीरों का बचन ही उनका आभूषण है। आहा! 'प्राण जाई वरु वचन न जाई" को तुमने आज अपनी जानपर खेलकर पूर्ण किया। ईश्वर तुम्हारी आत्मा को शान्ति देवे। बाल्यसखा ताना! तुम चिर-सुखी हो आनन्द पूर्वक स्वर्गबास करो यही हमारा आशीर्वाद है।" यह कह शिवाजी रोने लगे सलेर मामा ने बहुत समझाया पर सर्पराज मणि के बिना कैसे रह सकते हैं। जगत सिंह भी अपनी स्त्री देवलदेवी को ढूंढ़ता हुआ आ पहुंचा।

जहां कमलकुमारी बन्दी थी वहां जांके उसने देखा कि उसकी स्त्री फांसी पर लटकी है। देखतेही उसके नेत्रों के सम्मुख अन्धकार सा छा गया और वह उच्च स्वर से चिल्लाने और रोने लगा।

इस प्रकार जगत सिंह अति शोकाकुल हो अब दुर्ग से बाहर निकला और एक ओर चलदिया। देवलदेवी का शरीर उसी दुर्ग में जलाया गया; और कमलकुमारी भी आज्ञा मांग सती हुई। सती स्थान अभी तक दुर्ग के उत्तर पश्चिम कोने में वर्त्तमान है। शिवाजी ने तानाजी की इस वीरोचित और सराहनीय मृत्यु पर एक स्मारक-चिन्ह बनवाया जो कि अभी तक तानाजी का नाम उज्वल कर रहा है। सब महाराष्ट्र गण विजय-लक्ष्मी को ले गृह की ओर चले और अपने कुछ मावल पहरेदारों को बैठा गए। सन् १७०२ ईस्वी में फिर औरंगजेब ने अपना अधिकार इस पर जमाया। सन् १७०६ ईस्वी में मरहट्ठों के हस्तगत हुआ और उसी वर्ष पुनः यवनों ने उसे ले लिया। मरहट्टों ने फिर धावा कर उसे ले लिया इसी तरह कई बेर हार जीत के उपरान्त वह अब अंगरेजों के हाथ में आ गया है।

सिकन्दरशाह ।

[पूर्व अंक में प्रकाशित के आगे]

सिकन्दर को मालूम हुआ कि सहारा मरू भूमि के बीचों बीच एक तीन कोस का लंबा चौड़ा मैदान ऐसा है कि जो अत्यन्त उपजाऊ होने के कारण सदैव हरा भरा रहता है वहां पर सब किस्म के मेवे और अन्न इत्यादि की उपज है उसी भूमि पर एक देव मन्दिर है जो कि सोने का बना हुआ है और वह उसके पूर्व्व पुरुषों से कुछ सम्बन्ध रखता है। सिकन्दर का उपरोक्त विचार ऐसा दृढ़ था कि वह उस दृढता के भरोसे कठिन से कठिन कार्य्य में हाथ डाल देता था इसी प्रकार उसने कोसों लम्बा चौड़ा रेगिस्तान लांघकर उक्तस्थान तक जाना चाहा—मिश्र निवासी लोगों ने रेगिस्तान में सफर करने की तकलीफें बयान करके सिकन्दर को वहां जाने से रोकना चाहा। उन्होंने यह भी कहा कि पारिस के वे बादशाह जो उस मन्दिर तक गए थे परन्तु उन्होंने यहां पर उचित रीति से पूजन अर्चन और बलि प्रदान न किया इस लिये उनके ५०००० सिपाही सब के सब उस देवता ने धूलि में दबा दिए यह सुनते ही सिकन्दर का शौक दूना हो गया और वह कुछ साधारण सेना सहित उपरोक्त "छाग मन्दिर" की तरफ चला। रास्ते में चलते चलते लाव लश्कर सहित सिकन्दर राह भूल गया और जब कि सब लोग बड़ी चिन्ता में थे दो सांपों ने सेना के आगे चलकर बराबर छाग-मन्दिर तक लकीर करदी। जिस समय रेगिस्तान में पानी न मिलने से सिकन्दर के बहुत साथी प्यास के मारे और बालू में चलने से थकावट

के मारे मरने लगे तब दो बद्दल ऐसे खूब बरस गए कि सिकन्दर के सब कष्ट नष्ट हो गए और वह आसानी से छाग-मन्दिर तक पहुंच गया । सिकन्दर की आवाई का समाचार सुन कर छाग मन्दिर के पण्डे पुजारियों ने धार्म्मिक गीत गाते हुए, बड़े गाजे बाजे से आगमनी देकर उसे मन्दिर में लाए । मन्दिर के मुख्य अधिष्ठाता पुजारी ने सिकन्दर को यूनानी भाषा में "ओपैडियन" अर्थात् मेरा पुत्र कह कर सम्बोधन करना चाहा परन्तु वह न के स्थान में स उच्चारण कर गया और उसका अर्थ ओपैडियस अय देव (एमन) पुत्र हो गया जिसे सुनते ही सिकन्दर बहुत प्रसन्न हुआ । उसने यथोचित रीति से पूजन अर्चन किया बलि प्रदान करके पण्डों को बहुत कुछ रुपए अशर्फियां दीं और अमूल्य रत्न मन्दिर में चढ़ाए । सिकन्दर का उक्त विचार इससे और भी पक्का हो गया कि छाग-मन्दिर के देवता ने स्वयं मुझे अपनी सन्तान होना स्वीकार किया है ।

सिकन्दर ने अपने निज मन्तव्य के अनुसार मिस्र का राजकीय शासन सम्बन्धी पूरा इन्तजाम करके फिर से शहर टायर की राह ली । टायर में रहकर सिकन्दर ने दारा के पीछे पड़ने की तय्यारियां कीं । उसने हरकलस के मन्दिर में बलिदान चढ़ाकर भांति भांति के सैनिक खेल तमासे किए । तदनन्तर (ई० पू०) ३३१ की बसन्त ऋतु में सिकन्दर ने चालीस हज़ार पैदल और सात हज़ार सवार लेकर मय अपने कैदी गुलाम इत्यादि के लाव लश्कर सहित इफरात की तरफ कूच किया । इफरात पर रहने वाले पारसी सैनिकों को सिकन्दर के पेश खेमे वालों ने ही

मार भगाया था। इस लिये सिकन्दर मय लावलश्कर के आसानी से इफरात पार होकर उत्तर पूर्व की तरफ़ लौट पड़ा क्यों कि यूनान वासी सिपाहियों को गर्मी के दिनों में कड़ी धूप असह्य थी। यद्यपि पूर्वोत्तर दिशा का मार्ग ठंढा था वहां पर यूनानी सेना के लिये सम्पूर्ण प्रकार के खाद्य पदार्थ भी बहुतायत से मिलते थे परन्तु इस रास्ते में इतने नदी नाले झरने खोह खंदक और उबड़ खाबड़ जमीन थी कि जिससे सब को बड़ी ही तकलीफ हुई और इसी मार्ग को पार करते करते दो महीने व्यतीत हो गए और इन्हीं तकलीफों के कारण दारा की सुकुमार स्त्री स्तातिरा बीमार होकर अदल के पास पहुंचते पहुंचते मरगई।

अरवैला की लड़ाई।

स्तातिरा के मरने पर सिकन्दर ने स्वयं बड़ा ही पश्चाताप और दुःख प्रगट किया और वह दुःख इस बात का था कि वह उसके साथ कोई ऐसा उपकार न कर सका जो कि चिरस्मरणीय होता— सिकन्दर ने स्तातिरा को बड़े समारोह और गाजे बाजे के साथ दफन करवाया। इसी अवसर में त्रियूस नामक एक पार्सी कंचुकी (खोजा) जो कि दारा की स्त्रियों के साथही में कैद होकर आया था समय पाकर सिकन्दर के लश्कर से निकल भागा और उसने यह समाचार दारा को जा सुनाया। संसार में अद्वितीय सुन्दरी स्त्री अपनी प्रियतमा स्तातिरा का मरण सुनते ही दारा अत्यन्त दुखी होकर सिर पीटने और रोने लगा उसने विलाप करते हुए यह भी कहा कि हा मैं कैसा अभागा हूं कि अन्तिम समय में तुम्हारी मान मर्य्यादा की रक्षा भी न कर सका;

दारा को संतोष देने की इच्छा से त्रियूस ने कहा कि माता स्तारिता को न तो किसी प्रकार का दुःख था और न अब तक उनका किसी प्रकार मान भंग हुआ; यदि दुःख था तो केवल इतना ही था कि वे आप के दर्शनों से वंचित थीं—इसके सिवाय सिकन्दर ने उन्हें और किसी प्रकार से दुखी होने नहीं दिया। यह सुनतेही दारा के रोएं खड़े हो गए उसके हृदय सरोवर का प्रेमरूपी रस क्षणभर में ससक गया और पाप एवं कपट रूपी कीचड़ बहने लगा। उसने त्रियूस को एकान्त में लिवा जाकर कहा "क्यों मेरे सच्चे मित्र त्रियूस! क्या तू कह सकता है कि मेरे घर की बन्दी स्त्रियों पर विजेता की ऐसी कृपा क्यों कर हुई? जो मनुष्य मेरे धन जन एवं प्राण का गाहक है वह युवा बीर स्त्रियों पर ऐसा दयालु हुआ तो इसका कुछ घोरतर कारण अवश्य है!! दारा की ये बातें त्रियूस अधोमुख किए चुपचाप सुन रहा था एवं वह यह भी विचार रहा था कि मैं अपने मालिक के मन की इस मलीनता को क्योंकर धो सकूं--दारा की बात समाप्त होतेही त्रियूस बोला कि हे प्यारे पिता आप की ऐसी कलुषित कल्पना आप के ही मन को कलंकित करने वाली है, न कि स्तातिरा को और न सिकन्दर को। हे स्वामी सिकन्दर केवल एक बड़ी सेना का नेता और निर्बल जातियों का विजेता ही नहीं है वरन उसके मन हृदय तथा मस्तिष्क में दैवदत्त ऐसी प्रबल शक्तियां विद्यमान है कि वह मनुष्य जीवन सम्बन्धी यात्रा में सर्वोत्तम या सर्व श्रेष्ठ पथिक कहलाने योग्य है। वह कलह के समय जितना बीर पराक्रमी और क्रोधी है—सन्धि के समय उससे कहीं अधिक नम्र दयालु और आर्द्र हृदय है-[क्रमशः]

सभा का कार्यविवरण ।

[११]

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० ३० मई १९०८—सन्ध्या के छ बजे ।

स्थान सभाभवन ।

—:0:—

(१) गत अधिवेशन (ता० २५ अप्रैल) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) प्रबन्धकारिणी सभा का ता० ६ अप्रैल का कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

(३) निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गए ।

(१) पं० रामनरेश पांडे मुदर्रिस–भुरैाला–पो० बैरिया–बलिया १॥) । (२) पं० सानुकूल दुबे मुदर्रिस–शिवपुर कपूर दियर–डा० बैरिया–बलिया १॥) । (३) बाबू बांके सिंह मुदर्रिस–मिडिल स्कूल–बैरिया–बलिया १॥) । (४) पं० रामेश्वर ओझा मुदर्रिस तालिबपुर–पो० सुरेमनपुर–बलिया १॥), (५) पं० रामलखन पांडे मुदर्रिस, नरही, पो० कारों, बलिया १॥), (६) पं० बलदेव उपाध्याय मु० बैरिया पो० बैरिया, बलिया ३), (७) बाबू चुन्नीलाल महेश्वरी, बीबीहटिया, काशी ३) (८) पंडित नारायणपति त्रिपाठी, औरंगाबाद, काशी ३), (९) बाबू राधाकृष्ण सोनथलिया, नं० ९८५।८८ सूतापट्टी, कलकत्ता ३), (१०) पं० रघुनाथ प्रसाद मिश्र, शारदाभवन, ब्रिपैटी इटावा १॥), (११) पं० रघुनन्दन शुक्ल, सुवंसा खास, जि० प्रतापगढ़ ३), (१२) श्री रामनैन, सेक्रेटरी ओड़छा दरबार, टीकमगढ़ ३), (१३) बाबू रघुनन्दन प्रसाद C/o बा० मुरली मनोहर लाल, मारूफगंज, पटना १॥),

(४) सभासद होने के लिये निम्नलिखित महाशयों के आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(१) बा० जगन्नाथ निरुक्तरत्न, नमकमंडी, अमृतसर (२) चौधरी मथुरा प्रसाद सिंह, रामनगर बनारस (३) पं० रामचन्द्र शर्म्मा वैद्य, गोकुल, मथुरा (४) मुनिराज धर्मविजय जी, अंग्रेजी कोठी, काशी, (५) बाबू भोलानाथ C/o बाबू गोकुलचन्द रामचन्द्र लक्खी-चबूतरा काशी ।

(५) लखनऊ के पण्डित केशवराम विष्णुलाल पंड्या का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(६) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं ।

(१) बाबू हरिदास वैश्य, सिंगवाड़ा, मुड़वारा, जि० जबलपुर–विचार चिन्तामणि, प्रणव प्रचार (२) पंडित नारायण शर्म्मा, राजा पाइसा, मथुरा–बालशिक्षा, बालोपदेश (३) बाबू पुष्कर सिंह विष्ट, अध्यापक पोखरी, पो० ठांगर, उदयपुर–चसनिस्ताने हमेशः बहार (४) बाबू मोतीलाल गोविन्दप्रसाद, डिस्ट्रिक्ट बुक डिपो, अल्मोड़ा–ड्राइङ्ग याने उसूले नक्शाकशी और उसे पढ़ाने का तरीका (५) पं० तनसुखराम मनसुखराम त्रिपाठी, चाइना बाग, गिरगांव, बम्बई–संगीतादित्य, रामसागर, शोकमुद्गर स्तोत्र, सप्रमाण दोलोत्सव निर्णय, नीतिरत्नावली, श्रादिखेंगार जी चरित्र चन्द्रिका, श्रीगोवरधन बाराखरी, श्री सदाशिव विवाह, श्री जीवनमुक्तोत्तराचार, अनुभव प्रकाश भाषांतर, चमत्कार चन्द्रिका, हमीरसर बावनी (६) बाबू रामाश्रय प्रसाद, विहार थिआसाफ़िकल फेडरेशन, बांकीपुर–शास्त्रोक्तदान (७) पं० बेनीमाधव त्रिपाठी, मोतिहारी-बालकेलि (८) बा० पन्ना लाल जैन, जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, गिरगांव, बम्बई–वृन्दावनविलास २ प्रति, मनोरमा २ प्रति, अर्हत्पाशा केवली २ प्रति (९) श्रीमान् महाराजा टीकमगढ़–वीरसिंह चरित्र (१०) बाबू राधाकृष्ण कैशल, कानपुर–पुत्री पत्रिका २ प्रति (११) पं० माधव प्रसाद पाठक, काशी—A primer of exercises for translation, नीति की कहानियां, हावर्ड साहब की अंग्रेजी ग्राइ-मर का तर्जुमा, संस्कृत परिचायिका प्रथम भाग, हिन्दी व्याकरण

के मूल सूत्र, हिन्दी व्याकरण तत्वबोध, हिन्दी बालबोध व्याकरण, Dr. Ballantyne's English Primer with Translation in easy Sanskrit, रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड (१२) बाबू मुखतार सिंह, भारत ट्रेडिङ्ग कम्पनी, मेरट–एक माह में प्रतिया हिन्दी (१३) एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, कलकत्ता, Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal for November 1907 December 1907 and January 1908, Memoirs of Asiatic Society of Bengal Vol. II. No. 5 pp 85–120. (१४) बाबू रामलाल वर्म्मा, ४०।१२ अपर चितपुर रोड कलकत्ता, पंजाब केशरी (१५) इतिहास प्रकाशक समिति, काशी–प्राचीन भारत वर्ष की सभ्यता का इतिहास तीसरा भाग (१६) मंदराज की गवर्न्मेंट, A descriptive catalogue of the Sanskrit Mss in the Govt. Oriental Mss Library, Madras (१७) बंगाल की गवर्न्मेंट Pag Som Jon Zang (१८) पं० श्यामसुन्दर लाल, मुरादाबाद–असद्वाद निषेध भाग १,२ और ३, घर का दर्जी, होनहार, शिवतंत्र, कुमार संशोधन चन्द्रिका, कुरीति ध्वांत मार्तण्ड, रागरत्नाकर, गायत्री तंत्र, निगमागमचन्द्रिका भाग १ और २, सत्यवीर, आदिपुराण भाषा, स्वर्ग की चाबी, श्रीविष्णोर्नामसहस्रम्, धर्मदिवाकर, रतिमंजरी, (१९) खरीदी गई—आर्यनियमोदय काव्य, लघुकाव्य, लघुकाव्य संग्रह, आर्यशिरोभूषण काव्य, श्री दयानन्द लहरी, उपनिषदतत्व, कबीर साहब की शब्दावली दूसरा भाग, सिंह मकरन्द गुरुनिर्णय (२०) ।
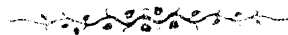
(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगलकिशोर,

मंत्री.

[१७]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० १८ मई १९०८, सन्ध्या के ६ बजे

स्थान सभाभवन

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०—सभापति । मिस्टर ए० सी० मुकर्जी । पण्डित रामनारायण मिश्र । बाबू जुगलकिशोर । बाबू गौरीशंकर प्रसाद । बाबू माधव प्रसाद । बाबू गोपाल दास ॥

(१) गत अधिवेशन (ता० ११ मई) का कार्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) निश्चय हुआ कि बुधराम मिश्र ५) रु० मासिक वेतन पर परीक्षार्थ सभा के पुस्तकालय का चपरासी नियत किया जाय और सुखनन्दन मिश्र आफ़िस के चपरासी का कार्य करे ।

(३) पुस्तकाध्यक्ष के कार्य के लिये ५ आवेदन पत्र उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दरदास, बाबू जुगुलकिशोर और पण्डित रामनारायण मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे लोग इनमें से चुन कर एक योग्य मनुष्य को पुस्तकाध्यक्ष नियुक्त करें ।

(४) बाबू रामानन्द श्रीवास्तव का आवेदन पत्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि बाबू रामानन्द १५ रु० मासिक वेतन पर बाबू महादेव प्रसाद की छः मास की छुट्टी के शेष समय के लिये सभा के क्लार्क के काम पर नियुक्त किए जांय और पण्डित विश्वनाथ तिवारी पुस्तकालय के काम से खाली हो कर पूर्ववत् पृथ्वीराजरासो आदि के लिखने का काम करें ।

(५) आगामी वर्ष के लिये पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणी सभा के सभासदों के चुनाव के लिये निम्न लिखित सूची बनाई गई —

एक सभापति और दो उपसभापति—महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी। रेवरेण्ड ई० ग्रीब्ज। बाबू गोविन्ददास। बाबू श्यामसुन्दरदास। बाबू इन्द्रनारायण सिंह। राय शिवप्रसाद।

मंत्री और उपमंत्री—बाबू जुगुलकिशोर। बाबू बेणीप्रसाद। लाला भगवानदीन।

प्रबन्धकारिणी सभा के अन्य सभासद, पंजाब से—पण्डित हीरानन्द शास्त्री। लाला खुशीराम एम० ए०।

संयुक्त प्रदेश से—पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० पण्डित राधाचरण गोस्वामी, बाबू गदाधर सिंह, ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा। मध्यप्रदेश से-पण्डित माधव राव सप्रे बी० ए० पण्डित विनायक राव, बाबू हीरालाल बी० ए०। मध्य भारत और राजपुताने से पण्डित गणपत जानकी राम दुबे, पण्डित लज्जा राम मेहता, पुरोहित गोपीनाथ एम० ए०। बंगाल और बिहार से-राजा कमलानन्द सिंह, पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र, पण्डित रामावतार पाण्डेय। स्थानिक सभासद (अधिकारियों में जो नाम आए हैं उनके अतिरिक्त) मिस्टर ए० सी० मुकर्जी, बाबू कालिदास माणिक, मिस्टर मुन्नीलाल शा, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू घनश्याम दास, पण्डित छन्नूलाल वकील बाबू बटुक प्रसाद खत्री बाबू वैद्यनाथ दास पण्डित माधव प्रसाद पाठक बाबू माधव प्रसाद पण्डित रामनारायण मिश्र बाबू रामप्रसाद चौधरी पण्डित सुरेन्द्रनाथ शर्म्मा बाबू बटुक प्रसादगुप्त।

(६) कुँअर कन्हैया जी का आवेदन पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने २५) रु० सभा से पेशगी मांगा था और लिखा था कि वे ५) रु० प्रतिमास अपने वेतन में से कटवा कर पांच मास में इसे चुका देंगे।

निश्चय हुआ कि उन्हें १५) रु० दिया जाय और ५) रु० मासिक करके तीन मास में यह द्रव्य उनके वेतन से ले लिया जाय।

(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुलकिशोर,
मंत्री।

[१८]

—:o:—

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० ८ जून १९०८ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान--सभाभवन।

उपस्थित।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० सभापति। बाबू जुगुलकिशोर। बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी०। पं० राम नारायण मिश्र। बाबू माधव प्रसाद। गोपालदास।

[१] गत अधिवेशन [ता० १८ मई] का कार्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

[२] बंगाल के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का २२ मई का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी कोश का कार्य जब आधा हो जाय उस समय सभा उनको सहायता के लिये लिखे।

[३] मंत्री ने सूचना दी कि बाबू रामानन्द का कार्य सन्तोषजनक नहीं था अतः उन्हें जवाब दे दिया गया है।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू रूपनारायण वर्म्मा १५) रु० मासिक वेतन पर तीन मास के लिये परीक्षार्थ नियत किए जांय।

[४] मंत्री की रिपोर्ट के सहित विश्वनाथ तिवारी का निवेदन पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि वे पुनः सभा के क्लार्क के पद पर नियत किए जांय ।

निश्चय हुआ कि यह निवेदनपत्र अस्वीकार किया जाय ।

[५] पण्डित छोटेराम सीताराम शुक्ल का प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका का वार्षिक मूल्य १॥)रु० कर दिया जाय, उसका आकार बढ़ा दिया जाय और इसमें चित्र भी छपा करें ।

निश्चय हुआ कि पत्रिका का आकार बढ़ाने तथा इसमें चित्र निकालने में जितना व्यय पड़ेगा उसकी पूर्ति उसका वार्षिक मूल्य १॥)रु० नियत करने से नहीं हो सकती । अतः सभा को दुःख है कि वह धनाभाव से इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकती ।

[६] पुस्तकालय के निरीक्षक का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि पुस्तकालय की पुस्तकों की जिल्द बांधने के लिये एक दफ्तरी और नियत किया जाय क्योंकि सभा का दफ्तरी इतना काम नहीं कर सकता । मंत्री ने सूचना दी कि उन्होंने दफ्तरी की सहायता के लिये एक लड़का रख लिया है जिससे आशा है कि शीघ्र ही पुस्तकों की जिल्द बंध जायगी ।

निश्चय हुआ कि मंत्री ने जो प्रबन्ध किया है वह एक मास तक देखा जाय और आगामी वर्ष के बजेट के समय यह विषय पुनः विचारार्थ उपस्थित किया जाय ।

[७] पण्डित रामनारायण मिश्र का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि पं० बद्रीनारायण मिश्र हिन्दी कोश की बड़ी कमेटी के सभासद चुने जांय ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय ।

[८] बाबू गौरीशंकर प्रसाद का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा वकालतनामें इजरायडिगरी और सर्टिफ़िकेट

मेहन्ताने आदि के फ़ार्म नागरी अक्षरों में छपवा कर उनकी बिक्री का उचित प्रबन्ध कर दे ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव आगामी वर्ष के बजेट के समय उपस्थित किया जाय ।

[९] बाबू नन्दकिशोर दयाल सिंह का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा उनकी "सत शिक्षा दोहावली तथा छप्पै इतिहास महाराज श्री हरिश्चन्द्र व महाराज श्री रघु" का कापीराइट खरीद ले ।

निश्चय हुआ कि सभा इसे नहीं खरीद सकती ।

[१०] बाबू रामलाल का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने बेलफोर्ट स्टुअर्ट की फ़िज़िकल प्राइमर का भाषा अनुवाद भेजा था और लिखा था कि सभा इसका कापीराइट खरीद ले ।

निश्चय हुआ कि बाबू गौरीशंकर प्रसाद से प्रार्थना की जाय कि वे कृपा कर इसके विषय में अपनी सम्मति दें । साथ ही बाबू रामलाल से पूछा जाय कि वे कम से कम कितने रुपए में इसका कापीराइट सभा को दे सकते हैं ।

[११] बनारस के कलक्टर और मजिस्ट्रेट का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने Public charities के हिसाब को मांगने और देखने में अधिक सुबीता करने के विषय में एक बिल भेजा था और उसके विषय में सभा की सम्मति मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि सभा को दुःख है कि ऐसे विषयों पर विचार करना उसके नियम के विरुद्ध है ।

[१२] व्याकरण कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार की जाय और इसके अनुसार व्याकरण लिख कर सभा में भेजने का समय ३१ दिसम्बर १९०६ तक नियत किया जाय ।

[१३] मंत्री ने सूचना दी कि पुस्तकाध्यक्ष के नियत करने के लिये सभा ने जो सब-कमेटी बनाई थी उसने पं० केदारनाथ पाठक

को १०) रु० मासिक वेतन पर तीन मास के लिये परीक्षार्थ नियत किया है।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

[१४] पण्डित राधाचरण गोस्वामी का ४ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि अपनी एक छोटी लड़की के स्मरणार्थ वे ५) रु० का एक वार्षिक इनाम उस लड़की को देना चाहते हैं जो सूची कार्य में सब से निपुण हो। सभा इसका प्रबन्ध कर दे।

निश्चय हुआ कि पण्डित राधाचरण गोस्वामी को लिखा जाय कि इसके लिये वे कृपा कर काशी के सेण्ट्रल ट्रेनिङ्ग स्कूल फ़ार गर्ल्स से पत्र व्यवहार करें।

[१५] आगामी वर्ष के लिये पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणी सभा के सभासदों के चुनाव के विषय में पण्डित श्यामबिहारी मिश्र के प्रस्ताव उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि चुनाव के लिये जो सूची बनाई गई है उसमें निम्न लिखित नाम बढ़ा दिए जांय।

संयुक्त प्रदेश—आनरेब्ल पण्डित मदन मोहन मालवीय।

मध्य भारत और राजपुताना—मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ़। मिस्टर जैन वैद्य।

[१६] हिन्दी भाषा के कोश के सम्पादक नियत करने के विषय में निश्चय हुआ कि सब सभासदों से प्रार्थना की जाय कि वे ३० जून तक सभा को सम्मति दें कि किस महाशय का सम्पादक नियत होना उपयुक्त होगा। ता० ३० जून तक जो सम्मतियां आ जांय उन पर विचार कर प्रबन्धकारिणी सभा अपना मत स्थिर करे और उसे आगामी वार्षिक अधिवेशन में सूचनार्थ उपस्थित करे।

[१७] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगलकिशोर,

मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय, व्यय का हिसाब ।

मई १९०८ ।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	२७७	९	१०	आफिस के कार्य कर्ताओं का वेतन	५५	३	३
सभासदों का चन्दा	१८	१४	०	पुस्तकालय	३३	९	९
पुस्तकों की बिक्री	१७१	२	३	पृथ्वीराज रासो	२०	६	०
रासो की बिक्री	६१	०	०	नागरी प्रचार	१८	५	०
पुस्तकालय	५८	४	०	फुटकर	१३	५	१½
हिन्दीभाषाकाकोश	११	०	०	डाक व्यय	७६	१०	९
फुटकर आय	५	३	३	हिन्दी कोश	८९	४	९
गवर्न्मेंट की सहायता	२५०	०	०	छपाई	८७	७	०
स्थायी कोश	१४४	१	३	स्थायी कोश	६०	०	०
नागरी प्रचार	०	९	०	मरम्मत	९	८	९
	९९७	१२	७	पुस्तकों की खोज	३५	७	०
				जोड़	४९९	२	७⅘
				बचत	४९८	९	११
देना ६०००)				जोड़	९९७	१२	७

जुगुलकिशोर, मंत्री ।

सूचना।

कोश विभाग नं० ५]

हिन्दी कोश के सम्बन्ध में शब्द संग्रह का कार्य प्रारम्भ हो गया है। जितनी पुस्तकें इस कार्य के लिये चुनी गई थीं उनमें से अधिकांश पुस्तकें सभासदों ने शब्द चुनने के लिये मँगा ली हैं। शेष पुस्तकें भी आशा है कि शीघ्र बँट जांय। साथ ही बाहरी शब्दों के इकट्ठा करने का काम भी संतोष जनक हो रहा है। इससे यह आशा की जाती है कि आगामी दिसम्बर तक शब्द चुनने का कार्य समाप्त हो जाय और सम्पादन का कार्य आरम्भ हो। इस लिये अब यह आवश्यक है कि एक सम्पादक चुन लिया जाय जिसमें वह यथासमय उसका उपयुक्त प्रबन्ध कर सके। परन्तु प्रबन्ध-कारिणी सभा इस कार्य को निश्चित करने के पहिले सब सभासदों की सम्मति इस सम्बन्ध में लिया चाहती है कि जिसमें उपयुक्त पुरुष सम्पादक चुना जाय। अतएव इस सूचना द्वारा सब सभासदों से प्रार्थना की जाती है कि ३० जून १९०८ तक वे कृपा कर अपनी सम्मति सभा को लिख भेजें कि उनके विचार में किस विद्वान महाशय को यह कार्य

सौंपना चाहिए। जो सम्मतियां ३० जून तक आजांयगी उन पर विचार करके प्रबन्धकारिणी सभा अपना मत स्थिर करेगी। आशा है कि सब सभासद अपनी अमूल्य सम्मति से इस कार्य में सभा को उचित परामर्श द्वारा सहायता करेंगे ॥

काशी, जुगुल किशोर,

१५ जून १९०८ ई० मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा